CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# भैरवी

कुँवर नरेन्द्र सिंह

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# भैरवी

कुँवर नरेन्द्र सिंह

भगवती पॉकेट बुक्स

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनाएँ काल्पनिक हैं, किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कतई कोई सम्बन्ध नहीं है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है।

© : प्रकाशक

प्रकाशक : भगवती पॉकेट बुक्स
11/7, डॉ० रांगेय राघव मार्ग,
आगरा—2

मूल्य : 70·00

लेजर टाइप सैटिंग : आइकन कम्प्यूटर्स, आगरा

मुद्रक : रवि मुद्रणालय, आगरा

BHAIRAVI Kunwar Narendra Singh Rs. 70/-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# भैरवी

वह शरत पूर्णिमा की स्वच्छ चन्द्रिका से जगमगाती रात थी। दृष्टि दिगंत तक ज्योत्स्ना के धवल प्रसारण की दीप्ति में हिम शिखर चमक रहे थे, लगता था, मानो चाँदी की सफेदी से पहाड़ों को ढक दिया हो।

चन्द्रमा आकाश के मध्य में आ गया। ठण्डी-ठण्डी हवा से सारी हिमधरित्री सुषीम हो गई। सर्वत्र मौन का साम्राज्य, कहीं कोई आहट, कोई स्वर नहीं था। ऐसे प्रशान्त वातावरण में अवधूत असितांग अपनी हिमगुफा के सामने प्रसन्न मन और तृप्त नेत्रों से पर्वतराज हिमालय की रजत शोभाश्री को निहार रहे थे।

शरत पूर्णिमा की ज्योत्स्न छटा का आलोकमय उत्सव अवधूत असितांग प्रतिवर्ष के समान उस स्वच्छमयी राका में भी देख रहे थे।

उस रात सिद्धात्मा हिमालय के योगी-यति, यक्ष-यक्षणियाँ, किन्नर-किन्नरियाँ, गंधर्व और गन्धर्व नायिकाएँ, देव-देवियाँ उत्सव मनाया करती थीं।

किन्नर रमणियाँ अपने कोकिल कण्ठी रागों से, यक्ष सुन्दरियाँ अपने नृत्यों से हिमालय को रिझाते थे तो योगी, यति अपने पूजन-पर्युषण से। उस रात में अदृश्य जगत दृश्य हो जाता, सुगंधित यौवन मद को अपने शरीर को महकाती यक्ष सुन्दरियाँ उन्मुक्त भाव से विचरण करतीं, नाचती गातीं और स्वर्ग-निवासी देवताओं की कामनाओं को भी जगा देती हैं।

अवधूत असितांग सिद्धियों का चरम स्पर्श कर चुके थे। वह यति वंश के उज्ज्वल पुरुष थे। अवधूत संसार से पूरी तरह विमुख हुए अपनी अध्यात्म साधना में डूबे रहते थे। उनके भोजन की पूर्ति स्वयं अन्नपूर्णा करती थी तो अन्य आवश्यकताएँ हिमालय की सिद्ध-आत्माएँ पूरी किया करती थीं।

लगभग पच्चीस वर्षों से वह इसी हिमगुहा में रहते थे। उनकी यह गुफ़ा मानसरोवर ब्रह्म झील से ऊपर और कैलाश पर्वत के नीचे थे। गुफा के सामने लगभग दो सौ मीटर की दूरी पर बहुत गहरी और लम्बी हिम घाटी थी। इस घाटी में परमसिद्ध अवधूत खड्गपा के अद्‌भुत आश्रम का एक भाग था। इस भाग में खड्गपा के विशिष्ट शिष्य साधना करते थे। अवधूत खड्गपा उनके भी गुरु थे।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खड्गपा का मुख्य आश्रम घाटी के उस पार एक विशाल हिमपर्वत की अधिपत्यका पर था। यह आश्रम लगभग पाँच मील के विस्तार में था। इस आश्रम के अन्दर तीन मील का ऐसा रहस्यमय भूखण्ड था, जहाँ काल अपना असर नहीं दिखाता था। उस एरिया में रहने वाले किसी व्यक्ति की मृत्यु नहीं होती थी, वहाँ रहने वाले साधक-साधिकाएँ चिरयुवा प्रतीत होती थीं। आश्रम के बाह्य क्षेत्र में नित्य श्मशान था, जिसमें अहिर्निश चिताएँ जलती ही रहती थीं। इसी आश्रम में ज्ञान-विज्ञान कक्ष, योग कक्ष, नक्षत्र विज्ञान सहित अनेक विज्ञानों का प्रशिक्षण होता था, तो महाश्मशान में शव साधन, श्मशान साधन, चिता अर्चन, मुण्ड साधन सहित अन्य कापालिक साधनाओं को साधक सम्पन्न किया करते थे। इस महाश्मशान में काल अपना प्रभाव नहीं रखता था।

खड्गपा के आश्रम के पूर्व में इच्छाधारी नागों का लोक था, आश्रम के ऊपर यक्ष लोक, उसके समीप ही गन्धर्व लोक और किन्नर लोक स्थित था। आश्रम के आसपास योगी, यति योगिनियाँ और अनेक सिद्धों के स्थान थे।

अवधूत असितांग सभी सिद्धों से अलग थे। उनका कोई नियम नहीं था। वे पूरी तरह फक्खड़ सन्त थे। जब उनकी इच्छा होती वह गुफा में रहते, जब उनका मन होता वे भ्रमण के लिए निकल पड़ते। कभी चीन, कभी तिब्बत तो कभी भारत में महीनों तक घूमते रहते और फिर दोबारा अपनी उसी गुफा में पहुंच जाते।

कुछ दिनों पूर्व ही वह अखिल भारतीय भ्रमण के पश्चात् अपनी हिमगुफा में आए थे। लगभग 100 वर्ष बाद अवधूत असितांग ने भारत भूमि पर भ्रमण किया था। पूरे एक वर्ष का समय उन्होंने भरत वसुन्धरा में गुजारा। कभी वह गंगा के किनारे रहे तो कभी नर्मदा के गहन कान्तारी प्रवाह के साथ-साथ सहयात्री के रूप में चलते रहे। कभी दक्षिण भारत की कृष्णा, कावेरी में स्नान किया तो कभी पुरी में मचलती सागरी लहरों का आनन्द लिया।

गत सौ वर्षों से अर्वाचीन काल तक में हुए आमूलभूत परिवर्तन को देखकर अवधूत असितांग चकित ही नहीं हुए, बल्कि दुःखी भी हुए। उन्हें लगा जैसे भारत की पवित्र धरती पर दुराचार का पौधारोपण हो गया है।

हर जगह हाहाकार, मानवीय करुण क्रन्दन और चीत्कार। नारियों के फटते आँचल, सुकुमारियों की कोमलता को मसलता मानव के रूप में दैत्य समाज। आतंकवाद ने तो जैसे हद ही कर दी। नित्य-प्रति भारतमाता के लाड़लों के खून से तर-बतर धरती की गोद और उसमें दम तोड़ती मानवता को देखकर अवधूत असितांग सचमुच रो उठे थे।

क्या हो गया है इस देश की पुनीतता को ? कहाँ गई नैतिकता ? कहाँ गया भारत का गुरुत्व ? धर्म का नाम-निशान नहीं। धर्मनीति के नाम पर कुत्सित



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजनीति और उस पर कुर्बान होते सहस्रों युवक-युवतियाँ। उन्होंने राजनीति के नाम पर जातियों का वर्गीकरण देखा, धर्म के नाम पर आतंक और हत्याएँ देखीं। उन्होंने राजा के पद पर गुण्डे और अपराधियों की जमातें देखीं। हत्यारों को कानून बनाते देखा, भ्रष्टाचार के दल-दल में आकण्ठ डूबे राजनीतिज्ञों के खूनी चेहरे भी देखे।

अवधूत स्त्रीमुक्ति के नाम पर मुक्त यौनाचार और व्यभिचार को देखकर चकित रह गए। उत्थान के नाम पर उन्होंने वर्तमान में भी स्त्रियों को चिरगुलामी करते ही नहीं देखा बल्कि उन्हें जिन्दा जलते हुए भी देखा।

भारत की धरित्री की कराहें, सिसकियाँ आज भी उन्हें सुनाई दे रही हैं। देशभक्तों के आँसुओं के सैलाब में डूबी वसुधा के करुण चीत्कार से उनके कान भी त्राहि-त्राहि कर उठे थे।

भरत वसुधा की दुर्दशा पर अवधूत चिंतित और दुःखी अवश्य थे, पर वे यह भी जानते थे कि समग्र विकास के पूर्व इस प्रकार की स्थिति आना अस्वाभाविक नहीं है। रात का घना अंधकार न हो तो आलोक की कल्पना कैसी ?

अवधूत असितांग मौन, शान्त चित्त और स्थिर मति से हिमखण्डों पर फिसलती चन्द्रिका के धौत-सौन्दर्य की अभिरम्य छटा को देखते रहे। जैसे अमृत ही चन्द्रमा से उसकी हजारों किरणों के साथ-साथ बरस रहा था। दिकन्त मौन और धरा निःशब्द थी।

अकस्मात् उनकी स्मृति में वह युवा, उत्साही और मेघा से सम्पन्न आंग्ल वैज्ञानिक उभरा। लगभग पच्चीस वर्षीय गोरे रंग का युवक जो 6-7 वैज्ञानिकों के छोटे से दल का मुखिया था।

ठीक ऐसी ही शरत-पूर्णिमा की धवल राका थी उस रात। आज की तरह ही चन्द्रमा से पीयूष (अमृत) झर रहा था किन्तु वह रात आज की भाँति शान्त नहीं थी।

उस रात में धरित्रीधारी शेषनाग ने अपना फण हिलाया था। शायद वे धरा भार से थक गए थे। इसीलिए तो समूची धरती हिल उठी थी। भूमि के गर्भ में विस्फोट के कर्णभेदी नाद हो उठे थे। सारी हिमानी अस्त-व्यस्त हो उठी थी ! हिम शिखरों में दरारें आ गई थीं तो बर्फीली धरती का वक्ष अनेक स्थानों पर फट गया था।

उस रात वह अपनी गुफा के बाहर एक स्वच्छ चट्टान पर स्थित चित्त से बैठे थे। अचानक आए भूकम्प के कारण वह भी चट्टान से गिर पड़े थे। तभी उन्होंने 7-8 व्यक्तियों को एक अन्य गुफा से भागते हुए देखा था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूकम्प के कारण एक स्थान पर बर्फीली धरती में गहरी चौड़ी दरार हो उठी थी। उसी दरार से निकला था, उस यति का दीर्घ पर मृत शरीर।

भूकम्प की समाप्ति के बाद वैज्ञानिक दल ने उस यति के शव का वैज्ञानिक परीक्षण किया। उन्हें याद है, दल के मुखिया वैज्ञानिक ने कहा था—"मित्रो यह शव अनुमानतः सैकड़ों वर्षों पुराना है। अब हमारा आना सार्थक हुआ है। हम किसी ऐसे ही शव की खोज कर रहे थे। लगता है प्रकृति हम पर कुछ अधिक ही महरबान है।"

अवधूत असितांग को उस रात का एक-एक क्षण याद आने लगा। उस शव का वैज्ञानिक दल क्या करना चाहता है ? वे अपनी जिज्ञासा रोक नहीं सके थे और गोपनीय रूप से उनके पीछे-पीछे चल दिए थे।

संयोगवश उनकी गुफा (वैज्ञानिकों की गुफा) भूकम्प से पूरी तरह सुरक्षित थी। जैसा कि यति होता है—लगभग 10 हाथ लम्बा, बड़ा सिर और लम्बे-लम्बे हाथ-पैर। उन धरती वासियों को यह एक अजूबा था लेकिन अवधूत असितांग को यह सामान्य बात थी। इस प्रकार के अनेक यती हिमालय क्षेत्र में हैं, वे स्वयं भी तो यतिवंश के हैं। यद्यपि अवधूत का कद 10 हाथ लम्बा नहीं था फिर भी वह आम आदमी से बहुत ऊँचे कद और बलिष्ठ शरीरधारी थे। अवधूत का कद 9 फुट से कम न था।

वैज्ञानिकों की वह गुफा पूरी प्रयोगशाला थी। जगह-जगह टेस्ट-ट्यूब, जार-बीकर, रसायनों से भरी रंग-बिरंगी बोतलें। गुफा में प्रकाश था। उस प्रकाश के स्रोत थे गुफा में जलते हुए बल्ब।

गुफा में ही एक छोटा सा बिजलीघर था, जो सौर ऊर्जा को संचित करके प्रकाश देता था। वैज्ञानिकों ने शव का गहन परीक्षण किया। उसके स्थान-स्थान पर यंत्रों को लगाया। हाथ के एक स्थान पर भी उन्होंने चाक लगा कर परीक्षण किया। आरम्भ में तो नहीं पर कुछ क्षणों बाद कटे हुए स्थान से रक्त की बूदें टपकीं।

वैज्ञानिक दल हर्षित हो उठा। उन्होंने शीघ्रता से खून को एक बोतल में इकट्ठा किया फिर नग्न देही यति की कोषिकाओं से वैज्ञानिक समूह ने वीर्य का तत्व भी प्राप्त कर लिया।

"अब हम सफल हुए मित्रों। हम विज्ञान जगत को, एक पुरातन सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराएँगे। हम इसके रक्त से, इसके वीर्य-तत्व से इसी की भाँति एक और पुरुष को उत्पन्न करेंगे। उसके बाद ऐसी ही नस्ल पैदा होती रहेगी।" वह प्रसन्नता से नाच उठा था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवधूत असितांग गुफा में स्वयं को छिपाए खड़े थे। अचानक एक वैज्ञानिक ने कहा—"प्रोफेसर, क्यों न हम इसका पूरा सिर ही काट कर ले चलें। मेरा विश्वास है, इसके मस्तिष्क की कोशिकाएँ हमें एक नवीन आविष्कार से परिचित कराएँगी—"तुम्हारा कहना सत्य है फ्रेंड।" मुखिया ने प्रसन्नता से कहा—"और फिर मात्र सिर ही क्यों ? इस हिममानव का प्रत्येक अंग महत्त्वपूर्ण है। हम इसके छोटे-छोटे पीस कर, सुरक्षित पैकिंग में पैक कर लेते हैं।

अवधूत असितांग को लगा जैसे वे वैज्ञानिक उसके पूर्वज का अंग-अंग किए बिना नहीं रहेंगे। उन्हें वैज्ञानिकों के इस कृत्य पर क्रोध भी आया। उन्होंने गुफा में स्वयं को प्रकट किया।

"अब तक मैं तुम्हारे कृत्य को मौन होकर देखता रहा, और तुम मेरे उस पूर्वज का निरन्तर अपमान करते रहे, जो शीत समाधि में है। मूर्खो अपने प्राण बचाना है तो अभी इसी क्षण यहाँ से निकल जाओ।" अवधूत असितांग ने कठोर स्वर में कहा। उनका उच्चारण विशुद्ध संस्कृत भाषा में था।

वैज्ञानिक चौंक उठे। दो-तीन वैज्ञानिकों ने अपने रिवाल्वर निकाल लिए। उनकी आँखों में हिंसा की चमक उभरी। वे अचानक एक लम्बे-चौड़े दीर्घकायी पुरुष को देखकर चकित थे।

दल का मुखिया चौंका। उनके सामने एक और यति जीवित रूप में खड़ा था। तुरन्त बिजली की गति से उसके दिमाग में विचार आया। अगर किसी प्रकार इस यती को विवश कर दुनिया में ले जाएँ और इस पर वैज्ञानिक प्रयोग किए जाएँ तो नयी-नयी बातें सामने आएँगी। मुखिया ने संस्कृत वाङ्गमय का गहन अध्ययन किया था। वह यह भी जानता था कि बलपूर्वक यति को बाँधा नहीं जा सकता। यति सिद्ध भी होते हैं।

उसने क्षणमात्र में निर्णय लिया था। वह हाथ-जोड़कर देववाणी में बोला—"महाराज गलतियों को क्षमा करें। हम जो भी कुछ कर रहे हैं, वह मानव कल्याण के लिए। आप भी हमारी सहायता करें। इस लाश को हम अपनी दुनिया में ले जाना चाहते हैं। मैं तो आपसे भी विनय करता हूँ कि आप भी हमारे साथ चलें।" मुखिया ने विनम्रता का अभिनय करते हुए अपनी धूर्तता प्रकट की।

असितांग की अतीन्द्रिय शक्तियों के सम्मुख झूंठ कितनी देर टिक सकता था। सत्य को जानकर असितांग गरज उठे—

"मूर्ख, तेरी दुनिया की क्रूरता हमारे जगत में नहीं है। यहाँ, न झूठ चलता है, न चालाकी। तुम सब अभी इसी क्षण इस गुफा से निकल जाओ।" कहते हुए असितांग आगे बढ़े और अपने पूर्वज को उठाने के लिए झुके। उसी समय—"धाँय



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

......धाँय......।" की आवाजों से गुफा गूंज उठी। "नो......नो......फायर मत करो।" दल का मुखिया चीख उठा।

रिवाल्वर से निकली दोनों गोलियाँ असितांग का स्पर्श करती निकल गईं। हिंसक जीव के समान हुंकारते असितांग रिवाल्वरधारी की ओर उन्मुख हुए। उन्होंने अपने स्थान पर खड़े-खड़े ही हाथ लम्बा किया। इसके पूर्व कि कोई कुछ समझ सके असितांग ने रिवाल्वरधारी को किसी खिलौने की तरह उठा लिया और अपूर्व शक्ति का प्रदर्शन करते हुए उसे दीवार पर दे मारा।

एक कारुणिक चीख उसके गले से निकली। रिवाल्वरधारी वैज्ञानिक युवक के सिर के टुकड़े-टुकड़े होकर गुफा में बिखर गए।

"निकलो यहाँ से.....।" अवधूत असितांग सकोप चिल्लाए। सभी युवक प्राणों के भय से घबरा कर गुफा से निकल गए, शेष रहा मात्र मुखिया। उसके चेहरे पर भय या आतंक नाममात्र को भी नहीं था। अवधूत ने एक दृष्टि उस पर डाली और अपने पूर्वज का शव उठा कर गुफा के बाहर निकल आए।

अवधूत असितांग शव को अपने कन्धे पर उठाए-उठाए हिमघाटी के समीप आए और उन्होंने छलाँग लगा दी। जान बचा कर भागे वैज्ञानिक उन्हें दूर से ही देख रहे थे। उन्हें इस प्रकार छलाँग लगाते देख उन सभी ने सोचा कि हजारों फुट नीचे गहरी घाटी में गिरकर अवधूत के शरीर का अणु-अणु बिखर जाएगा।

वे सभी दौड़े। अवधूत का शरीर हवा में तैरता नीचे उतरने लगा। कुछ समय बाद वे सुरक्षित हिमघाटी में उतर गए थे। ऊपर खड़े वैज्ञानिकों ने समझा कि अवधूत यति अब इस संसार में नहीं रहा।

वे निश्चिन्त होकर वापस अपनी गुफा में जाने के लिए मुड़े ही थे कि उनका मुखिया भी वहाँ आ पहुँचा। दल के एक सदस्य ने प्रसन्नता से अपने चीफ को बताया कि खतरनाक यति का अन्त हो चुका है। उसकी बात सुनकर चीफ ने कहा था—"तुम गलत समझते हो। यति इस प्रकार नहीं मरते। चलो, प्रातः होते ही हमें यहाँ से चल देना है। अब यहाँ रुकना खतरे से खाली नहीं। दुःख की बात है कि हम उस लाश का और जीवित यति को एक फोटो भी नहीं ले सके।"

"मैंने जीवित और मृत दोनों यतियों के एक नहीं अनेक फोटो उतार लिए हैं। यह काम मैंने अपने सूक्ष्म कैमरे से किया है।" मुखिया के एक साथी ने अपनी कारगुजारी पर गर्व प्रकट किया।

"ओह हैरी, तुम सचमुच जीनियस हो।" चीफ प्रसन्नता से बोला।

वे सब दोबारा अपनी गुफा की ओर चल पड़े। उन्होंने सर्वप्रथम अपने वैज्ञानिक साथी की लाश को गुफा से बाहर निकाल कर बर्फ में गड्ढा खोदा और उसे दफना दिया। उसकी कब्र पर शान्ति प्रार्थना करने के बाद सभी लोग पुनः



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुफा में पहुँचे और अत्यावश्यक सामान पैक करना शुरू किया। टेस्ट-ट्यूब, जार-बीकर उन्होंने वहीं छोड़ दिए। प्रातः सूरज के निकलते-निकलते वैज्ञानिक दल ने गुफा छोड़ दी।

अवधूत असितांग को सब कुछ याद था किन्तु आज उन्हें यह सघन स्मृति क्यों हो रही है ? निश्चय ही इसमें कोई न कोई रहस्य अवश्य है। उन्होंने नेत्र बन्द किए। मन ने कुछ संकल्प लिया। कुछ क्षणों में ही चेतना लक्ष्य की ओर अग्रसर हुई।

अवधूत असितांग देख रहे थे, एक अत्याधुनिक वैज्ञानिक प्रयोगशाला को। अनेक नवयुवक और नवयुवतियाँ प्रयोगरत थे। कोई गैसीय मिश्रण तैयार कर रहा था तो कोई तरल-तरंगित रंगीन गैसों के धूम्र में बैठा कुछ खोज रहा था।

अवधूत असितांग की चेतना में उसी प्रयोगशाला का एक अन्य कक्ष दिखाई दिया। यह एक बड़ा हॉल था जिसमें अनेक मानवाकार टेबिल रखे हुए थे। टेबिल लकड़ी या पत्थर अथवा प्लास्टिक के न होकर किसी अन्य धातु के बने थे।

उस समय चार टेबिल्स पर चार सुन्दर नवयुवतियाँ मादर जाद नग्न अवस्था में चित्त पड़ी हुई थीं। चारों युवतियों की आंखें बन्द और शरीर निःस्पंदित थे किन्तु उनके हृदय की धड़कनें असामान्य रूप से चल रही थीं। प्रत्येक टेबिल के पीछे अर्थात् युवती के सिर की ओर एक स्क्रीन लगा था, जिसका सम्बन्ध कम्प्यूटर से जुड़ा था। स्क्रीन पर कभी आड़ी-तिरछी रेखाओं का जाल बनता तो कभी-कभी भयानक आकृतियाँ दिखाई देतीं, तो कभी-कभी सुन्दरतम युवतियों का रेखांकन होता।

स्क्रीन पर आए प्रत्येक दृश्य की कम्प्यूटर फिल्म बना-बनाकर अपनी सुरक्षित मेमोरी में डालता जा रहा था।

अवधूत असितांग ने एक विचित्र दृश्य देखा। वे देख रहे थे कि टेबिल कार्यों में लिप्त चार युवक-युवतियों ने एक आरी जैसी वस्तु से टेबिल पर अचेत पड़ी युवती का सिर काट दिया। उनकी दृष्टि दूसरे टेबिल मर गई तो वहाँ भी उन्होंने उस टेबिल पर पड़ी युवती का सिर कटा देखा।

प्रत्येक टेबिल पर युवतियों के सिर कटे हुए रखे थे। आश्चर्य की बात यह थी कि किसी भी लड़की के कटे सिर और धड़ से खून की एक भी बूंद नहीं निकली थी।

अवधूत देख रहे थे, चारों पृथक-पृथक सिरों को भिन्न-भिन्न जोड़ के पास रखा जा रहा था। अर्थात् टेबिल नं. 1 की लड़की का सिर टेबिल न. 4 की लड़की के धड़ से, नं. 2 का सिर नं. 1 के धड़ से, नं. 3 का सिर नं. दो के धड़ से और नम्बर चार का सिर टेबिल नं. चार के धड़ से जोड़ा जा रहा था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिर के धड़ को जोड़ने की प्रक्रिया में कोई टाँका-सिलाई आदि नहीं थी। प्रत्येक टेबिल के ऊपर ठीक लड़की के सिर के ऊपरी भाग में एक गोल चमकीली गेंद टंगी थी। सिरों को धड़ों से पूरी तरह सटा कर उन्हें शिकंजे से कस दिया। अब वे किसी भी स्थिति में एक सूत भी अपने स्थान से नहीं खिसक सकते थे।

टेबिल के पास से सभी हट गए। अकस्मात् टंगी हुई वॉल से तेज पीली फिर नीली किरणें निकलीं। किरणों का गमन ठीक उसी स्थान पर हो रहा था, जहाँ कटे हुए सिर एवं धड़ रखे थे।

किरणों ने चमत्कार किया। धड़ों से कटी हुई गर्दनें जुड़ने लगीं। लगभग पाँच मिनट में ही सिर-धड़ों से पूरी तरह जुड़ गए। उपस्थित वैज्ञानिक युवक-युवतियों के मुखों पर प्रसन्नता नाचने लगी। वे अत्यधिक उत्सुक और उत्तेजित अवस्था में आगे की क्रिया की प्रतीक्षा करने लगे।

अचानक टेबिल पर पड़ी चारों लड़कियाँ उठीं और अपने-अपने टेबिलों से उतरीं। हॉल में प्रसन्नता की चीखें गूँजने लगीं, लेकिन यह प्रसन्नता अधिक समय तक कायम नहीं रह सकी। चारों लड़कियाँ छः-छः, सात-सात कदम चलीं और लड़खड़ा कर गिर पड़ीं।

उनके गिरते ही स्क्रीन पर लाल बल्ब जल उठा। शोधकर्ता युवक-युवतियाँ भागीं। उन्होंने चारों लड़कियों को देखा, चारों के सिर अपने स्थान पर तो थे, पर जुड़े हुए स्थानों से खून रिस रहा था। चारों ही लड़कियाँ पूरी तरह मर चुकी थीं।

"माय ब्याजस् एण्ड लवली डॉटर्स। आई एम वैरी हैप्पी। आज तुमने अपने काम में एक और सफलता हासिल की है। भिन्न-भिन्न सिर भिन्न धड़ों से जोड़कर तुमने अपनी सफलता का एक और अध्याय लिख लिया। अब कामयाबी तुमसे अधिक दूर नहीं है मेरे बच्चो। प्रभु तुम्हें जल्दी ही सफलता देगा।"

यह आवाज थी एक वृद्ध पुरुष की, जिसकी प्रसन्नता से भरी हुई तस्वीर हॉल में लगे एक 10 × 10 फुट के टेलीस्क्रीन पर उभर रही थी। सन जैसे सफेद सिर और दाड़ी के बाल, गोरा उज्ज्वल मुख, चमकती आंखें। उसके गले में रुद्राक्ष और स्फटिक की माला पड़ी हुई थी।

अवधूत ने पहचाना यह उसी वैज्ञानिक दल का मुखिया था, जो उसके पूर्वज यति का रक्त और वीर्य तंत्व निकाल कर ले गया था। अवधूत चकित थे, यह वैज्ञानिक प्रकृति की मान्यताओं को भी बदल रहा है, ईश्वरीय संरचना को भी बदल देना चाहता है। इस सब परिश्रम के मूल में इस वैज्ञानिक का कौन सा उद्देश्य निहित है ? अवधूत ने विचार नहीं किया।

अवधूत असितांग की चेतना ने एक नए दृश्य को देखा। वह भी एक बड़ा हॉल था, जिसमें लगभग पचास युवक-युवतियाँ वैज्ञानिक उपकरणों से उलझ रहे



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थे। इस हॉल में मृतकों को पुनर्जीवन देने के शोध हो रहे थे। कहीं कुशल सर्जन हृदय और मस्तिष्क का ऑपरेशन कर रहे थे तो कहीं अंगों की शल्य क्रियाएँ हो रही थीं। लेकिन जो भी प्रयोग हो रहा था, वह मृतकों पर ही हो रहा था, उनमें से कोई भी जीवित नहीं था।

एक अन्य कक्ष में अवधूत ने कृत्रिम मानवों का निर्माण देखा। वहाँ वैज्ञानिक कृत्रिम अंगों के निर्माण के साथ ही कृत्रिम मानवों पर पशुओं के मस्तिष्कों का भी आरोपण कर रहे थे। इन कृत्रिम मानवों के निर्माण में अनेक नर कंकाल काम में लाए जा रहे थे। किसी कंकाल पर माँस-मज्जा का आरोपण हो रहा था तो किसी माँस-मज्जा मण्डित कंकाल पर कृत्रिम त्वचा को चढ़ाया जा रहा था। सभी वैज्ञानिक दत्त चित्त होकर अपने-अपने कार्य को सम्पन्न कर रहे थे।

अवधूत असितांग की दृष्टि में एक विशिष्ट स्थान और भी नजर आया। यहाँ पूरी तरह तन्मोक्त वातावरण था। कुछ चिताएँ जल रही थीं, चिताओं के पास आसन लगाए नरमुण्डों को सामने रखे वैज्ञानिक परीक्षण कर रहे थे। प्रत्येक चिता, नरमुण्ड और शवसाधकों का सम्बन्ध कम्प्यूटर से जुड़ा था। कम्प्यूटर क्षण-प्रतिक्षण साधक और तांत्रिक उपकरणों में प्रवाहित हो रही ऊर्जा को स्क्रीन पर दिखा रहा था। यहाँ तांत्रिक साधनाओं को, उनके परिणामों को विज्ञान से अन्वित किया जा रहा था।

अवधूत की दृष्टि में पुनः एक नवीन कक्ष आया। इस कक्ष में भोग-विलास की सभी वस्तुएँ उपलब्ध थीं। कक्ष के एक पलंग पर एक मिथुन जोड़ा नग्न होकर रतिक्रिया में रत था। पुरुष की पीठ अवधूत की ओर थी किन्तु जैसे ही उन्होंने पुरुष का मुख देखा, अवधूत उछल पड़े। उनके सामने उनका वही पूर्वज यति था, जिसका रक्तादि वैज्ञानिकों का दल यहाँ से ले गया था।

वह युवक आम आदनी से कहीं अधिक लम्बा-चौड़ा और बलिष्ठ था किन्तु फिर भी उसकी लम्बाई यति पूर्वज के समान नहीं थी, जबकि उसका शारीरिक आकार-प्रकार और चेहरा पूरी तरह अवधूत के पूर्वज की ही भाँति था।

युवक तेजगति से मिथुन प्रहार कर रहा था। उसके आघातों की पीड़ा से युवती चीखती हुई अपने हाथ-पैर छटपटा रही थी। कुछ समय तक युवती चीखती रही फिर उसकी चीखें बन्द हो गईं। मिथुनरत युवक ने युवती को देखा, युवती की आंखें उलट चुकी थीं, उसकी कमर के नीचे गुप्तेन्द्रिय का भाग नीला हो गया था। यह नीलिमा धीरे-धीरे उसके सारे शरीर में फैलती जा रही थी। उसके मुख से भी नीले-हरे झाग निकल रहे थे, यहाँ तक कि उसके दाँत भी नीले हो गए थे। ऐसा लगता था जैसे उस युवती को किसी महाविषधारी कोबरा ने दंश किया हो।

अत्यन्त दुःखी भाव से देखता युवक युवती के ऊपर से हट गया। उसने



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कपड़े पहने और लड़की की लाश को उठाने जा ही रहा था कि उसके कमरे में रखे टी. वी. की स्क्रीन रोशन हुआ। स्क्रीन पर वही सफेद-दाड़ी वाले वैज्ञानिक की आकृति उभरी। वह कह रहा था—

"अपने आप पर नियंत्रण करो बेटे सूर्या। यह तीसरी लड़की थी, जो तुम्हारी काम वासना का शिकार बनी है। अब यह पूरी तरह सिद्ध हो गया है कि तुम सामान्य पुरुष नहीं हो। मुझे आश्चर्य है कि इतनी भारी मात्रा में तुम्हारे शरीर में तेज विष कहाँ से आया ? खैर जो भी हो कल सुबह तुम अपना परीक्षण कराओ।"

"मैं क्या करूँ होली फादर ? क्या मेरा जीवन इसी प्रकार रहेगा ? क्या मैं अपने जीवन में किसी लड़की से सेक्स सम्बन्ध करूँगा तो उस लड़की का यही अन्त होगा ?" सूर्या का स्वर दर्द से भरा था। उसके स्वर में आत्मग्लानी, पश्चाताप और भारी दुःख था।

"दुःखी नहीं होते मेरे बच्चे। मैं अवश्य ही तुम्हारा कोई न कोई निदान खोज लूँगा। अब इस लाश को प्लेटफार्म नम्बर 9 पर रख दो और आराम करो।"

सूर्या नामक युवक ने लड़की की लाश अपने कन्धे पर रखी और कमरे से बाहर निकल गया। अवधूत असितांग चकित से देखते रहे। वह सुन्दर मृणालमयी रमणी की मृत्यु सूर्या के विष पुरुष होने के कारण ही हुई है, यह स्पष्ट था। लेकिन सूर्या का शारीरिक गठन और मुखाकृति उनके पूर्वज यति से क्यों मिलती है। असितांग सोचने लगा।

असितांग की इच्छा हुई कि वह अपने पूर्वज के विषय में कुछ जानें। क्या उनका पूर्वज यति भी विष पुरुष था ? असितांग के सिद्ध मन ने तुरन्त ही भूतकाल में गमन किया। वे देख रहे थे..........।

उनका पूर्वज यति जीवित है। वह एक अत्यन्त सुन्दरी नव यौवना को आलंगित किए हिमगुहा में लेटा था। सुन्दरी उसके ऊपर लेटी बार-बार उसके मुख को चूम रही थी। यति भी काम के आवेश में पुनः पुनः सुन्दरी के मधु स्रावी अधरों को चूम लेता था।

अकस्मात् उनके अभिसार में एक विघ्न होता है। पता नहीं कहाँ से सुनहरी आभा से सज्जित एक नाग गुफा में प्रकट होता है। नाग का फण फैला हुआ था और उस पर नीलमणि से सज्जित किरीट था जिससे नील-सफेद प्रकाश गुफा में फैल गया था।

नाग महाकोप से फुंकारा। उसकी फुंकार सुनकर यति और अभिसारिका प्रेयसी दोनों ही सजग हुए। वे चौंककर एक-दूसरे से अलग हो गए। रमणी उछली और दूसरे ही क्षण एक सुनहरी नागिन हिमधरा पर कुण्डली मारे बैठी दिखाई दी। असितांग समझ गए कि वह इच्छाधारी नागिन है।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उधर नाग ने भी अपना स्वरूप बदला। वह नाग के स्थान पर सुन्दर सजीले नवयुवक के रूप में क्रोधित मुखमुद्रा सहित दिखाई दिया।

"यतिवंशी कामवासना के अधीन होकर तूने अपने कुल की मर्यादा तो तोड़ी ही है, साथ में इच्छाचर नागों की शहजादी को भी भ्रष्ट कर दिया। मैं तुझे अवश्य दण्ड दूँगा।" नाग गुर्रा उठा। यति न तो भयभीत हुआ और ना ही उसके चेहरे पर अपराध बोध दिखाई दिया। वह शान्त स्वर में बोला—

"नागराज यह गलती मेरी नहीं राजकुमारी शेषा की ही हैं। उसने बार-बार मुझसे रति के लिए याचना की। विवश होकर मुझे उसे सम्भोग सुख देना ही पड़ा।"

"शेषा तो दण्ड की अधिकारिणी है ही, साथ ही तू भी है। हमारे नागलोक नियम और दण्ड संहिता के अन्तर्गत अगर नागलोक की कोई भी कुमारी सुन्दरी किसी अन्य जातीय पुरुष के साथ अभिसार करती है तो पुरुष भी उतना ही दोषी है जितनी नाग सुन्दरी।"

"विष भरे यौवन का पान करके भी मैं जीवित हूँ। अधिक से अधिक तुम मुझे दंश ही करोगे न ? इससे मुझे कोई असर नहीं होगा।" यति मुस्कराया।

"बेशक, तुम नहीं मरोगे, लेकिन जो जहर मैं तुम्हारे भीतर पहुँचाऊंगा, वह तुम्हें अति कामुक और जहरीला बना देगा। जब भी तुम किसी स्त्री से संभोग करोगे, वह तत्क्षण मर जाएगी। अगर तुम्हारे शरीर से वीर्यपात नहीं हुआ तो खुद तुम्हारा शरीर फटने लगेगा। उसमें दरारें हो जाएँगी, उससे खून, माँस-पीव निकलने लगेगा। अतः मजबूर होकर तुम्हें अपनी जाति की स्त्री के साथ मैथुन करना ही पड़ेगा। जब भी स्त्री संसर्ग करोगे वह मरेगी, नहीं करोगे तो तुम्हारा शरीर फटेगा। एक नागसुन्दरी के बदले में अनेक यति सुन्दरियाँ मारी जाएँगी।" अपनी बात समाप्त करके नाग युवक उछला। अगले ही क्षण एक नाग यति के कमर पर आ गिरा। नाग ने यति की नाभि के पास दंश किया फिर दोबारा पुरुष रूप में आ गया।

"और सुनो यति। अगर तुमने भूल से भी फिर दोबारा किसी नागकन्या अथवा नागसुन्दरी के साथ संभोग किया तो तत्काल तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। यह नागकन्या अब हमारे लोक में रहने की पात्रता खो चुकी है। अब यह तुम्हारे साथ ही रहेगी।" कहकर नाग अदृश्य हो गया।

अवधूत असितांग ने अपने पूर्वज यति को कामवेदना से तड़पता देखा। फिर उन्होंने उसके शरीर पर फटी हुई लकीरें भी देखीं, जिनसे खून-पीव रिस रहा था। उन्होंने उस यति को यतिनारी से बलात संभोग करते भी देखा और ठीक सूर्या की सहगमना युवती की भाँति यति की प्रेयसी को भी मरते देखा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यति पूर्वज ने अनेक स्त्रियों को मृत्यु के मुख में पहुँचा दिया। फिर भी उसकी तृप्ति नहीं हुई। अवधूत उसे अपने अभिशप्त जीवन से तंग आता हुआ देखते रहे। अन्ततः एक दिन वह यति पूर्वज उसी नागकन्या के साथ मैथुन कर मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसके साथ ही वह नागकन्या भी चल बसी। यति समाज ने उसे गहरे बर्फ के खड्ड में दफना दिया और............अवधूत खोज रहे थे, उस नागसुन्दरी के शव को ! कहाँ दफन है उस नाग नायिका का शरीर। किस लोक में है उसकी आत्मा ? लेकिन वह नागकन्या अवधूत असितांग को दिखाई नहीं दे रही थी। वे कुछ विकल हो उठे।

❑❑

रात के दो बज चुके थे। सारा नगर निद्रा के सुखमय संसार में लिप्त था, लेकिन संभूति की आंखों में नींद कहाँ ? वह तो अपने पति के सिर को गोद में रखे, उसके रुक्ष और तेजसहीन चेहरे को देख रही थी।

लगभग तीन माह हो चुके थे उसके पति को इसी अवस्था में। छोटे से नीम हकीम से लेकर बड़े-से-बड़े डॉक्टर्स को वह दिखा चुकी थी किन्तु परिणाम शून्य ही रहा। अंतिम बार उसने अपने पति को भारी फीस देकर एक विदेशी डॉक्टर को भी दिखाया। सारी रिपोर्ट्स का अवलोकन करने के बाद डॉ. स्मिथ ने कहा था—

"सारी मैडम, अब कुछ सम्भव नहीं। रोग इतना आगे बढ़ चुका है कि इलाज संभव नहीं। अब तो आप जितनी इनकी देखभाल कर सकें, करें। साथ ही इनके लिए भगवान से प्रार्थना भी, कि इन्हें शीघ्र ही इस महापीड़ा से मुक्ति दें।

उस दिन से संभूति ने जान लिया कि अब उसके पति पीयूष का जीवन बचना संभव नहीं रहा। आज पीयूष को तीसरा दिन था। वह निःचेष्ट, जड़ बना हुआ था। न तो उसकी चेतना साथ दे रही थी और ना ही उसके कण्ठ से आवाज आ रही थी। वह दो-तीन घंटों में एक बार आँखें खोलता, संभूति को देखता और उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती। लगता था जैसे अब अंतिम समय आ गया था और इस 'समय' को पीयूष ने पहचान लिया था। शायद वह सोच कर दुःखी था कि उसके बाद उसकी पत्नी का क्या होगा ?

अपने पति के सिर को गोद में लिए संभूति को नींद का झोंका सा आया। तीन दिन से वह निरन्तर जाग रही थी, ऐसा होना अस्वाभाविक भी नहीं था। नींद या जाग ? स्वप्न या सत्य ? संभूति निर्णय नहीं कर पाई।

उसने देखा, पीयूष के कमरे के उत्तरी कोने की ओर से एक अलौकिक प्रकाश पिण्ड का आविर्भाव हो रहा था। वह आँखें खोलना चाहती है पर जैसे आँखों को किसी ने बलात चिपका दिया था। वह बोलना चाहती है लेकिन आवाज



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं निकल पा रही। वह उठना चाहती है लेकिन देह जैसे धरती से चिपक गया था।

प्रकाश पुंज की दिव्य-शुभ छटा से उसने एक भव्य व्यक्तित्व को साकार होते देखा। कौन है यह प्रकाश पुरुष ? कोई देव या ऐसी ही कोई अलौकिक शक्ति ? प्रकाश पुरुष शान्ति से चलता उसके समीप आ गया......और समीप और.......ठीक उसके पति के समीप।

प्रकाश पुरुष ने अपना हाथ आगे बढ़ाया। उसकी अंगुलियों से, अंगूठे से प्रकाश की सप्तरंगी किरणें निकलने लगीं। उसने अपना हाथ पीयूष के ललाट पर रख दिया। प्रकाश की रश्मियाँ प्रकाश पुरुष के हाथ से निकल-निकल कर पीयूष के सिर में समाने लगीं। उसकी आँखें खुलीं।

अचानक वह सब जैसे लुप्त हो गया। यह सब जैसे मायाचार था। संभूति की आँखें खुलीं, उसका सारा शरीर हरकत में आ गया, उसकी चेतना सजग हो उठी। उसे लगा कि ईश्वरीय शक्ति ने प्रत्यक्ष प्रकट होकर उसके पति को नवजीवन दान दिया है।

"संभूति.......ई.......ई.......।" जैसे बुझते हुए दीपक की लौ भभकी।

"हाँ......मैं आपके पास ही हूँ।" संभूति प्रसन्नता से लगभग चीख पड़ी। पीयूष ने अपना सिर उठाया, उसके सजल नयनों की दृष्टि संभूति के सौन्दर्यमय मुखड़े को चूमने लगी।

"अब आप पूरी तरह ठीक हो गए हैं, ईश्वरीय सत्ता ने आपके जीवन को लौटा दिया है।" प्रसन्नता से संभूति का स्वर कांप उठा। उसकी आँखों में आँसू भर उठे।

"संभूति, मेरी प्रिया !" पीयूष ने अपनी निर्बल बाँहों का घेरा संभूति के मृदुल-मुलायम यौवन रस से भरे शरीर पर कसते हुए कहा।

"मैं ठीक हूँ संभूति। बस कुछ भूख सी लग रही है। मैं चाहता हूँ कि इस समय मुझे तुम्हारे हाथों की बनी खीर मिल जाए।"

"हाँ हाँ जरूर.......जरूर, मैं अभी आपको खीर बनाती हूँ।" संभूति प्रसन्नता से बोली।

लगभग दो माह से पीयूष ने खाना-पीना सब छोड़ दिया था। उसके भोजन की पूर्ति नित्यप्रति ग्लूकोज बोतलों से होती थी। आज जब स्वयं पीयूष ने भोजन की इच्छा प्रकट की तो संभूति का प्रसन्न होना स्वाभाविक था।

संभूति भागकर किचिन में गई। सन्ध्या का दूध देखा। उसने गर्म करके रख दिया था। लगभग एक किलो दूध था। संभूति ने झटपट चावल निकाले, चूल्हा जलाया और खीर बनाने लगी। अधिक समय नहीं लगा। उसने गर्म खीर को कुछ



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठण्डा किया और इसके पूर्व कि वह खीर उचित पात्र में रखकर पीयूष के कमरे में ले जाए, पीयूष स्वयं ही किचिन में आ गया।

संभूति चकित हो उठी। जो व्यक्ति 2 माह से अपने बिस्तर से नहीं उठा था, वह अपने पैरों से चलकर किचिन तक आ जाए तो आश्चर्य ही होगा।

"आप.......? कहीं गिर जाते तो......?" संभूति खीर रखकर दौड़ी और उसे अपनी बाहों का सहारा दिया।

"मैं ठीक हूँ संभूति.......बिल्कुल ठीक ! तुम्हारे पवित्र स्नेह, त्याग और तपस्या ने मुझे बिल्कुल ठीक कर दिया है!" पीयूष ने हँस कर कहा।

संभूति के लग रहा था, जैसे पीयूष की हँसी से जीवन झर रहा है, उसके निस्तेज मुख से प्रसन्न-आलोक की रश्मियाँ फूट रही हैं। उसने मन ही मन उस ईश्वरीय सत्ता को धन्यवाद दिया, जिसने कुछ क्षणों में ही मृत्यु मुख में पहुँचे उसके पति को जीवन के सुखमय आंगन में लाकर खड़ा कर दिया था।

संभूति ने किचिन में ही आसन बिछाया, पीयूष को बैठाया और एक कटोरी में खीर परोस दी।

"न..........न.........संभूति। अकेले नहीं खाऊँगा, तुम को मेरे साथ खाना होगा।" पीयूष बोला।

"मैं बाद में खाऊँगी। कभी आपके साथ खाया भी है ?" संभूति ने मुस्करा कर कहा।

यह सच भी था, अनेकों बार हठ करने के बाद भी संभूति ने उसके साथ भोजन कभी नहीं किया था। वह पूर्णतः भारतीय संस्कारों में बद्ध पत्नी थी जो पति को ही अपना सर्वस्व धन समझती है।

"नहीं संभूति, आज तुम्हारा हठ नहीं चलेगा। तुमने मेरे साथ भोजन नहीं किया तो......रहने दो, मैं भी नहीं खाऊँगा।" पीयूष का स्वर गंभीर हो गया। उसने खीर से भरी कटोरी एक ओर सरका दी।

विवशता थी, उसे पीयूष के साथ बैठकर भोजन के रूप में खीर खानी ही पड़ी। पीयूष ने उससे अधिक मात्रा में खीर खाई। जबकि संभूति बार-बार उसे अधिक न खाने से टोकती रही। उसे डर था कि इतने लम्बे समय से निराहार रहने के कारण अधिक मात्रा में ली गई खीर पीयूष को हानि पहुँचा सकती है। वह चाहते हुए भी उसे नहीं रोक सकी।

दो-तीन दिन से स्वयं संभूति ने भी कुछ नहीं खाया था। दोनों पति-पत्नी ने प्रसन्नता से भोजन किया फिर पीयूष बोला—

"संभूति, अब मैं उस रुग्ण कमरे में नहीं सोऊँगा। चलो हम अपने शयन कक्ष में ही सोएँगे। इतने लम्बे समय तक मैं तुम्हारे यौवन की सरसता से वंचित रहा हूँ। आज......आज तो........।" पीयूष ने अपनी रति इच्छा संकेतों से प्रकट की।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"न.......अभी नहीं........।" कटाक्ष करते हुए संभूति ने तुरन्त मना किया—"अभी पूरी तरह ठीक भी नहीं हुए हो। ऐसा करोगे तो दोबारा बीमार हो जाओगे।"

"मैं ठीक हूँ संभूति, देखो तुम्हें प्रमाण देता हूँ।" कहते हुए पीयूष ने लपक कर संभूति के युवा मादक यौवन को अपनी बाहों में जकड़ लिया।

पीयूष के आलिंगन में ऊष्मा थी, एक स्वस्थ पुरुष की भाँति बल था, जबकि वह हड्डियों का ढांचा मात्र था। संभूति को आश्चर्य हुआ। पीयूष ने उसे अपनी बाहों में भर कर उठा लिया और शयन कक्ष की ओर चलने लगा।

"अरे.......अरे......क्या करते हो ? गिर पड़ोगे। उतारो.......मुझे।" संभूति घबरा कर चीखी। वह समझ रही थी कि क्षीणकाय पीयूष उसके स्वस्थ शरीर के वजन को उठाकर चल नहीं सकता, किन्तु पीयूष ने उसे मुक्त नहीं किया। वह बिना किसी लड़खड़ाहट के आराम से शयन कक्ष के द्वार तक पहुँच गया। संभूति उसकी बाँहों में मुक्त होने के लिए मचलती रही। अन्ततः उसे बैडरूम में जाकर ही मुक्ति मिली।

दो-तीन महीनों से उपेक्षित बैडरूम ! स्वयं पीयूष ने ही आनन-फानन में बिस्तर व्यवस्थित किया। संभूति धर्म संकट में पड़ी बार-बार उसे टोकती रही, इन्कार करती रही किन्तु पीयूष तो जैसे कामोन्माद से उन्मत्त हो गया था। उसने संभूति की एक न सुनी और उसे सेजारूढ़ होने को विवश होना ही पड़ा।

संभूति पीयूष की विचित्र काम क्रियाओं से चकित हो उठी। ऐसा वेग, ऐसी प्रचण्डता इसके पूर्व उसने पीयूष में कभी नहीं देखी थी। उसके विवाह को पूरा एक वर्ष व्यतीत हो चुका था। उसने ऐसे रतिद्वन्दों के अवसर पर अनेकों बार यह भी अनुभव किया था कि पीयूष में सम्पूर्णतः उसे रति-तृप्ति-प्रदान करने की क्षमताएँ इतनी अधिक नहीं हैं, किन्तु आज तो जैसे उसका सम्पूर्ण पौरुष जाग्रत हुआ था। उनका यह भोगाभिसार प्रातः 4 बजे के पूर्व समाप्त नहीं हो सका। आज की रात जैसे संभूति की तृप्ति की प्रथम रात थी। वह इतनी श्रम-क्लान्त हो गई कि उससे बिस्तर से उठते नहीं बना, जबकि पीयूष अभी भी उतना ही तरोताजा था जैसे पूर्ण स्वास्थ की अवस्था में नवयुवक।

दोनों आंलिगन बद्ध हो नींद में डूब गए। लगभग 8 बजे संभूति की नींद टूटी। पीयूष ने अभी भी उसके यौवनिक देहयष्टि को अपनी बाहों की कारा में कैद कर रखी थी। संभूति ने उसे अपने से पृथक करने का प्रयास किया किन्तु बाँहें जैसे सख्त हो गई थीं। संभूति ने अपना पूरा बल लगा दिया किन्तु पीयूष के दृढ़ बन्धनों से मुक्त नहीं हो सकी।

अचानक उसकी दृष्टि पीयूष की आँखों की ओर उठी। संभूति के होश उड़ गए। पीयूष की आँखें उल्टी हुई थीं, उनमें जीवन का प्रकाश नहीं मृत्यु की वीरानी थी। संभूति चीख उठी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"पीयूष......पीयूष.......।" पीयूष की बाँहों में बद्ध संभूति ने चीखते हुए पीयूष को झिझोंड़ा किन्तु पीयूष की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हो सकी। संभूति ने पीयूष की हृदय की धड़कनों को सुना, उसकी नब्ज पर हाथ रखकर देखा। न तो वहाँ हृदय की धड़कन थी और ना ही नाड़ी का संचार।

अधिकाधिक प्रयास के बाद संभूति मुक्त हो सकी। यह निश्चित हो चुका था कि पीयूष का जीवन अब शेष नहीं रहा। संभूति बिलख उठी। रोते-रोते उसने स्वयं के कपड़े पहने और फिर नग्न पीयूष को भी जैसे-तैसे वस्त्रावरित किया।

उसका सुहाग छिन चुका था, सिन्दूर की ललाम रेखा मिट चुकी थी, जीवन का आश्रय भी नहीं रहा था। कहाँ जाएगी वह ? कुल अठारह बसंत ही तो देखे थे उसने। पीयूष अकेला था, विवाह के दो माह पश्चात् ही दीर्घ रोग को भोग कर उसकी माँ अर्थात् पीयूष की माँ ने स्वर्गारोहन कर लिया था। पीयूष के पिता पहले ही स्वर्गवासी हो चुके थे।

संभूति के मैके में भी मात्र माता-पिता ही थे। पिता शासकीय सेवा में थे, इसलिए उनका परिवार संभूति और पीयूष के पास नहीं रहता था। पीयूष भी शासकीय विद्यालय में शिक्षक के पद पर था। कुल पाचँ वर्ष की ही सर्विस हुई थी उसकी।

महाशोक में भी संभूति लोक-लाज को नहीं भूल सकी। उसने पीयूष के शव को पलंग से उतारा और शयन कक्ष से उठाकर उसके रुग्ण कक्ष तक लाई। धरती पर ही बिस्तर को व्यवस्थित कर उसने पीयूष के शव को बिस्तर पर लिटाकर उस पर चादर डाल दी। उसे बार-बार एक ही बात शूल जैसी चुभ रही थी कि उसका पुनर्जीवित पति मात्र संभोग के कारण ही चल बसा। अपराध बोध से ग्रस्त हो उठी संभूति, किन्तु अब किया भी क्या जा सकता था ? जो होना था वह हो गया।

कुछ देर में ही आस-पास के पड़ोसी एकत्र हो गए। महिलाओं ने संभूति को सम्हाला। पुरुष वर्ग पीयूष के अन्त्येष्टि संस्कार की व्यवस्थाओं में जुट गए। पीयूष के श्वसुर यहाँ से लगभग 300 कि. मी. की दूरी पर थे, उन्हें समाचार मिल भी जाए तो उनका इतना शीघ्र आना संभव नहीं हो सकता था। अतः निर्णय लिया गया कि दाह संस्कार बिना श्वसुर की उपस्थिति में कर दिया जाए।

रोती-बिलखती संभूति की चूड़ियाँ पीयूष की लाश पर तोड़ी गईं, उसका सिन्दूर पोंछा गया फिर उसे अपने पति के मुख का अंतिम दर्शन कराया गया। उपस्थित समुदाय संभूति की सुकुमारिक आयु और लावण्यमयी सुन्दरता को देख कर दुःख से भर उठा। विधवा के रूप में कैसे जीवन कटेगा बेचारी का ? किसी ने कहा—

"पूर्वजन्म के कर्मफल तो भुगतना ही पड़ेंगे।" किसी ने कहा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"भाग्य में लिखे को कौन मेट सकता है भाई ? जो भी हुआ, अब तो उस बेचारी को अपने पति की नौकरी के लिए हम सब को प्रयास करना चाहिए। अनुकम्पा नियुक्ति तो हो ही जाएगी। इतनी पढ़ी-लिखी तो होगी ही वह ?

सदैव सुस्तगति से चलने वाला पीयूष के विभाग की गति में ऐसे समय में कोई परिवर्तन-नहीं आया। होना तो यह था कि दाह संस्कार के पूर्व ही पीयूष के परिवार को सहायतार्थ धनराशि जो दो-तीन हजार रु. होती है, मिल जानी चाहिए, किन्तु विभाग को उसके अपने कर्तव्य का बोध हो ही क्यों ? जिस देश में ऊपर से लेकर नीचे तक भ्रष्टाचार का दावानल दहक रहा हो, वहाँ नैतिकता की कैसी उपस्थिति ?

"राम नाम सत्य है" के गंभीर घोष के साथ ठठरी से लगा पीयूष का कंकालवत शरीर उठाया गया। कन्धा देने वाले उसके विभागीय मित्र थे, पड़ौसी थे। महिलाओं ने संभूति को पकड़ा और वे सब अर्थी के लिए जन समूह के पीछे चल पड़ीं।

चिता चुन दी गई। पीयूष का कंकाल सा शरीर चितारोहित कर दिया गया। अब मुखाग्नि देने की बारी थी। कौन मुखाग्नि दे पीयूष को ? एक नौजवान बोला—

"मुखाग्नि भाभी (संभूति) से ही दिलाई जानी चाहिए।" इस पर बुजुर्गों ने एतराज किया।

"भला आज तक किसी पत्नी ने पति को मुखाग्नि दी है ?" नवयुवक चुप हो गया।

अन्ततः पीयूष के एक विद्यार्थी को मुखाग्नि संस्कार के लिए उपस्थित जन समुदाय ने पात्र माना।

एक लम्बे बाँस में बंधे एक लोटे में घृत भर दिया गया, जिसे उस विद्यार्थी को चिता में अर्पित कर देना था। चिता प्रज्ज्वलित की गई, इसके पूर्व की अग्नि चिता को अपने आग्नेय-आंलिगन में ले, मुखाग्नि का घृत डाला जाए, अचानक चिता में हलचल सी हुई।

अकस्मात ही चिता में चुनी हुई लकड़ियाँ बिखरीं और चिता के ऊपर से नीचे गिरीं। उपस्थित प्रत्येक जन चौंक उठा। और......और.......अनेक कण्ठों से भय मिश्रित चीत्कार के स्वर निकल पड़े। चिता के समीप खड़े लोग वहाँ से हट गए।

पीयूष चिता पर बैठा था, वह पीयूष जो मुर्दा के रूप में चिता आस्तरण में लेटा हुआ था। अब जीवित व्यक्ति के समान चिता के ऊपर बैठा था। अग्नि की लपटें उठने लगी थीं।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संभूति ने भी यह विलक्षण और चकित असंभव दृश्य को देखा। वह पीयूष को पुकारती, महिलाओं के झुण्ड से चिता की ओर दौड़ी।

"पीयूष जल्दी चिता से कूदो, वर्ना आग तुम्हें जला देगी।"

जैसे पीयूष को होश आया। लपटें उसके पास तक आ चुकी थीं। वह त्वरित गति से चिता से कूद पड़ा। संभूति ने लोक-मर्यादा को तिलांजलि देकर वहीं उसे अपनी बाँहों में भर लिया।

उपस्थित जन समुदाय का भय कम हो चुका था। वे उन दोनों के समीप आ गए। एक बुज़ुर्ग को अपने समीप पाकर संभूति ने पीयूष को अपने से पृथक किया।

"बेटे तुम ठीक तो हो न ?"

"हाँ दादाजी, बिल्कुल ठीक हूँ ! पर यह क्या ? आप सब मुझे जिन्दा ही जला डालना चाहते थे।" पीयूष ने अपनी चिता में ऊंची होती जा रहीं लपटों को देखते हुए कहा।

"नहीं बेटे, तुम सचमुच मृत्यु को वर चुके थे। यह तो संभूति बिटिया का भाग्य और उसकी तपस्या ही है कि तुम चिताग्नि की गोद से बाहर आ गए। सुना करता था कि मौत के उस पार से कभी-कभी जीव वापस अपने शरीर में आ जाता है। यम के दूत गलती से उसके प्राणों को ले जाते हैं और जब उन्हें अपनी गलती का अहसास होता है तो वापस प्राण को उसी के शरीर में डाल भी जाते हैं। शायद तुम्हारे साथ भी ऐसा ही हुआ है। अब चलो, खुशियाँ मनाओ, विधवा हो गई बिटिया संभूति की माँग में सिन्दूर भरो।" बुजुर्गवार ने उन्हें आशीष दी।

उपस्थित जन संकुल प्रसन्न हो उठा। जैसे प्रसन्नता का सागर श्मशान में उमड़ पड़ा। हरेक व्यक्ति पीयूष को नवजीवन प्राप्ति की बधाई दे रहा था। पीयूष जो पूर्णरूपेण स्वस्थ दिखाई दे रहा था, हँस-हँस कर सभी की बधाइयाँ स्वीकार कर रहा था। मानव समुदाय के साथ पीयूष अपने घर की ओर लौटा। इधर से अर्थी पर जाने वाला, उधर से स्वयं अपनी चिता से उतरकर पैदल घर की ओर जा रहा है, यह सुनक़र प्रत्येक व्यक्ति चकित था। कुछ शेष तो उस भीड़ के साथ ही चलने लगे। पीयूष के घर तक पहुँचते-पहुँचते, यह संख्या सैकड़ों में बदल चुकी थी।

□□

उस दिन सूर्या प्रातः से ही प्रसन्न था। उसकी सारी उदासीनता, अवसाद जैसे पलायन कर गया था। अज्ञाततः उसका हृदय दिन भर से हर्षोत्सव मना रहा था।

सन्ध्या समय वह होटल विस्मार्क में गया। पंचसितारा होटल का मैनेजर उसका परिचित था, परिचित नहीं बल्कि आतंकित था। उसने एक बार नहीं अनेकों



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बार सूर्या की तीक्ष्ण बुद्धि और अप्रतिम बल के चमत्कार देखे थे। वह यह भी जानता था कि सूर्या का सम्बन्ध किसी अज्ञात शक्तिशाली संगठन से था। उसने अनेकों बार अण्डरवर्ल्ड के लोगों को सूर्या के सामने घुटने टेकते हुए देखा था।

अण्डरवर्ल्ड और आपराधिक तत्वों से जुड़े होने के पश्चात् भी मैनेजर ने सूर्या को कभी अपराध करते हुए नहीं देखा था। उसने सूर्या को माँस-मदिरादि के खान-पान से भी कोसों दूर देखा था।

सूर्या कभी-कभार ही होटल विस्मार्क में आता था। वह जब भी होटल में आता, होटल में उपस्थित युवतियों के आकर्षण का केन्द्र बन जाता। बलिष्ठ देह और गौरवर्ण, चमकती आंखें, तेजोमय मुखमण्डल, जैसे सूर्या कामदेव का अवतार था। अनेक युवतियाँ उसके सानिध्य के लिए तड़प उठतीं किन्तु सूर्या का आकर्षण लड़कियों की ओर बहुत कम था।

वह सीधा अपने कमरे में जाता, जो हमेशा उसके लिएं, उस होटल में रिजर्व रहता था। कुछ समय वह कमरे में व्यतीत करता फिर होटल में कुछ समय रुककर, डिस्को, ब्रेकडान्स देखता और फिर वापस चला जाता। डान्स शो के मध्यं में ही उससे कुछ लोग मिला करते थे, उनमें अधिकांशतः विदेशी लोग ही ज्यादा होते थे। सूर्या उनसे क्या बातें करता है ? यह किसी को पता नहीं था।

उस रात डान्स शो के दौरान एक फ्रांस जोड़ा सूर्या से मिला था। फ्रांस गर्ल अत्यन्त सुन्दर और युवा थी, साथ ही उन्मुक्त, स्वच्छन्द यौन जीवन की समर्थक थी। प्रथम नजर में ही उसके उमंग भरे मन को सूर्या भा गया।

लिलि ! हाँ लिलि ही नाम था, उस यौवनवती रूपसी का। उसने निःसंकोच सूर्या का हाथ थामते हुए प्रस्ताव किया—

"मि. सूर्या, आपको देखकर मैं खुद को नहीं रोक पा रही हूँ। मेरे यौवन से भरे, रस से भीगे अंगों में एक आन्दोलन छिड़ गया है। क्या मैं एक रात आपके साथ गुजार सकती हूँ ?" लिलि ने मादक दृष्टि से देखते हुए अपनी वासनात्मक इच्छा उसके सामने प्रकट की। सूर्या ने उसे गम्भीर दृष्टि से देखा फिर दो टूक 'न' करते हुए इन्कार कर दिया।

"नो मैडम लिलि। यह असंभव है।" पता नहीं क्यों यह कहते हुए सूर्या की वाणी कुछ काँप गई थी।

"क्या आज रात आप किसी के साथ एंगेज हैं ?" उसके गुलाबी अधरदलों पर मुस्कान का नृत्य हुआ।

"नहीं......।" सूर्या का उत्तर था।

"कोई बात नहीं, लेकिन मैं कुछ समय एकान्त में आप के साथ गुजार सकती हूँ।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्ततः सूर्या को उससे सहमत होना पड़ा। वे दोनों लिलि के कमरे में पहुँच गए। लिलि का साथी भी साथ था। कमरे में पहुँचते ही लिलि ने उसे अपनी कोमल बाँहों में भर लिया और चूमने लगी।

सूर्या ने उसे पृथक करने का प्रयास किया। लिलि का मित्र हँस उठा।—"डार्लिंग हेल्प मी।" कम्पित अधरों से लिलि ने अपने साथी से सहायता की गुहार की।

उसके साथी मित्र ने सूर्या से लिपटी लिलि का स्कर्ट खोल दिया। फिर पारदर्शी पेन्टी को भी अंगुलियों से खींचकर उसे लिलि की स्निग्ध सुडौल जंघाओं से अलग कर उसकी ब्रा भी निकाल फेंकी। कामाग्नि के दावानल में जलती लिलि ने सूर्या के वस्त्र उतार डाले, उसे बलाततः पलंग पर पटक कर वह सूर्या पर पुरुष की भाँति आरूढ़ हो गई।

"ओह, यह आश्चर्य है।" लिलि के साथी ने सूर्या के नग्न बदन को देखते हुए अपना मूवी कैमरा सम्हाल लिया। वह इण्डियन सेक्स फेंटैसी को अपने मूवी कैमरे में कैद करना चाहता था।

सूर्या ने लिलि को रोकने का बहुत प्रयास किया, किन्तु लिलि नहीं मानी, उल्टे उसकी कामुक क्रियाओं से सूर्या का पौरुष पूरी तरह आन्दोलित हो उठा। वह चाहते हुए भी स्वयं को नहीं रोक सका।

लिलि का साथी उन एकान्त क्षणों की सूक्ष्मता को बड़े उत्साह से कैमरे में कैद करता रहा। वह बीच में लिलि को प्रोत्साहित भी करता जाता था। लिलि ने अपना पूरा सेक्स कौशल सूर्या पर लगा दिया। उसके ऊपर आरूढ़ लिलि चकित थी। उसके जीवन में सूर्या पहला ऐसा पुरुष था, जो दो बार उसे यौनतुष्टि के चरम शिखर पर पहुँचा चुका था फिर भी उसमें कोई निर्बलता, स्खलनता नहीं थी।

पसीने में नहाई, हांपती लिलि श्रमक्लान्त होकर सूर्या के वक्ष पर गिर पड़ी। उसकी आंखें आनन्दातिरेक में मुंद गईं। यह कैसा आनन्द ? लिलि की आंखों के चारों ओर नीलाहट उभरने लगी थी। आरम्भ में उसके साथी ने विशेष ध्यान नहीं दिया किन्तु जब लिलि के ओठों से झाग निकले तो वह चौंका।

उसने घबरा कर लिलि का नाड़ी परीक्षण किया, फिर वक्षस्थल पर हाथ रखकर हृदय की धड़कनों की ध्वनि सुनने का प्रयास किया। लिलि की नब्ज डूब चुकी थी, हृदय की धड़कनें बन्द हो चुकी थीं। उसकी आँखें भी उलट चुकी थीं। वह पूरी तरह मर चुकी थी।

"तुमने इसको मार दिया।" युवक आतंक से चीख उठा। उसने झपट कर रिवाल्वर निकाला और सूर्या पर तान दिया।

"इसमें मेरा क्या दोष है ?" सूर्या निडर स्वर में बोला।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"लेकिन अब तुम नहीं बच सकते।" दाँत पीसता हुआ युवक गुर्राया।

"बेशक ! लेकिन तुम मुझे यहाँ मारकर कानून से बच सकोगे ?" चुभता हुआ प्रश्न सूर्या ने किया।

"पिट.....ट्......।" की एक हल्की ध्वनि हुई। युवक के रिवाल्वर से एक शोला निकला। सूर्या सम्हल नहीं सका। रिवाल्वर की गोली उसके सीने से टकराई, किन्तु यह क्या ? गोली सूर्या के सीने से टकराकर उसके वक्ष में धँसने के स्थान पर नीचे गिर गई।

सूर्या ने सायलेंसर लगे रिवाल्वर से गोली निकलते ही स्वयं को मृत्युमुख में महसूस कर लिया था, किन्तु उसे लगा, जैसे कोई छोटे से पत्थर का टुकड़ा उससे आकर टकराया हो। उधर आश्चर्य से नेत्र विस्फारित करते हुए फ्रान्सीसी युवक कह रहा था—

"ओह नो ! इट्स नॉट इम्पासिबल।"

सूर्या ने आँखें खोलीं। उसके पास की रिवाल्वर का बुलेट पड़ा हुआ था। फ्रान्सीसी कभी अपने हाथ में दबे रिवाल्वर को देखता तो कभी सूर्या को। अचानक उसने पुनः रिवाल्वर को सीधा किया और ट्रेगर दबाता चला गया। एक के बाद एक पाँचों गोलियाँ रिवाल्वर से निकल-निकल कर सूर्या से टकरा-टकरा कर बिस्तर पर गिरने लगीं।

सूर्या स्वयं चकित था। क्या रिवाल्वर में भरी हुई, चल चुकी गोलियाँ नकली थीं ? वह फुर्ती से उठा। इसके पूर्व कि चित्रलिखित सा स्तब्ध युवक भागे सूर्या ने उसे पकड़ लिया।

"मुझे क्षमा कर दो, आयरन मेन।" घिघयाते हुए युवक ने सूर्या से प्राणों की भीख माँगी। सूर्या उस समय भी नग्न था। उसने आसपास नजर डाली कुछ ऐसी चीज उसे दिखाई नहीं दी, जिससे वह उस फ्रान्सीसी को बाँध कर कपड़े पहनता।

"भागने की कोशिश मत करना।" सूर्या ने अत्यन्त ठण्डे स्वर में कहते हुए युवक को छोड़ दिया फिर उस पर नजर रखे-रखे अपने कपड़े पहने।

"क्या तुम्हारे रिवाल्वर में नकली गोलियाँ थीं।" युवक के हाथ से रिवाल्वर छीनते हुए सूर्या ने पूछा।

"नहीं....।" बड़ी मुश्किल से उसने उत्तर दिया।

"अगर इस लड़की की मौत के विषय में किसी से कुछ कहा तो परिणाम मौत होगा।" कहते हुए सूर्या ने अपनी जेब से एक डिब्बी जैसा यंत्र निकाला। यंत्र का आकार चपटा था और मुश्किल से 3 × 3 इंच में था।

सूर्या ने यंत्र में लगे एक स्विच को दबाया। तुरन्त उस यंत्र से एक छोटा सा रिसीवर निकल आया। सूर्या ने नम्बर पुश किए, तुरन्त ही सम्पर्क हो गया ! उधर से आवाज आई।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"यश माय बॉय।"

"आपके आदेशानुसार मैं इस फ्रान्सीसी जोड़े से मिला होलीफादर। जो हमें चाहिए मैं इससे ले चुका हूँ, किन्तु इसी दौरान लिलि...........।" सूर्या कुछ अटका।

"क्या हुआ इसी दौरान माय बॉय ?" उधर से कथित होलीफादर की आवाज आई।

"लिलि नहीं मानी महान सूपा। वह अत्यधिक कामोत्तेजना का शिकार होकर मुझसे लिपट गई और इस समय वह मेरे सामने मृत-अवस्था में पड़ी है। उसका साथी सहमा हुआ मेरे पास ही है। लिलि की मृत्यु को यह सहन नहीं कर सका और इसने पूरा रिवाल्वर मुझ पर खाली कर दिया।"

"तुम ठीक तो हो मेरे बच्चे।" उधर से सूपा का स्वर सुनाई दिया।

"जी हाँ, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। रिवाल्वर की छैहों गोलियाँ मेरे सीने पर लगीं और........बहुत आश्चर्य की बात है फादर, गोलियाँ मेरे सीने से टकरा-टकरा कर फूलों की तरह गिरती रहीं। मेरे सीने पर किंचित मात्र भी घाव नहीं है।"

"ओह........गोलियाँ नकली होगीं बेटे।"

"नहीं पर ठहरो मैं अभी परीक्षण कर आपको बताता हूँ।" कहते हुए सूर्या ने अपना स्वयं का लोडेड रिवाल्वर निकाला। उसकी नाल को अपने सीने पर रखा और ट्रेगर दबा दिया। "धाँय" की अनुगूंज हुई। गोली सूर्या के वक्ष से लगी और पहले की गोलियों के समान ही उससे टकरा कर नीचे गिर गई।

गोली की आवाज से होटल की वह मंजिल गूंज उठी। अधिक उत्साह में सूर्या यह भूल गया कि गोली चलने की आवाज से सारा होटल एकत्रित हो जाएगा। पुलिस आ जाएगी और लिलि की लाश मुसीबत का कारण भी बन सकती है।

उधर अपने सुरक्षित केबिन में बैठा होटल का मैनेजर हड़बड़ाया। होटल की सुरक्षा की दृष्टि से होटल मालिक ने प्रत्येक कक्ष में अदृश्य रूप से वीडियो कैमरे फिट कर रखे थे। उसने लिलि के रति प्रसंग से लेकर तत्क्षण घटित हुए क्षण तक के सारे दृश्य खुली आँखों से देखे थे। प्रत्येक दृश्य पर वह काँप उठा था। अब सूर्या उस विचित्र से फोन पर किससे क्या बात कर रहा है ? उसे सुनाई नहीं दे रहा था। उसने झटपट वीडियो का स्विच ऑफ किया। इसके पूर्व कि होटल में हंगामा हो, होटल के सुरक्षा-अधिकारी उस कमरे तक पहुँचें। मैनेजर स्वयं पहुँच जाना चाहता था। उसे स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि किसी ने सूर्या के विरुद्ध कोई कार्यवाही कर दी तो उसका जीवन ही नहीं होटल का समूचा अस्तित्व ही संकट में पड़ जाएगा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैनेजर जब सूर्या वाले लिलि के कमरे में पहुँचा तो द्वार के आगे भीड़ लग चुकी थी।

"क्या हुआ ? आप लोग क्यों भीड़ लगाए हुए हैं ?" अंजान बनते हुए मैनेजर ने कहा।

"कमरे में गोली चली है। बहुत कहने पर भी दरवाजा नहीं खोला जा रहा।" उपस्थित भीड़ में से एक व्यक्ति बोला।

"ठीक है, आप लोग जाइए। मैं देख लूँगा।" मैनेजर ने कहा और द्वार खटखटाते हुए सूर्या को संबोधित किया।

"मि. सूर्या, यह मैं हूँ होटल मैनेजर वी. प्रसाद।"

सूर्या ने द्वार खोला, भीड़ को देखा फिर प्रसाद से बोला— "कम मि. प्रसाद। इस भीड़ को हटाइए। दरअसल अत्यधिक खुशी के कारण लिलि ने एक पटाखा चला दिया था।" सूर्या ने द्वार के बीच में खड़े होकर कहा।

"कोई बात नहीं।" मैनेजर प्रसाद कहकर मुड़ा और भीड़ की ओर उन्मुख होकर बोला।

"कृपया आप सब जाएँ, कोई खास बात नहीं है।" वह पुनः सूर्या की ओर मुड़ा, बोला—

"ठीक है मि. सूर्या, आप आराम करें, मैं चलता हूँ। आपको कष्ट दिया, क्षमा करें।"

सूर्या ने द्वार बन्द कर लिया। मैनेजर अपने केबिन में चिन्तातुर होकर टहल रहा था। उसके होटल में एक लाश पड़ी थी और वह पुलिस में सूचना भी नहीं दे सकता था। वह क्या करे ? उसकी समझ में नहीं आ रहा था। उसने दोबारा वीडियो चालू कर दिया।

स्क्रीन पर तस्वीर उभरी। प्रसाद जैसे आसमान से गिरा। इस समय लिलि के कमरे में सूर्या और फ्रान्सीसी के अतिरिक्त एक नवयुवक और एक नवयुवती और भी थे। कमरे के छोटे से टेबल पर शल्य चिकित्सा के उपकरण रखे थे।

उस समय भी लिलि की लाश पूरी तरह नग्न थी। प्रसाद देख रहा था कि लिलि के शरीर का गोरापन पूरी तरह नीलवर्ण में बदल चुका था। जैसे लिलि किसी जहरीले नाग का शिकार हुई हो अथवा उसने तीक्ष्ण विष खा लिया हो।

युवती ने शल्य-उपकरण उठाया। उसमें तेजधार थी। युवक ने लिलि के शव को पलंग से उतार कर जमीन पर रख दिया। उसके बाद उसने लिलि की लाश के दोनों स्तनवृंत्तो (निपिल) के छिद्र पर इंजेक्शन लगाए। कुछ क्षण वह गौर से देखता रहा। शायद इंजेक्शन की प्रतिक्रिया का अध्ययन कर रहा था। कुछ देर बाद वह युवती से बोला।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"अब तुम ऑपरेट कर सकती हो वेणी।"

"ओ. के.।" युवती ने कहा और कुशलता से लिलि की नाभि के नीचे लगभग दो इन्च का चीरा लगाकर उसकी खाल को इधर-उधर उलटा और बीच में पिन फंसा दी। इससे लिलि की नाभि क्षेत्र के नीचे एक आंतरिक्ष पैदा हो गया।

युवती के हाथ बढ़ाते ही, युवक ने रिस्टवाच के आकार का एक यंत्र वेणी को थमा दिया। एक क्षण वेणी ने उसे देखा फिर उसमें लगे 2-3 स्विच्स को दबाया। यंत्र में लाल, हरी, पीली रोशनी झिलमिलाई। वेणी ने संतुष्ट होकर यंत्र को नाभी के नीचे शल्य क्रिया से बनाए छिद्र में आसानी से जमा दिया फिर छिद्र बन्द कर टाँके लगाए। इसके बाद नग्न लिलि को उसके कपड़े पहना दिए और दोबारा पलंग पर लिटा दिया।

वेणी की नजरें अपनी कलाई घड़ी पर जम गई। एक मिनट......दो मिनट..... और जैसे ही पाँच मिनट गुजरे........लिलि पलंग से उठ गई। उसने एक अंगड़ाई ली। सूर्या ने तत्क्षण उसकी बाँह पकड़ ली।

वी. प्रसाद पर आश्चर्य के दौरे पड़ रहे थे। वह अपनी आँखों के सामने विलक्षण चमत्कारों को देख रहा था। सूर्या ने दोस्ताना ढंग से लिलि का हाथ पकड़ा और फ्रान्सीसी सहित, युवक-युवती (वेणी) के साथ कमरे से बाहर आ गया।

यह कत्ल था ? अथवा दुर्घटना ? या लिलि की मृत्यु हुई ही नहीं ? वी. प्रसाद कुछ समझ नहीं पा रहा था। उसने अपना सिर थाम लिया।

सूर्या, लिलि और उसका फ्रान्सीसी साथ एक गाड़ी (कार) में बैठे और वेणी तथा उसका सहायक दूसरी गाड़ी में। कार में बैठते ही सूर्या ने अपना जेबी फोन निकाला और 'लिलि' को कहाँ ले जाना है ? विषय में सूपा से सम्पर्क किया।

सूपा ने उत्तर दिया—

"माय बॉय, डैडबॉडी को किसी एकान्त जगह पर छोड़ आओ। नीलेश और वेणी उसकी व्यवस्था कर देंगे। लिलि के साथी को प्लेटफार्म नम्बर OS/1 पर छोड़ दो। बस तुम्हारा काम खत्म।" कहकर सूपा ने फोन बन्द कर दिया।

सूर्या ने उसी क्षण पीछे कार में बैठे आ रहे नीलेश और वेणी से सम्पर्क कर सूपा का आदेश उन्हें सुना दिया। नीलेश-वेणी ने सहमति व्यक्त की। कार शहरी सीमा को पार करती हुई जनशून्य क्षेत्र की ओर बढ़ी। सूर्या का इरादा था कि ईसाइयों के पुराने कब्रिस्तान की घनी झाड़ियों में और जंगल के समान बाहुल्य मात्रा में उगे पेड़ों के मध्य लिलि की लाश डाल दी जाए।

कार श्मशान के पास से गुजरी तब रात के बारह बज रहे थे। सड़क सुनसान थी। वस्तुतः यह श्मशान सिटी के उपनगर का था। इस उपनगर में



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रमिक वर्ग ही अधिक रहता था। कुछ भिखारियों ने भी अपनी झोंपड़ियाँ उस बस्ती में बना रखी थीं।

बस्ती की श्मशान भूमि पूरी तरह उपेक्षित थी। कोई बाउन्ड्रीवॉल नहीं, कोई टीनसैड नहीं। हाँ प्रकृति ने वहाँ ज़रूर पेड़-पौधे उगा रखे थे। उनमें पीपल, बरगद, नीम जैसे दीर्घजीवी और छायादार पेड़ भी थे।

अचानक.........! तेजी से चलती कार के टायर चीख उठे। सूर्या ने चौंककर विण्डस्क्रीन से उस पार देखा किन्तु वहाँ कोई नहीं था, सड़क खाली थी।

"क्या बात है ? इस तरह गाड़ी क्यों रोकी ?" सूर्या कुछ तेज स्वर में ड्रायवर से बोला।

"ऐसा लगता है कोई औरत गाड़ी के नीचे आ गई है। मैंने उसे कार के बीचों-बीच साफ-साफ देखा है।" परेशान स्वर में कहता ड्रायवर टार्च लिए नीचे उतर आया। उसके साथ ही सूर्या भी नीचे उतरा।

दोनों ने कार के नीचे, सड़क पर गंभीरता से देखा किन्तु वहाँ कुछ न था। ड्रायवर कुछ परेशान हुआ।

"यहाँ तो कुछ भी नहीं है।" सूर्या ने ड्रायवर को तीक्ष्ण नजरों से देखा।

"आश्चर्य की बात है। मैंने खुद उसे कार के सामने आते स्पष्ट देखा है।" ड्रायवर ने चकित स्वर में कहा।

"ठीक है अब चलो।" सूर्या ने आदेश दिया। तब तक वेणी की गाड़ी भी आ गई। वेणी स्वयं ड्रायव कर रही थी। उसने गाड़ी रोक कर पूछा।

"क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं। ड्रायवर को लगा था, जैसे कोई औरत सामने आ गई है।" सूर्या ने अपनी गाड़ी का गेट खोलते हुए कहा।

"अरे सचमुच ! तुम्हारी गाड़ी के नीचे कोई पड़ा है।" ड्रायविंग सीट पर बैठी हुई वेणी चीखी। दरअसल उसे अपनी गाड़ी की हैडलाइट्स में सूर्या की गाड़ी के नीचे पड़ी हुई एक स्त्री का आकार स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

कार का द्वार खोलते-खोलते सूर्या रुका और जल्दी ही वहीं बैठकर कार के नीचे देखने लगा। सचमुच एक स्त्री वहाँ पड़ी थी। वेणी और नीलेश कार से उतर आए। ड्रायवर ने सावधानी से कार को आगे बढ़ाया।

स्त्री सड़क पर औंधे मुँह पड़ी थी। कार को उसके ऊपर से हटने पर सूर्या ने उस स्त्री को सीधा किया। वह अत्यन्त सुन्दर युवती थी। आयु लगभग 25 वर्ष, गोरा रंग, नवनीत सा स्निग्ध सौन्दर्य। लेकिन उसकी वेशभूषा विचित्र थी।

सुन्दरी ने मात्र एक लाल साड़ी पहन रखी थी। गले में रुद्राक्ष की माला, उज्ज्वल ललाट पर सिन्दूर का गोल टीका, पतले सरसता से भरे अधरोष्ठों पर



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वाभाविक लालिमा। चमकता हुआ सिन्दूर उसके पास ही पड़ा था। युवती का कद असाधारण रूप से लम्बा था। वैसे ही उसके सघन काले, कटिक्षेत्र तक झूलते हुए सिर के खुले हुए बाल थे। ऐसा लगता था, मानो वह सड़क पर गहरी नींद में सो रही हो।

"ईश्वर को आभार ! इसे कहीं चोट नहीं लगी। मात्र घबरा कर अचेत हो गई।" सूर्या ने उसे देखते हुए कहा।

"लगता है, कोई योगिनी-तपस्विनी है।" वेणी ने उसकी नाड़ी को देखते हुए कहा फिर चौंकती हुई पुनः बोली—

"अरे ! इसकी नाड़ी तो गायब है। वेणी ने उसके हृदय की धड़कन भी देखी व्यर्थ। वहाँ जीवन का कोई चिन्ह नहीं था। वेणी ने घोषणा की—

"शी इज डेड। यह पूरी तरह मर चुकी है।"

"अब क्या करें ?" सहज अनायास ही सूर्या के मुख से निकला।

"फिलहाल इसे गाड़ी में रखो। अभी कोई गश्ती पुलिस की गाड़ी इधर आ निकली तो व्यर्थ ही एक नया संकट खड़ा हो जाएगा।" अभी वेणी की बात समाप्त ही हुई थी कि सचमुच गश्ती पुलिस की वान उनके पास आकर रुक गई। योगिनी की लाश अभी भी उसी अवस्था में सड़क पर पड़ी थी।

"क्या बात है ? कौन पड़ी है यह, बीच सड़क पर।" गश्ती इंचार्ज पुलिस इंसपेक्टर अपने डन्डे को हिलाते हुए वान से उतरा।

"यह कोई अज्ञात स्त्री है, ऑफिसर। पता नहीं कब से इसी हालत में सड़क पर पड़ी हुई है। हमने इसे देखा तो रुक गए। शायद इसे चिकित्सकीय आवश्यकता हो। लेकिन यह मर चुकी है।" इसके पूर्व कि सूर्या इन्सपेक्टर को वास्तविकता से परिचित कराए, वेणी शीघ्रता से बोली।

"लगता है, यह आप की गाड़ी से टकरा कर मरी है।" इन्सपेक्टर ने तीखे स्वर में कहा।

"जी नहीं ! अगर ऐसा होता तो, सड़क पर खून-इत्यादि दिखाई नहीं देता ? वेणी ने भी प्रत्युत्तर तेज स्वर में कहा।

इन्सपेक्टर ने झुक कर युवती को देखा। उसे लगा जैसे युवती धीरे-धीरे साँस ले रही है। वह चौंका, उसने युवती का हाथ पकड़ा, लगा जैसे गर्म है। तभी अचानक उसकी नजर युवती के चहरे की ओर उठी। युवती के पद्मायत नेत्र खुले और उसके अधरों पर स्मित ने नृत्य किया। पर एक क्षण, मात्र एक क्षण।

इन्सपेक्टर चीख उठा—

"अरे ! यह जिन्दा है। जिन्दा है।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेणी ने चौंक कर दोबारा युवती का परीक्षण किया। सचमुच वह जीवित थी। उसमें जीवन के पूरे चिन्ह उपस्थित थे। अचानक इन्सपेक्टर की आँखों में एक वहशी चमक आई, मन में कुत्सा ने जन्म लिया, पाप अंगड़ाई लेकर जाग उठा। वह जल्दी से बोला—"हटो.......हटो......., इसे मेडीकल एड की आवश्यकता है। तुम लोग जाओ मैं इसे अस्पताल पहुँचा दूँगा।"

सूर्या जल्दी से जल्दी वहाँ से चला जाना चाहता था। हालांकि उसने इन्सपेक्टर की आँखों में उग रहा अनैतिकता का जंगल देख लिया था, फिर भी वह मौन रह गया। उसने वेणी को चलने का संकेत किया। वेणी अपनी कार की ड्रायविंग सीट पर बैठी और कार स्टार्ट कर दी। इसके पूर्व सूर्या अपनी गाड़ी में बैठ चुका था और संकेत पाकर ड्रायवर ने गाड़ी आगे बढ़ा दी थी।

ईसाइयों के पुराने कब्रिस्तान में पहुँच कर उन्होंने अपना 'कार्य' पूरा किया। लिलि का साथी स्तब्ध दृष्टि से देखता रहा और वेणी सोच रही थी कि यह फ्रान्सीसी युवक अब कुछ समय का ही मेहमान है। प्लेटफार्म नं. OS/1 पर पहुँच कर फ्रान्सीसी सदैव के लिए जीवन से मुक्त हो जाएगा।

दोनों गाड़ियाँ कब्रिस्तान की संकीर्ण सड़क से बाहर निकलीं। कब्रिस्तान के द्वार पर ही सूर्या को एक नौजवान दिखाई दिया। दुबला-पतला शरीर, गोरा रंग, चमकता चेहरा। इतनी रात में इस अकेले नौजवान का कब्रिस्तान में क्या काम ? क्या उसने लिलि की लाश को कब्रिस्तान में देख लिया है ? सूर्या ने ड्रायवर को गाड़ी रोकने का संकेत किया।

कार रुकते ही सूर्या उतरा। वह नवयुवक स्वयं ही उसके पास आ गया। इसके पूर्व कि सूर्या गाड़ी से नीचे उतरता युवक ने पास आकर कहा—

"मि. सूर्या, मैं आपसे अत्यावश्यक रूप से मिलना चाहता था। आपसे कुछ जरूरी बातें भी करनी हैं। इसके लिए हम एकान्त स्थान पर चलेंगे। क्या आप मेरी बात से सहमत हैं ?"

सूर्या के मन में विचार आया, निश्चित यह युवक किसी गुप्तचर संगठन से सम्बन्ध रखता है। उसे उसका नाम कैसे पता चला ? जरूर वह किसी प्रकार से उस पर बहुत पहले से नजर रखे हुए होगा।

सूर्या नीचे उतरा। उसके पीछे की गाड़ी जिसमें वेणु बैठी हुई थी, की गाड़ी भी रुक गई। एक अपरिचित युवक को बातें करते देख वह भी उतरी। उसके साथ नीलेश भी।

"आप मेरा नाम कैसे जानते हैं ?" सूर्या ने प्रश्न किया।

युवक के ओठों पर रहस्यमय मुस्कान थिरक उठी, वह सस्मित बोला—"मि. सूर्या, मैं आपको ही नहीं सूपा को भी जानता हूँ। मैं उसके प्रत्येक कारनामे से



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिचित हूँ और उसके आदमियों से भी। यह डॉ. वेणु माथुर है और इनके समीप खड़े हैं डॉ. नीलेश वर्मा।"

सूर्या ने तत्क्षण रिवाल्वर निकाल लिया। सूपा के विषय में जानने का अर्थ है जानने वाले की मृत्यु। सूर्या का मन कहता था कि सूपा अपराधी नहीं है, जो कुछ अपराध हो रहा है, वह मानवता के लिए है। सूपा मानवतावादी वैज्ञानिक है। उसका स्वामी भी है। सूपा के कार्यों की जानकारी रखने का अर्थ है, उन रहस्यों को जान जाना जिन्हें इस समय गुप्त रखना है।

"सूपा के विषय में जान लेने का अर्थ है, तुम्हारी मौत !" सूर्या खतरनाक स्वर में बोला।

युवक हँस उठा। हँसते-हँसते ही बोला—

"तुम मूर्ख हो सूर्या। तुम्हारी आँखों पर सूपा ने स्वामिभक्ति की पट्टी चढ़ा रखी है। इसलिए तुम्हें उसके जुर्म दिखाई नहीं देते। सच तो यह है कि तुम उसके अपराधों के विषय में जानते ही नहीं। सूपा एक जहरीला नाग है, जिसे तुम जैसे मूर्ख दूध पिला-पिलाकर पाल रहे हो। सूपा.........।" युवक का वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि सूर्या ने रिवाल्वर का ट्रेगर दबा दिया। पर यह क्या ? रिवाल्वर से गोली नहीं निकली। ऐसा लगता था कि रिवाल्वर का चेम्बर खाली है और बिना गोलियों के घूम रहा है। जबकि सूर्या ने अपना रिवाल्वर लोड कर रखा था। ऐसा किस प्रकार संभव है। उसके मुख पर आश्चर्य के चिन्ह उभरे। तत्क्षण उसने रिवाल्वर खोला, गोलियाँ, यथास्थान भरी हुई थीं। फिर भी रिवाल्वर से गोली नहीं चली।

युवक सूर्या के मुख पर आ-जा रहे भावों को सस्मित देख रहा था। वह कुछ बोला नहीं। सूर्या ने पुनः रिवाल्वर की नाल उसकी ओर की और ट्रेगर दबाता चला गया किन्तु परिणाम वही। रिवाल्वर का चेम्बर घूमता रहा, गोलियाँ नहीं चलीं। सूर्या चकित दृष्टि से कभी युवक को तो कभी रिवाल्वर को देखता। अन्ततः युवक जोर से हँस पड़ा फिर बोला—

"सूर्या, यह रिवाल्वर ही नहीं, तुम्हारे सूपा द्वारा विकसित रिवाल्वर भी मेरा कुछ नहीं कर सकती। ठीक वैसे ही जैसे रिवाल्वर की गोली तुम्हें नहीं मार सकती, तुम कुछ समझे ? अब मेरी बात सुनो, आओ उधर पेड़ों के झुरमुट में। मैं अपनी बात वहीं कहूँगा।"

"जो कुछ कहना है, यहीं कहो। ये मत समझना कि सूपा मेरी ओर से बेखबर है। यहाँ का एक-एक क्षण और दृश्य सूपा अपने कक्ष में बैठा देख रहा है। वह इतना सक्षम है कि वहीं से तुम्हें ढेर कर सकता है।" सूर्या ने कुछ तेज स्वर में कहा—"मैं जानता हूँ कि सूपा इस सम्पूर्ण घटनाक्रम को देख रहा है। मैं यह भी



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जानता हूँ कि सूपा मेरे जैसे व्यक्ति का बिना मेरी इच्छा के स्पर्श भी नहीं कर सकता।"

युवक के चेहरे पर गजब का आत्मविश्वास था और वाणी में दृढ़ता।

अचानक उस रहस्यमय युवक के सिर के ठीक ऊपर आंतरिक्ष में एक प्रकाश का गोल दायरा प्रकट हुआ। इसके पहले कि वह उ़स गोल-गोल घूमते दायरे से बाहर आए, उस प्रकाश के बड़े से छल्ले ने युवक को अपने दायरे में ले लिया। सूर्या की आँखें चमकने लगीं। उसके मुख पर सफलता से प्राप्य प्रसन्नता का सूर्य उग आया। वह बोला—

"अन्ततः तुम्हारे अहंकार ने खुद की मौत को निमंत्रण दे ही दिया। सचमुच मुझे तुम्हारी मृत्यु पर दुःख होगा।"

युवक के चेहरे पर अप्रिय भाव आए, पर वह न तो भयभीत था और ना ही आतंकित। प्रकाश का चमकीला छल्ला संकीर्ण होता जा रहा था। उससे एक विचित्र नीली सी गैस निकल रही थी। धीरे-धीरे गैस बढ़ती गई। एक मिनट भी नहीं बीता कि वह प्रकाश का छल्ला जैसे गैस चेम्बर बन गया। युवक का दम घुटने लगा। कुछ क्षणों में ही गैस इतनी सघनतर हो गई कि आलोक वलय में कैद युवक का शरीर दिखाई देना बन्द हो गया। सूर्या ने गहरी निःश्वांस ली। वेणु और नीलेश सूपा की इस विलक्षण मारक पद्धति से प्रथम बार साक्षात कर रहे थे। सूपा ने कब ऐसी घातक गैस का आविष्कार कर लिया उन्हें पता नहीं था। सम्भवतः आलोक कारा में कैंद यह युवक या तो पानी की तरह गल जाएगा अथवा इसके शरीर के ऊपर का माँस मज्जा हड्डियों के ऊपर से गलकर टपक जाएगा। शेष रहेगा कंकाल।

कुछ क्षणों में ही गैसीय धुआँ छट गया। वह प्रकाश का गोला छल्ला भी गायब हो चुका था। जैसे वहाँ कुछ था नहीं। जिस स्थान पर युवक खड़ा था वहाँ कुछ गाढ़ा तरल पदार्थ पड़ा हुआ था।

"ओह ! लगता है नवयुवक की हड्डियाँ तक इस गैस ने गला दीं। यह इस का माँस मज्जा है, जो अब तरल गाढ़े रूप में पड़ा है।" वेणु ने सिहर कर उच्छ्वास लेकर कहा। पता नहीं क्यों सूर्या स्वयं में एक विचित्र रिक्तता का अनुभव कर रहा था और वह, फ्रान्सीसी युवक ! वह आँखें फाड़े, अत्यन्त भयभीत मुद्रा में, गले हुए युवक के माँस के ढेर को देख रहा था।

वे सब अपनी-अपनी कार में बैठे और गन्तव्य की ओर रवाना हो गए। सूर्या सोच रहा था—कौन था वह विलक्षण नवयुवक ? जिसे सूपा की सारी 'गतिविधियों के विषय में ज्ञात था।

□□



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टन टन कर दीवाल घड़ी ने बारह बजने का संकेत दिया। संभूति की अलसाई आँखों ने घड़ी की निरन्तर गतिमान सुइयों को देखा। वह बड़बड़ाई—"पता नहीं कहाँ चले गए ? अभी तो ठीक से स्वस्थ भी नहीं हुए हैं। इतनी कमजोरी है कि सही ढंग से चला भी नहीं जाता। कहीं कुछ कुघट नहीं हो गया हो।" अनेक शंका-कुशंकाएँ संभूति के मन में उठने लगीं।

"हे भगवान उनकी रक्षा करना।" विकल होकर संभूति ने अपने आराध्य देव से हाथ जोड़कर प्रार्थना की।

बारह से एक बजा। रात्रि की निस्तब्धता और शून्यता बढ़ती ही जा रही थी। धीरे-धीरे संभूति की आँखों में भी तामस उतरने लगा। न चाहते हुए भी उसके नेत्र मुंदने लगे।

अचानक उसकी आँखें खुलीं। उसे लगा जैसे वह किसी की बाँहों के कठोर बन्धन में है। सचमुच वह पीयूष के बाहुबन्धन में थी। वह पीयूष जिसकी प्रतीक्षा में वह आतुर और विकल हो-होकर प्रभु से उसकी सुरक्षा की कामना कर रही थी।

संभूति को पीयूष की बाँहों में अनिर्वचनीय आनन्द मिल रहा था। पीयूष की मृत्यु वाली रात में पीयूष ने उसे जो यौन सुख दिया था उसका रोमांच उसे आज भी स्मरण था, किन्तु पुनर्जीवन मिलने के बाद जैसे पीयूष अपनी युवावस्था को पूरी तरह भूल चुका था। संभूति ने भी कभी, उसकी शारीरिक क्षीणता और स्वास्थ को देखते हुए कभी संभोग सुख प्राप्ति के लिए कोई संकेत नहीं दिए पर आज ! आज जैसे पीयूष में पूर्ण यौवन का उन्माद जागा था। वह भूल गई कि पीयूष इतनी रात कहाँ गया था ? उससे पूछना भी है। कुछ नाराजगी भी प्रकट करनी है।

"क्या करते हो छोड़ो भी। अभी बहुत कमजोर हो, दोबारा खटिया पकड़ लोगे।" लरजते स्वर में संभूति ने अपनी नारी जनित लज्जा को प्रकट करते हुए कहा। यद्यपि वह नहीं चाहती थी कि पीयूष उसे अपने बाहुबन्धनों से मुक्त न करे, तथापि उसका नारी जनित नकार प्रकट हो ही गया।

और संभूति की आंतरिक-इच्छा का सरासर दमन करते हुए पीयूष ने उसे सचमुच अपनी बाहुकारा से मुक्त कर दिया। संभूति थोड़ी उदास भी हुई, फिर उसके स्वास्थ्य का स्मरण कर वह शान्त हो गई।

अचानक संभूति की दृष्टि द्वार पर पड़ी। दरवाजे की सांकल अभी भी लगी थी। उसे स्मरण आया द्वार तो अन्दर से बन्द था, उसने अर्गला भी नहीं खोली फिर बन्द द्वार से पीयूष किस प्रकार अन्दर आ गया ?

"आप अन्दर कैसे आ गए। द्वार तो भीतर से बन्द था।" संभूति ने साश्चर्य कहा।

"कमाल है।" पीयूष हँस उठा। हँसते-हँसते ही बोला—



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"बड़ी भुलक्कड़ हो। स्वयं ही उठकर द्वार खोला और अब पूछती हो कि अन्दर कैसे आ गया ? ऐसा लगता है कि तुम्हें नींद में काम करने की, चलने-फिरने की बीमारी लग गई।"

"बनाओ मत, सच बताओ।" संभूति ने मनुहार की।

"सच संभूति, द्वार तुमने ही खोला था। अब तुम्हीं सोचो, अगर तुम द्वार न खोलतीं तो मैं अन्दर आ ही कैसे सकता था ?" पीयूष ने गंभीरता से कहा।

"लेकिन इतनी रात.......आप गए कहाँ थे सरकार ?" संभूति को याद आया कि उसे पीयूष से इतनी रात गए आवारगी का कारण पूछना है।

"क्या बताऊँ संभूति ! दरअसल मुझे एक पुराना मित्र मिल गया। बस उसी के साथ चला गया था। आरम्भ में कुछ समय घूमते रहे फिर फिल्म देखने चले गए। इस प्रकार इतना समय व्यतीत हो गया।

"मेरा नहीं, कम से कम अपने स्वास्थ्य का तो ध्यान रखो। अभी भी बहुत कमजोरी है। खैर अब चलो, मैं खाना गर्म करती हूँ। आप हाथ-मुँह धोकर किचिन में ही आ जाओ। मैंने भी कुछ नहीं खाया है।" कहती हुई संभूति किचन की ओर चल दी।

पीयूष बाथरूम में चला गया और संभूति किचिन में खाना गर्म करने लगी। अचानक उसे याद आया कि उसने दिन में कपड़े धोकर आंगन में सूखने के लिए डाल दिये थे। संभवतः अब वे ओस के गिरने के कारण भीग चुके होंगे। उसने सब्जी स्टोव से उतारी और आंगन की ओर आई।

आंगन में........

संभूति चौंक कर ठिठक गई। पीयूष के पास एक सुकुमारी खड़ी थी। आयु लगभग 10-11 वर्ष, उज्ज्वल नक्षत्र सा दमकता मोहक स्वरूप। खुले हुए बाल, मात्र घाघरा और ब्लाउज पहने हुई लड़की के ललाट पर सिन्दूर का टीका लगा हुआ था। बालिका पीयूष से कह रही थी—

"बाबा, यह तो अच्छा हुआ कि उचित समय पर मैंने आपकी खबर ले ली, अन्यथा आपके सारे प्रयास निष्फल हो गए थे। अब ध्यान रखो, जब भी कभी ऐसा अवसर आए मुझे पुकार लिया करो। लो, इस रसायन को इतने ही जल में मिला कर पी जाओ। सारे शरीर की ऊष्मा और वेदना समाप्त हो जाएगी।"

"ठीक है, मैं इस औषधि को ले लूंगा। अब तुम जाओ। आवश्यकता होने पर तुम्हें बुला लूंगा।" पीयूष ने बालिका के हाथ से स्फटिक से निर्मित श्वेत पात्र लेते हुए कहा। बालिका के अधरों पर पवित्र मुस्कान खेलने लगी।

"तुम्हारी पत्नी बहुत सुन्दर, सुशील और संस्कारित है बाबा। मुझे बहुत अच्छी लगी, उसमें एक भैरवी के सम्पूर्ण गुण हैं। उसके किंचित कटाक्ष से किसी का भी



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उद्धार हो सकता है। उसके अमर्ष में महाकाल की चितिशक्ति महाकाली रास करती है, उसकी प्रसन्नता में स्वयं महालक्ष्मी का तेजस है तो बुद्धि में सदैव रसों की अधिष्ठात्री सरस्वती निवासित है। उसकी प्रत्येक ईहा का सम्मान करो, बाबा, वह सम्पूर्णवती है।" बालिका ने मुस्काते हुए कहा।

"कौन है यह बालिका ?" संभूति ने चाहा कि उससे वह स्वयं बात करे। वह आगे बढ़कर कुछ बोलना ही चाहती थी कि बालिका मुड़ी ओर द्वार की ओर चल दी। उसकी गति असाधारण रूप से तेज थी। संभूति सत्वर गति से उसकी ओर लपकी।

"अरे, कौन थी वह ? रोको न उसे !" संभूति ने पीयूष से कहा।

पीयूष ने चकित दृष्टि से देखा और आश्चर्य से बोला—"क्या हो गया है संभूति तुम्हें ? किसको रोकने के लिए कह रही हो ? कौन है यहाँ ?" लेकिन संभूति ने जैसे सुना ही नहीं वह तेजी से द्वार की ओर बढ़ी किन्तु द्वार तो बन्द था। इतनी शीघ्र कहाँ गई वह बालिका ? संभूति ने इधर-उधर देखा, द्वार से लगा कक्ष भी देख डाला लेकिन वह बालिका उसे कहीं नहीं मिली।

"क्या बात है ? किसको खोज रही हो संभूति ?" झल्लाते हुए पीयूष ने उससे पूछा।

"कौन थी वह लड़की ?" अन्ततः हार-थककर संभूति ने एक स्थान पर खड़े होकर अपने पति से प्रश्न किया।

"कौन लड़की ?" पीयूष ने चकित होकर प्रश्न किया।

"वही लड़की, जो अब से कुछ समय पूर्व आपसे आंगन में खड़ी-खड़ी बातें कर रही थी। वही 10-11 साल की लड़की जिसने आपको एक पारदर्शी पात्र में कोई औषधि पीने के लिए दी थी। उसने मेरे विषय में भी कुछ कहा था।" बोलते-बोलते संभूति को ऐसा प्रतीत हुआ, मानो जमीन-आसमान सब घूम रहे हैं। उसने अपना सिर थामा और जमीन पर बैठ गई। उसे लग रहा था जैसे उसकी चेतना गहन अंधकार में डूबती जा रही है। और.......कुछ क्षणों में ही वह अचेत हो गई।

अचेतावस्था, स्वप्नावस्था अथवा जाग्रति ? संभूति कुछ निर्णय नहीं कर पा रही थी। वह देख रही थी, रुई के समान धवल-रुपहले बादलों की पर्तों को चीरती एक अमल कन्या की छवि को ! वह बादलों के मध्य से निकल कर उसके समीप आ गई है। बालिका का मुख जैसे चन्द्रमा की पीयूषी किरणों से बना है। वह अति समीप आ जाती है, अपनी गोरी-गोरी स्निग्ध बाँहें संभूति के गले में डाल देती है। बालिका उसके गले में झूलती हुई कहती है—



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"देखो, वह मात्र तुम्हारा ही नहीं है, मेरा भी है, किसी और का भी है। उस पर संसार के प्रत्येक स्त्री-पुरुष, बाल-अबाल सभी का समान अधिकार है। वह उस सर्वव्यापी का अंश है, जो सर्व समाहित है। देखो तो.......देखो, उस ललाम की प्रत्यक्ष मूर्ति को। वह भी उसी की प्रेयसी है, क्यों कि वह पुरुष है।"

संभूति देख रही थी, उज्ज्वल बादलों से एक दीप्तिमयी नारी का मोहक, मधुमय कलेवर प्रकट होता है। संभूति पर उस सौन्दर्य स्वामिनी की लावण्यमयी छवि स्पष्ट होती है। "अरे !" वह चकित हो उठती है, यह तो वही है। वह स्वयं। लेकिन उसका अपना स्वरूप ? कैसा परिवर्तित वेश है। लालसुर्ख साड़ी, वैसा ही परिधान। गले में जवाकुसुम के फूलों की महकती हुई माला जो वसनहीन उत्तुंग स्तनों पर पड़ी झूल रही थी। उसे अपने स्वरूप की प्रतिमूर्ति सुन्दरी में एक अलौकिक आलोक की शुभ्रच्छटा दिखाई दे रही थी, जिससे उसका यौवन मनोरमता के सर्वोच्च शिखर का स्पर्श कर रहा था। क्या सचमुच वह इतनी ही सुन्दर है ? इतनी ही अभिराम ? उसमें विपुल सौन्दर्य की अथाह रूपराशि कहाँ से आई ? संभूति की प्रतिमूर्ति उसमें समाहित होती जा रही थी और अन्ततः वह रूप की साररूपा संभूति में सम्पूर्णतः समाविष्ट हो गई।

प्रातः सूर्योदय के समय संभूति की चेतना लौटी तो स्वयं को पलंग पर पाया। पलंग के समीप ही पीयूष बैठा था। रात्रि जागरण के कारण उसकी आँखें लाल हो रही थीं। संभूति को होश में आया देख वह तुरन्त उठा।

"अब कैसी हो संभूति ?" पीयूष ने उसके सिर पर स्नेह का हाथ रखते हुए कहा।

"अब आप कैसा अनुभव कर रही हैं ?" डॉ. मदन कुमार का स्वर जिसे संभूति देख नहीं सकी थी।

डॉ. कुछ देर पहले ही आया था। दरअसल रात्रि में संभूति की हालत इतनी खराब हो गई थी कि उसी समय, पीयूष के पड़ौस में रह रहे निजी चिकित्सक डॉ. मदन कुमार को बुलाना पड़ा। जब चिकित्सक ने उसका परीक्षण किया तब संभूति की नब्ज डूबती जा रही थी। तुरन्त चिकित्सक ने यथा उपचार किया और दस मिनट तक देखने को कहा। अगर दस मिनट में उपचार कारगर नहीं होता तो चिकित्सक का मत था कि संभूति को गहन चिकित्सा हेतु किसी अच्छे सुविधायुक्त अस्पताल में ले जाना होगा, किन्तु पाँच मिनिट में ही संभूति की स्थिति सामान्य हो गई। उसका हाई फीवर भी डाउन हो गया। लगभग आधा घण्टा चिकित्सक और भी बैठा रहा फिर पूर्णतः सामान्य स्थिति जानकर वह चला गया किन्तु प्रातः वह पुनः आ गया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"मैं ठीक तो हूँ। क्या हुआ था मुझे ?" कहते हुए संभूति उठी और आंचल को सिर पर ओढ़ा।

"कोई खास बात नहीं थी। बस आपको हाई फीवर हो गया था। इस कारण आप अचेत हो गई थीं।" डाक्टर ने उसे बताया फिर वह पीयूष की ओर उन्मुख हुआ।

"कोई चिन्ता की बात नहीं है पीयूष। यह स्वस्थ है, लेकिन आज पूरी तरह बैड रेस्ट ही करें।" कहते हुए चिकित्सक ने एक पर्चे पर दवाइयाँ लिखीं फिर पुनः बोला—"इसमें ज्वरविरोधी दवाइयाँ हैं, स्वास्थ्य सायरप है और अन्य टेब्लेट्स भी। इन्हें लिखित समयानुसार देते रहें। मेरा अनुमान है अब वैसा बुखार नहीं आएगा।" कहकर डॉक्टर चला गया।

संभूति बिस्तर से उठी। उसे उठता देख पीयूष जल्दी से उसे पुनः बिस्तर पर सुलाते हुए बोला—"नहीं......नहीं......आज कम्पलीट बैड रेस्ट।"

"अरे मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मुझे उठने दो, घर का सारा कामकाज कौन करेगा ?" हँसते हुए संभूति ने कहा।

"मैं हूँ न ! आज का सारा काम मेरे जिम्मे।" पीयूष ने कहा।

"रहने दो, अभी खुद के हाथ-पैर साथ नहीं देते और जनाब काम करेंगे। वह पुनः हँसी।

संभूति अनुभव कर रही थी कि पीयूष बार-बार चौंक कर उसे देखता है। उसने यह भी अनुभव किया था कि चिकित्सक भी उसे कुछ इसी प्रकार देख रहा था। वह यह भी अनुभव कर रही थी कि उसके बिस्तर से अद्‌भुत सुगन्ध निरन्तर प्रसारित हो रही है। उसने पीयूष को अपलक अपनी ओर देखता पाया। अन्ततः बोली।

"क्या बात है, आप ऐसे क्या देख रहे हैं ?" क्या मुझ में कुछ नयापन आ गया है ?" वह मोहिनी मुस्कान से मुस्कराई।

"सच कहूं संभूति। आज तुम्हारा रूप और सौन्दर्य इतना मोहक और चित्ताकर्षक लग रहा है कि दृष्टि तुमसे हट ही नहीं रही।" पीयूष गंभीरता से बोला।

"अच्छा, आज कोई खास बात 'मुझमें पैदा हो गई क्या ? संभूति ने उठकर अत्यन्त स्नेह से पीयूष का हाथ अपने कोमल हाथ में ले लिया।

पता नहीं पीयूष को क्या सूझा। उसने अचानक ही संभूति की कोमल अधर कलियों को चूम लिया। संभूति लाज से पानी-पानी हो गई। ज्ञात नहीं उस चुम्बन में कैसा विचित्र सुख था कि संभूति सकाम हो सिहर उठी। पीयूष ने उसे बाँहों में भर लिया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"छोड़ो भी। आज सुबह-सुबह क्या हो गया आप को ?" संभूति के मद पूरित कमलनयनों से मदिरा छलकी।

"अभी तो कुल्ला-दातुन भी नहीं किया, स्नान भी नहीं। चलो हटो, मुझे उठने दो।" संभूति ने स्वयं भी उसे आलिंगित करते हुए कहा।

"चलो, आज मैं स्वयं तुम्हें अपने हाथों से नहलाऊंगा, तुम्हारा शृंगार करूँगा और......और........।"

"और......और क्या करेंगे।" संभूति का अन्तःमद वाणी के रूप में ओठों से अठखेलियाँ करता हुआ बाहर आया।

पीयूष ने संभूति की सुकोमल-सुरभित देहयष्टि को पलंग से उठा लिया।

"अरे...अरे....अभी तुम्हें कमजोरी है, खुद भी गिरोगे और मुझे भी गिराओगे।" संभूति पीयूष की गोद में तड़पी, लेकिन पीयूष ने उसे नहीं छोड़ा। सीधा बाथरूम में उसे ले जाकर ही उसे उतारा।

"अब तुम बाहर निकलो।" संभूति ने उसे द्वार की ओर धकेलते हुए कहा.।

"क्यों ?"

"मुझे नित्यकर्मों से निवृत्त तो होने दो।" संभूति ने बलात पीयूष को बाथरूम से बाहर कर दिया।

अकस्मात संभूति की दृष्टि बाथरूम में लगे दर्पण पर पड़ी। वह आश्चर्य से चौंक उठी। ऐसा अभिनव लावण्यमय सौन्दर्य अचानक कहाँ से उसमें प्रकट हो गया ? उसने बार-बार अपने अंगों को देखा। सुचिक्कन जंघाएँ पूर्व की अपेक्षा अधिक स्निग्ध और आकर्षक हो गई थीं। सामान्य वक्षस्थल के यौवनपुष्प के रूप में उरसिज अधिक कठोर और पोन-उन्नति को प्राप्त हो गए थे। साथ ही वे परस्पर सटे हुए भी लगते थे। यही नहीं उसने अपने असूर्यम्पश्य अंग को देखा। उसका स्मरमन्दिर सुघड़ निर्लोमस और स्निग्ध होने के साथ ही पूर्णरूपेण कुमारी की भाँति संकीर्ण मार्गण हो गया था।

इतने ढेर सारे परिवर्तन उसमें कैसे हो गए ? यह असंभव था फिर भी कैसे संभव हो गया। क्या उसके आमूलभूत शारीरिक परिवर्तन में कोई अलौकिक शक्ति का हाथ है ? अगर ऐसा है तो कौन है—कैसी है वह आलौकिक शक्ति ? क्या पीयूष के पुनर्जीवन के मूल में उसकी शक्ति की भूमिका है ? अथवा पीयूष का जीवन संयोगवश मृत्यु के उस पार से वापस आया है ?

उसने स्नान किया, जैसे पानी उसके स्निग्ध तन पर ठहरता ही नहीं था यौवन से लवालव भरे मादक देह से अद्भुत काम संवर्धनी सुगन्ध से स्वयं भी अभिभूत हो गई। उसके अंग का अणु-अणु महक रहा था। इसके पूर्व उसने कभी



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी ऐसी सुगन्ध अनुभव नहीं की थी। वह अपने हाथों को सूंघती कभी सिर नीचा कर स्तनों से उठ रही सुवास से आनंदित हो उठती।

स्नान करने के बाद संभूति स्वयं को अधिक स्वस्थ और तरोताजा महसूस कर रही थी। उसे विश्वास था कि जैसे ही वह बाथरूम का द्वार खोलेगी, पीयूष उसे निकलता देख बाँहों में भर लेगा, उसके सौन्दर्य की शाम्पेय कांति देखकर चकित-थकित हो जाएगा, उसे बार-बार चूमेगा, आलिंगन में बाँध लेगा, लेकिन...। जैसे ही वह स्नान कर अपनी गीली अलकाबली को टॉविल से पोंछती-सुखाती बाहर निकली, पीयूष का दूर-दूर तक पता नहीं था।

संभूति ने पूरा घर छान मारा पर पीयूष कहीं नहीं मिला। कहाँ गया पीयूष ? संभूति ने पीयूष की ओर से ध्यान हटाने का प्रयास करते हुए भगवान की नित्य पूजा में लग गई। पञ्च-उपचारादि से पूजन कर वह ध्यान करने लगी।

उसने जैसे ही अपनी आँखें बन्द कीं, बन्द आँखों के उस पर गहन अन्धकार के तमस को चीरता हुआ उसे एक आलोकमय पिण्ड का दर्शन हुआ। उसकी चितिशक्ति भावलोक में समृद्ध हुई। आलोक पिण्ड मानवाकार लेता गया और फिर एक भव्य व्यक्तित्व के रूप में बदल गया।

वह देख रही थी, भरत भूमि अध्यात्म धरा हिमालय के हिमाच्छादित पर्वत शिखरों को। चेतना रजतीय हिम शिखरों का दिव्य-अवलोकन करते हुए एक हिमगुफा पर केन्द्रित हुई। गुफा के बाहर हिमशिला पर संभूति एक नक्षत्र के समान उज्ज्वल उसी पुरुष का दर्शन कर रही थी जो आलोक पिण्ड के रूप में दिखाई दिया था।

नक्षत्र दीप्ति से सज्जित पुरुष का कद लम्बा, लम्बी घुटनों को स्पर्श करती बाँहें, प्रशान्त नेत्र और दाड़ीयुक्त, तेजो मण्डित मुखमण्डल।

"देवी ! भैरवी देवी, मणि पद्मे ! मुझे पहचानो, मैं तुम्हारा ही आत्मखण्ड हूँ। वर्षों पूर्व, समय की गति और अज्ञान के कारण हम बिछुड़ गए थे। मैं सैकड़ों वर्षों से तुम्हें तलाश कर रहा था। अब मेरा सन्धान पूर्ण हुआ है भगवति। हम दोनों एक-दूसरे के बिना अपूर्ण हैं, हमें पूर्णता के लिए मिलना होगा, एक दूसरे में लय होना होगा, तभी हम मुक्त होंगे देवि पद्मे।"

"आप कौन हैं ?" हटात संभूति की जिज्ञासा मन में उत्पन्न हुई।

भव्य पुरुष मुस्कराया। अपने पवित्र स्मित के साथ वह बोला—"प्रिये मणिपद्मे, मैं तुम्हारा चिरसंगी हूँ, जन्म जन्मान्तर का साथी। तुम मेरी प्रिया हो, हम एक ही आत्मा के दो खण्ड हैं। नारी रूप में तुम और पुरुष रूप में मैं।"

"लेकिन मैं तो विवाहित हूँ। मेरे लिए पर पुरुष चिंतन पाप है।"

"मैं परपुरुष नहीं हूँ प्रिये।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"तुम परपुरुष ही हो ! मेरे पति ही मेरे पुरुष हैं, मैं मात्र उनकी ही हूँ. किसी अन्य का प्रणय मुझे स्वीकार नहीं और ना ही मेरा अभीष्ट है।"

"पति ! जिसे तुम पति कहती हो, वह तो कभी का मर चुका। मात्र तुम्हें शोकदग्ध होने से बचाने के लिए मैंने ही उसे पुनर्जीवित किया है। तुम्हारे पति का जीवन मेरा दिया हुआ है। मैं जब चाहूंगा उस उधार के जीवन को छीन लूंगा।" दिव्य पुरुष का स्वर कुछ कठोर हुआ।

"नहीं.......नहीं ऐसा मत करना।" संभूति की चेतना विकल हुई।

"अगर उसका जीवन चाहती हो तो तुम्हें मेरे साथ सहगमन करना होगा।" जैसे उसने शर्त रखी। संभूति अत्यन्त बेचैन हो उठी।

"नहीं......नहीं......मेरा धर्म नष्ट न करो, मुझे भ्रष्ट न करो।" संभूति की आँखों से अश्रुवारि बह निकली। प्रकाश मण्डित पुरुष हँस उठा।

अचानक संभूति को लगा जैसे वह पुरुष उसके अति समीप आ गया है। उसकी लम्बी बाँहें निरन्तर उसकी ओर बढ़ रही हैं। संभूति अवश होती जा रही है.....।

"तुम्हारा दिव्य यौवन और सौन्दर्य मेरा है प्रिये। तुम मेरी भैरवी हो, मेरी साधना सहचरि। मेरी कठोरता और तुम्हारी कोमल मृदुलता का संयोग ही हम दोनों को श्रेयकर है।" कहते-कहते आलोक पुरुष ने संभूति को अपने कठोर भुजपाश में बाँध लिया।

"छोड़ दो.........छोड़ दो मुझे.........।" संभूति उसकी कठोरता में बँध कर रुदन कर उठी।

"क्यों......क्यों ? संभूति.......? तुम मेरी पत्नी हो। क्या मैं तुम्हारा स्पर्श नहीं कर सकता ?" यह आवाज़ थी पीयूष की जिसने संभूति की मृदुल-मुलायम, सुरभित काया को अपनी बाँहों में बाँध रखा था।

पीयूष की आवाज सुनते ही संभूति की आँखें खुलीं, सचमुच उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी। उसने पीयूष की बाँहों में स्वयं को देखा तो भावातिरेक से लिपटकर फूट-फूटकर रो उठी।

"क्या हुआ संभूति ? तुम इस प्रकार क्यों रो रही हो ?"

"वह मुझसे बलात्कार करना चाहता है। वह मेरा धर्म भ्रष्ट करने पर तुला हुआ है। मैं क्या करूं ? मैं क्या करूं ?" संभूति फफक उठी।

"कौन बलात्कार करना चाहता है ? कौन धर्म भ्रष्ट कर रहा है संभूति।" पीयूष चकित स्वर में बोला। जैसे संभूति भावलोक से निकलकर स्थूल लोक में आई। पीयूष ने उसके आँसू पोंछते हुए कहा–



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"शान्त हो जाओ संभूति। यहाँ मेरे अतिरिक्त कोई नहीं है।"

संभूति ने चारों ओर देखा। वहाँ पर आलोक पुरुष नहीं था। वह कुछ सम्हली। कितना विचित्र दिखाई दिया था भावलोक में ? वह मात्र आभास है अथवा सत्य ? संभूति ने जो भावलोक में देखा था, जस का तस पीयूष को सुना दिया। सारा प्रसंग सुनकर पीयूष हँस उठा। वह हँसते-हँसते ही बोला–

"सचमुच, औरतों की चित्तिशक्ति बहुत कमजोर और मन बहुत भीरू होता है। अरे पगली ! मन में आई विचित्र कल्पना को ही सत्य मानकर रो पड़ी।"

"यह कल्पना नहीं है पीयूष। मैंने उसे बहुत स्पष्ट रूप से देखा है। उसकी वाणी साफ-साफ सुनी है। उसकी कुछ बातें सही लगती हैं।" संभूति पीयूष के वक्ष पर सिर रखकर बोली–

"तो क्या तुम स्वयं को भैरवी समझती हो ? क्या होती है यह भैरवी ? जरा बताओ तो संभूति।" पीयूष ने उससे प्रश्न किया।

"मैं नहीं जानती कि भैरवी क्या होती है। बस सुना है कि भैरवी का सम्बन्ध तान्त्रिक साधनाओं से होता है। मैंने तांत्रिक कथा साहित्य के एक लेखक के उपन्यास 'कपालपात्र' में भैरवी भद्रामणी के विषय में पढ़ा है। लेखक ने भैरवी के अतिरेक चरित्र का बड़ा विचित्र वर्णन किया है।" संभूति ने उसे बताया। पीयूष ने अपना सिर पीट लिया।

"भगवान बचाए, ऐसे लेखकों से ! आखिर आ गई न तुम इस चक्कर में। इसीलिए तो कहता हूँ कि............।"

"छोड़ो......। मैं आज ही अखण्ड ध्यानयोग आश्रम जाऊंगी। माँ निवृत्ति देवी को सारी बातें बताकर उनसे वास्तविकता पूछूंगी। माँ निवृत्ति सिद्ध योगिनी है, उनकी दृष्टि से दृश्य-अदृश्य कुछ भी नहीं छिपता। वे त्रिकाल दृष्टा नारी हैं। उन्होंने ही मुझे ध्यानयोग की दीक्षा दी है।" संभूति ने निश्चय से कहा।

"ठीक है, चली जाना ! किन्तु अब मुझे जोरों से भूख लगी है।" पीयूष पेट पकड़कर बोला।

"मैं अकेली नहीं जाऊंगी, आपको भी चलना होगा।"

"ठीक है......पर पहले भोजन।" पीयूष बच्चों के समान बोला।

"बहुत पेटूराम हो गए हो। कुछ देर रुको, भोजन बनेगा तभी तो तुम्हारे पेट में जाएगा।" संभूति ने उठते हुए कहा। दोनों प्रसन्नता से किचिन की ओर चले गए।

□□



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नित्य की भाँति उस दिन भी प्रातः चार बजे सूर्या की आँखें खुल गईं। वह बिस्तर से उठा। रातभर उसकी आँखों के सामने उस रहस्यमयी स्त्री की ललाम छवि घूमती रही। स्वप्न में भी वही, जागृति में भी वही।

वह पुलिस इन्सपेक्टर कहाँ ले गया होगा उसे ? क्या वह किसी अस्पताल में होगी अथवा पूरी तरह होश में आने पर इन्सपेक्टर ने उसे छोड़ दिया होगा। उसे स्वयं पर अफसोस होने लगा। क्यों छोड़ दिया उसने उस पुलिस वाले के पास ? कैसी वहशी चमक थी उस पुलिस इन्सपेक्टर की आँखों में!

सूर्या कुछ बेचैन हो उठा। यद्यपि ऐसी कोई बात नहीं थी कि उसे मानसिक रूप से परेशान करे, फिर भी वह अशान्त हो उठा। सोचते-सोचते वह नित्य कर्मादि से निवृत हुआ। अचानक उसकी घ्राणेन्द्रियाँ विचित्र सुवास से भर उठीं। एक अद्भुत मादक गंध, ऐसी गंध जो पुरुष सहचर्य काल में स्त्री जाति में सर्वोत्तम रमणीरत्न पद्मनी के शरीर से निकलती है। हालांकि सूर्या इस सुवास से परिचित नहीं था, वह नहीं जानता था कि ऐसी सुगन्ध भी स्त्री देह से निकलती है, फिर भी उसका मन उल्लासमय आनन्द से भर उठा। ज्यों-ज्यों वह सुगन्ध तेज होती जाती, उस रहस्यमयी बाला की स्मृति भी सघन होती जाती।

जिस स्थान में वह रहता था, वह सूपा की व्यक्तिगत संपत्ति का हिस्सा थी। सूपा ने उसके लिए तीन पुरुष नौकर और तीन स्त्रियाँ सेविकाएँ रख रखी थीं किन्तु इसके पश्चात् भी प्रातः समय में सूर्या किसी को नहीं जगाता था। वह प्रातः चार बजे उठकर नित्यकर्मों से निवृत्त हो स्वयं चाय बनाता फिर स्नान करता, इसके पश्चात् वह महाकाल ज्योतिर्लिंग की तस्वीर पर श्रद्धा से अगरबत्ती लगा कर प्रार्थना करता—"भगवान, मैं मंत्र-यंत्र, स्तोत्र पूजन नहीं जानता, किसी ने कभी कुछ नहीं बताया, मेरा कोई गुरु नहीं। बस यही मेरी पूजा है, स्वीकार करें।"

सूर्या को अपने माता-पिता का ज्ञान नहीं था। उसे सूपा ने ही पोषित किया था। सूपा ने ही उसे बताया था कि उसकी माँ से वह एक दुर्घटना में बिछुड़ गया था। अब उसकी माँ जीवित है अथवा नहीं ? उसके पिता हैं या नहीं ? कोई नहीं जानता।

सूपा ने ही उसे पढ़ाया-लिखाया। अत्यन्त मेधावी सूर्या सदैव उच्च अंकों से प्रत्येक परीक्षाओं में सफल होता रहा, लेकिन इन्टर के पश्चात् सूपा ने उसे अध्ययन से रोक दिया। शिक्षा समाप्ति के पश्चात् सूर्या का काम मात्र सूपा के आदेशों का पालन करना मात्र था।

एक विशेष बात यह कि सूर्या ने सूपा को अब तक के उसके बाइस वर्षीय जीवन में मात्र-दो या तीन बार ही देखा था। सूपा की आयु कितनी होगीं, निश्चित नहीं कहा जा सकता था। सूर्या ने उसे जब भी देखा 30-35 वर्षीय युवक के रूप



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में ही देखा था। सामान्यतः सूपा के निर्देश उसे टी. वी. स्क्रीन जिसका रेडियो तरंगों से सम्बन्ध सूपा से था, मिलते थे। लगभग नित्य 5 बजे सूर्या को टी. वी. स्क्रीन पर सूपा दिखाई देता था।

सूपा से जनसामान्य परिचित नहीं था। उसके अपने अधीनस्थ कार्यकर्ताओं ने भी प्रत्यक्षतः सूपा को नहीं देखा था। सूपा के अनेक रूप थे। वह कब किससे किस रूप में मिलता था, कभी किसी ने नहीं जाना। सूर्या के सामने भी सूपा का एक ही रूप था। उसमें वह पूरी तरह गौर वर्ण और तेजस्वी व्यक्तित्व का स्वामी था।

सूपा के पास लगभग 500 कर्मचारी थे। इनमें अधिकांश वैज्ञानिक थे। जो सूपा की अण्डरग्राउन्ड प्रयोगशाला में नए-नए प्रयोग करते रहते थे। किसी भी वैज्ञानिक ने सूपा की इस प्रयोगशाला का मार्ग नहीं देखा था। सभी लोग समयानुसार एक हॉल में एकत्रित होकर अपनी-अपनी पूर्व निर्धारित कुर्सी पर बैठ जाते थे। कुर्सी पर बैठते ही जैसे सूपा के मायालोक के चमत्कार शुरू हो जाते थे। प्रत्येक स्त्री-पुरुष वैज्ञानिक कुर्सी पर बैठते ही विचित्र सा सुख-आनन्द की अनुभूति करते। कुछ समय बाद वे स्वयं को एक विशाल अण्डरग्राउन्ड में स्वयं को पाते थे। वास्तव में यह प्रक्रिया लिफ्ट द्वारा सम्पादित होती थी।

सूपा को सभी लोग देवता के समान पूज्यनीय समझते थे। उनकी दृष्टि में सूपा एक मानवतावादी वैज्ञानिक था, जो मानव हित में नए-नए प्रयोग करता-कराता रहता था। विशाल प्रयोगशाला और अत्यधिक खर्चीले प्रोजेक्ट पर पानी की तरह पैसा खर्च होता था। उस प्रयोगशाला में कार्य करने वाले प्रत्येक वैज्ञानिक को असीमित धन मिलता था। इतना रुपया सूपा के पास कहाँ से आता था ? उसी आय के क्या स्रोत हैं ? यह कोई नहीं जानता था।

आज तक सूपा के विरुद्ध कोई बगावत नहीं करता था। उसके प्रोजेक्ट का प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि सूपा अपरिमित शक्तियों का स्वामी है। उसके प्रोजेक्ट का आदमी कब क्या सोचता है ? क्या करता है ? सूपा के पास सभी सूचनाएँ रहती थीं। जब कभी सूपा का कोई बाह्य शत्रु पनपता वह अकल्पित रूप से मारा जाता। उसकी लाश सूपा की प्रयोगशाला में होती थी और उस पर वैज्ञानिक प्रयोग कर रहे होते थे।

सभी जानते थे कि सूर्या सूपा का सबसे प्रिय व्यक्ति है। संभवतः सूपा के बाद सूर्या ही उसका उत्तराधिकारी था। सूपा की भाँति सूर्या भी विलक्षण मेघाशक्ति का स्वामी था। उसकी मौलिक वैज्ञानिक क्षमता भी गजब थी। बस सूर्या में एकं बात की कमी थी, वह यह कि सूर्या अत्यधिक ठण्डे वातावरण में ही मानसिक कार्य कर सकता था। अत्यधिक शीत ऋतु में भी सूर्या बिना ठण्डक के नहीं रह सकता था। उसके लिए सूपा ने एक अलग किस्म का कूलर विकसित किया था। इस कूलर



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से वातावरण इतना ठण्डा हो जाता था कि पानी एक मिनट में जमकर बर्फ बन जाता था। इस प्रकार के दो कूलर हमेशा सूर्या के बैडरूम में अहिर्निश चलते रहते थे। जब भी सूर्या उस कमरे से बाहर होता तो सूपा द्वारा बनाया गया एक कैपसूल उसे खाना अनिवार्य था, अन्यथा उसका बाह्य वातावरण में रहना असंभव था।

(सूर्या ने जिन युवतियों से देह सम्पर्क किया था, उन सभी का सेक्स स्थल सूर्या का बैडरूम नहीं होकर दूसरा सामान्य रूम था, जिसमें विशिष्ट कूलर नहीं लगे थे।)

एक विशेषता तो सूर्या में यह थी ही, दूसरी विशेषता से पाठक परिचित ही हैं। जब वह किसी युवती से संभोग करता था तो युवती यौनाचार के प्रथम चरण में ही नीली होकर मर जाती थी।

सूर्या ने सूपा की प्रयोगशाला में असंभव प्रयोगों को देखा था। अगर सूपा और उसके वैज्ञानिक उन प्रयोगों में सफल हो जाते हैं तो यह विश्व की एक खोज होगी। इस खोज के परिणाम-स्वरूप मानव की मृत्यु नहीं होगी। कभी कोई स्त्री बाँझ नहीं होगी। यही नहीं सौ वर्ष की आयु में व्यक्ति पच्चीस-तीस वर्ष का युवक प्रतीत रहेगा। मानव की आयु लगभग चार सौ से लेकर पाँच सौ वर्ष तक होगी।

समाज और शासन तथा कानून की दृष्टि में सूपा के प्रयोग भले ही गैर कानूनी हों लेकिन सूर्या ही नहीं सूपा के सभी वैज्ञानिक जानते थे कि सूपा के निर्देशन में उनके संधान सफल हो गए तो एक नयी क्रान्ति आ जाएगी। मानव समाज अनेक विपदाओं से मुक्त होकर आनन्दमय और सुखमय जीवन व्यतीत कर सकेगा। अपने प्रयोगों में किसी के विघ्न और व्यवधान न आवें, संभवतः सूपा इसलिए गुप्त रहता था।

प्रातः के पाँच बज चुके थे। ठीक निश्चित समय पर सूपा की बोलती तस्वीर स्क्रीन पर उभरी—

"गुड मार्निंग बेटे।" सूपा की मुस्कान स्वर के रूप में निकली।

"गुड मार्निंग होली फादर।" सूर्या ने सम्मान व श्रद्धा से कहा।

"क्या बात है बेटे, आज तुम कुछ चिंतित दिखाई दे रहे हो ? सूपा की आवाज आई।

"हाँ होली फादर ! कल रात में मुझे एक रहस्यमयी युवती मिली थी। उस समय वेणू और नीलेश मेरे साथ थे।"

"मैं जानता हूँ ! वह अचानक ही तुम्हारी गाड़ी के नीचे आ गई थी। तुम्हारे और ड्रायवर के खोजने पर भी तुम्हें नहीं मिली किन्तु तुम्हारी गाड़ी के नीचे वेणु को वह दिखाई दी थी। एम. आई. राइट ?"

"यस होली फादर।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"जानते हो उस पुलिस इंसपेक्टर का क्या हुआ ?"

"क्या हुआ ?" सूर्या की जिज्ञासा हुई।

"वह पुलिस इन्सपेक्टर पागल हो गया है। उसके साथी उसे उठाकर अस्पताल ले गए हैं।"

"लेकिन वह कैसे पागल हो गया ? और वह युवती कहाँ गई ?"

"तुम्हारे जाने के बाद उस रहस्यमय सुन्दरी को होश आ गया। उसके सौन्दर्य और लावण्य तथा आकर्षक यौवन सम्पदा को देखकर इन्सपेक्टर वासना से भर उठा। वह उसे उठाकर घनी झाड़ियों में ले गया। उसके साथी सड़क पर ही उसकी प्रतीक्षा करते रहे। लगभग 5 मिनट बाद ही वह चीखता-चिल्लाता, अपने कपड़ों को फाड़ता हुआ झाड़ियों से निकला और पूर्णरूप से पागल हो गया। और वह युवती ?......उस युवती को किसी ने नहीं देखा, वह कहाँ गायब हो गई किसी को पता नहीं।

"उस इन्सपेक्टर के साथ क्या घटित हुआ होली फादर ? सूर्या ने प्रश्न किया।

"संयोगवश उस इन्सपेक्टर का एक सहायक उसके पीछे-पीछे चला गया। उनमें तय हुआ था कि प्रथम वह इन्सपेक्टर उस रूपवती को भोगेगा फिर सहायक। उस सब् इन्सपेक्टर ने वह सब देखा है जिसके कारण इन्सपेक्टर पागल हो गया। इस समय वह सब् इन्सपेक्टर भी बेहोश अवस्था में अस्पताल में पड़ा है। लेकिन मैंने उसके मस्तिष्क की प्लेट और उस पर तरंगों का अध्ययन किया है। उस अध्ययन के अनुसार सब् इन्सपेक्टर ने बहुत भयानक दृश्य देखा है। वह सब इतना भयानक होगा कि अत्यधिक भय की अवस्था में वह अचेत हो गया। संभवतः इसी कारण वह इन्सपेक्टर भी पागल हुआ है।" सूपा ने उसे जानकारी दी।

"और वह रहस्यमय युवक कौन था होली फादर, जो हमें लिलि की लाश ठिकाने लगाने के बाद कब्रिस्तान के द्वार पर मिला था जो आपके 'शस्त्र' का शिकार होकर चल बसा।"

"अब वह नष्ट हो चुका है। इसलिए उसके विषय में जिज्ञासा व्यर्थ है सूर्या।" सूपा के मुख पर अप्रिय रेखाएँ उभरीं और स्वर भी कुछ कठोर हो गया।

"सॉरी होली फादर।" सूर्या ने हृदय से क्षमा माँगी।

"कोई बात नहीं।" सूपा के मुख पर सामान्य प्रसन्नता आ गई। वह पुनः बोला—"सूर्या आज का करणीय कार्यक्रम सुनो। प्रातः आठ से......।" सूपा उसे दिन भर का कार्यक्रम बताता रहा सूर्या गंभीरता से सुनता रहा। दिन भर का कार्यक्रम बताकर सूपा की तस्वीर स्क्रीन (टी. वी.) से गायब हो गई।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रातः आठ बजे सूर्या शहर के शासकीय चिकित्सालय एम. जी. अस्पताल पहुँचा। उसे बेहोश सब् इन्सपेक्टर को खोजने में कोई दिक्कत नहीं हुई। उसे प्रातः सात बजे होश आ गया था किन्तु वह अभी भी भयभीत था।

सब् इन्सपेक्टर के वार्ड के बाहर चार पुलिसकर्मी तैनात थे। सूर्या के चुम्बकीय व्यक्तित्व से पुलिसकर्मी आकर्षित हुए। सूर्या ने जब सब् इन्सपेक्टर से मिलने की अनुमति चाही तो उन्होंने सहर्ष उसे मिलने की अनुमति दे दी।

सब् इन्सपेक्टर जे. फर्नांडिस सूर्या को देखकर चौंका। वह उसे प्रथम दृष्टयः ही पहचान गया। सूर्या को देखते ही वह बिस्तर पर बैठ गया, बोला—"कल रात आपकी गाड़ी के नीचे ही वह सुन्दरी आई थी, आप वही हैं न ?"

"तुमने ठीक पहचाना।" सूर्या मुस्कराया।

"ओह, वह सुन्दरी नहीं, साक्षात मौत थी। मैं उसे जीवन में कभी नहीं भूल सकता मिस्टर........।"

"सूर्या......सूर्या नाम है मेरा।" सूर्या ने फर्नांडिस का वाक्य पूरा करते हुए कहा।

एक क्षण मौन रहा। फर्नांडिस रात को देखे हुए दृश्य का स्मरण कर लगभग काँप रहा था।

"मि. फर्नांडिस, क्या देखा आपने ? मैं उस रहस्यमयी सुन्दरी के विषय में जानने को आतुर हूँ।"

फर्नांडिस की आँखों के आगे वह खौफनाक मंजर घूम गया। उसने कंपित स्वर में बताना प्रारंभ किया—

"मि. सूर्या, जब मेरे बॉस इं. जीवन भारती उसे लेकर झाड़ियों की ओट में चले गए तो मैं भी उनसे छिपकर पीछा करता हुआ, ऐसे स्थान पर पहुँचा, जहाँ से मैं दोनों को अच्छी तरह देख सकता था किन्तु वे दोनों मुझे नहीं देख सकते थे। जीवन भारती ने युवती को नंगा होने का आदेश दिया। बिना किसी न, नुकुर के उसने अपने कपड़े उतार डाले। सचमुच कुन्दन जैसा बदन था उसका। जैसे साँचे में ढली हुई मूर्ति। चांदनी रात की शुभ्रता में मैं उसका गठा हुआ नग्न शरीर देखकर सचमुच उत्तेजित हो गया। जीवन भारती ने उसे कमनीयता की प्रत्यक्ष मूर्ति को धैर्यहीन होकर बाँहों में बाँध लिया। मैं सच कहता हूँ, देखते ही देखते उसका रूप बदला। दुग्ध सा गुलाबी मोहक तन पूरी तरह कज्जल सा काला हो गया। उसका शरीर विकराल होता चला गया लेकिन वासना के अन्धे जीवन भारती को उसकी विकरालता के परिवर्तन के विषय में कुछ भी पता नहीं चला। मैं देख ही रहा था, मैंने बहुत प्रयास किया कि आवाज देकर मैं उसे भागने को कह दूँ किन्तु मेरे गले से आवाज नहीं निकल सकी। मैंने पास जाकर उसे सचेत भी



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करना चाहा, लेकिन जैसे मेरे पैर धरती से चिपक गए। उस राक्षसी में और भी परिवर्तन हुआ। उसके काले शरीर पर बड़े-बड़े बाल उग आए, ठीक वैसे ही जैसे भालू के होते हैं। उसका कद और शरीर उत्तरोत्तर बढ़ते गए। उसके दाँत भी बड़े-बड़े होकर भयानक रूप से चमकने लगे। अचानक उसके कण्ठ से गगनभेदी हुंकार निकली। सारा वातावरण उसकी हुंकार से थर्रा उठा। उसकी हुंकार सुन कर जीवन भारती ने उसे देखा और चीख मारी। उसने राक्षसी के चंगुल से छूटने का प्रयास किया किन्तु उसने जीवन भारती को पकड़कर धरती पर पटक दिया फिर उसकी जवान खिंचकर लम्बी होती गई। लपलपाती काली जिह्वा से वह जीवन भारती को चाटने लगी। हाँ एक बात और, आश्चर्य की बात तो यह कि उसकी जुबान बीच से चिरी हुई थी, अर्थात् एक ही जुबान बीच से विभक्त हो गई थी, ठीक वैसे ही जैसे नाग-नागिन की होती है। जीवन भारती बेहोश हो गया। उसके अचेत हो जाने के बाद उस राक्षसी ने मुझे देखा। ओह ! उसकी जलती हुई आँखें मैं कभी नहीं भूलूंगा। अचानक वह मेरी ओर बढ़ी। मुझे लगा जैसे वह मेरे समीप आ गई है। उसने मुझे किसी खिलोने की तरह उठा लिया है। इसके बाद मैं अचेत हो गया।" जे. फर्नांडिस ने अपनी बात समाप्त की।

"और जीवन भारती कैसे पागल हो गया ?" सूर्या ने प्रश्न किया।

"मैं नहीं जानता। अभी हाल ही एक जवान (पुलिस) ने बताया कि आधे घण्टे बाद जीवन को होश आ गया था। होश में आते ही वह चीखने-चिल्लाने लगा। शायद अत्यधिक भय ने ही उसके दिमाग को नाकाम कर दिया है।"

सूर्या का अस्पताल का काम पूरा हो गया था। सूपा का आदेश था कि वह सब् इन्सपेक्टर जे. फर्नांडिस से पूरी रिपार्ट हासिल करे और यह काम वह कर चुका था।

□□

सन्ध्या सुन्दरी का रूप-वैभव जगत में उतरने लगा। सूर्य लोहित होकर निरन्तर अस्ताचल में धसता जा रहा था। सन्ध्या की सुरमई लालिमा के सुखद वातावरण में संभूति माँ निवृत्ति के 'अखण्ड ध्यान योग आश्रम' में पहुँची। वह अकेली ही थी, पीयूष उसके साथ नहीं आया था।

आश्रम में सुखदायिनी शान्ति थी। लगभग दो एकड़ क्षेत्रफल में निवृत्ति देवी द्वारा सञ्चालित आश्रम फैला हुआ था। आश्रम में लगभग एक एकड़ में कृषि कार्य होता था। कृषि फार्म से ही लगा हुआ आश्रम का मनोहर उद्यान था। इसी उद्यान के बीच में शक्ति मन्दिर बना हुआ था। शक्ति मन्दिर के नाम के अतिरिक्त उसे कुलकमलनी देवी, कुण्डलनी शक्ति की स्थापना है, ऐसा साधकगण कहते थे।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दिर से ही सटा हुआ था एक विशाल हॉल। यह ध्यान योग स्थल था। इस हॉल में एक ही समय में लगभग पाँच सौ ध्यान योगी ध्यान साधना कर सकते थे। हॉल की दीवारों पर योग शास्त्र में वर्णित षडचक्रों के भव्य चित्र बने हुए थे।

हॉल में कहीं-कहीं विभिन्न देवियों का भी चित्रांकन था जिनका सम्बन्ध योगशास्त्र वर्णित छः चक्रों से बताया जाता है। हॉल की दीवारें नीले रंग से पुती थीं। यह हॉल वातानुकूलित था। यह वातानुकूलन मानवजन्य नहीं, प्रकृतिजन्य था। हॉल में सदैव शान्ति रहा करती थी।

सिद्ध योग में पारंगत निवृत्ति देवी ! लम्बा कद, उज्ज्वल गौर वर्ण, प्रशान्त आँखें, जिनसे सदैव करुणा का वर्षण होता रहता था। लम्बी घनी खुली हुई केश राशि, भव्य व्यक्तित्व। सुन्दरता जैसे उनकी चरण चेरी थी। निवृत्ति देवी की आयु लगभग 45 वर्ष की थी किन्तु संयम, ब्रह्मचर्य और योगासक्त रहने के कारण उनकी आयु मुश्किल से तीस-वर्ष की प्रतीत होती थी।

जनसामान्य निवृत्ति देवी को विशिष्ट सम्मान देता था। नगर के धनपति जहाँ उन्हें श्रद्धा-सम्मान देते थे तो निर्धन जनों की भी वह श्रद्धा की पात्र थी। देवी निवृत्ति के आश्रम के द्वार सभी के लिए खुल थे।

निवृत्ति देवी लगभग बीस वर्ष से इस स्थान की शोभा थी। वे कहाँ से आईं ? उनका सम्बन्ध किस वंश, किस परिवार से है ? कोई नहीं जानता। निवृत्ति देवी स्वयं इस विषय में जब कोई उनसे पूछता तो मन्द स्मित से कहती—

"मैं मानव कुल में हुई हूँ, समस्त संसार मेरा घर है, प्रकृति में, जगत में रह रहे सभी जीव मेरे ही परिवार के हैं।" पूछने वाला सुनकर निरुत्तर हो जाता।

कोई नहीं जानता था कि निवृत्ति देवी कब सोती हैं ? और कब शय्या त्याग कर साधना में लग जाती हैं। मन्दिर से सटे हुए कक्ष के भूगर्भ में उनकी आराध्या, देवी कुण्डलनी की प्रतिमा स्थापित थी। इसी भूगर्भ या गुफा में निवृत्ति देवी साधना किया करती थी।

इस गुफा को देखने का सौभाग्य बहुत कम लोगों को था। मात्र आश्रम के तीन-चार साधक-साधिकाओं ने ही उनकी गुफा देखी थी। उन्हीं में से एक थी पुष्प सी कमनीय, सुमन सी सुरभित और देवांगना सी रूपवती चित्कला।

चित्कला एक अनाथ लड़की थी। पित्रहीन बालिका के माता-पिता शैशवावस्था में ही चल बसे थे। चाचा-चाची ने पालन-पोषण किया। उसके पिता के पास अपार सम्पत्ति थी, जिसे हड़पने के लिए उसके चाचा ने उसे जान से मार देने के षड्यन्त्र किए। ऐन वक्त पर उसे संयोग वश चाचा की योजना की जानकारी मिल गई और वह घर से भाग निकली। दूर बैंग्लौर से आकर वह एक ऐसी औरत के जाल में जा फँसी, जिसे उसने वेश्या बना दिया। अन्ततः उसका उद्धार हुआ।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुलिस रेड में वह पकड़ी गई। पुलिस इन्सपेक्टर सांगले ने उसकी पीड़ा-व्यथा को अनुभव किया और उसे माँ निवृत्ति के आश्रम में पहुँचा दिया।

एक वर्ष में ही चित्कला ने जिसे आश्रम के सभी लोग चिति कहते थे, निवृत्ति का विश्वास जीत लिया। चिति का व्यवहार उसकी, एकाग्रता, धारणाशक्ति की अद्‌भुदता को देख कर ही निवृत्ति ने उसे अपनी विशिष्ट सेवा में रख लिया। देखते-देखते पाँचे वर्ष व्यतीत हो गए। चिति बीस से पच्चीस वर्ष की हो गई। योगाग्नि की तपिश में तप कर उसकी काया स्वर्ण सी चमकने लगी। लोग उसे माँ निवृत्ति की उत्तराधिकारी मानने लगे।

इतना सामीप्य होने पर भी चित्कला को रात्रिकाल में माँ निवृत्ति की गुफा में रहने का अधिकार नहीं था। वह मात्र प्रातः सायं गुफा में जाती और गुफा की आवश्यक सफाई आदि करती।

निवृत्ति का साधना-आसन नित्य बदला जाता था, यह बात सिर्फ चित्कला ही जानती थी। रोज प्रातः जब वह गुफा में जाती तो उसे आसन जला हुआ मिलता था। वह प्रथम दिन ही यह समझ गई थी कि निवृत्ति माँ की योगाग्नि से उत्पन्न ऊष्मा के कारण ही आसन जल जाता है। यह बात उसने आज तक किसी को नहीं बताई थी। ऐसे अनेक रहस्य थे जिन्हें चित्कला ने कभी किसी पर प्रकट नहीं किया था।

विशेष अवसरों पर माँ निवृत्ति, मुमुक्षुओं को ध्यानयोग की दीक्षा भी देती थी। उनके शिष्यों में धनकुबेर भी थे तो निर्धन जन भी। दोनों से उनका व्यवहार समान था। माँ निवृत्ति आशीष देने और स्वयं के चरण स्पर्श कराने से परहेज करती थीं। अक्सर वे कहती थीं—

"इस मिट्‌टी की काया के चरण स्पर्श से तुम्हें क्या मिलेगा ? मैं तो साधारण स्त्री हूँ। मेरे पास ऐसी शक्ति नहीं कि मैं अपने आशीर्वाद से किसी का भाग्य बदल दूं अथवा उसके पूर्वकृत दुष्कर्मों को नष्ट कर दूं। जो कुछ भी करती है देवी शक्ति (कुण्डलनी) ही करती है। वही सक्षम है और उसका निवास हर मानवजात में है। इसलिए हमें उस शक्ति की ही शरण में जाना चाहिए। एक बार उसकी शरणागति हो गई तो फिर वह स्वयं ही हमारे अनुरूप कार्य को करेगी। जब जिसकी जैसी आवश्यकता होगी, वैसा ही स्वतः उपस्थित हो जाएगा। उसकी शरणागति के लिए ध्यान ही एकमेव आधार है, उसी से नागिनी (कुण्डलनी) शक्ति से पुकार कर जाग्रत होती है। इसलिए अहिर्निश ध्यान करो। ध्यान ही श्रेष्ठ है, ध्यान ही श्रेष्ठतर है।"

माँ निवृत्ति के आश्रम में उद्यान में बिल्व विपुल मात्रा में थे। जब कोई अत्यधिक अर्थ से पीड़ित होता तो माँ सहज स्वर में करुणा से भर कर उससे कहती—"पगला है रे तू। जब तक भारतवर्ष में बिल्व है, कोई निर्धन क्यों रहे ? जा,



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चला जा बावले ! बिल्व के नीचे बैठ कर ध्यान कर। स्वयं में विष्णु के पौरुष को प्रकट कर। जा......जा......।" और आश्चर्य होता जब बिल्व के नीचे बैठकर की गई कुछ दिनों की साधना के फलस्वरूप अनायास ही उसके पास धनागम होने लगता।

किसी को ग्रहकृत पीड़ा होती तो माँ उसे पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान साधना का आदेश देती। पीपल वृक्ष का पूजन करने को प्रोत्साहित करती। किसी की विवाह योग्य कन्या के वर प्राप्ति में कठिनाई आ रही होती तो कोई अन्य विपदा से पीड़ित हो जाता। माँ निवृत्ति उसे भिन्न-भिन्न वृक्षों के नीचे बैठ कर ध्यान करने की सलाह देती। निवृत्ति उद्यान का प्रत्येक वृक्ष देवालय से कम नहीं था। लोगों की कामनाएँ तो पूरी होती ही थीं, साथ ही उन्हें आत्मिक शान्ति भी मिला करती थी।

नवरात्रि, दीपावली की अमावस्या, होलिका, कृष्ण जन्माष्टमी आदि अवसरों पर सिद्ध योगिनी निवृत्ति सत्पात्रों को शक्तिपात दीक्षा प्रदान करती थी। वे शिष्य-शिष्या के भ्रूमध्य स्थान पर अपना तेजोमय अंगूठा रखतीं। साधक को अनुभव होता, मानो उनके स्निग्ध, कोमल अंगूठे से प्रकाश की रेखा निकल कर उसके (साधक के) भ्रूमध्य में प्रवेश करती जा रही है। उसके प्राण तृप्त हो रहे हैं, मन एकाग्र होकर शान्त होता जा रहा है, चेतना ऊर्ध्वमुखी होती जा रही है। जब निवृत्ति का सुकोमल हाथ साधक के सिर पर होता तो उसे लगता मानो निवृत्ति के हाथ से सप्तरंगी प्रकाश की किरणें निकल-निकल कर उसके शिरोदेश को शीतल कर रही हैं। एक अभेद शान्ति चारों ओर व्याप्त हो गई है। उसका अपना एक अलग लोक बन गया है। एक ऐसा लोक जिसमें अवर्णनीय प्रकाश की शुभ्रता है।

ऐसे ही एक अवसर पर निवृत्ति ने संभूति को दीक्षा दान की थी। वह नवरात्रि के दिन थे। संयोगवश संभूति अपनी पड़ोसन जो श्री माँ निवृत्ति की शिष्या थी, उनके आश्रम में गई तो संभूति भी उसके साथ आश्रम जा पहुँची।

संभूति को देखते ही निवृत्ति चौंकी थी। बिना किसी पूर्व भूमिका के निवृत्ति ने संभूति को लक्ष्य कर कहा था—

"बेटी, मेरे पास आओ। तुम्हें अध्यात्म शान्ति की आवश्यकता है। आओ वहाँ उस पुष्प कुंज में कुछ क्षण बैठ कर चर्चा करेंगे।"

उपस्थित जन समुदाय संभूति के भाग्य पर ईर्ष्या से जल उठा। संभूति कितनी भाग्यवान है, जो श्री माँ से एकान्त में चर्चा कर सकेगी। पुष्प निकुंज में बैठकर निवृत्ति ने स्नेह से उसके सिर पर अपना हाथ रखते हुए कहा—"बेटी, संसार में एक स्त्री के लिए पति ही सर्वश्रेष्ठ है—क्योंकि वही उसके सुख का मूलाधार है। पति से ही पुत्र मिलता है जिससे नारी का मातृत्व धन्य हो उठता है



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और पति के बाद उसका एकमेव इष्ट वह स्वयं है। अर्थात् नारी में निहित स्वयं की शक्ति ही उसे ध्येय है।"

सुनकर संभूति काँप उठी थी। क्या कहना चाहती है श्री माँ ? क्या उसके पति ? नहीं.....नहीं...... ।"

उसकी भाव भंगिमा देखकर निवृत्ति हृदयागत भावों को समझ गई।

"न, बेटी शंका-कुशंकाओं को जन्म मत दो। बस उस दयामयी के श्री चरणों में मन लगाओ पति की सेवा करो।" उन्होंने स्नेहिल स्वर में कहा।

"माँ अभी आपने कहा नारी की पूर्णता उसके मातृत्व में है। लेक़िन..... ।" संभूति की मनःव्यथा ओठों पर आ गई। यह प्रथम अवसर था जब उसने किसी से अपने मन की पीड़ा का बखान किया था। निवृत्ति एक क्षण मौन हो गई। उसकी आँखें निखिल आकाश की विस्तारिणी को निर्निमेष रूप से निहारने लगीं। उन्होंने दीर्घ निःश्वास ली फिर बोलीं—"यह सब चिति शक्ति पर छोड़ दो, वह सर्वविध कल्याण करेगी। मैं आज ही तुम्हें शाक्तेय दीक्षा से अभिषिक्त करूँगी। सब ठीक हो जाएगा, मैं तुझमें एक उन्नत साधिका को देख रही हूँ। माँ कल्याण करेगी।"

उसी दिन माँ निवृत्ति ने उसे दीक्षा प्रदान कर दी फिर कहा—"बस तुम्हें कुछ नहीं करना मात्र प्रातः-सायं ध्यान के लिए आसन पर बैठ जाना है। ध्यान के समय शरीर में क्या क्रिया-प्रतिक्रिया हो रही है ? उससे कोई प्रयोजन मत रखना। साथ ही जो संवेग उठें उन्हें रोकना भी मत। कभी स्वतः ही मुद्राएँ लगेगी, भस्मिका भी प्रारम्भ होगा तो कभी अन्य क्रियाएँ भी होंगी। कभी देवदर्शन होगा तो कभी किसी अन्य लोक के निवासियों के सिद्धों को देखोगी।"

उस दिन के पश्चात् जैसे संभूति के लिए एक नये जगत के स्वर्णिम द्वार खुल गए। उसके पति पीयूष ने उसकी साधना में कभी विघ्न नहीं किया। वह स्वयं भी आस्तिक था पर वह आज के कथित गुरु और सिद्धों को पाखण्डी मानता था। इसलिए वह न तो किसी आश्रम में जाता था और ना ही किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में था जो स्वयं को गुरु कहता था।

पीयूष की अस्वस्थता के मध्य संभूति अनेक बार माँ निवृत्ति के आश्रम पर गई पर उसे माँ निवृत्ति से भेंट नहीं हो सकी थी। जब पीयूष की मृत्यु हुई तो संभूति की स्मृति में श्री माँ निवृत्ति की प्रथम भेंट के दृश्य घूम गए। प्रथम बार में ही श्री माँ ने उसे वैधण्य होने का संकेत दे दिया था किन्तु जब अकस्मात् ढंग से पीयूष मृत्यु के उस पार से वापस लौटा तो उसने इस जीवन वापसी को श्री माँ और शक्ति देवी की ही कृपा माना, किन्तु आज जो उसके भावलोक में भव्य पुरुष आया, उससे वार्तालाप हुआ, उससे वह विचलित हो गई। भय से मुक्त श्री माँ निवृत्ति के चरणों में हुआ जा सकता था, इसलिए वह अखण्ड ध्यान योग आश्रम में पहुँची थी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक विचित्र संयोग घटित होता है। ठीक उस समय जब संभूति आश्रम के मुख्य द्वार से आश्रम में प्रवेश कर रही थी, सूर्या की विदेशी कार आश्रम के पोर्च में रुकी। वह उतर कर द्वार पर आया तो आश्चर्य से चौंक उठा। द्वार पर वह उस रहस्यमयी सुन्दरी को देख रहा था, जो कल रात उसकी गाड़ी के नीचे आ गई थी। जिसके कारण इन्सपेक्टर पागल हो गया था।

सूर्या तेज-तेज कदमों से चलता हुआ संभूति के पास पहुँचा और उसके समीप पहुँच कर आश्चर्यजनक स्वर में बोला—

"आप ? आप यहाँ ? मैं आपके रहस्यों को पाना चाहता हूँ। कौन हैं आप ?"

संभूति का सर्वांग हिल गया। जिसे वह भावलोक में देख रही थी वही उसके सामने साक्षात् था। हे भगवान ! यह क्या ? क्या रहस्य है यह ? चलते-चलते उसके कदम लड़खड़ा उठे। जंघाओं तक में पसीना उभर आया, स्वर उखड़ने लगा, हृदय अत्यधिक भय से धड़क उठा। अटकते स्वर में बोली—

"नहीं......नहीं ऐसा मत करना। मुझे भ्रष्ट न करो, मेरा सतीत्व नष्ट न करो। मेरा पीछा छोड़ दो।" कहते-कहते वह रो पड़ी और भागती हुई आश्रम में प्रवेश कर गई।

सूर्या चकित-हतप्रभ खड़ा देखता रह गया। उसने कब उसके सतीत्व नष्ट करने का प्रयास किया ? वह तो उसका नाम भी नहीं जानता। रात्रि में मिली युवती और हाल ही मिली सुन्दरी में कोई अन्तर नहीं है। अन्तर है तो मात्र कि इस समय उसके हाथ में त्रिशूल नहीं है, लाल कपड़े नहीं हैं। वह अभी पूरी तरह एक गृहणी की भाँति लग रही है, जबकि रात में उसका स्वरूप किसी तंत्र योगिनी का था। रहस्य में उलझता सूर्या श्री माँ निवृत्ति के आश्रम में प्रवेश कर गया।

आश्रम की भव्यता और आध्यात्मिक प्रशान्ति देख कर सूर्या हैरान रह गया। इसके पूर्व वह कभी इस आश्रम में नहीं आया था। उसने सिद्ध योगिनी देवी निवृत्ति का नाम अनेकों बार सुना था, उसके चमत्कारों के विषय में भी अनेक श्रुतियाँ सुनी थीं लेकिन कभी वह आया नहीं था। इसका कारण था कि होली फादर सूपा से अधिक सिद्ध वह किसी को नहीं मानता था। चमत्कार के रूप में कथित सिद्ध गुरुओं द्वारा उत्पन्न किए चमत्कारों को वह विज्ञान सम्मत और रसायन योगों से जन्य चमत्कार मानता था। एक बार उसने होली फादर सूपा से आश्रम की श्रुतियों के विषय में कहा भी था किन्तु सूपा ने सख्ती से उसे डाँटते हुए कहा था कि वह उस आश्रम की ओर देखे भी नहीं। और सूर्या के मनोमस्तिष्क से आश्रम निकल गया था। लेकिन आज.....।

आज जब वह आश्रम के पास निकल रहा था तो उसने आश्रम के पास उसी रहस्यमयी रमणी को देखा और रहस्य पाने के प्रयास में सूर्या आश्रम में आ गया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पता नहीं क्यों इस वातावरण में उसके मन-मस्तिष्क से सूपा की तस्वीर और उसकी चेतावनी भी समाप्त हो गई। बार-बार उसका हृदय कह रहा था रात वाली सुन्दरी यही है, यही है।

सूर्या ने उसे धवल वस्त्र धारिणी आश्रम की ही किसी युवती से घबराए स्वर में बातें करते देखा। संभवतः वह रहस्यमयी सुन्दरी उसी की ओर संकेत करती, उसके सम्बन्ध में कह रही थी। धवल धारिणी जो कोई अन्य नहीं श्री माँ निवृत्ति की विशेष सहायिका चित्कला ही थी, उसने (सूर्या ने) उस युवती (संभूति) को आश्रम में तेज गति से जाते देखा। संभूति के साथ चित्कला भी थी जो वक्र दृष्टि से सूर्या को देखती हुई चली गई थी।

सूर्या ने आश्रम के ही एक व्यक्ति से पूछा कि वे दोनों इधर कहाँ जा रही हैं ? उत्तर में उसने श्री माँ निवृत्ति के आवास की ओर संकेत करते हुए उसे बताया कि दोनों युवतियाँ श्री माँ निवृत्ति से मिलने उनके आवास की ओर गई हैं।

देवी निवृत्ति उस समय अपने आवास (गुफा) से निकल कर शक्ति (कुण्डलनी) के मन्दिर की ओर जा रही थी। मार्ग में ही संभूति ने घबराए स्वर में देवी निवृत्ति को बताना शुरू किया। मन्दिर में पहुँचते-पहुँचते अपनी बात संक्षिप्त कर उसने यहाँ क्षणिक भेंट हुई सूर्या के विषय में भी बता दिया। गंभीरता से निवृत्ति ने बात सुनी और आरती के बाद विस्तृत बात करने को कहा।

सूर्या ने उसी आश्रम सहायक से जब श्री माँ निवृत्ति से मिलने की इच्छा प्रकट की तो उस आश्रमी ने बताया कि इस समय माँ आरती उत्सव में हैं। वहाँ उनका पुण्य दर्शन किया जा सकता है—उनसे परिचर्चा मन्दिर में नहीं उस कक्ष में हो सकती है जहाँ वह जनसामान्य से भेंट करती हैं।

सूर्या जब मन्दिर में पहुँचा तो आरती प्रारम्भ हो चुकी थी। सूर्या ने प्रवेश किया, उसकी बेचैन नजरें आरती की भीड़ में संभूति को खोजने लगीं। अचानक उसकी आँखों में चमक आई। उसने संभूति के साथ एक दैवीप्यमान नारीरत्न को भावविभोर मुद्रा में खड़ा देखा।

आयु लगभग 30 वर्ष। उज्ज्वल, स्वच्छ हँस की भाँति धवल रंग के वस्त्र, खुली हुई केश राशि, जैसे भारतीय पुराणों में वर्णित साक्षात देवी सरस्वती ही प्रत्यक्ष रूप से प्रकट हो गई थी। अथवा शृंगार ने ही वैराग्य का रूप धारण कर लिया था अथवा भक्ति ही साकार रूप में मर्तिमान हो गई थी। अनायास ही सूर्या की श्रद्धा बलवती हो गई। उसका मन धवला के श्री चरणों में गिरने के लिए अकुला उठा। वह समझ गया कि यह देवी कोई अन्य नहीं निश्चय ही श्री माँ होगी।

सूर्या की स्मृतियाँ सजग हुईं। स्मरण क्षितिज पर प्रति पूर्णिमा को देखा गया



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वप्न मूर्त हो उठा। वह यही है, निश्चय से ही वही है यह। वह बचपन से ही प्रति पूर्णिमा को स्वप्न देखा करता था। स्वप्न में एक श्वेत वस्त्रों में एक सुन्दर नारी उसके पास आती थी। उसे खींच कर अपनी गोद में सुलाती और अपना स्तन उसके मुख में दे देती। सूर्या की रसना धन्य हो उठती। वह पय पान करता। पयपान के मध्य वह ममत्वमयी उसके सिर को सहलाती रहती।

एक स्तन पान् कर वह दूसरे स्तन का दूध पीता। पयपान करा कर वह उठती, उससे कहती—

"बेटे सदैव मेरे दूध की लाज रखना।" और वह चली जाती—दूर रुपहले बादलों में, जहाँ वह नहीं जा पाता था।

सूर्या अभी तक यही समझ रहा् था कि उसकी जन्मदात्री माता की आत्मा उसे हर माह क्षीर पान कराने के लिए परलोक से आती है। इस विषय में उसने सूपा से भी कहा था, किन्तु सूपा ने कभी इस बात का संतोषपूर्ण उत्तर नहीं दिया, किन्तु आज। आज उसे लग रहा था, जैसे वह इस रहस्य को प्राप्त कर लेगा। श्री माँ अवश्य ही इस विषय में जानती होगी। जब वह उन्हें नित्यमाह स्वप्न में प्रस्नुतस्तनी के रूप में देखा करता है तो वे भी उसे किसी न किसी रूप में अवश्य देखती होंगी।

आरती समाप्त हो गई। मन्दिर से सम्मर्द छंटने लगा किन्तु सूर्या वहीं खड़ा रहा। श्री माँ देवी निवृत्ति नेत्र बन्द किए आसन पर बैठी थी। आरती के आधा घन्टा बाद तक निवृत्ति देवी कुण्डलनी देवी के श्री विग्रह के समीप नित्य ही बैठा करती थी।

आज भी नित्य की भाँति निवृत्ति नेत्र बन्द कर बैठी थी। उनके समीप ही संभूति और संभूति के दायीं ओर चिति बैठी थी। अचानक संभूति की दृष्टि खड़े हुए सूर्या पर पड़ी। उसके नेत्रों में घबराहट उतरी।

सूर्या का मन अब दूरी सहन नहीं कर सका। वह आहिस्ता से चलता निवृत्ति देवी की ओर बढ़ा। उसे आते देख संभूति के हृदय में प्रकम्प वर्द्धन हुआ, किन्तु सूर्या ने एक बार भी संभूति की ओर दृष्टिपात नहीं किया। वह निरन्तर तप से मण्डित निवृत्ति के तेजोमय मुख मण्डल की पुण्य सुषमा को देख रहा था। चिति ने भी उसे देखा किन्तु कुछ कहा नहीं। हाँ उसके सुहासित मुख पर कुछ विचित्र से भाव अवश्य आए।

सूर्या निवृत्ति के अत्यन्त समीप आ गया। पता नहीं कहाँ से उसके हृदय में स्नेह और पुत्रत्व का वेग फूट पड़ा। वह दण्डवत निवृत्ति के श्री चरणों में गिर गया। उसके नेत्रों से अविरल अश्रुओं की धारा फूट पड़ी। बमुश्किल उसके वाष्पित कण्ठ से "माँ.....ऽ.....ऽ......।" का शब्द निकला।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवृत्ति देवी के पद्म नयन खुले। अपने चरण प्रान्त में शरण पड़े युवक को उन्होंने देखा फिर पवित्र वाणी उनके कण्ठ कुहर से निकली—"बेटे, इतने व्यथित क्यों हो ? उठो.....।"

सूर्या उठा। उसके मुख को देखते ही उनका सर्वांग हिल गया। उज्ज्वल मुख सुषम्य पर अविकल-अविश्वसनीय और अतिरेक भाव की रेखाएँ नृत्य करने लगीं। उन रेखाओं में हर्ष था, आश्चर्य था, प्रसन्नता का सागर था। किन्तु जल्दी ही उन्होंने स्वयं पर नियंत्रण कर लिया। पर वे असाधारण रूप से गंभीर अवश्य हो गईं।

"यहाँ नहीं मेरे आवास पर चर्चा करेंगे।" उन्होंने मात्र इतना ही कहा और उठकर खड़ी हो गईं। चित्कला चकित थी तो संभूति को भी आश्चर्य हो गया था। उन्होंने प्रथम बार श्री माँ के स्वर में कम्पन का अनुभव किया था। प्रथम बार उन्होंने देखा था कि श्री माँ के हृदय में छिड़े आन्दोलन की रेखाएँ उनके चेहरे पर दिखाई दी थीं, भले ही वह क्षणिक रही थीं।

अपने पीछे आने का संकेत कर निवृत्ति शान्त गति से चल पड़ीं। उनके कुछ पीछे चित्कला, संभूति और सूर्या थे। पता नहीं क्यों संभूति के पैरों में कम्पन था। वह चित्कला और सूर्या को छोड़ तेजी से निवृत्ति के पीछे लपकी।

"क्या तुम श्री माँ को जानते हो ?" चित्कला ने अत्यन्त धीमी आवाज में, सूर्या के साथ चलते हुए पूछा।

"शायद, शायद मैं श्री माँ को जानता हूँ पर नहीं मैं नहीं, मेरी आत्मा, मेरा मन उन्हें जानता है। सूर्या स्वप्न लिप्त स्वर में बोला।

वर्षों बाद.....वर्षों बाद चित्कला के हृदय में युवावस्था से उत्पन्न संवेदनाओं ने जन्म लिया। संभवतः सूर्या का कामदेवी स्वरूप ही इसके मूल में था। यद्यपि चिति की आयु पच्चीस वर्ष से अधिक थी और सूर्या लगभग 21-22 वर्ष का तरुणादित्य। किन्तु काम Sex की अवस्था या कामसंवेगों को इससे कोई अन्तर नही पड़ता। जबकि सूर्या के मन में किसी प्रकार का कोई संवेग नहीं था। उसकी चितिशक्ति पूर्ण रूप से श्री माँ निवृत्ति के ममत्व की ओर चुम्बिकत थी।

"तुम्हारा परिचय ?" चिति के अधरों पर कम्पन हुआ।

"सूर्या। मैं सूर्या हूँ। बस इसके अतिरिक्त मैं स्वयं भी कुछ नहीं जानता।" सूर्या ने निश्छल स्तर में उत्तर दिया।

निवृत्ति देवी जनसामान्य से मिलने वाले हॉल में न जाकर पुष्प वाटिका के एकान्त बने छोटे से कक्ष में पहुंची। यह वह कक्ष था जिसमें वह विशेष साधकों से चर्चा किया करती थीं। उस कक्ष में मात्र वही व्यक्ति प्रवेश पाता था, जिसे निवृत्ति देवी बुलाती थीं।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"संभूति, तुम बाहर रह कर प्रतीक्षा करो। आवश्यक होगा, तुम्हें बुला लूंगी। उस युवक को मेरे पास भेज दो पर सावधान जब तक मैं नहीं कहूं, कोई अन्दर न आए" कहते हुए निवृत्ति देवी कक्ष में प्रवेश कर गईं।

कुछ क्षणों पश्चात् ही सूर्या और चित्कला भी आ गए। संभूति ने दृष्टि झुकाए हुए मन्द स्वर में सूर्या से कहा—

"आपको श्री माँ ने कक्ष में बुलाया है। आप जाएँ।"

"मैं उनका आभारी हूँ।" सूर्या ने उपकार बोध से कृतज्ञता प्रकट की। और वह खुले द्वार से कक्ष में प्रवेश कर गया।

"द्वार बन्द कर दो बेटे।" अन्दर से देवी निवृत्ति का गंभीर स्वर गूंजा।

द्वार बन्द होते ही कक्ष में कुछ अंधेरा हो गया। निवृत्ति देवी आसन पर बैठी थी, सूर्या के समीप आते ही वह त्वरा से उठी और सूर्या के लम्बे-चौड़े बलिष्ठ शरीर को अपने भुजमृणाल में बाँधने का प्रयास किया।

सूर्या ने चरण स्पर्श किया। निवृत्ति देवी ने उसके ललाट पर ममत्व पूर्ण चुम्बन लिया।

"तेरा नाम क्या रखा गया है बेटे।" निवृत्ति देवी का कण्ठ भर आया, उनकी आंखों में अश्रुओं के जल बिन्दु झलके।

"मेरा नाम सूर्या है माँ।" सूर्या ने उत्तर दिया।

निवृत्ति देवी आसन पर बैठ गईं। सूर्या उनके सामने, बिल्कुल अबोध शिशु की भांति। अचानक निवृत्ति देवी ने उसे अपनी गोद में खींच लिया। दे स्नेहाति-रेक से उसके मुख को चूमने लगीं। साथ ही उनकी आंखों से आँसुओं का महावेग भी बह रहा था।

"बेटे ! सूर्या ऽ.....।" अवरुद्ध कण्ठ से निवृत्ति के कण्ठ से घर्घराता स्वर निकला।

"देख बेटा ......। कितने दिनों से तेरी प्रतीक्षा कर रही थी। मुझे विश्वास था कि एक दिन तू अवश्य आएगा। आ.....आ.....ऽ....मेरे बच्चे.....देख तो......देख तो मेरे अन्तर ममत्व का सागर उमड़ पड़ा है। मेरे स्तनों में दुग्ध की पुण्य सलिला फूट पड़ी है सूर्या......।" कहते हुए निवृत्ति ने अपना दायाँ स्तन वस्त्रों से निकाल कर उसके मुख में रख दिया। ठीक स्वप्न की भांति। सूर्या भूल गया कि शिशुं नहीं पूर्ण युवक है। वह छः माह के शिशु की भांति आनन्दमय अवस्था को प्राप्त होकर स्तनपान करने लगा। उसे प्रतिक्षण लग रहा था जैसे अति स्वादिष्ट और मीठा दूध, दूध नहीं अमृत है। उस अमृत का पान कर उसका नवीन जन्म हो रहा है। उसमें एक नये 'सूर्या' का उदय हो रहा है।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवृत्ति वात्सल्य से उसके सिर पर हस्त सञ्चालन करने लगी। बिल्कुल स्वप्न के समान ही। दुग्ध पानकर सूर्या तृप्त हो गया, जैसे उसकी युगों-युगों की भूख-प्यास मिट चुकी थी। दुग्ध के आधिक्य से निवृत्ति देवी का श्वेत-आंचल भीग गया।

"सच बताओ माँ, क्या तुम ही मेरी जन्मदात्री हो।" निवृत्ति की गोद में सिर रखे सूर्या ने पूछा।

"क्या तुझे और कोई प्रमाण भी चाहिए पगले। देख तो तेरी प्रतीक्षा में मेरे स्तनों में ही सूख गया दूध पुनः कैसे उमड़ पड़ा ? निवृत्ति वात्सल्य स्नेह से उसे देखती हुए पवित्र मुस्कान से मुस्करा कर बोली।

"तब फिर मुझे इस दुनिया में अकेला कहाँ और क्यों छोड़ दिया था माँ ?" सूर्या का स्वर भीग गया। अचानक उसके मन में विस्फोट सा हुआ। क्या मैं पापजन्य हूँ, जिसे लोक-लाज के कारण माँ ने त्याग दिया था। उसने धड़कते हृदय से पूछा—"मेरा पिता कौन हैं माँ ? कहाँ हैं वे ? इस समय हैं भी या नहीं ?

"तू निर्पितृ है पुत्र ! अर्थात् तेरा पिता तेरे जन्म से हजारों वर्ष पूर्व मृत्यु को प्राप्त हो गया था।" निवृत्ति देवी ने रहस्योद्घाटन किया।

सूर्या जैसे आकाश की महोन्नति से गिरा। वह अटकते स्वर में चकित भाव से पुनः बोला—

"यह.........यह.......कैसे संभव है माँ ?

"समय रहते सभी रहस्य स्वतः ही खुल जाएँगे बेटे। तू बता तेरा पोषण-पालन कैसे हुआ ? कहाँ रहता है तू ?" निवृत्ति ने कहा।

"मैं होली फादर सूपा के पास रहता हूँ माँ। मैं उन्हें ही अपना पिता मानता हूँ।"

"होली फादर ! सूपा !! निवृत्ति देवी अपनी स्मृति पर जोर डालते हुए बोली।

"हाँ माँ, होली फादर सूपा, एक विलक्षण वैज्ञानिक है। असंभव को भी संभव करना सूपा का बाएँ हाथ का काम है।"

"ओह" ! निवृत्ति देवी शून्य में निहारने लगीं। जैसे वह सूपा के विषय में संधानरत हों।

"अब तुम जाओ बेटे, दो-चार दिन में अवश्य मेरे पास आजाया करो।" निवृत्ति देवी ने उससे कहा। अचानक सूर्या को स्मरण आया कि सूपा ने उसे इस आश्रम में आने को वर्जित किया था। फिर भी वह यहाँ आ गया। सूपा अपने वैज्ञानिक कक्ष में उसकी प्रत्येक बात देख रहा होगा। वह काँप उठा। गलती करने पर सूपा कभी किसी को क्षमा नहीं करता। वह महाक्रूर बन जाता है और गलती करने वाले का जीवन शेष नहीं रहता।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"क्या बात है बेटे ? भय की रेखाएँ तुम्हारे चेहरे पर क्यों नर्तन कर रही हैं ?" निवृत्ति देवी चौंक कर बोली।

उत्तर में सूर्या ने सूपा से सम्बन्धित बातें बता दीं। यह भी बता दिया कि उसने आश्रम में आने को मना किया था और उसकी प्रत्येक हरकत को वह जान चुका होगा।

एक क्षण निवृत्ति देवी के मुख पर चिन्तन की रेखाएँ आईं। उन्होंने एक पल अपनी आँखें बन्द कीं फिर आँखें खोलीं। उनके चेहरे से चिन्ता की रेखाएँ मिट गईं।

"बेटे, तू निश्चिंत रह, इस आश्रम की कोई बात कोई वैज्ञानिक नहीं देख सकता।" निवृत्ति देवी के स्वर में दृढ़ता थी, विश्वास की पूर्णता थी।

सूर्या ने निवृत्ति देवी को वह सकल प्रसंग बताया, जो रात में घटित हुआ। उसने यह भी बताया कि वह उस रहस्यमयी स्त्री को पहचान चुका है। वह इस समय इसी कक्ष के बाहर खड़ी है। उसी के कारण ही वह इस आश्रम में आया। उसने द्वार पर हुई संभूति से बातचीत के विषय में बता कर स्पष्ट किया कि उसने कभी संभूति को धर्मभ्रष्ट करने का प्रयास नहीं किया और ना ही उसके सतीत्व हरण की कोई कोशिश की।

सारा प्रसंग सुन कर निवृत्ति देवी कुछ गम्भीर हुई। वे बोलीं–

"सारी बातों का रहस्य खुल जाएगा। मैं इन रहस्यों की तह तक जाने का प्रयास करूँगी। अब तू संभूति को बुला।"

"संभूति ?......" सूर्या कुछ अटका। क्यों कि वह संभूति को नाम से नहीं जानता था।

"संभूति ! अर्थात् वही, जो तुझे रात्रि में भैरवी के रूप में मिली थी।" निवृत्ति ने बताया 'ओह' तो उसका नाम संभूति है। सूर्या ने मन ही मन सोचा और उठा। उसने द्वार खोला संभूति और चिति दोनों कक्ष के द्वार पर खड़ी थीं।

"देवि संभूति, आपको श्रीमाँ याद कर रही हैं।"

संभूति ने कक्ष में प्रवेश किया। अन्दर से आवाज आई।

"सूर्या, तुम भी आओ।" संभूति के पीछे ही सूर्या था।

"संभूति बेटी....। मैं तुम्हें आश्वासन देती हूँ कि भविष्य में सूर्या से तुम्हें कोई शिकायत नहीं होगी। सत्य तो यह है कि इसने कभी तुम्हें धर्मच्युत करने का विचार भी नहीं किया। तुम्हें यह इस रूप में दिखाई दिया तो तुम भी इसे एक नवीन और रहस्यमयी रूप में प्रत्यक्षतः दिखाई दी हो। बता तो सूर्या तूने कल रात क्या देखा ?" निवृत्ति देवी ने सूर्या को आद्योपांत कथन करने को कहा–



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्या ने आदि से अन्त तक सारी घटना को क्रमवार सुनाया। उसने वह बात छिपा ली कि उसकी कार में एक लाश रखी थी और वह लाश उसके साहचर्य का परिणाम थी।

संभूति आश्चर्य से सुनती रही फिर आश्चर्य से बोली—

"लेकिन श्रीमाँ मैं तो कल रात घर में से निकली ही नहीं।"

"हाँ तुम घर से नहीं निकली और सूर्या की चेतना में भी तुम कल रात से पहले नहीं आई। फिर भी तुम दोनों ने एक-दूसरे की उपस्थिति का अनुभव किया। निश्चित ही यह रहस्य है जो जल्दी ही खुलेगा। और हाँ सूर्या बेटे.....तुमने यह तो बताया ही नहीं कि तुम्हारी गाड़ी में उस समय एक युवा लड़की का शव था। और उस लड़की की मृत्यु................।" निवृत्ति देवी ने सूर्या को तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

सूर्या चकित हुआ, साथ ही उसकी अपराध बोधक दृष्टि जमीन पर आ टिकी। वह मन्द स्वर में बोला—

"माँ, यह मेरे जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है। मैं स्वयं इस रहस्य को आपसे कहना चाहता था किन्तु लज्जा और संकोच। इस कारण आपसे कह नहीं सका।"

"कोई बात नहीं सूर्या, लेकिन अब ध्यान रखना। तुम्हारे कारण अब किसी लड़की के प्राण न जाएँ।" निवृत्ति देवी ने सख्त स्वर में कहा।

"मुझे इससे कैसे मुक्ति मिलेगी माँ ?" सूर्या का स्वर आर्द्र हो उठा।

"प्रकृति ! माँ प्रकृति की शरण में जाओ बेटे, वही सर्वहारा है, सर्वशक्तिमयी है, सर्वेशी है।" निवृत्ति देवी ने कहा फिर संभूति की ओर देखा—बोली।

"संभूति, अब पीयूष कैसा है ?"

"वह स्वस्थ होते जा रहे हैं श्रीमाँ एक-दो दिन में नौकरी ज्वाइन कर लेंगे। मैं उनके विषय में भी आपसे निवेदन करना चाहती हूँ। मैं नित्य देख रही हूँ, वे रात में 10-11 बजे कहीं चले जाते हैं और सूर्योदय के पूर्व वापस आ जाते हैं। इस प्रकार उनकी आवारगी बढ़ती रही तो.....।"

"कोई बात नहीं। तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिए।" श्रीमाँ ने कहा।

"अब तुम जा सकते हो।"

अनुमति पाकर दोनों बाहर निकले। संभूति सूर्या के साथ थी।

चलते-चलते वह बोला—

"आपको बुरा न लगे तो मैं आपको आपके घर छोड़ दूँ।"

"मैं। चली जाऊँगी।" संभूति ने भूस्पर्शी दृष्टि किए-किए विनम्रता से 'न' कर दिया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"क्या आपको अब भी मुझसे कोई भय प्रतीत हो रहा है, संभूतिजी।" सूर्या ने सभ्यता से कहा। संभूति की दृष्टि सूर्या की ओर उठी। मद पूरित नयनों में विश्वास झलका, उसके पुष्प पंखुरी से अधर मुस्कान की मुद्रा में फैले स्वर निकला—

"नहीं, अब कैसा भय ? श्रीमाँ की बात अखण्ड सत्य है, पत्थर की लकीर है।"

"तब फिर आइए, मैं आपको छोड़ता हुआ निकल जाऊँगा। यहाँ से शहर लगभग पाँच किलोमीटर है, समय भी अधिक हो गया है। रात के नौ बजने वाले हैं। सर्दी भी तेज है, आइए।" सूर्या ने अपनी गाड़ी का फाटक खोलते हुए सस्नेह आमंत्रण दिया।

संभूति ने इस बार मना नहीं किया। सूर्या द्वारा ड्रायविंग सीट के दूसरी ओर का कार फाटक खोलने पर संभूति उसके समीप आ बैठी। जैसे कार से समूचा पुष्पोद्यान आ गया। संभूति के लावण्यमय देह की दिव्य सुवास से सूर्या का तन-मन महक उठा। उसने कार स्टार्ट की और मोड़ कर शहर की ओर चल दिया।

कुछ दूर तक मौन रहा। संभूति गंभीर बनी हेड लाइटों के प्रकाश से नहाई सड़क को देखती रही। अन्ततः सूर्या ने मौन भंग किया।

"संभूति जी, कुछ कहिए न ? घर में कौन-कौन हैं ? पति कैसे स्वभाव के हैं ? क्या करते हैं ? आपके कितने बच्चे हैं ?" सूर्या ने अनेक प्रश्न एक साथ किए।

संभूति हल्के से मुस्कराई किन्तु अन्धकार में सूर्या उसकी मोहक स्मिता को नहीं देख सका। वह मधुर स्वर में बोली—

"घर में मात्र मैं और मेरे पति पीयूष हैं। उनका स्वभाव बहुत मधुर और मिलनसार है। वे शिक्षा विभाग में एक शिक्षक के रूप में पदांकित हैं। शहर से 25 किमी. दूर एक गाँव में पदस्थ हैं वे। नित्य प्रातः जाते हैं और सन्ध्या समय लौट आते हैं। बीस किलोमीटर का सफर बस से फिर पाँच किलोमीटर सड़क से कच्चे रास्ते पर पैदल चलते हुए गाँव पहुँचते हैं, वापसी उसी रास्ते से। अभी तक हमारे घर में कोई बच्चा नहीं।" अंतिम बात कहते-कहते संभूति कुछ दुःखी हो गई।

"रोज दस किलोमीटर की पदयात्रा। बापरे, कितना थक जाते होंगे ? आप एक मोटर सायकिल क्यों नहीं ले लेतीं। सूर्या ने सुझाव दिया।

"हाँ यही सोच कर मैंने प्रतिमाह थोड़ा-थोड़ा रुपया बचा कर एकत्र किया था। पच्चीस हजार रुपये इकट्ठे भी हो गए थे किन्तु रुपया उनकी बीमारी पर खर्च तो हो ही गया और साथ ही दस हजार से अधिक कर्ज भी हो गया।" संभूति ने गहन श्वासोच्छ्वास लिया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"ओह !" सूर्या कुछ अधिक नहीं कह सका। संभूति भी मौन हो गई।

संभूति ने निर्देशानुसार गाड़ी चलाता हुआ सूर्या संभूति के आवास पर पहुँचा। कार से उतरते हुए संभूति ने आमंत्रण देते हुए कहा।

"आइए न, एक कप चाय पीकर जाएँ।" उसके स्वर में कोई बनावटीपन या औपचारिकता नहीं थी। सूर्या की इच्छा भी थी कि कुछ समय उसे और भी संभूति का सामीप्य लाभ मिले। प्रत्यक्ष में वह बोला—"फिर कभी.....। पता नहीं मेरे साथ आपको आया देख आपके पति क्या सोचने लगें ?"

संभूति हंस उठी। मोक्ति सी धवल दन्त पंक्तियाँ विद्युत रेखा की भांति चमक उठीं। सूर्या का हृदय तेजी से धड़कने लगा। हँसते हुए संभूति ने अपने हाथ से कार का फाटक खोला और निःसंकोच सूर्या का हाथ पकड़कर बाहर की ओर खींचा, कहा।

"तभी तो कह रही हूँ। उनसे मिले बिना ही चले जाएँगे तो उनका स्वभाव कैसे पता चलेगा ? चलो आओ।" संभूति के स्वर में स्नेहिल आदेश था, एक आत्मीयता था। ठीक उसी प्रकार की स्वराभिव्यक्ति जैसे स्वयं श्री माँ (निवृत्ति देवी) ही आदेश दे रही हो। सूर्या के सारे देह में रोमांच हो आया। संभूति के मृदुल मोहक स्पर्श से जैसे आनन्द की तरंगें उसके शरीर में दौड़ उठी थीं।

सूर्या कार से बाहर आया। संभूति ने देखा द्वार भिड़ा हुआ था, इसका अर्थ था, पीयूष अन्दर है। उसने कपाटों पर हल्का-सा दबाव डाला द्वार खुल गए।

"देखो कितने लापरवाह हैं। द्वार को अन्दर से बन्द भी नहीं किया, भले ही कोई घुस जाए।" संभूति ने कहते हुए प्रवेश किया फिर सूर्या की ओर देखकर बोली।

"आइए।"

छोटा-सा घर पर सुरुचिपूर्ण ढंग से सुसज्जित। छोटा-सा आंगन, आंगन के बाद ड्राइंगरूम, उससे सटा शयनकक्ष और आंगन से लगा रसोईघर। पीछे की ओर स्नानगृह और लेट्रिन। बस इतना ही बड़ा घर था। सूर्या को वहाँ स्वर्ग की भाँति सुख की उपस्थिति दिखाई दी।

"आप बैठें, मैं उन्हें बुलाती हूँ, शयनकक्ष में लेटे कुछ लिख पढ़ रहे होंगे।" ड्राइंगरूम में सूर्या को बैठाकर संभूति शयनकक्ष पहुँची किन्तु वहाँ पीयूष नहीं था। शायद बाथरूम में हों, संभूति ने उसे वहाँ भी देखा पर पीयूष वहाँ भी नहीं था।

"हे भगवान ! हद हो गई लापरवाही की भी ! पता नहीं श्रीमान् कहाँ गए ?" बड़बड़ाती हुई संभूति रसोईघर में गई किन्तु पीयूष वहाँ भी नहीं था। उसने गिलास में पानी भरा ट्रे में रखा और वापस ड्राइंगरूम में।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"देखो तो सूर्या.....जनाब घर खुला छोड़कर पता नहीं कहाँ दोस्तों की महफिल सजा रहे होंगे। सचमुच बहुत तंग कर दिया इन्होंने तो मुझे।" संभूति ने थके हुए स्वर में इस प्रकार कहा मानो सूर्या उससे वर्षों से परिचित हो।

"अरे आप परेशान क्यों होती हैं। होंगे यहीं कहीं पास में, आ जाएँगे।" सूर्या को संभूति की यह अदा अथवा मुखगुहा बहुत अच्छी लगी।

"मैं चाय बनाकर लाती हूँ।" उसे पानी का गिलास थमाते हुए संभूति पुनः रसोईघर की ओर दौड़ी। सूर्या ने पानी पिया। उसे लगा जैसे संभूति के स्पर्श और भाव की मिष्ठता पानी में घुल गई हो। पानी में भी वही सुगन्ध थी जो संभूति की तनवंगी देहयष्टि से निकल रही थी। पानी पीकर सूर्या के मन प्राण भी सुवासित हो गए।

कुछ देर में ही संभूति चाय बनाकर ले आई। उसने स्नेह से सूर्या को चाय पिलाई। इस चाय में भी उसे वही सुवास थी, साथ ही एक आनन्दकारी स्वाद भी उसने अनुभव किया। उसकी आत्मा परितृप्त हो उठी। चाय पीकर वह उठा और चलने को तैयार हुआ।

"पुनः आना सूर्या, वे भी मिल जाएँगे।" संभूति ने आग्रह किया।

"हाँ जरूर, यह सौभाग्य परमेश्वर मुझे फिर देगा संभूति जी।" सूर्या ने गम्भीर स्वर में कहा।

संभूति चौंकी, उसके गम्भीर स्वर को सुनकर पर उसने कुछ कहा नहीं। वह द्वार तक सूर्या को छोड़ने आई। पता नहीं क्यों सूर्या को जाते देख संभूति के हृदय में रिक्तता सी आ गई। गाड़ी में बैठते-बैठते सूर्या की आँखें नम हो गईं जिससे उसने छिपाने का प्रयास भी किया किन्तु संभूति की नजर से वह बच न सका। वह निर्वाक देखती रह गई। सूर्या ने क़ार स्टार्ट की ओर चल दिया।

❑❑

सिद्ध योगिनी देवी निवृत्ति के आश्रम में स्थित उनकी गुफा। निवृत्ति देवी नित्य के समान अपने साधनालय में थी किन्तु आज उनकी ध्यान की धारणा में कहीं विच्छिन्नता थी। उनकी दृष्टि में, स्मृति पटल पर अबसे लगभग 21-22 वर्ष पहले का कालखण्ड उभरने लगा। स्मृतियाँ सजग हुई और.....और.....विगत का काल सिनेमा के रुपहले पर्दे पर चल रहे चलचित्रों की भाँति दिखाई देने लगा।

इस नगर से सुदूर मध्य प्रदेश का अरण्यांचल में बसा एक छोटा-सा गाँव। गाँव के उत्तर में गगनचुम्बी पहाड़ की शृंखला शेष तीन दिशाओं को घेरता दो नदियों का पानी। वर्षा ऋतु में तो वह गाँव टापू का रूप धारण कर लेता था। गाँव के चारों ओर बिखरी हरितिमा, वृक्षों-वनस्पतियों का मुक्त वैभव।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहाड़ के पूर्वी छोर से खूब ऊँचाई से एक जलप्रपात उन्नति से धरती पर गिरता थां। इसी जलप्रपात से नदी निकली थी। जलप्रपात के पास ही लिंगेश्वर शिव का प्राचीन मन्दिर बना है, जिसे ग्रामीण लोग अतिसिद्ध स्थान मानते हैं। जनश्रुति के अनुसार शिवजी के इस लिंग विग्रह की स्थापना प्रतिष्ठा नाथ सम्प्रदाय के शीर्ष पुरुष श्री मत्स्येन्द्रनाथ के आदेश पर गोरक्षनाथ जी ने की थी। ग्रामीण जनों का विश्वास था कि शिव मन्दिर परिसर के सौंगजी घेरे में किसी को मृत्यु स्पर्श नहीं कर सकती थी।

इसी शिव मन्दिर पर कुछ वर्ष पूर्व एक परमहंस परिब्राजकार्य स्वामी श्री मत्जगदीश्वरानन्द गिरि जी महाराज का शुभागमन हुआ। मन्दिर गाँव से लगभग दो किलोमीटर दूर था। अक्सर वहाँ सन्नाटा ही रहा करता था। दिन के प्रकाश में तो दर्शनार्थी आ भी जाते थे किन्तु रात्रि प्रारम्भ होते ही वहाँ जनशून्यता और एकमेव सन्नाटे का साम्राज्य हो जाता।

स्वामी जी खाली हाथ थे। उनके पास एक लंगोटी, एक लोटा और मात्र दो ग्रन्थ (सप्तशती, भगवद्गीता) थे। स्वामी के आगमन के विषय में लोगों को दूसरे दिन उस समय पता लगा जब गाँव के सुयोग्य पण्डित चन्द्रशेखर शर्म्मण ने बताया।

स्वामी की तितिक्षा चकित कर देने वाली थी। वे जन कोलाहल से दूर ऐसे स्थान की खोज में थे, जहाँ निर्विघ्न रूप से अपनी आराध्या देवी का स्तवन, चिन्तन, साधन कर सकें। इस स्थान को देखकर उनका अन्तर्यामी प्रसन्न हो उठा। उन्हें न जीविकोपार्जन की चिन्ता थी और न ही जीवनोपयोगी आवश्यक आवश्यकताओं की।

दो दिन तक स्वामी जी पूरी तरह उपवास में रहे। तीसरे दिन उन्हें चन्द्रशेखर शर्म्मण ने आटा, दाल, घी आदि सविनय प्रस्तुत कर भोजन बनाने का आग्रह किया। स्वामी जी हँस पड़े, फिर बोले—

"बेटे, मैं संन्यासी हूँ, संन्यासी अग्नि का स्पर्श नहीं करता। मैं मात्र बना हुआ भोजन ही ग्राह्य करता हूँ। अभी भूख नहीं है, आवश्यकता होगी तब माँ अन्नपूर्णा स्वतः ही व्यवस्था कर देगी।"

चन्द्रशेखर शर्मा ने स्वामी जी से अनुमति लेकर स्वयं ही भोजन तैयार किया। प्रभु को अर्पण कर प्रसाद रूप में स्वामी जी से भोजन ग्रहण करने का निवेदन किया।

'तरुतल वासा, करतल भोजन' के सिद्धान्त को मानते हुए स्वामी ने 'प्रसाद' ग्रहण किया। भोजन के पश्चात् स्वामी जी ने अनायास ही कहा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"बेटे तुम्हारे एक पुत्र और एक पुत्री है। बेटा उच्चाधिकारी बनेगा और बेटी ?"

"शून्य में देखते हुए उन्होंने वाक्य अधूरा छोड़ दिया। जैसे वह चन्द्रशेखर की पुत्री के भविष्य का अविकल दर्शन कर रहे हों।

"और.....बेटी..... ! आप रुक क्यों गए स्वामी जी.....कुछ कहिए न।" चन्द्रशेखर कुछ विकल हुए।

"हो सके तो कल कन्या को यहीं ले आना बेटे।" उन्होंने मात्र इतना कहा और ध्यानस्थ हो गए। सन्ध्या होने को आई किन्तु स्वामी जी का ध्यान भंग नहीं हुआ। वे निश्चल स्थिर बैठे थे। चन्द्रशेखर सन्ध्या समय घर लौट आए।

दूसरे दिन प्रातः अपनी तरुण अवस्था की पुत्री पश्यन्ती को लेकर वह स्वामी जी के पास उपस्थित हुए। पश्यन्ती असाधारण सुन्दरी थी, जैसे वह मानव पुत्री न होकर देवकन्या हो।

स्वामी जी रुद्रार्चन रत थे। रुद्रोपासना से निवृत हो उनकी दृष्टि पश्यन्ती पर पड़ी। वे चकित-थकित नेत्रों से देखते रह गए। उन्हें लगा जैसे हिमवानसुता गौरी प्रत्यक्ष हो गई हो। गौर वर्ण, विशाल हीरक नेत्र, स्निग्धाधिक्य से मण्डित काय रचना। पश्यन्ती ने उन्हें सादर प्रणाम किया।

"खूब.....खूब.....माँ ललिताम्बा खूब.....। तू सहस्र रूपों में प्रकट होती है माँ। तेरी लीला, तेरा जगतविलास विचित्र है भगवती।" स्वामी जी कह उठे। पश्यन्ती समझ नहीं सकी कि स्वामी जी उससे कह रहे हैं अथवा अदृश्य रूप में स्थित उनकी अपनी इष्ट देवी से ?

"बेटे चन्द्रशेखर, बिटिया साक्षात शक्ति का साकार रूप है। यह संसारी नहीं बनेगी। इसके प्राक्तन संस्कार इसे जगत् कल्याणी बनाएँगे। मैं यह भी देख रहा हूँ, यह एक ऐसे नर के शरीर को जन्म देगी, जिसका पिता......।"

स्वामी एक क्षण रुके फिर उन्होंने वाक्य पूर्ण किया।

"जिसके अंश को यह अपने गर्भ में स्थान देगी, उसकी मृत्यु हजारों वर्ष पूर्व हो चुकी है। इसके गर्भ से संभूत (उत्पन्न) पुत्र महावीर और विलक्षण होगा।"

"पर स्वामी जी, यह कैसे संभव है ? जो हजारों वर्ष पूर्व मर चुका है, उसका अंश ? यह तो संभव ही नहीं दीखता स्वामी जी।" चन्द्रशेखर बोले।

"मैं नहीं जानता बेटे, जितना माँ ने मुझे बताया, उतना ही मैंने तुमसे कह दिया। मैं असत्य बोल सकता हूँ पर वह राजेश्वरी झूठ नहीं कहती।"

पश्यन्ती के हृदय में गुदगुदी हो रही थी। क्या वह ऐसी महावीर पुत्र को जन्म देगी। सुनकर उसे रोमांच हो आया। स्वामी आगे कह रहे थे—"बेटे पुत्री को आचमन आदि कराकर वहाँ उस आसन पर बैठा दे। मैं आज ही इसी पुण्य मुहूर्त



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में उसे शक्तिपात की दीक्षा दूँगा। संभवतः यह कार्य भी आयतलोचनी मुझसे ही सम्पन्न कराना चाहती है।"

स्वामी जी के आदेशानुसार पश्यन्ती ने हाथ-पैर स्वच्छ जल से धो, आचमन कर आसन पर बैठ गई। चन्द्रशेखर उसके पास ही खड़े थे। वे विद्वान् पुरुष थे, साधक थे। यद्यपि शक्तिपात उन्हें किसी गुरू ने नहीं किया था, फिर भी वह इस 'अध्यात्म पथ' से अपरिचित नहीं थे।

स्वामी ने शक्ति देवी का स्मरण कर पश्यन्ती के दमकते ललाट पर अपने दाँए हाथ का अँगूठा रखा। एक क्षण तो पश्यन्ती को स्वामी जी के अंगूठे का स्पर्श हिम जैसा शीतल लगा, पर दूसरे ही क्षण उसे लगा जैसे उसके मस्तक के भ्रूमध्य रन्ध्र स्थान पर किसी ने लोहे की तप्त शलाका रख दी हो, उसने पीड़ा से भरकर चीखना चाहा किन्तु चीख उसके कण्ठ में ही घुटकर रह गई।

कुछ क्षणों तक यह वेदना रही फिर शनैः-शनैः शीतलता आती गई। उसके हृदय पद्म का स्पंदन कम होने लगा। पश्यन्ती की चेतना सहज योग अथवा सिद्ध योग की क्रिया का आलम्बन पाकर ऊर्ध्वमुखी होने लगी। भाव लोक स्पष्ट हुआ।

पश्यन्ती ने गहन अरण्य क्षेत्र देखा। उसी अरण्य में उसने एक विशाल स्फटिक से बना मन्दिर भी देखा और मन्दिर के अन्दर.....। उसकी चेतना ने मन्दिर के अन्तःभाग में जगत्प्रसूता महादेवी योनि का विशाल विग्रह देखा। बिल्कुल उसी के उस अंग के समान जिससे वह भी 'पुत्र' का प्रसव करेगी।

अचानक उसके कानों में स्वामी जी की वाणी का मन्द स्फोटी नाद सुनाई देता है—"यही है तेरा मूल स्वरूप। तू नारी है, नारी जो जगत को उत्पन्न करती है, उसका पालन करती है। यही है एकमेव चिन्ह और यह चिन्ह ही कामाख्या है। इस चिन्ह का ही उपासन कर। स्वयं को पहचान तू ही जगत जननी है।"

पश्यन्ती देख रही थी, उसके शरीर की समस्त सुकोमलता, हाथ-पैर, मुख, नेत्र, माँस-मज्जा, लम्बे सुचिक्किन श्यामल केश सभी कुछ पिघलता जा रहा है, तरल होता जा रहा है और तरल होकर उसी योनि में मिलता लय होता जा रहा है। उसका अस्तित्व लुप्त हो गया। अब उसका अपना सौन्दर्य और लावण्यमण्डित बसंत की सुरभि सा महकता शरीर कहाँ है ? वह तो कामाख्या देवी का भाग बन गया है।

योनि की अन्तर गुहा से एक लालिमवर्णी पदार्थ निकलता है। स्वामी जी की ध्वनि पुनः सुनाई देती है।

"यह रज है, तेरा रजोमय होना ही संसार की उत्पत्ति का कारण है। यह रज परमदिव्य है।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ क्षणों तक पश्यन्ती स्वयं को रजोमय देखती है फिर अकस्मात् ही उसे अतिस्थूल गगनचुम्बी श्वेत स्फटिक की आभा से मण्डित महालिंग के दर्शन होते हैं। महालिंग महादेवी के रन्ध्र में प्रविष्ट होता है और प्रारम्भ होता है महामंथन। पश्यन्ती सुखातिरेक के अमन्दानन्द में डूब जाती है, उसे पता ही नहीं चलता कि क्या-क्या क्रियाएँ घटित हो रही हैं ? अचानक जैसे सब कुछ थम गया। जैसे बादलों से बरसता जल थम गया है। वह सम्पूर्ण रूप से भीग चुकी है।

अनायास ही वह देखती है—महायोनि का विविर खुल गया है। गगनघोषी स्वर उठ रहे हैं। वह उस महायोनि के छिद्र से मनुष्य, देव, पशु, पक्षी, वृक्ष-वनस्पति, पहाड़, नदी, सूर्य, चन्द्रादि तारागणों के अतिरिक्त समस्त ब्रह्माण्ड को उत्पन्न होते हुए देख रही है। सृजन को देखकर वह मुग्ध हो गई है। प्रसन्नता है कि सम्हाली नहीं जा रही। प्रत्येक सृजित रचना उसकी अंशजा है, प्रत्येक रचन उसका पुत्र है, वह जगन्माता है। देव-मनुज, राक्षस सभी उसका करबद्ध स्तवन कर रहे हैं। उसे अपनी संभूत रचनाओं पर वात्सल्य का सागर उमड़ पड़ा है। वह किसी को चूमती है किसी को अंक में बैठाती है, किसी को स्तनपान कराती है। सृष्टि के विविध कर्म सम्पादित हो रहे हैं।

पण्डित चन्द्रशेखर देख रहे थे, पुत्री के चेहरे पर दिव्यता आ गई है, एक अवर्णनीय प्रकाश की किरणों से उसका मुख दैदीप्यमान हो उठा है। लगभग दो घण्टे व्यतीत हो गए लेकिन पश्यन्ती की ध्यान तन्द्रा नहीं टूटी। चन्द्रशेखर ने स्वामी जी की ओर कुछ विकल दृष्टि से देखा, स्वामी जी शान्त चित्त और प्रसन्न दृष्टि से पश्यन्ती के नक्षत्र की तरह चमकते मुखमण्डल की ओर देख रहे थे।

"स्वामी जी, दो घण्टे से अधिक समय व्यतीत हुआ। पुत्री की तन्द्रा खण्डित नहीं हो रही।" अन्ततः चन्द्रशेखर की विकलता हृदय से निकल कर स्वर रूप में मुखर हुई।

चिन्ता न करो बेटे ! तुम्हारी पुत्री सामान्य युवती नहीं है। वह प्रकृति का ही रूप है बल्कि साक्षात प्रकृति ही है, जिसे मोह वश तुम अपनी कन्या समझ रहे हो। इस समय वह उसका अपना परिचय प्राप्त कर रही है, स्वयं से मिल रही है। यह पुनीत सम्मेलन जब समाप्त होगा तभी उसकी तन्द्रा खुलेगी। तब तक तुम्हें प्रतीक्षा करनी होगी।" स्वामीजी ने उसे देखते हुए शान्त स्वर में कहा।

"कितना समय और लग सकता है स्वामी जी ?" चन्द्रशेखर ने प्रश्न किया।

"कुछ पता नहीं।" स्वामी जी ने अप्रसन्न स्वर में किंचित रुष्ट स्वर में कहा।

एक घन्टा और समाप्त हो गया, तब पश्यन्ती की आंखें खुलीं। चन्द्रशेखर की समस्त व्याकुलता समाप्त हो गई। स्वामीजी उठ कर उसके पास पहुंचे। पश्यन्ती उठ कर स्वामीजी के चरणों में लकुटिवत गिर गई। अत्यधिक प्रसन्नता से उसका



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कण्ठ अवरुद्ध हो गया था, नेत्रों से आनन्दाश्रु बह उठे थे। स्वामी ने तत्क्षण उसे उठाया।

"नहीं......नहीं बेटी....। तेरे रूप में मेरी आराध्या माँ मेरे सामने है। मैं इस सम्मान का, श्रद्धा का अधिकारी नहीं हूँ" स्वामी ने कहा।

"गुरुदेव, अब मैं आपको पहचान गई हूँ। आप ही मेरे तारक हैं।" पश्यन्ती की श्रद्धा उमड़ पड़ी। स्वामी हंस उठे। हंसते-हंसते ही बोले।

"मुझे भी अपनी माया का भाग बनाना चाहती है। कैसे छलती है तू संसार को मैं सब जानता हूँ, फिर भी तेरी प्रसन्नता के लिए ले, तेरी बात मान लेता हूँ।" कहते हुए स्वामी जी ने अपने चरण युगल आगे बढ़ा दिए। पश्यन्ती ने अपना सिर उनके चरणों पर रख दिया। चन्द्रशेखर प्रसन्नता से देख रहे थे।

उस दिन स्वामी जी ने पश्यन्ती को एक नया पथ प्रशस्त किया। पश्यन्ती की शिक्षा-दीक्षा घर पर ही उसके पिता द्वारा सम्पन्न हुई थी। उसे संस्कृत का विशेष अध्ययन था अतः वेद पुराणादि उसके प्रिय विषय थे। जबकि पश्यन्ती का छोटा भाई जो अपने ननिहाल में अध्ययनरत् था, को अंग्रेजी भाषा पर अधिकार था।

पश्यन्ती की आयु 18 वर्ष और उसका भाई 16 वर्ष का था। पश्यन्ती गंभीर स्वभाव की थी, इसके विपरीत भाई चंचल स्वभाव का लड़का था। इसके बावजूद भी वह शिक्षण कार्य में मेधावी था। गणित और अंग्रेजी उसके प्रिय विषय थे। एक विशिष्ट बात यह कि वह अपने पिता के समान अच्छा ज्योतिषी भी था। हालांकि उसने अपनी इस प्रतिभा को किसी पर प्रकट नहीं किया था किन्तु उसके इस गुण के विषय में उसके माता-पिता और पश्यन्ती भी भलीभांति जानती थी।

स्वामी जी ने उसे तीन दिनों तक शक्तिपात योग में दीक्षित किया। इसके पश्चात् पश्यन्ती प्रातः सायं दोनों समय ध्यान के लिए बैठने लगी। जब वह ध्यान अवस्था में होती तो उसके शरीर की स्थिति बदल जाती। कभी-कभी तो वह चार-चार घन्टे तक ध्यान में बैठी रहती। इससे उसकी दैनिक दिनचर्या प्रभावित होने लगी।

चन्द्रशेखर कुछ चिंतित हुए। पश्यन्ती का मन सांसारिक वस्तुओं से परांगमुख होता जा रहा था और विराग की ओर चित्तवृत्ति होने लगी थी। अन्ततः एक दिन चन्द्रशेखर ने स्वामीजी के सम्मुख अपनी चिन्ता प्रकट की।

स्वामी जी कुछ क्षण मौन हो गए। जैसे वह समस्या का हल खोज रहे थे। कुछ सोच कर स्वामी जी ने कहा–

"कुछ समय तक प्रतीक्षा करो चन्द्र, फिर अपने आप उसका मन सांसारिक-विषयों की ओर आकर्षित हो जाएगा, किन्तु ऐसे समय में तुम्हें काफी सावधान रहना होगा, क्योंकि उसकी देह में काम (Sex) का प्रबल वेग उत्पन्न होगा।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"वह बहुत संस्कारित लड़की है, स्वामी जी, भूल कर भी ऐसा कोई कदम नहीं उठाएगी, जिससे परिबार प्रतिष्ठा पर कोई आँच आए। किन्तु मैं शीघ्र ही उसका विवाह कर रहा हूँ स्वामी जी। सम्बन्ध तय हो गया है, लड़का सुदर्शन है और शासकीय सेवा में है। सारी बात निश्चित हो गई। पूर्णिमा को उसका वाग्दान हो जाएगा।"

स्वामी जी मन ही मन हँस पड़े। पश्यन्ती के भाग्य में पति है कहाँ ? उसका जन्म पति के लिए है भी नहीं। लेकिन उन्होंने पण्डित चन्द्रशेखर से कुछ कहा नहीं। चन्द्रशेखर ने स्वामी जी के मौन को मौन स्वीकृति माना।

चन्द्रशेखर चलने को तैयार हुए ही थे कि वहाँ एक गौर वर्णी नवयुवक ने प्रवेश किया। युवक प्रथम दृष्टयः ही प्रतिभाशाली लगता था किन्तु वह फटे हाल था। स्वामी जी ने भी उसे देखा और तत्क्षण बोल पड़े।

"क्या तुम अंग्रेज हो ?"

"नहीं स्वामी जी, मैं भारतीय माता और अंग्रेज पिता से उत्पन्न हूँ। मेरा नाम विलियम सुरत है।" उसने हिन्दी में बोलते हुए स्वामी जी के चरण स्पर्श करते हुए शालीनता से कहा।

"अर्वाचीन विकास से दूर.....इस अरण्यक क्षेत्र में तुम कैसे भटक रहे हो।" स्वामी ने प्रश्न किया।

"स्वामी जी, मैं सन्धानक हूँ। सृष्टि के समस्त रहस्यों को आत्मसात् करना चाहता हूँ। मैं चन्द्र सितारों की गति, प्रकृति के अबूझ रहस्यों से पर्दा हटा देना चाहता हूँ।" विलियम की आँखों में स्वप्न दिखाई दिया।

"अभी तक तुमने क्या रहस्य जाने ?" स्वामी जी ने पूछा।

"कुछ जाना है स्वामी जी, जैसे सम्मुख खड़े इन ब्राह्मण देव के विषय में बताता हूँ" कहते हुए विलियम ने चन्द्रशेखर की ओर गम्भीरता से देखते हुए अपने बैग से एक विचित्र सा यंत्र निकाला। यंत्र दूरबीन ज़ैसा था।

विलियम ने यंत्र का फोकस चन्द्रशेखर पर सैट किया। फिर एक स्विच दबा दिया। यंत्र से पीली किरणें निकलकर चन्द्रशेखर पर पड़ने लगीं। विलियम ने यंत्र की आँख में झाँककर देखा फिर कुछ स्विच्स को और दबाया और बोला—

"कृपया इस छिद्र में देखें स्वामी जी।"

स्वामी जी ने उत्सुकता से देखा। उन्हें अन्दर एक चमकता हुआ स्क्रीन दिखाई दिया। स्क्रीन में चन्द्रशेखर का बिम्ब चमक रहा था। अचानक चन्द्रशेखर के शरीर का रंग बदला। विलियम कह रहा था—

"इस ब्राह्मण देव की देह संरचना में जिन तत्वों का समावेश है, वे आपको वर्ण या रंग के रूप में दिखाई देंगे। जिस तत्व की सघनता इनमें होगी, उस तत्व



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का प्रतिनिधि रंग इस स्क्रीन में अधिक मात्रा में दिखाई देगा। फिर सारे तत्व एक रूप में सिमट कर अदृश्य हो जाएँगे, शेष रहेगा आत्मा। स्वामीजी इसके पूर्व किसी ने आत्मा के स्वरूप का दर्शन नहीं किया है किन्तु इस यंत्र के माध्यम से वह दर्शन किया जा सकता है।"

स्वामी जी देख रहे थे, पञ्च भौतिक तत्व संग्रहीत हुए और अदृश्य हो गए। इसके पश्चात् स्क्रीन पर एक अलौकिक प्रकाश की तेज आभा से जगमगाता बिन्दु दिखाई दिया, जो मात्र एक क्षण चमका। उससे नील किरणों की रश्मियाँ निकल रही थीं। एक क्षण पश्चात् वह दिव्याभा से दीप्त बिन्दु अदृश्य हो गया। अब उसके स्थान पर पण्डित चन्द्रशेखर की तस्वीर थी।

"अद्भुत।" हटात स्वामी जी के मुख से निकला।

"यह तो कुछ भी नहीं स्वामी जी। मैंने इस यंत्र में भिन्न-भिन्न तत्वों की सूक्ष्म तरंगों को भर रखा है। जैसे मेरे इस संग्रह में सिंह (शेर) के वीर्य से ग्रहण की गई सार तरंगें भी हैं। आप देखें सामने खड़े ब्राह्मण देव किस प्रकार मनुष्य से शेर में परिवर्तित होते हैं।" विलियम अपना एक और चमत्कार दिखाने तैयार हो गया।

विलियम ने अपने यंत्र का फोकस पुनः चन्द्रशेखर पर किया। उसने पुनः अनेक स्विच दबाए। भिन्न-भिन्न किरणें उस यंत्र से निकलकर चन्द्रशेखर पर पड़ने लगीं। स्वामी जी उत्सुक दृष्टि से देख रहे थे, अचानक तेज प्रकाश का झमाका हुआ। एक क्षण स्वामी जी की आँखें बन्द हो गईं। जैसे ही उनकी नजरें खुलीं, उनके आगे अविश्वसनीय दृश्य था, स्वामी जी के सामने एक हृष्ट-पुष्ट शेर खड़ा था और चन्द्रशेखर का कहीं पता नहीं था। अचानक शेर ने दहाड़ मारी, सारा वन्य क्षेत्र उसकी गर्जना से काँप उठा। मन्दिर के आस-पास वृक्षों पर बैठे पक्षी चीख-चीखकर उड़ने लगे। मन्दिर के निकट ही एक हिरण स्वछन्दता से विचरण कर रहा था। शेर की महागर्जना से वह कुलाचें भरता भयभीत होकर भागा।

"इसे दोबारा मनुष्य बनाओ।" स्वामी जी ने आदेश दिया।

विलियम ने उनकी आज्ञा मानकर पुनः यंत्र के स्विचों से खेलना शुरू किया। एक फिर शेर बने चन्द्रशेखर के शरीर पर प्रकाश की रश्मियाँ यंत्र से निकल-निकलकर पड़ने लगीं। लगभग पाँच मिनट व्यतीत हुए, इस बार फिर तेज प्रकाश चमका और अगले ही क्षण शेर मानव में परिवर्तित हो गया।

"कैसे हो चन्द्र ? तुमने क्या अनुभव किया ?" स्वामी जी ने चन्द्रशेखर के पास जाकर प्रश्न किया।

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ स्वामी जी। इस मध्य मैंने अनुभव किया कि मैं वनराज सिंह बन गया हूँ। यही नहीं मेरी इच्छा दहाड़ मारने की भी हुई, मैं जोर से दहाड़ा भी। मैंने उस सिंह गर्जना का भी अनुभव किया।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"सचमुच विलियम की खोज प्रशंसनीय है।" स्वामीजी ने विलियम की पीठ थपथपाई।

"इसकी प्रेरणा कहाँ से मिली विलियम ?" स्वामी ने प्रश्न किया।

"भारतीय पौराणिक वांगमय मेरी खोज का आधार है स्वामी जी। हिन्दू पुराण साहित्य में ज्ञान को चमत्कारिक कथाओं के रूप में प्रस्तुत किया है। आद्यगुरु शंकराचार्य के जीवन चरित्र में एक घटना मिलती है। एक समय किसी कापालिक ने आद्य शंकराचार्य जी पर कोई अभिचार कर्म किया। भगवन् की तबियत अत्यधिक बिगड़ने लगी। उस समय जगतगुरु के एक शिष्य के गले से सिंह हुंकार निकली। उसके नख बड़े होकर तीक्ष्ण हो गए और दहाड़ते हुए उस शिष्य ने नृसिंह रूप धारण कर उस कापालिक का अपने तीक्ष्ण नाखूनों से उदर फाड़ दिया। मुझे इस घटना से सिंह निर्माण की प्रेरणा मिली, मैंने खोज की और अन्ततः सफल हो गया।" विलियम ने अपनी खोज का प्रेरणा स्रोत बताया।

विलियम समझ रहा था कि स्वामी जी पर उसके चमत्कारों की धाक पूरी तरह जम चुकी है, जबकि सत्य यह था कि स्वामी जी उसकी खोज से प्रसन्न तो हुए थे, प्रभावित नहीं। वे चाहते तो विलियम को उससे भी बड़े-बड़े चमत्कार बता सकते थे। उनके पास यौगिक सिद्धियाँ थीं किन्तु वास्तव में जिनके पास सिद्धियों का वैभव होता है, वह उसका सामान्यतः प्रदर्शन नहीं करता। स्वामी जी यह भी समझ चुके थे कि विलियम को अपनी खोजों पर सन्धानक वृत्ति पर गर्व है। उसका गर्व मोचन भी अवश्य होना चाहिए। चन्द्रशेखर के घर जाने के पूर्व उन्होंने उनसे कहा—

"चन्द्र बेटे, एक-दो दिन बाद समय मिले तो पश्यन्ती को अवश्य लाना।" चन्द्रशेखर स्वीकृति देकर चले गए।

"हाँ तो विलियम, इधर इन वन क्षेत्र में तुम किसका संधान करने निकले हो।" चन्द्रशेखर के जाने के पश्चात् स्वामी जी ने युवा वैज्ञानिक से पूछा।

"भगवन यहाँ समीप ही जयसिंहपुरा नामक छोटा-सा गाँव है। उस गाँव में कोई पण्डित शशिशेखर शर्मा रहते हैं। मुझे सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि पण्डित जी के पास प्राचीन पाण्डुलिपियों का संग्रह है। उन हस्तलिखित अमूल्य पाण्डुलिपियों में दुर्लभ तंत्र की पुस्तकें भी हैं। मैं उन तन्त्रोक्त पुस्तकों का अध्ययन करना चाहता हूँ। मेरी खोज उन ग्रन्थों में है।"

स्वामी जी ने उसे जान-बूझकर नहीं बताया कि चन्द्रशेखर के पिता ही शशिशेखर हैं। उन्होंने कुछ सोचते हुए कहा—

"उन तंत्र ग्रन्थों में क्या खोजना चाहते हो।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"स्वामी जी, मैं अघोर-कापालिकों की उद्दाम शक्ति और सिद्धियों के रहस्य जानना चाहता हूँ। नरकपाल कापालिकों की सिद्धियों का प्रमुख आधार हुआ करता है। उनके कपाल पात्र में विशेष शक्ति रहती है। मैंने भी स्वयं अनुभव किया कि नरमुण्ड में असीमित शक्तियाँ हैं। मैं उनका वैज्ञानिकीकरण करना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त शवसाधन की ऊर्जा को भी मैं यांत्रिक करना चाहता हूँ। भैरवी चक्रार्चन् और लतासाधन विधान जिसमें स्त्रियों की देह ही प्रमुख है, के रहस्यों से भी अवगत होने की प्रबल इच्छा है मेरी।" एक क्षण रुककर विलियम पुनः बोला।

"स्वामी जी मैंने स्वयं इन सब पर वैज्ञानिक प्रयोग किए हैं। मैंने अनेक रातें श्मशानों में चिताओं के साथ व्यतीत की हैं, मुर्दों के साथ भी समय बिताया है और नरमुण्डों पर भी प्रयोग किए हैं किन्तु वे सब बिना मंत्रों के पूर्णतः सफल नहीं हैं। मैं इनसे सम्बन्धित मंत्रों का जागरण वैज्ञानिक विधि के मिश्रण से करूँगा, तत्पश्चात् मेरा कार्य पूर्ण होगा।"

"इन प्रयोगों से क्या लाभ है विलियम ? क्या इन प्रयोगों की जाग्रति से मोक्ष मिल सकता है।" स्वामी जी ने प्रश्न किया।

"मैं नहीं जानता स्वामी जी। मुक्ति और मोक्ष इन पर मुझे विचारने का अवसर ही नहीं मिला। अगर प्रत्येक व्यक्ति मोक्षार्थी हो जाए तो संसार का विकास ही रुक जाएगा, खोजें समाप्त हो जाएँगी और सभ्यता विकासहीनता को प्राप्त होकर दम तोड़ देगी।" विलियम ने तर्क दिया।

स्वामी जी ने जानकर भी उसका प्रतिपाद नहीं किया। वे प्रपात की ओर संकेत कर बोले।

"इस प्रपात का शीतल जल, औषधियों से युक्त है। जल में स्नान से उदर रोग और चर्म रोग समूल नष्ट हो जाते हैं। मेरा अनुमान है कि तुम उदर रोगी हो, जाओ स्नान कर सूर्योन्मुखी होकर प्रपात का जल पिओ।"

विलियम हायपर ऐसीडिटी (उच्च अम्ल) का रोगी था। साथ ही उसे वातज रोग भी था। स्वामी जी के द्वारा उसके रोग के विषय में बता देने का उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। वह अपना यंत्र और बैग को स्वामी जी सुरक्षा में सौंपकर स्नान करने चला गया।

उस दिन स्वामी जी और विलियम दिन भर चर्चा करते रहे। दिन का भोजन विलियम ने ही बनाया था, जिसे उसने श्रद्धा और भक्ति से प्रभु अर्पण कर स्वामी जी को भोजन कराया, स्वयं भी ग्रहण किया। विलियम प्रत्येक भारतीय संहिता की बात को वैज्ञानिक दृष्टि से परखता था। भोजन प्रभु अर्पण क्यों किया जाना चाहिए इस पर भी उसका वैज्ञानिक चिन्तन था।

□□



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वामी जी के आदेशानुसार पण्डित चन्द्रशेखर अपनी पुत्री पश्यन्ती को लेकर आश्रम पहुँचे। उस समय विलियम स्वामी द्वारा आरोपित पुष्प-पादपों में पानी दे रहा था। उसने पण्डित चन्द्रशेखर के साथ रूपसी पश्यन्ती को देखा तो ठगा-सा खड़ा रह गया।

वह रूप की उत्सप्रभा थी, सौन्दर्य की अर्करूपिणी थी, साक्षात लावण्य की प्रतिमूर्ति थी। उसके अंग-अंग में आकर्षण और दैहिक अणु-अणु में सम्मोहन का अपार वैभव था। संसार में कहीं ऐसा सौन्दर्य भी होगा ? उसने कल्पना नहीं की थी।

रूप की स्वामिनी, युवावस्था की स्निग्ध चन्द्रिका पश्यन्ती ने उसकी ओर दृष्टि उठाकर भी नहीं देखा। वह सीधे स्वामी जी के आसन की ओर चली गई। विलियम का मन हुआ कि वह भी उस देवांगना को लज्जित कर देने वाली रूप-यौवन से समृद्ध युवती का सानिध्य प्राप्त करने स्वामी के आसन पर उपस्थित हो, किन्तु जब तक वह पौधों की सिंचाई का कार्य पूरा नहीं कर लेता, तब तक कहीं अन्यत्र नहीं जा सकता था। यह विलियम के चरित्र की विशेषता थी कि जब तक हाथ में लिया कार्य पूरा नहीं हो जाता वह किसी अन्य आवश्यक कार्य को नहीं करता था। वह उस ओर से ध्यान हटाने का प्रयास करता हुआ पुनः अपने कार्य में लग गया।

पश्यन्ती स्वामी जी के पास पहुँची। उसे आशीर्वाद देते हुए स्वामी जी ने अपने समीप ही बैठा लिया। पश्यन्ती के निरन्तर ध्यान साधन से उसके अन्तर्बाह्य तेज में वृद्धि हुई थी। स्वामी जी उसकी साधनात्मक गति देखकर प्रसन्न हुए। यथावसर उन्होंने कहा—

"यहाँ एक वर्ण संकर अंग्रेज आया है बेटी। बाहर पौधों में पानी दे रहा है। लगन का पक्का और नयी-नयी खोजों में विश्वास रखने वाला है।"

"जी गुरूदेव ! मुझे आदरणीय पिताजी ने उसके द्वारा किए गए चमत्कार के विषय में कहा था।" पश्यन्ती ने ससम्मान उत्तर दिया।

"हालाँकि वह सरल स्वभावी और कर्त्तव्य प्रिय युवक है फिर भी उसे अपने कर्म और उससे उत्पन्न फल पर उसे गर्व है। उसके चिंतन को सत्वमय बनाने के लिए उसका गर्व मोचन आवश्यक है। मैं चाहता हूँ कि तुम उसके अहंकार को खण्ड-खण्ड करो।" स्वामी ने पश्यन्ती से कहा।

"जी गुरुदेव ! आपकी आज्ञा है तो अवश्य उसका गर्व खण्डन होगा किन्तु गुरुदेव मेरे पास उसके अहं नाश के लिए कोई साधन नहीं है।" पश्यन्ती ने अपनी शंका प्रकट की।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"इसके लिए चिन्ता की आवश्यकता नहीं। तू स्थिर आसन से बैठकर प्राण को साध आज मेरे माध्यम से माँ प्रकृति तुझे एक अभिनव शक्ति प्रदान करेगी।" स्वामी जी के स्वर में संकल्प था।

पश्यन्ती स्थिरासन से प्राणों को थामकर बैठ गई। स्वामी ने सर्वप्रथम परम्परानुसार उसके ललाटस्थ भ्रूमध्य को अंगुष्ठ से दबाया फिर उसके सिर पर हाथ रखते हुए सिर के पीछे हाथ ले गए। इसके बाद उनका शक्ति पूरित हाथ रीढ़ की हड्डी के ऊपर चलता हुआ पश्यन्ती के कटिप्रान्त तक आया फिर धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। उपस्थ मूल जहाँ से रीढ़ की हड्डी शुरू होती है, को स्वामी जी ने शक्ति से दबाया। अकस्मात् ही पश्यन्ती के गले से एक हल्की-सी मधुर गुंजन करती हुई चीख निकल पड़ी।

ज्यों-ज्यों स्वामी जी के अंगूठे के दबाव उपस्थ-अस्थि पर बढ़ता जा रहा था, पश्यन्ती आनन्द धारा में भीगती जा रही थी। उसे लग रहा था कि उसके सारे शरीर से दिव्य जल के स्रोत खुल गए हैं।

अचानक स्वामी जी का अँगूठा उपस्थ की गहराई में जा धँसा। पश्यन्ती विभोर हो उठी। स्वामी जी ने वहाँ किसी स्थान पर अपनी यौगिक शक्ति की ऊर्जा प्रेषित की। पश्यन्ती का शरीर भारहीन होता चला गया। वह संदेह आसन से आंतरिक्ष की ऊँचाई में उठने लगी। अब उसका शरीर लगभग पृथ्वी से 5-6 फुट आंतरिक्ष में बिना किसी आधार के निराधार स्थित था। स्वामी जी ने अपनी क्रिया बन्द की और कुटी का द्वार बन्द कर बाहर आ बैठे, जहाँ विचार मग्न पण्डित चन्द्रशेखर बैठे हुए थे।

"किस चिन्ता में हो बेटे।" स्वामी जी ने स्नेह से पूछा।

"स्वामी जी, कल जिस पश्यन्ती के वर में हम चर्चा कर रहे थे, वह अब शेष नहीं रहा।" चन्द्रशेखर ने निःश्वास ली।

"मैं जानता था पुत्र ऐसा ही होगा। लेकिन तू दुःख न कर। माँ प्रकृति को जो स्वीकार होगा, जो बिटिया के हित में होगा, वही होगा।" स्वामी जी ने सहज स्वर में कहा।

"उसके विवाह की चिन्ता है स्वामी जी।"

"तेरा यह मानना व्यर्थ है। हम जिसे सारी चिन्ताएँ सौंप चुके हैं, उस पर विश्वास भी तो करें।"

"आपकी बात स्वीकार है स्वामी जी।" चन्द्रशेखर के मुख से उदासी की पर्त हटी। उसी समय विलियम अपना काम समाप्त कर आ गया। उसकी चोर दृष्टि पश्यन्ती को खोज रही थी। मन कह रहा था—"कहाँ है वह सकल लोक कुल ललाम कन्या ?" किन्तु वह स्वामी जी से उसके विषय में पूछ नहीं सका।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"सुमन पादपों से क्या'क्या बातें हुई विलियम ?" स्वामी ने मुस्कराते हुए विलियम से पूछा।

"वे अपने विकास की गाथा कह रहे थे और मैं अपनी किन्तु मध्य में विघ्न हुआ, इन पण्डित जी के साथ एक युवती को देखा और मेरी संवेदनाएँ पुष्प पादपों से हट गईं। सत्य तो यह है स्वामी जी कि आगन्तुका ऐसी ही ऊर्जावती सुकन्या है। वह प्रथम दृष्टयः तपस्विनी लगती है।" विलियम ने सत्य बोला।

"पश्यन्ती.....। उसकी नाम संज्ञा पश्यन्ती है विलियम। वह इनकी सुयोग्या आत्मजा है।" स्वामी ने पश्यन्ती का परिचय दिया।

"निश्चय ही आप भाग्यवान हैं, जिसकी गोद में ऐसी कन्या खेलती है।" विलियम ने अपने भाव पण्डित चन्द्रशेखर पर प्रकट किए।

"धन्यवाद, विलियम।" चन्द्रशेखर मात्र इतना ही बोले।

"वह तेजस्विनी इस समय कहाँ है ? स्वामी जी।" विलियम की जिज्ञासा प्रबल हुई।

"वह इस समय कुटी में साधनारत है।" स्वामी ने बताया।

"क्या मैं एक क्षण अपने 'यंत्र' से उसे प्रयोगात्मक दृष्टि से देख सकता हूँ स्वामी जी। विलियम ने आशान्वित नजरों से स्वामी जी की ओर निहारा।

स्वामी जी ने एक क्षण सोचा फिर निर्णय देते हुए बोले—" अवश्य-अवश्य विलियम। मगर उसका स्पर्श न करना, मात्र देख सकते हो।" कहते हुए स्वामी जी उठे। उनके साथ विलियम और चन्द्रशेखर भी।

विलियम ने अपना यंत्र उठाया। स्वामी जी ने फूस से बनी कुटी का द्वार खोला। विलियम द्वार पर खड़ा था, उसे कुटिया खाली नजर आई।

"स्वामी जी कहाँ है ?" विलियम ने कुटिया में झाँका और अचानक उसकी नजर आंतरिक्ष में स्थिर पश्यन्ती की ध्यामावस्थता की ओर गयी।

"ओह, वण्डर !" हटात विलियम के मुख से चकित स्वर निकला। पण्डित चन्द्रशेखर भी चकित हो उठे। उनकी स्वजात कन्या योग की इस अवस्था को इतनी शीघ्र प्राप्त कर लेगी, उन्होंने सोचा भी नहीं था।

आत्मविस्मृत से विलियम ने अपने यंत्र का फोकस सैट किया और अन्दर लगी स्क्रीन पर देखा तो आश्चर्य से उछल पड़ा।

"ओह नो.....इट्स इम्पासिबल।" कहते हुए वह भी कभी यंत्र की स्क्रीन को देखता, कभी आंतरिक्ष में निराधार बैठी पश्यन्ती को।

वास्तव में बात यह थी कि स्थूलतः दिखाई दे रहा पश्यन्ती का शरीर उसे अपने यंत्र की स्क्रीन पर दिखाई नहीं दे रहा था। यह उसके जीवन का प्रथम अवसर था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"क्या हुआ विलियम ?" स्वामी जी मुस्कराए।

"स्वामी जी स्क्रीन पर देवी का स्वरूप दिखाई नहीं दे रहा। संभवतः मेरे यंत्र में कुछ खराबी आ गई है।" विलियम ने यंत्र को गंभीरता से देखते हुए कहा।

"नहीं विलियम, तुम्हारा यंत्र पूरी तरह ठीक है। अच्छा अब देखो, तुम्हें क्या दिखाई देता है।" कहते हुए स्वामी जी ने आदेश दिया।

विलियम ने दोबारा यंत्र की स्क्रीन पर देखा तो चौंक उठा। स्क्रीन पर एक ज्वाज्वलमान आलोक पिण्ड दिखाई दे रहा था जिससे प्रकाश की शुभ्र किरणें निकल रही थीं।

"यह मेरे जीवन का अद्‌भुत आश्चर्य है स्वामी जी।" विलियम के मुख से निकला।

"अब पुनः देखो विलियम।" स्वामी जी ने उसे फिर आदेश दिया।

विलियम की नजरें दुबारा स्क्रीन पर जमीं। इस बार उसने देखा, वह और भी अधिक चकित कर देने वाला था। स्क्रीन पर अब आलोकित पिण्ड के स्थान पर स्वामी जी विराजमान थे। पश्यन्ती के देह पिण्ड के स्थान पर स्वामी जी ? विलियम को अपने वैज्ञानिक सिद्धान्त फेल होते दिखाई दिए। सिद्धांततः जिसका शरीर है, उसी का शरीर और उसके शरीर के निर्माता तत्व उस स्क्रीन पर दिखाई देने चाहिए। विलियम उलझ गया।

"स्वामी जी ऐसा कैसे संभव है कि देवी के शरीर के स्थान पर आपका शरीर स्क्रीन पर दिखाई दे रहा है ? विलियम ने प्रश्न किया।

"बहुत आसान बात है बेटे किन्तु तुम्हारे विज्ञान को यह बात उतनी ही जटिल। वास्तव में प्रत्येक शिष्य में गुरू ही निवास करते हैं। शिष्य के रूप में वह स्वयं साधन करते हुए उसे (शिष्य को) अध्यात्ममय बनाते हैं। जब वह शिष्य सम्पूर्णतः गुरुत्व को प्राप्त हो जाता है तो गुरु का अभीष्ट भी सम्पन्न हो जाता है। फिर वह शिष्य-शिष्य नहीं रहता स्वयं गुरू हो जाता है। यह हमारे भारतीय गुरू शिष्य का दर्शन है।"

"यह तो बड़ी अलभ्य अवस्था लगती है स्वामी जी। इसे किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है ? इस देवी ने इस सिद्धि को कैसे प्राप्त किया ? क्या मैं भी इस सिद्ध अवस्था को प्राप्त कर सकता हूँ।" विलियम ने अनेक प्रश्न कर डाले।

"सिद्धियाँ किसी को भी प्राप्त हो सकती हैं, किन्तु इसके लिए पात्रता होनी चाहिए। इस अवस्था की प्राप्ति एक दिन में भी हो सकती है और एक जन्म में भी नहीं। दरअसल यह साधक के पूर्व संस्कार और क्षमताओं पर आधारित है। इन क्षमताओं को सिद्ध गुरू ही विकसित करते हैं।" स्वामी ने उत्तर दिया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"इस देवी का सिद्ध गुरू कौन है स्वामी जी ?" विलियम ने जिज्ञासा की।

"पश्यन्ती मुझे ही गुरू रूप में मानती है, लेकिन मुझमें ऐसी सिद्धि स्वयं में नहीं है। वस्तुतः पश्यंन्ती ने अपनी सत्पात्रता से ही उसने अपने गुरू को प्रकट किया है। अब देखो हमारी योग शक्ति किस प्रकार पञ्च महाभूतों को एकत्र करती है और पृथक करती है।" कहते हुए स्वामी जी वहीं पद्मासन में बैठ गए।

स्वामी जी ने प्राणवायु को निरुद्ध किया और कुछ गोपनीय योग क्रियाएँ कीं। लगभग पाँच मिनट के बाद पश्यन्ती का शरीर आंतरिक्ष से धीरे-धीरे उतरता हुआ पृथ्वी पर बिछे आसन पर आ टिका। उस समय पश्यन्ती की मनोहर मुखच्छवि की सुषमा अवर्णनीय थी।

विलियम कभी पश्यन्ती को देखता तो कभी स्वामी जी पर उसकी दृष्टि उठती। अकस्मात् पश्यन्ती के शरीर से उसी के अनुरूप एक शरीर और निकला और उसी के पास में स्थित हो गया। विलियम भौंचक्क हुआ देख रहा था। कुछ क्षणों पश्चात् पश्यन्ती के मुख देह से एक और शरीर निकला और फिर इसके बाद एक के बाद एक शरीर निकलते रहे। कुल मिलाकर अब पश्यन्ती के पाँच शरीर एक साथ एकत्र थे। पश्यन्ती के पाँचों शरीरों के रंग अलग-अलग थे किन्तु सभी में पूरी तरह समानता थी। विलियम ने अपने यंत्र से भी उन पाँच शरीरों को देखा किन्तु वे एक भी स्क्रीन पर नहीं आए।

कुछ क्षणों तक पृथक रहने के बाद एक के एक क्रमशः पाँचों शरीर एक पश्यन्ती के मूल शरीर में ठीक ऐसे ही समा गए जैसे बड़े गिलासों के अन्दर क्रमशः उससे छोटे-छोटे गिलास रख दिए जाते हैं।

स्वामी जी ने नेत्र खोले, उधर पश्यन्ती की ध्यान मुद्रा भी भंग हुई। वह सामान्य हुई, उठ कर उसने स्वामीजी के चरण स्पर्श किए। वक्रदृष्टि से विलियम को देखा और वहीं बैठ गई।

यह विलयम और पश्यन्ती की प्रथम भेंट थी। उस दिन के पश्चात् विलियम ने स्वामी जी का शिष्य बनना स्वीकार कर लिया। उसने स्वामी जी से दीक्षा की प्रार्थना भी की। स्वामीजी ने निश्चय किया कि एक सप्ताह के पश्चात् वे विलियम को शक्तिपात दीक्षा या सहजयोग दीक्षा अथवा सिद्धयोग दीक्षा प्रदान कर देंगे।

विलियम का आचार-विचार चिन्तन सभी कुछ बदल गया था। उसका अन्तर्मन पूरी तरह स्वामीजी के श्रीचरणों में न्यौछावर हो जाना चाहता था। और पश्यन्ती......?

उसी दिन पण्डित चन्द्रशेखर शर्मा ने अपनी पुत्री की जन्मकुण्डली का अध्ययन किया। निष्कर्ष पर पहुंच कर उन्होंने निःश्वास ली। कुण्डली में संन्यास योग पड़ा था। पश्यन्ती के विवाह का प्रश्न ही नहीं रहा। पं० चन्द्रशेखर ने अपने



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिता पं० शशिशेखर से सलाह ली। पूर्णतः महामाया को समर्पित ऋषि की रूपता को साकार करने वाले पं० शशिशेखर ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अपने पुत्र से कहा–

"बेटे, पश्यन्ती उन्नतात्मा है। वह बन्धन में बंधेगी भी नहीं। उसे अधिकाधिक समय अपने गुरू के सानिध्य में ही रहना चाहिए।"

और.....उस दिन के पश्चात् पश्यन्ती को जैसे मुंहमांगी मुराद मिल गई। उसका मन भी अपने गुरू के पास अधिक से अधिक समय तक रहना चाहता था। दूसरे दिन से ही पश्यन्ती नियमित रूप से आश्रम जाने लगी। इसी मध्य विलियम को ज्ञात हुआ कि जिस पण्डित शशिशेखर को खोजता वह यहाँ तक आया है वह पश्यन्ती के दादाजी हैं तो उसकी प्रसन्नता और अधिक बढ़ गई।

पश्यन्ती दिनभर आश्रम में साधन-मनन, चिंतन करती। सन्ध्या समय वापस घर आ जाती। अगले एक सप्ताह बाद स्वामी जी ने विलियम को भी दीक्षा प्रदान कर दी। वह अपने गुरु प्रदत्त साधन में मन, वचन और कर्म से पूर्णरूपेण प्रवृत्त हो गया।

समय के साथ-साथ विलियम और पश्यन्ती में घनिष्ठता बढ़ती गई। स्वामी जी उनके अव्यक्त आकर्षण से अपरिचित नहीं थे। एक रात उन्होंने विलयम से गंभीर स्वर में कहा–

"बेटे, सावधान रहना। अब पश्यन्ती की साधना का एक विशेष अध्याय आरम्भ होना है। यथासंभव उससे दूर रहने का प्रयास करना। पश्यन्ती के समीप रहने का अर्थ है तुम्हारा अमंगल। बस कुछ दिनों तक ही तुम उससे दूर रहे तो पश्यन्ती का 'यह समय' निकल जाएगा। इसके पश्चात् तुम उसके साथ किसी भी प्रकार रहो, कोई भय नहीं।"

........दूसरे दिन से ही विलियम ने पश्यन्ती से दूरी बनाना शुरू कर दी। वह पश्यन्ती के आने के पूर्व ही पहाड़ की ओर चला गया। उस ओर सघन वनक्षेत्र था। विलियम ने एक सुरक्षित स्थान देखा और वहीं नित्य साधना के लिए स्वयं को तैयार कर लिया।

उस दिन पश्यन्ती ने विलियम की अनुपस्थिति को मात्र संयोग माना, लेकिन दूसरे दिन, तीसरे दिन और चौथे दिन भी विलियम आश्रम में नहीं मिला तो उसे विलियम की अनुपस्थिति के विषय में सोचने को बाध्य होना पड़ा किन्तु उसने स्वामीजी से उसके विषय में कुछ नहीं पूछा।

पाँचवें दिन भी उसे विलयम आश्रम में दिखाई नहीं दिया। पश्यन्ती नित्य साधना में बैठी। प्राणशक्ति को स्थिर करने का प्रयास किया किन्तु असफलता मिली। उसने पुनः प्रयास किया तो मन का चांचल्य बढ़ गया। अचानक पश्यन्ती के



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हृदय की धड़कनों में वृद्धि हुई। प्राण निर्बल होकर तेजी से गमन-आगमन करने लगा और युवावस्था की तरंगों ने जन्म लिया।

यह कैसा परिवर्तन ? उसके शरीर में अनायास ही काम की संवेदनाएँ प्रकट होने लगीं। योनिपद्मों में स्फुरण होने लगा, स्तनों में भी स्फुरण हुआ। उसके शरीर में एक मीठी सी कसक पैदा हो गई। बन्द नेत्रों के सम्मुख विलियम का युवा देह नाचने लगा। उसने बहुत प्रयास किया कि विलियम की यौवनिक छवि उसके नेत्रों के सामने न आए, किन्तु वह जितना प्रयास करती, उतनी ही विलियम की छवि और अधिक मूर्त होती जाती। अन्ततः उसने अपनी आंखें खोल दीं। मन पूरी तरह ध्यान की मूल धारा से अलग हो चुका था। उसने पुनः प्रयास किया किन्तु एकाग्रता नहीं आ सकी। वह इसी प्रकार बैठी रही। अगर जल्दी उठती है तो स्वामीजी इस विक्षेप का कारण पूछेंगे। तब वह उन्हें क्या बताएगी ? यही सोचकर वह ध्यान साधना का अभिनय करती हुई बैठी रही। जबकि स्वामीजी उसके प्रत्येक भाव और परिवर्तन को स्पष्ट देख रहे थे। उन्हें ज्ञात था कि साधना की इस अवस्था में काम का अति वेग उत्पन्न होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसी का संकेत उन्होंने कुछ दिनों पूर्व पश्यन्ती के पिता पण्डित चन्द्रशेखर को स्पष्टतः दे चुके थे।

पश्यन्ती सन्ध्या तक आश्रम में रही। पूरे दिन उसकी नजरें प्यासी हिरणी के समान आश्रम के द्वार पर लगी रहीं। अन्ततः सन्ध्या समय घर जाने के पूर्व उसने स्वामीजी से पूछ ही लिया—

"गुरुदेव कई दिनों से विलियम आश्रम में नहीं है, जबकि उसका सामान रखा है। क्या कुछ दिनों के लिए बाहर चला गया है ?"

"हाँ, विलियम एकान्त साधना के लिए पर्वतगुहा में कहीं रोज प्रातः ही निकल जाता है। देर रात वह आश्रम में लौटता है।" स्वामीजी को सत्य बताना पड़ा, क्योंकि वे झूठ नहीं बोलते थे।

"लेकिन गुरुदेव यहाँ भी तो एकान्त ही है।" पश्यन्ती ने तर्क किया। हालांकि वहाँ अब अनेक व्यक्ति स्वामीजी के पास अध्यात्म लाभ के लिए आने लगे थे।

"वह मेरे निर्देशानुसार ही जाता है।"स्वामीजी का स्वर कुछ कठोर हुआ।

उस दिन के पश्चात् पश्यन्ती में अस्थिरता आती गई। काम का भाव अधिक बढ़ गया। कभी-कभी तो उसे लगता कि आवेश और उत्तेजना में पड़ कर वह चरित्र भ्रष्ट न हो जाए। एक दिन उसने स्वामीजी से कहा—

"गुरुदेव मैं तीन-चार दिन नहीं आ पाऊंगी।" पश्यन्ती की दृष्टि भूस्पर्शी थी। स्वामीजी ने स्वीकृति दे दी। वह स्वयं भी उससे कहना चाहते थे कि वह दो-तीन दिन आश्रम न आए, क्योंकि उन्हें अत्यावश्यक यात्रा पर ओंकारेश्वर जाना है, जहाँ



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनके 25-30 साधक प्रतीक्षा कर रहे हैं। पश्यन्ती यह जान कर कि स्वामीजी यात्रा पर जा रहे हैं, अज्ञातत: उसका मन प्रसन्न हुआ। स्वामीजी की अनुपस्थिति में तो विलियम आश्रम पर ही मिलेगा। उसका मन पुलकित हो उठा। अगर स्वामी जी की यात्रा के विषय में परिवार जन जानेंगे तो निश्चय ही उसे आश्रम में नहीं आने देंगे। वह विचार कर ही रही थी कि स्वामी जी ने उससे कहा—

"बेटी मैं कल प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में ही निकल जाऊंगा। तुम चन्द्रशेखर को मेरे जाने का समाचार दे देना।"

"जी गुरुदेव।" पश्यन्ती ने कहा। और घर के लिए प्रस्थान कर गई।

पश्यन्ती ने जान-बूझ कर अपने पिता को नहीं बताया कि स्वामीजी आश्रम में नही हैं। वह नित्य नियमानुसार प्रातः 10 बजे आश्रम जाने के लिए घर से निकल पड़ी। पूरे रास्ते में उसका ह्रदय तेजी से धड़कता रहा। विलियम से मिलने की कामना में बार-बार उसके हाथ-पैरों में कम्पन होता रहा।

पश्यन्ती ने जब आश्रम में प्रवेश किया तो उसके सारे शरीर में सनसनी थी, कण्ठ सूख रहा था और कायिक कम्पन अपनी चरम सीमा पर थी। पश्यन्ती ने सोचा विलियम ध्यान कक्ष में मिलेगा किन्तु वह वहाँ नहीं था। फिर पश्यन्ती ने अन्य स्थान पर भी उसे देखा, पर आश्रम सूना था। विलियम का कहीं पता नहीं चला।

हार-थक कर पश्यन्ती आश्रम में उगे शिवमन्दिर से सटे पुराने पीपल के नीचे बैठ गई और विलियम की प्रतीक्षा बेताबी से करने लगी। और विलियम......? उसे न आना था, न आया। बैठे-बैठे पश्यन्ती ने एक विचित्र और दुःसाहस भरा निर्णय लिया। वह प्राण-मन से विलियम से मिलने को सनद्य हो गई। आश्रम से निकल कर प्रपात के पास से होती हुई, पगडन्डी के सहारे वह पर्वत की ऊंचाइयों पर चढ़ने लगी।

यद्यिपि उसे विलियम कहाँ है ? पता नहीं था, बस उन्मादिनी के समान वह अज्ञात लक्ष्य की ओर बढ़ती जा रही थी। उसने अपने पिता से, दादा जी से सुना था कि इस पर्वत में अनेक गुफाएँ हैं। विलियम कहाँ-किस गुफा में होगा ? वह नहीं जानती। श्रुति के अनुसार प्राचीनकाल की इन गुफाओं में हिंसक जानवरों का निवास हो गया था। किन्तु पश्यन्ती को जैसे उन हिंसक वन्य पशुओं का भय ही नहीं था।

संभवतः उसकी संकल्प शक्ति ही उसे निरन्तर विलियम की ओर खींचती हुई ले जा रही थी। यह प्रेम का बल था अथवा वासनात्मक संवेग के पाशों में बंधे मन की शक्ति का चमत्कार ?



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अकस्मात् पश्यन्ती एक गुफा जैसे स्थान के सामने रुक गई। मन कह रहा था कि विलियम अब अधिक दूर नहीं है। गुफा के मुख्य द्वार के रूप में एक छिद्र था, जिससे एक व्यक्ति झुक कर अन्दर प्रवेश कर सकता था।

पश्यन्ती ने आसपास देखा, जनशून्यता के अतिरिक्त वृक्ष वनस्पति ही थे। वह झुकी और गुफा में प्रवेश कर गई। लगभग 10 कदम तक उसे अंधेरा मिला फिर आशा के विपरीत प्रकाश दिखाई देने लगा। पश्यन्ती और आगे बढ़ी तो गुफा एक कमरे में बदल गई।

इस कमरे में पर्याप्त प्रकाश था किन्तु उसे विलियम दिखाई नहीं दिया। जब कि उसका अन्तर्मन निरन्तर कह रहा था कि विलियम यहीं है। उसने पागलों के समान उच्च स्वर में पुकार लगाई।

"विलियम ऽ.........ऽ.......ऽ.....म........ऽ.....।" पूरी गुफा ध्वनित्व हो उठी। उसकी अनुगूंज बहुत समय तक होती रही। पश्यन्ती ने पुनः अपनी पूरी शक्ति से पुकारा। और.....एक क्षण पश्चात् ही.........।

पश्यन्ती की आंखें चमक उठीं। सारे शरीर के रोम-रोम में हर्ष की उर्मियाँ नाचने लगीं। उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ किन्तु उसका अभीष्ट सामने था। कुछ क्षणों तक तो पश्यन्ती स्तब्ध, प्रतिमा की भांति स्थिर खड़ी रही। विलियम की अवस्था बड़ी विचित्र थी। उसने मात्र एक कोपीन पहन रखी थी, शेष शरीर वस्त्रों से हीन था। उसका सुपुष्ट शरीर सूख गया था। दाड़ी के बाल बड़े-बड़े हो गए थे, किन्तु उसकी तेजस्विता में वृद्धि हो गई थी।

जैसे विलियम को होश आया। उसके मुख से चकित स्वर निकला—"पश्यन्ती ......ई ऽ...... ।"

पश्यन्ती उन्मादित-अवस्था में दौड़ पड़ी और सीधे विलियम के वक्ष से जा लगी। उसकी मृणाल बाँहों के आलिंगन में विलयम का शरीर बंध गया।

"क्या हुआ पश्यन्ती ? क्या बात है ? इतनी विकलता क्यों ?" विलियम उसकी पीठ पर स्नेह से हाथ फेरते हुए बोला किन्तु पश्यन्ती ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चिरवियोगिनी प्रेयसी की भांति उसके वक्षस्थल से लगी, फूट-फूट कर रो उठी।

विलियम उसे जितना समझाता, पश्यन्ती का रुदन उतना ही तीव्र हो जाता। विलियम को यह रहस्य समझ में नहीं आ रहा था कि पश्यन्ती जैसी उच्चस्तर की साधिका इस प्रकार क्यों सांसारिक नारी जैसा व्यवहार कर रही है ? उसके उष्ण आँसुओं से विलियम का वक्ष तर हो गया।

अन्ततः पश्यन्ती का रुदन कम हुआ। अश्रुओं के मध्य उसने अवरुद्ध कण्ठ से कहा—



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती विलियम। तुम.....तुम....मेरे प्राण हो......मेरा एकमेव स्नेह हो, मेरा सर्वस्वधन हो।"

"पश्यन्ती।" विलियम आश्चर्य से चीख उठा।

"हाँ विलियम......मैं सत्य कहती हूँ। मुझे ले चलो.......ले चलो मुझे........उस दुनिया में जहाँ हम दोनों के सिवाय अन्य कोई न हो, और अगर हों तो हमारे अपने बच्चे। तुम्हारे अंशज और मेरी कोख के महकते पुष्प।" कहते-कहते पश्यन्ती और अधिक विलियम से आश्लेषित हो गई।

"यह........यह कैसे संभव है, पश्यन्ती ? हमारी साधना का क्या होगा ? मेरी खोज का क्या होगा ?" विलियम का डूबता स्वर निकला।

"मैं नहीं जानती.....मैं नहीं जानती...। जो होना हो, हो।" कहते-कहते पश्यन्ती ने विलियम की कटि पर लिपटी कोपीन को खींच कर एक ओर फेंक दिया और दृढ़ता से पुनः उसके शरीर को अपनी भुजवल्लरी में बाँधते हुए; उचक कर उसके मुख का चुम्बन लिया।

"तुममें वासना के संवेग पैदा हो गए हैं, पश्यन्ती। सम्हलो पश्यन्ती, अगर तुम न रुकीं तो हम दोनों का पतन हो जाएगा।" विलियम ने बड़ी मुश्किल से कहा।

"पतन। कैसा पतन ? अगर प्रकृति और पुरुष का महामिलन पतन है तो यह पतन मुझे स्वीकार है।" कहते-कहते पश्यन्ती हांफने लगी। उसका सर्वांग कामाग्नि की महाऊष्मा से धधकने लगा। विलियम पुरुष था, अधिक समय तक वह भी स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सका और अपना संयम खो बैठा।

पश्यन्ती ने वहीं पाषाणी और धूल-धुसरित धरा में विलियम को बलपूर्वक पकड़ कर पटक दिया और स्वयं उस पर आरूढ़ हो गई। वह उसके अंग-प्रत्यंग को चूमने लगी।

"मैं साक्षात प्रकृति हूँ, शक्ति हूँ, तू पुरुष बन जा, शिव बन जा। मेरा अभीष्ट तुझे भोगना है। इसलिए हे पुरुष तू मुझमें समाहित हो जा, लय हो जा। मेरे सुख-अरण्य में आनन्दचरण कर।" पश्यन्ती ने उसे चूमते हुए कब अपने वस्त्रों को अपनी कुन्दनी काया से पृथक कर दिए, विलियम को पता ही नहीं चला। अनायास उसका पौरुष उत्थापित हुआ, जैसे विकराल विषधर क्रोध से फुंकार कर फन फैला कर पूंछ के बल पर खड़ा हो गया हो। उसके कण्ठ से हुंकार निकली। गुफा की दीवारें झनझना उठीं, और पश्यन्ती उछल कर किल्लोल करती, अपने कण्ठ से विचित्र स्वर निकालती उस पर ढेर हो गई। प्रकृति पुरुष में समा गई।

□□



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पश्यन्ती को कोई क्षोभ नहीं था, कोई दुःख नहीं था। विलियम के साहचर्य ने उसे जो आनन्द के क्षण दिए थे, उन्हें वह अपनी युवावस्था की पूर्णता मान रही थी। गुफा में कामसंसर्ग के पश्चात् वह स्वामीजी की वापसी तक आश्रम में नहीं गई। विलियम से भी नहीं मिली।

स्वामी जी के आगमन पर जब वह आश्रम पहुंची तो वह देख कर चौंके। पश्यन्ती का स्वरूप पुष्प सा खिल गया था। अंग महक उठे थे, कुबलय उपमेय आंखों में तृप्ति की उपस्थिति थी, सारे शरीर में प्रसन्नता का सागर हिलोरें मार रहा था। मोहक मुखड़े पर एक विचित्र सी चमक आ गई थी।

"पश्यन्ती, तुम्हें विलियम मिला था ?" स्वामीजी की दृष्टि पश्यन्ती की अपनी देह को भेदती सी लगी।

"जी गुरुदेव, विलियम से मैं स्वयं मिली थी। इसमें विलियम का कोई दोष नहीं। मैंने प्रकृति बन कर उसका भोग भी स्वीकार कर लिया।" पश्यन्ती ने विलियम से किया गया रति प्रसंग स्वीकार कर लिया।

"यह तुमने ठीक नहीं किया बेटी। कुछ दिन और संयम रखतीं, कुछ दिन.....।" शोकपूर्ण स्वर में स्वामीजी ने अपना वाक्य अपूर्ण छोड़ दिया।

"कभी कभी साधना काल में पूर्वजन्म की वासनाओं का उदय होता है, उसमें दमित काम संवेग भी हैं। अगर संयम रख कर उन संवेगों को साधनात्मक पद्धति से पूर्ण किया जाए तो साधना क्षय नहीं होती किन्तु समय से पूर्व उन्हें पशुओं के मिथुनाचार की भांति किया जाता है तो वे अत्यन्त हानिकर होते हैं। और यह एक पक्ष (पखवाड़ा) ज्योतिषीय दृष्टि से तुझे महान अमंगली है। क्यों इस पक्ष में जो ग्रह स्थिति है उसके संचार में तेरी अक्षतयोनि का क्षत्र नष्ट नहीं होना था। अब ऐसा हो ही चुका है तो यह आदिशक्ति की इच्छा। लेकिन अब विलियम अधिक समय नहीं रहेगा। उसे जाना ही पड़ेगा।" स्वामी जी ने शून्य में घूरते हुए अत्यन्त गंभीर स्वर में कहा।

"मैं भी उसी के साथ जाऊंगी गुरुदेव क्यों अब वही मेरा पति है, कान्त है, मेरे सुख-दुःख का सहयोगी है।" पश्यन्ती ने संकल्पित स्वर में कहा।

"अब जो माँ प्रकृति को स्वीकृत हो।" कह कर स्वामीजी ध्यान के लिए बैठ गए। वे एकाग्रचित्त होकर विलियम को अपनी गुफा से पास लौटने के लिए दूर-बोध की यौगिक प्रक्रिया से संदेश देने लगे। शीघ्र की उनकी तरंगों का सम्बन्ध विलियम के मन से हो गया। उन्होंने मन ही मन आदेश दिया—

"तुरन्त वापस आओ विलियम, अभी, इसी क्षण। खतरा तुम्हारे चारों ओर तेजी से बढ़ता जा रहा है बेटे, तुरन्त आओ, तुरन्त आओ......तुरन्त.......।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और सचमुच मध्यान्ह समय में विलियम आ गया। उसने आते ही स्वामीजी के चरणस्पर्श करते हुए कहा—

"गुरुदेव, मुझे ध्यानावस्था में ऐसा अनुभव हुआ कि आप कह रहे हैं विलियम तुरन्त आओ, खतरा तुम्हारे........।" विलियम ने स्वामीजी का दूरबोध सन्देश जैसा का तैसा सुना दिया।

"तुमने ठीक किया बेटे। अब कुछ मेरे पास ही रहो।" स्वामीजी का स्वर अत्यधिक गम्भीर था। इतना गांभीर्य विलियम ने इसके पूर्व उसने स्वामीजी के मुख पर नहीं देखा था। अवश्य ही कोई बात है।

"मंदिर में पश्यन्ती है। तुम्हें स्मरण कर रही है, जाओ।" स्वामीजी ने आदेश दिया।

विलियम की दृष्टि झुक गई। वह समझ गया कि स्वामीजी को उसकी और पश्यन्ती की मिथुन-लीला प्रकट हो गई है। वह अपराध बोध से ग्रस्त हो उठा। उसका भाव स्वामीजी से छिपा नहीं रहा। उन्होंने उसे अपराधबोधी भाव से बाहर निकालते हुए कहा—

"न बेटे, अपराध भाव से मुक्त हो जा। इसमें तेरा कोई दोष नहीं है। पश्यन्ती भी दमित वासना के प्रवाह में आ गई।" उन्होंने अत्यन्त स्नेह से विलियम के सिर पर हाथ फेरा और उसे सांत्वना दी। विलियम के नेत्रों से अश्रु मेहनीर की भांति बरस उठे। वह भारी मन से मन्दिर की ओर चल दिया जहां पश्यन्ती उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

"मैंने अपने भावी जीवन का पूरा कार्यक्रम बना लिया है विलियम। हम होंगे हमारे बच्चे होंगे, एक घर होगा, उस घर में ही एक तुम्हारी प्रयोगशाला होगी जिसमें तुम अपने विभिन्न संधान कर सकोगे। न तुम्हें आर्थिक चिंता होनी चाहिए। मैं तुम्हें, जितना रुपया चाहो, उससे अधिक दूंगी। जानते हो विलियम वह रुपया मेरे पास कहां से आएगा ? मैंने किसी को नहीं बताया, मैं स्वर्ण निर्माण में दक्ष हूँ। मैंने स्वर्ण बना कर देखा भी है। मुझे निर्माण की सारी क्रियाएँ हमारे पूज्य गुरुदेव ने सिखाई हैं।" पश्यन्ती ने भावी जीवन की कल्पना के सुख में ओत-प्रोत होकर विलियम के गले में अपनी कोमल भुजबल्लरी डालते हुए कहा।

विलियम गंभीर था, उसने पश्यन्ती को कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपने नेत्रों में अश्रु लिए चुपचाप पश्यन्ती को देखता रहा। उसे असाधारण रूप से गंभीर देख, साथ ही आंखों में अश्रुओं की उपस्थिति देख, पश्यन्ती चौंकी, बोली—

"क्या बात है विलियम ? क्या मेरा प्रेम तुम्हें स्वीकार नहीं ? क्या तुम मुझे पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं कर सकोगे ?"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"नहीं....नहीं पश्यन्ती। मुझे गलत न समझो। जो तुम चाहती हो, अब तो वही होगा। मेरे प्राक्तन पुण्यों के कारण तुम जैसी रमणीरत्न मुझे मिली है। मैं भाग्यशाली हूँ प्रिये।" विलियम ने पश्यन्ती की सुकुमार काया को बाँहबद्ध करते हुए कहा। पश्यन्ती का सारा संताप धुल गया।

"विलियम..........ऽ......।" अचानक एक गंभीर आवाज गूंजी। पश्यन्ती घबरा कर लज्जित होते हुए विलियम के बन्धन से निकली। विलियम भी घबराया, कौन है ? सोच कर उसने नजरें उठाईं। उसके सामने कुछ ही दूरी पर उसका मित्र युवा वैज्ञानिक सूपन।

सूपन दौड़ कर विलियम के गले से जा लगा। विलियम को हार्दिक प्रसन्नता हो रही थी। लगभग एक वर्ष से गायब सूपन से भविष्य में इस प्रकार और यहाँ भेंट हो सकेगी विलियम ने कभी सोचा नहीं था। उन्हें मिलते देख पश्यन्ती धीरे से कुटीर की ओर खिसक गई।

सूपन गोरी चमड़ी वाला विदेशी युवक था। विलियम की भांति सूपन भी विलक्षण मेघाशक्ति से सम्पन्न वैज्ञानिक था। उसकी खोज के आधार भी विलियम की ही भांति भारतीय पुराण तथा वेद थे। सूपन ने भी संस्कृत साहित्य का विषद अध्ययन किया था। उसका संस्कृत पर अधिकार विलियम से भी अधिक था। वे एक शरीर दो आत्माएँ थे। ऐसी ही अभिन्नता थी दोनों मित्रों में।

"मैं एक वर्ष अपनी खोज में रहा। मैंने अधिकांश समय हिमालय क्षेत्र में व्यतीत किया और यतियों पर भी खोज की। प्रमाण के तौर पर मैं एक यति का वीर्यसार लाया हूँ। मैं इस संसार में एक यति को प्रकट करूंगा मित्र ! मुझे आवश्यकता है, ऐसी साहसी और शक्तिमयी स्त्री की, जो यति को अपने गर्भ में स्थान दे सके। और तू सुना तूने नया क्या किया ? एक तेरी खोज तो मैंने अर्भ हाल ही में देखी है।" सूपन का संकेत 'पश्यन्ती' की ओर था।

"वह विलक्षण और सिद्ध साधिका है सूपन।" मैंने स्वयं......।

विलियम ने आद्योपांत पश्यन्ती के साधनात्मक जीवन पर प्रकाश डालते हुए स्वामीजी की दिव्य यौगिक सिद्धियों के विषय में भी बताया।

सूपन सुन कर चकित हुआ। इसके अतिरिक्त विलियम ने सूपन को अपनी नई खोज एवं चिंतन आदि बताते हुए विचित्र गंभीरता से कहा।

"सूपन मैं अपनी खोजें, प्रयोग और फामूर्लों के प्रति चितिंत था किन्तु अब तेरे आने से मेरी सारी चिन्ताएँ समाप्त हो गईं यार। पता नहीं क्यों मुझे बार-बार लग रहा है कि मेरा जीवन अब अधिक शेष नहीं रहा। मेरे बाद मेरे संधान, मेरे फार्मूले सब तुम अपने पास ही रखना। अगर वे किसी दूसरे के हाथों में पड़ गए तो वः



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मानवता के विरुद्ध उनका उपयोग करने लगेगा और मेरी आत्मा को कभी चैन नहीं मिलेगा।" कहते-कहते विलिमय बहुत अधिक भावुक हो गया।

"ये सब व्यर्थ-आभास है यार। चल छोड, बड़ी मुश्किल से तेरा पता खोजा। वह अच्छा था कि मेरे परिचित संस्कृत विद्वान मार्कण्डेय मिश्र को पता था। यहाँ आने के पूर्व तू उनसे मिला था, और उन्होंने तुझे यहाँ का पता दिया था। संभवतः तू संस्कृत पाण्डुलिपियों की तलाश में आया था, मिली कि नहीं ? सूपन ने पूछा—

"मैंने आज तक प्रयास ही नहीं किया। अब तू आ गया है। आज ही सायं पण्डित जी के पास चलेंगे।" विलियम ने कहा। वे दोनों बातें करते हुए कुटी की ओर चल दिए।

स्वामी जी सूपन की ओर विशेषतः आकर्षित नहीं हुए। उन्होंने एकान्त समय में विलियम से कहा भी—

"विलियम, ज्ञात नहीं क्यों मुझे तुम्हारा मित्र ठीक नहीं लगा। तुम्हें समय-समय पर सावधान अवश्य रहना चाहिए।"

विलियम समझ रहा था कि स्वामी जी संभवतः सूपन के बाह्य व्यवहार को देखकर कह रहे हैं। जब उन्हें वास्तविकता ज्ञात होगी तो उनके मन में सूपन के प्रति निर्मित धारणा स्वतः ही निर्मूल हो जाएगी।

उसी सन्ध्याकाल में सूपन और विलियम पण्डित शशि शेखर शास्त्री से मिले। निर्मल हृदय शशि शेखर उन दोनों को अपने पूर्वजों द्वारा पारम्परिक रूप से रक्षित प्राच्य पाण्डुलिपियों को दिखाने तैयार हो गए।

दूसरे दिन मध्यान्ह काल से सूपन ने प्रतिदिन पण्डित जी के घर जाना प्रारम्भ कर दिया। सूपन तंत्र विषय पर प्रमाणिक सामग्री के संकलित लेखन पर चकित था। उन ग्रन्थों में शव साधना, श्मशान साधना के अतिरिक्त भैरवी साधनाओं पर भी बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ थे। तंत्र के प्रभाग वामाचार पथ के माध्यम से कुण्डलनी शक्ति का जागरण और चेतना को ऊर्ध्वमुखी कर शक्ति से सायुज्य की पद्धतियाँ भी प्रामाणिक ढंग से वर्णित थीं।

लगभग 50 ग्रन्थ थे। सूपन कहाँ तक पढ़ता ? उसने पण्डित जी से प्रार्थना की कि वे सभी ग्रन्थों को एक सप्ताह के लिए उसे प्रदान कर दें, किन्तु पं० शशि शेखर उन पाण्डुलिपियों को घर से बाहर ले जाने को सहमत नहीं हुए। सूपन मन मारकर रह गया।

एक दिन बड़े रहस्यमय ढंग से सूपन, विलियम और पश्यन्ती गायब हो गए। गाँव वालों ने दबी जवान में कहा कि विलियम और चन्द्रशेखर की असाधारण सुन्दरी पुत्री पश्यन्ती आश्रम में साधना के नाम पर प्रेम लीला करते रहे थे। सामाजिक अपवाद और लज्जा के कारण पण्डित चन्द्रशेखर कई दिनों तक घर से



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाहर नहीं निकले किन्तु एकाध माह के पश्चात् पुनः उनका जीवन पूर्ववत सामान्य गति से चलने लगा। हाँ अब उन्होंने आश्रम जाना बन्द कर दिया था और वे अत्यधिक गंभीर भी रहने लगे थे। उन्होंने पश्यन्ती को खोजने का प्रयास भी नहीं किया। उनकी दृष्टि में वह निर्मोहिनी पुत्री अगर मिल भी जाए तो उनका उससे अब क्या सम्बन्ध ?

एक छोटे से शहर में सूपन और विलियम ने पड़ाव डाला। विलियम और पश्यन्ती ने सर्वप्रथम विवाह किया। विलियम की इच्छा पर पश्यन्ती ने स्वर्ण निर्माण कर धन की व्यवस्था की। एकान्त स्थान पर उन्होंने ऐसा स्थान खोजने का प्रयास किया जहाँ वे दोनों अपनी छोटी-सी प्रयोगशाला को विकसित कर अपने अनुसंधानों में निरन्तरता रख सकें।

शहर के बाहर एक पुरानी हवेली उन्हें, इस काम के लिए उचित प्रतीत हुई। जनसामान्य की दृष्टि में वह हवेली दुष्टात्माओं से या भूतप्रेतों से बाधित थी। लगभग 150 वर्ष पुरानी हवेली खण्डहर प्रायः थी, जो उस समय शहर के प्रसिद्ध व्यवसायी की पैतृक सम्पत्ति थी।

उस व्यवसायी से मिलकर उन्होंने हवेली खरीद ली। हवेली में प्रथम बार पश्यन्ती गई। अचानक उसे लगा जैसे इस विशाल हवेली में बड़ा भूगर्भ है और उस भू-गर्भ में अनेक नर कंकाल पड़े हैं। उसने सूपन और विलियम को भी यह बात बताई।

पश्यन्ती की निशान देही पर भूगर्भ में जाने का मार्ग भी मिल गया। विलियम, सूपन और पश्यन्ती तीनों ने मिलकर सात कंकालों को बाहर निकाला और उनका विधिवत् संस्कार भी किया।

इस मध्य सूपन विलियम को पश्यन्ती के गर्भ में स्थापित बीज, जिसे सूपन ने बड़ी चालाकी से विलियम के माध्यम से आश्रम में ही स्थापित करा दिया था, पूरी तरह नजर आने लगा। यही एक कारण था कि वे तीनों आश्रम छोड़ने को विवश हुए थे। सूपन जानता था कि यती का वीर्यसार पश्यन्ती के गर्भ में शीघ्र पल्लवित होकर दिखाई देने लगेगा।

समय व्यतीत होता गया। सूपन और विलियम की प्रयोगशाला पूर्ण हो गई। उन्होंने वहाँ आवश्यक यंत्र भी लगा लिए और प्रयोग भी शुरू कर दिए। यह सारा कार्य गोपनीय ढंग से हो रहा था। इस विषय में न समाज जानता था और न ही सरकार।

गर्भावस्था के मध्य पश्यन्ती को विचित्र-विचित्र अनुभव हुए थे। कभी वह हिमालय के हिमाच्छादित हिमश्रृखों को देखती तो कभी उसे यतियों के दर्शन होते। विलियम और सूपन नित्यप्रति पश्यन्ती के शारीरिक अंगों पर यंत्र



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगा-लगाकर परीक्षण किया करते थे। उन्होंने गर्भ में विकसित हो रहे पिण्ड को भी देख लिया था। गर्भस्थ पिण्ड में आश्चर्यजनक रूप से नित्य वृद्धि हो रही थी।

सात माह का जब समय हुआ तो पश्यन्ती को गर्भ धारण असह हो गया। अन्ततः विलियम और सूपन ने निर्णय लिया कि गर्भस्थ शिशु को सर्जरी से नहीं निकाला गया तो पश्यन्ती की मृत्यु हो जाएगी।

गत 6 माहों में सूपन के निकटस्थ मित्र भी उनके प्रयोगों से जुड़ गए। उनमें चार-पाँच महिलाएँ भी थीं। स्वयं सूपन और विलियम ने पश्यन्ती का ऑपरेशन कर बच्चे को बाहर निकाला। सामान्य शिशु से कहीं अधिक बड़ा शिशु था वह। पश्यन्ती की प्रसन्नता का पार न था। उसने संसार में ऐसे शिशु को जन्म दिया था, जिसका पिता हजारों वर्ष पूर्व मर चुका था।

एक माह में पश्यन्ती के घाव ठीक हो गए। उधर एक माह का शिशु छः माह से अधिक आयु का लगने लगा था। इसी बीच एक ऐसी घटना घट गई, जिसने पश्यन्ती के जीवन को सम्पूर्णतः बदल दिया।

सूपन, विलियम के प्रयोगों से, अनुसंधानों से पूरी तरह प्रभावित था। उसने विलियम पर जोर डालना शुरू किया कि वह पश्यन्ती से स्वर्ण निर्माण की प्रक्रिया जानकर उसे बताए, ताकि प्रयोगशाला के लिए कभी धनाभाव न हो। सरल हृदय विलियम ने अपने मित्र की इच्छा पश्यन्ती के सामने रखी। पता नहीं क्यों पश्यन्ती को सूपन के प्रति विश्वास नहीं हो पा रहा था। उसकी इन्द्रियों की अतीन्द्रिय क्षमता बार-बार यही संकेत देती थी कि सूपन मानवीय गुणों से युक्त नहीं है, जबकि प्रत्यक्ष में सूपन के व्यवहार में कोई कमी अथवा अमानवीयता दिखाई नहीं दी थी। उसने अनेकों बार विलियम से कहा भी था कि मेरी अतीन्द्रिय शक्तियाँ निरन्तर सूपन को नकार कर उसके विपरीत संकेत दे रही हैं पर विलियम ने उसकी बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया।

एक दिन अकस्मात् ही वह सूपन के अध्ययन कक्ष की ओर जा निकली। सूपन वहाँ नहीं था, पर सूपन के मेज पर संस्कृत की एक पाण्डुलिपि रखी थी। पश्यन्ती तत्क्षण उस ग्रन्थ को पहचान गई। यह ग्रन्थ उसके दादाजी पं० शशि शेखर के संरक्षण में था। उसे स्मरण है कि सूपन को उन्होंने कोई ग्रन्थ नहीं दिया था। पश्यन्ती ने सूपन की अल्मारी देखी, संयोगवश उसमें ताला नहीं लगा था। पश्यन्ती ने अल्मारी के पट्ट खोलकर देखे तो दंग रह गई। अल्मारी में क्रमशः वे सब पाण्डुलिपियाँ रखी थीं, जो उसके पूर्वजों की थीं।

पश्यन्ती चिंतित हो उठी। रात्रिकाल में उसने ध्यान के माध्यम से अपने दादाजी और शेष परिवार के विषय में जानने का प्रयास किया। आरम्भ में कोई विशेष दृश्य दिखाई नहीं दिया किन्तु मन की घन-एकाग्रता से उसे अपना घर आंगन दिखाई देने लगा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घर में दादाजी दिखाई नहीं दिए। उनका साधनालय सूना था और उनके चित्र के सम्मुख दीप जल रहा था। क्या दादाजी स्वर्गारोहण कर गए ? उसके मन में आते ही उसे दृश्य दिखाई दिया।

रात का अन्धकार और सन्नाटा। सारा गाँव सुखदायिनी तमसा निद्रा के आनन्द उत्संग में पड़ा था। अकस्मात् एक जीप उनके घर के द्वार पर रुकती है। अन्धकार का भाग बने 6-7 व्यक्ति जीप से उतरकर उसके दादाजी के साधना कक्ष की ओर बढ़ते हैं। साधनाकक्ष का द्वार खुलवाया जाता है। दादाजी बाहर निकलते हैं। उनके बाहर निकलते ही 3-4 व्यक्तियों द्वारा उन्हें पकड़ लिया जाता है। वे अपने बचाव के लिए चीख भी नहीं पाते।

पश्यन्ती को उनके मुखिया की आकृति स्पष्ट होती है। वह कोई अन्य नहीं बल्कि सूपन ही था। हालाँकि सभी 6-7 व्यक्तियों ने अपने चेहरों को काली नकाबों से ढक रखा था फिर भी पश्यन्ती प्रत्येक का चेहरा आसानी से देख रही थी। सूपन के चेहरे के चारों ओर काली-काली रेखाओं का घेरा था, जो उसके हिंसक विचारों को स्पष्ट दर्शा रहा था।

सूपन पाण्डुलिपियों के संग्रह की ओर बढ़ा। पं० शशिशेखर विरोध में छटपटाते हैं, पर राक्षसों जैसे लोगों से मुक्त नहीं हो पाते। सूपन ग्रन्थों के बॉक्स के ढक्कन को उठाकर देखता है। ग्रन्थों को यथास्थान रखा देखकर उसकी भूरी-मंजरी आँखों में चमक आ जाती है। वह उस बॉक्स को अपने शेष लोगों को उठाने का संकेत करता है, उसी समय पं० शशि शेखर अनायास ही छूट जाते हैं। उनका हाथ सूपन की नकाब पर पड़ता है और अगले ही क्षण सूपन का चेहरा खुल जाता है। जैसे ही सूपन का नकाब खिंचा, सूपन का हाथ जेब में जाता है और अगले ही क्षण उसके हाथ में एक पेन दिखाई देता है। सूपन पेन का एक स्विच दबाता है, सफेद द्रव्य की पतली-सी धार तेजी से पेननुमा हथियार से निकलती है और पण्डित शशि शेखर के शरीर से टकराती है।

एक क्षण भी नहीं लगता, शशि शेखर चीख भी नहीं पाते और पृथ्वी पर गिर जाते हैं। उनके शरीर के उस हिस्से का माँस, जहाँ धार टकराई थी, गलने लगता है। वहाँ एक छेद भी हो जाता है जिससे उनकी पीठ के उस पार भी देखा जा सकता था।

पश्यन्ती की आँखों में आँसू आ जाते हैं। वह फूट-फूटकर रो उठी। उसे सूपन के कुकृत्य पर कोई सन्देह नहीं रहा। उस रात वह रात भर जाग-जागकर विलियम की प्रतीक्षा करती है। दूसरे प्रातः तलाश करने पर पता चलता है कि विलियम अत्यावश्यक कार्य से हिमालय क्षेत्र में गया है। वहाँ से कुछ ऐसी आवश्यक वस्तुएँ लानी थीं जो 'यतिपुत्र' के पोषण में सहायक होतीं।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलियम के लौटने के पूर्व ही उसने एक दिन देखा कि सूपन प्रयोगशाला का सभी सामान ट्रकों में भर-भरकर कहीं भेज रहा है। कहाँ भेजा जा रहा है प्रयोगशाला का सामान ? पूछने पर उसे ज्ञात होता है कि मध्य-प्रदेश के अरण्य क्षेत्र में कहीं सुरक्षित स्थान पर नई प्रयोगशाला में सभी सामान स्थानान्तरित हो रहा है।

पश्यन्ती विकल हो जाती है। इस प्रकार सूपन की प्रयोगशाला, वह भी विलियम की अनुपस्थिति में, स्थानान्तरित करना, अवश्य कुछ दाल में काला है। वह अत्यधिक परेशान हो गई। उसी रात.....।

वह चिन्तातुर होकर जाग रही थी। समीप ही यतिपुत्र आराम से सो रहा था। पश्यन्ती ने जान-बूझकर लाइट बन्द कर रखी थी। अचानक अंधकार में चमकीले अणु-जुगनुओं की भाँति चमकते हैं। पश्यन्ती की चेतना सचेत हो जाती है। उसकी चेतना कह रही थी कि यह किसी प्रेतात्मा का आगमन है।

चमकीले अणुओं का समूह मानवाकार में बदलता है, आकृति स्पष्ट होती है और.....और.....पश्यन्ती चीख उठती है।

"तुम.....विलियम तुम ? हे प्रभु, तुम इस अवस्था में।" वह जार-बेजार होकर रोने लगी। विलियम का गंभीर भाव से आच्छादित मुखाकृति सहित वायवीय शरीर हवा में झूलता हुआ उसके समीप आता है।

"मेरी प्राण प्रिया.....मेरी पश्यन्ती.....। दुःख न करो। सूपन दुष्ट है, उसने एक सप्ताह पूर्व मेरी नृशंस हत्या कर दी क्योंकि मैं मानवता के विरुद्ध उसका सहयोग करने को तैयार नहीं हुआ। इसके पूर्व कि मैं उसके अनैतिक पापमय कुकृत्यों की जानकारी पुलिस को देता, उसने मेरी हत्या कर दी। मेरा शव वह अपने साथ ही ले गया है। इस समय मेरा शव एक बड़े जार में केमिकल्स में रखा है। पता नहीं वह क्या करना चाहता है। तुम इसी क्षण यति पुत्र को लेकर कहीं भी निकल जाओ क्योंकि वह यति पुत्र को तुमसे छीन लेना चाहता है। काश मैं तुम्हारी और स्वामी जी की बात मान लेता।" कहते-कहते विलियम की आकृति धुंधली होकर लुप्त हो गई।

पश्यन्ती त्वरा कर उठी। उसने सो रहे यति पुत्र को उठाया, उसी समय द्वार खटखटाया गया।

"कौन ?" शंकित स्वर में कहते हुए उसने अपने आँसू पोंछे और लाइट जलाकर द्वार खोला। द्वार पर काले वस्त्रों में लिपटे चार खूंखार व्यक्ति खड़े थे।

"मैडम, मास्टर ने यति पुत्र को इसी क्षण मँगाया है।" कहते हुए वह उद्दण्डता दिखाते हुए द्वार से पश्यन्ती को हटाकर 'यति पुत्र' की शायिका के पास पहुँचा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"नहीं.....नहीं.....मैं तुम्हें, अपने बेटे को नहीं ले जाने दूँगी।" चीखती हुई पश्यन्ती अपने यति पुत्र की ओर झपटी किन्तु द्वार पर खड़े तीन लोगों ने उसे बीच में ही पकड़ लिया। वह चीखी चिल्लाई, तब तक एक व्यक्ति ने किसी रसायन से भीगा रूमाल उसकी नाक पर रख दिया। पश्यन्ती की चेतना डूबने लगी। अंतिम क्षणों में उसने देखा कि वे चारों यति पुत्र को उठाकर ले जा रहे हैं। वह अचेत हो गई।

जब पश्यन्ती को होश आया तो स्वयं को एक अस्पताल में पाया। वह आश्चर्य से इधर-उधर देखती विगत घटनाओं के विषय में सोचने लगी। पर संभवतः उसे स्मरण नहीं आया था। उसे होश में आते देखकर उसकी अटेण्डर नर्स तुरन्त सम्हली।

"रिलेक्स-रिलेक्स मैडम। आप बिल्कुल ठीक हैं।" नर्स ने स्नेह से कहा।

"मैं कहाँ हूँ।" पश्यन्ती के मुख से क्षीण-सा स्वर निकला।

"आप सुरक्षित हैं मैडम। आप अस्पताल में हैं खतरे से दूर।"

"ओह, मेरा बेटा।" पश्यन्ती की स्मृतियाँ जागीं।

"संभवतः पुलिस को इस विषय में ज्ञात होगा। आप निश्चिंत रहें, आपका बेटा भी सुरक्षित ही होगा।" नर्स ने कहा फिर पुलिस इन्सपेक्टर को आता देख वह बोली। उसके साथ वरिष्ठ चिकित्सक डॉ० मणी मेखला भी थी।

"अब कैसा अनुभव कर रही हो।" डॉ० मेखला ने स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"मैं ठीक हूँ डॉक्टर, पर वे शायद मेरे बेटे को ले गए।" पश्यन्ती की ममता आँखों से अश्रुओं के रूप में बरसी।

"नो टेंशन माय डॉटर। अपने आप को सम्हालो। तुम्हारी हवेली तो अब पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। आतंकवादियों ने पूरी तरह ब्लास्ट कर दिया उसे। लेकिन शुक्र है भगवान का, तुम सकुशल बच गईं।" रिटायरमेंट के करीब पहुँचे इन्सपेक्टर समरेन्द्र सिंह ने उसे तसल्ली दी।

डॉ० मेखला ने पश्यन्ती का परीक्षण किया फिर निश्चिंत होकर बोली—

"यश मि० सिंह आप बयान ले सकते हैं।"

"थैंक्यू डॉक्टर।" इन्सपेक्टर ने आभार माना।

"जो घटित हुआ है, उसे साफ-साफ बताकर कानून का हेल्प करो।" डॉक्टर ने कहा और चली गई।

"क्या हुआ था ऑफिसर ?" पश्यन्ती ने मद्धिम स्वर से पूछा।

"क्या तुम्हें कुछ पता नहीं ?" इन्सपेक्टर आश्चर्य से बोला।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"मुझे बताओ, मैं सुनना चाहती हूँ।" पश्यन्ती का स्वर कठोर हुआ।

"तुम्हारी हवेली को आतंकवादियों ने बमों से पूरी तरह उड़ा दिया। उसमें चार-पाँच लाशें मिल चुकी हैं। कृपया बताएँ कि हवेली में कितने लोग थे। आप अपने पति व अन्य परिजनों की शिनाख्त कर लें।" इन्सपेक्टर ने मानवीयता से कहा।

पश्यन्ती समझ गई कि सूपन ने ही यह ब्लास्ट कराया होगा। लेकिन वह इस ब्लास्टिंग में कैसे बच गई ? उसे आश्चर्य था। पश्यन्ती ने इन्सपेक्टर को न तो सूपन के विषय में बताया और न ही उसके प्रयोगों के विषय में। अगर वह सारी बातें बताती है तो उसे विलियम अपने माता-पिता सभी के विषय में बताना ही होगा। अगर सभ्य समाज को सारी बातों का पता चलता है तो समाज में उसके पिता पर कितना कीचड़ और उछलेगा और भी अन्य बातें सोचकर उसने कोई बात इन्सपेक्टर को नहीं बताई। उसने इन्सपेक्टर से कहा—

"सर, कुछ समय.....कुछ समय के लिए, मात्र एक घण्टा के लिए.....इसके पश्चात् मैं आपको जितना मुझे स्मरण है, बताने की कोशिश करूँगी।"

सुहृदय इन्सपेक्टर मान गया। वह एक घण्टे बाद वापस आने को कहकर उठा और बाहर चला गया। पश्यन्ती सोचने लगी कि उसे क्या बयान देना है ?

यह एक घण्टा पश्यन्ती को काफी महत्वपूर्ण था। इतने कम समय में उसे अनुभव हुआ कि उसकी सुप्तवत शक्तियाँ जाग्रत हो उठी हैं। उसमें एक नया आत्म बल आ गया है। पुत्र के प्रति मोहाक्ति का पाश शिथिल हो गया है। संभवतः प्रकृति को जो करना था, हो चुका था। वह पूरी तरह स्वस्थ हो गई।

एक घण्टे बाद जब इन्सपेक्टर आया तो उसने उसे सहज ही संतुष्ट कर दिया। यही नहीं वह हवेली के खण्डहर में मिली लाशों को भी देखने गई और उनकी पहचान उसने हवेली के कार्यकर्ताओं के रूप में की।

पश्यन्ती ने निर्णय कर लिया कि उसे क्या करना है। सायंकाल में उसने अस्पताल की वरिष्ठ चिकित्सक से घबराहट की शिकायत की। चिकित्सक ने आवश्यक औषधियाँ देकर पूर्ण विश्राम की सलाह दी।

दवा लेकर पश्यन्ती पलंग पर लेट गई। लगभग आधा घण्टे के पश्चात् अचानक ही उसकी तबियत बिगड़ने लगी। डॉ० मेखला स्वयं उसे देखने आई तब पश्यन्ती गहन पीड़ा से तड़फ रही थी। मेखला ने तुरन्त एमरजेंसी में उसे भेजा और स्वयं उपचार में जुट गई किन्तु पश्यन्ती की स्थिति निरन्तर बिगड़ती रही और लाख प्रयासों के बाद भी मेखला उसे ठीक न कर सकी। कुछ समय पश्चात् डॉ० मेखला ने उसे मृत घोषित कर दिया। युवा डॉक्टर मेखला का यह पहला ऐसा केस था, जिसमें वह असफल हुई थी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रात को 10 बजे पश्यन्ती का शव मुर्दाघर में रख दिया गया। मुर्दा घर के बाहर सदैव के समान गार्ड और चौकीदार अपने-अपने स्थानों पर तैनात थे। द्वार पर ताला लगा था। रात को एक बजे तक कोई विशेष बात नहीं हुई। एक बजे के बाद.....।

उस रात आसमान पर बादल छाए थे। रह-रहकर बिजलियों के चमकते टुकड़े आकाश के विस्तार में दमक उठते थे। हल्की-हल्की बूँदा-बाँदी शुरू हो गई। गार्ड ने और चौकीदार ने अपने स्टूल मुर्दाघर के द्वार के पास रख लिए और बैठ गए।

"यार क्या नौकरी है ? मुर्दों की भी रखवाली हमारे भाग्य में ही लिखी थी।" गार्ड ने गांजे की बीड़ी सुलगाकर धुँए का कश खींचते हुए कहा। उसी समय अचानक ही लाइट चली गई। तब तक चौकीदार भी अपनी गाँजे से भरी बीड़ी सुलगा चुका था।

"लो अब लाइट भी गई।" वह बड़बड़ाया।

अचानक अन्दर से खट्-खट्-खट् का स्वर सुनाई दिया। गार्ड और चौकीदार चौंके। उसने गौर से किबाड़ पर कान लगाकर मुर्दा घर के अन्दर से हो रही खट्खटाहट को सुना। चौकीदार के रोंगटे खड़े हो गए—

"बाप रे..... ! मुर्दा जाग गया है, दरवाजा खट्खटा रहा है।"

"अबे, चुप।" कहते हुए गार्ड ने अन्दर से आ रही ध्वनि को गौर से सुना। उसी समय कड़कड़ाकर दामिनी ने महानाद किया। क्षण भर के लिए जगत उसके महाआलोक से चमचमा उठा। गर्जननाद बहुत देर तक गूँजता रहा।

"अबे जा उधर बैठ। साले खुद भी डरपोक है और मुझे भी डराता है।" गार्ड ने चौकीदार को झिड़की दी।

अचानक भड़भड़ाकर दरवाजा खुला। पुरानी सड़ी लकड़ी के किबाड़ चरमराकर खुल गए। चौकीदार और गार्ड की आँखें भय और हैरत से खुली की खुली रेहं गईं। उन्हें लगा कोई नारी मूर्ति दरवाजे से निकली उसने दोबारा दरवाजा लगाया, सांकल के उखड़े हुए कुन्दे को दुबारा किबाड़ में लगाया और उसके पास से हवा की तरह निकलती चली गई। अत्यधिक भयभीत होकर गार्ड और चौकीदार वहीं गिर गए।

रात में लगभग 1½ बजे डॉ० मेखला की नींद अचानक खुली। कोई दरवाजे पर निरन्तर घण्टी बजा रहा था। मेखला ने समझा जरूर अस्पताल में एमरजेन्सी आ गई, इसलिए उसे कोई बुलाने आया होगा। घण्टी बजती रही, शायद चपरासी गहरी नींद में था। मेखला स्वयं उठी। आकर द्वारा खोला और द्वार के बाहर देखते ही उसकी चीख निकल गई।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वार पर पश्यन्ती मन्द-मन्द मुस्कराती हुई खड़ी थी। वह पश्यन्ती जिसे उसने स्वयं मृत घोषित किया था, जिसका शव वह मुर्दाघर में रखवा दिया था।

"अन्दर आने को नहीं कहोगी डॉ० मेखला। न घबराओ नहीं, मैं जीवित हूँ; भूत-प्रेत नहीं।" पश्यन्ती की मुस्कान अभी भी उसके आरक्त-अधरों पर नृत्य कर रही थी। लेकिन मेखला ने जैसे सुना ही नहीं, वह नेत्र विस्फारित किए, चित्रलिखित पुत्तालिका की भाँति अपलक देख रही थी। उसका मुख खुला का खुला रह गया था।

पश्यन्ती आगे बढ़ी, उसने मेखला के शरीर का स्पर्श किया और मेखला उसकी बाँहों में आ गिरी। अत्यधिक भय के कारण वह अपनी चेतना खो बैठी थी। पश्यन्ती उसे उठाए-उठाए अनुमानतः उसके शयनकक्ष तक लाई और उसे पर्यंक पर लिटाकर उसके मुख पर पानी के छींटे मारे। कुछ क्षणों पश्चात् मेखला को होश आया। अपने पास पश्यन्ती को बैठा देख वह पुनः चीखना चाहती थी किन्तु पश्यन्ती ने उसके खुले मुख पर अपनी हथेली रख दी।

"पागल न बनो मेखला। मैं भूत-प्रेत नहीं हूँ। मैं योग की क्रियाएँ जानती हूँ, उन्हीं क्रियाओं से मैंने अपने प्राणों की गति को अवरुद्ध कर दिया था। मैंने अपने हृदय के स्पंदन को भी रोक दिया था और तुमने मुझे मृतक मान लिया। यह सब मुझे विवशता के कारण करना पड़ा। अगर मैं ऐसा नहीं करती तो मेरे शत्रु मुझे जीवित जानकर बार-बार मारने का प्रयास करते और मेरे कार्य में व्यवधान आता जो मैं नहीं चाहती। अब तुम्हारा काम है कि तुम किसी भी लावारिस लाश को पश्यन्ती घोषित कर उसका संस्कार करा दो।" पश्यन्ती ने डॉ० मेखला पर आवश्यक बातें स्पष्ट कीं।

डॉ० मेखला ने अविश्वास से भरकर पश्यन्ती का शारीरिक परीक्षण किया। वह सचमुच जीवित थी।

"मुझे आश्चर्य है मिसेज.....।" डॉ० मेखला पश्यन्ती का नाम भूल गई।

"इसमें आश्चर्य की बात नहीं है डॉ० मेखला। अब मैं चलती हूँ। पर सावधान मेरा रहस्य रहस्य ही बना रहे।" पश्यन्ती के स्वर में कुछ कठोरता आई।

"ओ० के० मैं आपकी सुरक्षा के हितार्थ जैसा आप कह रही हैं कर दूँगी।" डॉ० मेखला की स्मृति में एक लावारिश युवती की लाश घूम गई, जिसे सन्ध्या समय एवार्शन के लिए भर्ती किया था। उसकी मृत्यु होते ही जिस युवक ने उसे भर्ती कराया था, लापता हो गया। शव गृह में अभी उसके शव का पंजीयन भी नहीं हुआ था। जबकि उसका शव शवगृह में ही रखा था।

पश्यन्ती उठी और तेजी से चलती, डॉ० मेखला के आवास से निकल गई। डॉ० मेखला को अभी भी आश्चर्य हो रहा था कि पश्यन्ती जीवित कैसे हुई।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उधर मुर्दाघर में। लाइट आने के कुछ समय पश्चात् गार्ड को होश आया। उसे स्मृति आई, चौंककर द्वार की ओर देखा, ताला यथावत लगा था। उसने आँखें मलीं, बार-बार देखा ताले का परीक्षण भी किया, फिर चौकीदार को होश में लाने का प्रयास किया।

चौकीदार की चेतना आते ही, वह चीखा—"भूत.....भूत..... ।"

"अबे चुप। साले गांजा अधिक चढ़ गया। क्या मैं तुझे भूत दिखाई देता हूँ।" गार्ड से कहते हुए उसे झकझोरा। चौकीदार ने उसे पहचान तो लिया फिर भी उसका बदन काँप रहा था।

"जो मैंने देखा, वही तुमने देखा न ?" चौकीदार ने भय जड़ित स्वर में बोला।

"मुझे लगता है, हम दोनों गांजे की पिनक्क में थे। साले पता नहीं कितना तेज माल था। एक ही बीड़ी के कश में आउट हो गए।" गार्ड बड़बड़ाया।

"नहीं.....नहीं, जो हमने देखा सत्य था।" चौकीदार बमुश्किल बोला।

"अच्छा एक काम कर, रजिस्टर में एन्टर्ड मुर्दों को गिन फिर मुर्दाघर में रखे मुर्दों को गिनकर बता।" गार्ड ने आदेश दिया।

"नहीं.....नहीं मेरे बाप। मैं अकेला तो क्या, तेरे साथ भी नहीं जाऊँगा। हाँ दिन के प्रकाश में गिनूँगा।" चौकीदार काँप उठा।

"ठीक है।" गार्ड ने कहा और स्टूल पर बैठा ऊँघने लगा।

समय व्यतीत होता रहा। पश्यन्ती निरन्तर सूपन को खोजती रही। उसकी यौगिक शक्ति भी इस विषय में सफल नहीं हो सकी। आरम्भिक तीन-चार माह उसने सूपन को खोजने का प्रयास किया किन्तु उसे सफलता नहीं मिली तो पश्यन्ती ने यह मानकर कि संभवतः प्रकृति ही अभी सूपन का पता नहीं चाहती, उसने अपना सारा ध्यान साधना पर केन्द्रित कर दिया।

एक तो युवावस्था, द्वितीय अतुल, अनुपम सौन्दर्य राशि। पश्यन्ती ने एक महिला आश्रम की शरण ली लेकिन वहाँ जो कुछ देखा, उससे दुःखी हो उठी। महिला आश्रम की महिलाएँ देह व्यापार में लिप्त थीं। सच यह था कि आश्रम की महिलाओं को आश्रम के व्यवस्थापक ही देह व्यापार को विवश करते थे। आश्रम की युवा लड़कियाँ राजनैतिकों को, बड़े व्यापारियों को धड़ल्ले से सप्लाई होती थीं। इसके एवज में आश्रम में दान तो मिलता ही था, पर्याप्त धनराशि भी पृथक से मिलती थी।

संयोगवश पश्यन्ती को भी विवश किया गया। उसे आश्रम की ही एक सम वयस्क युवती ने बताया 'यहाँ विद्रोह करने का अर्थ है विद्रोही की मृत्यु।' इस भय से कोई भी राज आश्रम से बाहर नहीं जाता था किन्तु पश्यन्ती ने सोच लिया कि उसे क्या करना है।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पश्यन्ती को एक प्रभावशाली उच्चाधिकारी के पास भेजा गया। यह उच्चाधिकारी राजधानी से आया था। कोई तीसरा आदमी आश्रम के माध्यम से उस अधिकारी से अपनी स्वार्थ सिद्धि चाहता था। एक फार्म हाउस पर उसे ठहराया गया था। पश्यन्ती को फार्म हाउस पर भेज दिया गया।

ग्यारह बजे तक वह अधिकारी शराब इत्यादि से मन बहलाता रहा। पश्यन्ती ग्यारह बजे आश्रम से सम्बन्धित एक दलाल की मारुति लेकर पहुँची। पश्यन्ती के मद भरे यौवन और रूपचन्द्रिका का दर्शन कर अधिकारी प्रसन्न हो गया। शयनकक्ष से बाहर ही पश्यन्ती के साथ अश्लीलता करते हुए उसने पश्यन्ती की पुष्पभारित रति-सी मोहिनी काया को उठाया और बैडरूम में ले गया। आतुर कामुक ने वस्त्रों को तिलाञ्जली देकर बैड पर बैठी पश्यन्ती से लिपट गया।

पश्यन्ती ने अपनी यौगिक शक्तियों का स्मरण किया। उसके देह में तापक्रम बढ़ने लगा। उधर वह अधिकारी उसके वस्त्रों को निकालने का प्रयास कर रहा था। अचानक पश्यन्ती की देह पर आवरित वस्त्र-परिधान में धुँआ निकलने लगा। वह चौंका, देखते-देखते पश्यन्ती के वस्त्र योगाग्नि के उत्ताप से जलकर राख में बदल गए। यही नहीं वह जिस बैड पर बैठी थी उसका बिस्तर भी जलने लगा।

अधिकारी का सारा नशा हिरण हो गया। पश्यन्ती का वस्त्रहीन शरीर अंगारे के समान दहक रहा था। भयभीत होकर अधिकारी ने भागना चाहा किन्तु पश्यन्ती ने पलंग से छलांग लगाकर उसे पकड़कर बलात बाहों में भर लिया।

अधिकारी झुलस उठा। भयभीत होकर मर्मान्तक ढंग से चीखा—"बचाओ..... बचाओ।"

"अब तुझे कोई नहीं बचाएगा।" कहकर हँसते हुए पश्यन्ती ने उसे छोड़ दिया।

"मुझे मत जलाओ.....प्लीज.....मुझे बचा लो। मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ।" वह गिड़गिड़ाकर अपने प्राणों की भीख माँगने लगा।

"तुझे कोई अगर बचा सकता है तो तू खुद ही। तू उच्चाधिकारी है। अभी इसी क्षण पुलिस एस० पी० को फोन कर उस महिला आश्रम पर छापा डलवा। वहाँ की प्रमुख व्यवस्थापक और संचालक को गिरफ्तार करने का अर्जेन्ट आर्डर दे। अगर तू ऐसा नहीं करता तो.....।" कहते हुए पश्यन्ती बाँहें फैलाती उसकी ओर बढ़ी।

"नहीं-नहीं.....मेरी माँ, मैं अभी फोन करता हूँ।"

अधिकारी ने जिला पुलिस अधीक्षक को फोन पर आदेश दिया। परिणामस्वरूप आश्रम की कई अनियमिताएँ तो पकड़ी ही गईं। प्रबन्धक से सख्ती से पूछताछ की तो अनेक अधिकारियों के घर, होटल एवं गेस्ट हाउसों में छापे पड़े। अनेक



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यापारी, राजनेता भी पकड़े गए। रात भर में पश्यन्ती के इस कारनामे ने पूरे शहर में हलचल मचा दी। पश्यन्ती रात भर फार्म हाउस पर उस अधिकारी के साथ रही फिर प्रातः होने के पूर्व ही वह गायब हो गई। उसके बदन पर उस समय मात्र चादर थी।

एक वर्ष तक पश्यन्ती स्थान-स्थान पर चमत्कारी हंगामे करती घूमती रही। एक समय जब वह मध्य प्रदेश के वन्य प्रधान अंचल में थी।

वह शारदीय नवरात्रि का अवसर था। हल्की-सी ठण्डक वातावरण में आ गई थी। एक छोटे से कस्बे के शक्ति मन्दिर पर उस समय पश्यन्ती ठहरी हुई थी। नवरात्रि प्रारम्भ होने के तीन-चार दिन पश्चात्.....।

मन्दिर पर आए समाचार पत्र में उसने अजीब समाचार पढ़ा। समाचार था—"चिता भस्म में बैठी है—श्मशान सुन्दरी।" समाचार बॉक्स न्यूज में था। आगे विस्तृत विवरण छपा था। संवाददाता के अनुसार दूर ग्रामीण अंचल के एक श्मशान में एक युवा सुन्दरी युवती मौन बैठी थी। वह पूरी तरह नग्न थी। ग्रामीण जन उसे सिद्ध योगिनी मानकर पूज रहे थे किन्तु उसने एक शब्द भी किसी से नहीं बोला था।

पश्यन्ती समाचार पढ़कर चौंकी। उसका अन्तर्मन कह रहा था अवश्य कोई बात है। क्या ? यह उसकी चेतना नहीं पकड़ सकी। इसके पश्चात् पश्यन्ती तीन-चार दिन समाचार पत्र नहीं देख सकी।

नवरात्रि के अंतिम दिन संयोगवश उसी दिन का समाचार पत्र मिला। पत्र में पुनः वैसा ही समाचार छपा था। लिखा था—'एक के बाद एक श्मशान सुन्दरियाँ श्मशान अग्नि की भेंट चढ़ीं।" पश्यन्ती जल्दी-जल्दी समाचार पढ़ गई। उसी श्मशान में नित्य एक सुन्दर युवती भस्म में नंगी बैठी मिलती किन्तु एक दिन पूर्व मिली युवती की लाश भस्म में पड़ी मिलती थी। एक-एक कर लगभग 7 युवतियाँ मृत्यु को प्राप्त हो गई थीं।

पूरा पुलिस प्रशासन ही नहीं, पूरे राज्य में सनसनी फैल गई। दूर-दूर से अनेक लोग उस गाँव में पहुँचने लगे। मृत्यु को प्राप्त हुई लड़कियों की पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी विचित्र थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि मृतका की मृत्यु का समय मृत्यु से पन्द्रह दिन पूर्व का है। यह रिपोर्ट एक-दो मृतकाओं की नहीं सात में से पाँच मृतकाओं की थी। शेष दो की रिपोर्ट आने वाली थी।

सातों लड़कियों की पहचान नहीं हो सकी थी। क्षेत्र के लगभग सभी लोगों ने उन्हें देखा था किन्तु कोई पहचाना नहीं, इससे सहज अनुमान हुआ कि सभी मृतक युवतियाँ बाहर की थीं। पोस्टमार्टम में एक विशेष बात यह भी थी कि पाँचों लड़कियों के हृदयों में एक छोटा-सा यंत्र मिला था। यह यंत्र क्या है ? किस काम



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में आता है ? बिना किसी ऑपरेशन के यह यंत्र प्रत्येक लड़की के हृदय में कैसे फिट हो गया ? किसने किया ? यह अज्ञात था। यंत्र किसी धातु का था और उस पर तांत्रिक आकृतियाँ खुदी हुई थीं।

पश्यन्ती को लगा, उसे लक्ष्य मिल गया। निश्चय ही यह काम सूपन का है, उसे विश्वास हो गया। विलियम की मृत्यु उसे स्मृत हुई। अपने कुक्षिजात पुत्र की स्मृतियाँ सघन हुईं। वह अपने पुत्र को सूपन से छीन लेना चाहती थी, साथ ही विलियम की लाश भी लेना चाहती थी। पश्यन्ती ने अपना सम्पूर्ण योग बल लगाया, परिणाम उसके पक्ष में रहा।

उसने दूर सघन वन्य क्षेत्र में सूपन की प्रयोगशाला देखी। वहाँ हो रहे खतरनाक प्रयोगों को देखा। सूपन इसी प्रकार छिपकर अपने प्रयोग करता रहा और दैववश सफल हो गया तो मानवता का एक बहुत बड़ा खतरा बन जाएगा। पश्यन्ती ने उसकी गुप्त भूगर्भ प्रयोगशाला का पूरा पता लगाया और इसकी विस्तृत सूचना गृहमंत्रालय के अनेक अधिकारियों को गोपनीय रूप से दी। चूँकि उसकी सूचना का सम्बन्ध रहस्यमय ढंग से भरी सात युवतियों से था, इसलिए गृह विभाग पूरी शक्ति से हरकत में आ गया।

सूपन की प्रयोगशाला पर 'ऑपरेशन जीरो सेवन' के नाम से सैनिक कार्यवाही हुई। उसकी प्रयोगशाला पकड़ी गई। लगभग पचास लड़कियों के शव बरामद हुए, इतनी ही लड़कियाँ प्रयोगशाला से सटी कारागार में मिलीं। ढेर सारी सामग्री जो गैर कानूनी थी मिली। जैसे पच्चीस हृदय एक सुरक्षित जार में मिले। लगभग चालीस नरमुण्ड और तीस कंकाल भी बरामद हुए। इसके अतिरिक्त बहुमूल्य वैज्ञानिक रसायन और उपकरण भी मिले।

चालीस पुरुष-महिला वैज्ञानिक वहाँ प्रयोग करते पाए गए किन्तु उनमें सूपन नहीं था। पश्यन्ती समझ गई कि समय से पूर्व ही सूपन को अपने आगत संकट की सूचना मिल गई होगी इसलिए वह 'यति पुत्र' सहित फरार हो गया। विलियम का शव कहाँ है ? क्या उसके शव को सूपन अपने साथ ले गया अथवा वहीं कहीं किसी गोपनीय स्थान पर उसने छिपा रखा है ? पश्यन्ती नहीं जान सकी।

पकड़े गए स्त्री-पुरुष वैज्ञानिक भी सूपन के विषय में कुछ नहीं बता सके। वैज्ञानिकों के अनुसार उन सभी ने सूपन की आवाज भर सुनी थी, उसे कभी देखा नहीं था। वैज्ञानिकों को जितना ज्ञात था, उतना ही बता सके। वह नहीं जानते थे कि सूपन क्यों प्रयोगों को कर रहा था ?

बहरहाल पश्यन्ती को इस सबसे कोई प्रयोजन नहीं था। वह पुनः चल पड़ी। अनायास ही जब वह इस शहर में आई (जिसमें सूर्या और सूपा रहते थे) तो



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसकी अन्तःप्रेरणा ने वहाँ एक सिद्ध योग आश्रम की स्थापना को उसे विवश कर दिया।

उसने स्वर्ण निर्माण किया। शहर से बाहर लम्बी-चौड़ी जमीन खरीदी और उस पर सिद्ध योग आश्रम का भव्य निर्माण कराया। इस प्रकार पश्यन्ती—पश्यन्ती से देवी निवृत्ति बन गई। सिद्धियाँ तो उसके पास थीं ही, उसकी अहिर्निश साधना से उनमें और भी परिष्कार आ गया।

देवी निवृत्ति का सारा जीवन उसकी अपनी आँखों के सामने घूम गया। आज उसे वर्षों बाद उसके उदर में पल्लवित पुत्र 'सूर्या' के नाम से मिला था। यह भी उसे विश्वास हो गया कि सूपा कोई अन्य नहीं सूपन ही है। प्रकृति नहीं बल्कि माया भी बड़ी विचित्र है, पता नहीं कब से सूपन इसी शहर में है और वह भी यहीं है किन्तु उसकी अन्तःचेतना ने सूपन की उपस्थिति को क्यों नहीं पकड़ा।

निवृत्ति पुनः विचार मग्न हो गई। रात्रि समाप्त होती जा रही थी किन्तु निवृत्ति देवी का चिन्तन जैसे सभाप्त ही नहीं हो रहा था।

❑❑

सूर्या के अणु-अणु में हर्ष का सागर हिलोरें मार रहा था। प्रथम तो उसकी जन्मदात्री माँ से संयोगवश भेंट, द्वितीय संभूति से मिलाप। वह अपने बिस्तर पर पड़ा उन आनन्दमयी स्मृतियों में डूबा था जिन क्षणों में ममतामयी ने उसे दुग्धपान कराया था। उसके सारे शरीर में सत्व का उद्रेक था। लग रहा था जैसे पुण्य की अक्षय सरिता उसके अन्तःकरण में फूट पड़ी थी। यह पहला अवसर था, जब वह होली फादर सूपा की स्मृतियों को भूला था।

अकस्मात् टी. वी. की स्क्रीन पर चमक आई। स्क्रीन पर सूपा की तस्वीर उभरी। सूपा के श्वेत दाड़ीयुक्त मुख पर कुछ आश्चर्य था। वह कह रहा था।

"स्टीलमेन, मैं आज तुम्हें विशेष रूप से प्रसन्न देख रहा हूँ। मेरे सामने तुम्हारे मस्तिष्क की रेखाएँ और उत्फुल्ल हृदय का अद्भुत रेखांकन है। जब इस प्रकार का रेखांकन मेरे कम्प्यूटर पर आता है तो सिद्ध होता है कि व्यक्ति को कोई वांछित, उसकी प्रिय वस्तु मिली है। लेकिन बेटे मैं चकित हूँ क्योंकि तुम्हारी प्राप्त वस्तु का चित्र इस कम्प्यूटर पर नहीं आ रहा। मुझे यह भी आश्चर्य है कि लगभग तीन घण्टा तुम मेरे स्क्रीन से दूर रहे। मेरे जीवन में यह पहला अवसर है, जब कोई मेरा व्यक्ति 'मेरी पकड़' से दूर रहा हो। मेरे बेटे मुझे बताओ कि ये तीन घण्टे तुमने कहाँ गुजारे ? मैं समझता हूँ कि यह प्रसन्नता तुम्हें उन तीन घण्टों में ही मिली है।"

"होली फादर, मैंने तीन घण्टे संभूति नामक एक युवती के साथ व्यतीत किए



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। वह सर्वांग सुन्दरी है, उसके अंग-प्रत्यंग में मोहन का बसेरा है, लावण्य का चिरस्थाई पड़ाव है, सुगन्ध का महकता सरोवर है। मैं तो कहूँ कि वह यौवनांगनाओं की तीर्थस्थली है, कामनाओं की पुण्य धरा है और सौन्दर्य की उत्स सरिता है।" सूर्या ने स्पष्टतः देवी निवृत्ति और उसके अखण्ड सिद्ध योग आश्रम और उससे भेंट को छिपा लिया।

"ओह ! लेकिन उस सौन्दर्यमयी का रेखांकन कम्प्यूटर पर क्यों नहीं आ रहा माय सन ?" सूपा का आश्चर्यमय स्वर था।

"मुझे भी यह आश्चर्य है फादर, ऐसा क्यों हुआ ?" सूर्या ने चकित होकर कहा।

"खैर छोड़ो, इसका कारण मैं खोज लूँगा। आज अब से तीन घण्टे बाद अर्थात् दो बजे तुम्हें विशिष्ट काम को जा रहे पाँच दलों का इन्चार्ज बनाया है। प्रत्येक दल में पाँच-पाँच व्यक्ति होंगे। उनमें हमारी प्रयोगशाला की पाँच सुयोग्य वैज्ञानिक भी होंगी जो एक-एक पाँचों दलों में रहेंगी। तुम डॉ० सुमन आयंकर के दल में रहोगे। यह दल एक विशेष व्यक्ति के आवास में जाएगा.........." सूपा सूर्या को अपनी योजना बताता रहा। वह गम्भीरता से सुनता रहा। सारा कार्यक्रम बताकर सूपा की तस्वीर अदृश्य हो गई।

यद्यपि सूर्या निरन्तर दो दिनों से जाग रहा था, पर जैसे उसे लेशमात्र भी क्लान्तता नहीं थी। विशेषकर उस समय से, जब से वह श्री माँ से मिला था। फिर भी वह तीन घण्टे की नींद लेना चाहता था। सूर्या ने कुछ सोचकर अपने बैड के पास एक रिमोटनुमा यंत्र उठाया, उसमें लगे काले छोटे-से स्विच को दबाकर लेट गया।

उसके लेटते ही उसके पलंग के ऊपर छत से रूपहली किरणें निकल-निकलकर उससे लिपटने लगीं। सूर्या ने उस यंत्र को तीन घण्टे की अवधि पर निर्धारित किया, ठीक वैसे ही जैसे कोई सोने से पहले अपने इच्छित समय का अलार्म घड़ी में सैट करता है।

यह सूपा द्वारा विकसित एक यंत्र था, जिसके प्रभाव से गहरी नींद आती थी। अन्य नींद की गोलियाँ जैसे इसके साइड इफेक्ट्स न होकर यह रूपहली, मुलायम किरणें स्वास्थ्य के लिए लाभदायी थीं। इनसे ली गई तीन घण्टे की गहरी नींद के बाद व्यक्ति को अगले चौबीस घण्टे तक नींद की आवश्यकता अनुभव नहीं होती थी। वह तरोताजा और प्रफुल्लित भी रहता था। ठीक तीन घण्टे बाद या जितना समय सोने वाला सैट करता था, उस यंत्र का एक अन्य स्विच स्वतः ही दब जाता था, जिससे सुनहरी किरणें निकलकर सो रहे व्यक्ति पर पड़ती थीं। सोने वाला



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यक्ति उनके प्रभाव से मात्र तीस सेकण्ड में उठ आता था। उसे न आलस्य आता था और न ही शरीर में टूटन।

ठीक तीन घण्टे बाद सूर्या की निद्रा भंग हो गई। उसके द्वार पर डॉ० कुमारी सुमन आयंकर थी। आते ही उसने सम्मानपूर्वक कहा—

"आदरणीय सूर्या, मैं तैयार हूँ। कृपया चलें, बाहर गाड़ी खड़ी है।" कहकर वह कक्ष से बाहर निकल गई।

सुमन आयंकर विलक्षण बुद्धिमेधा से सम्पन्न 22-23 वर्षीय सुन्दरी वैज्ञानिक थी। उसका रंग कुछ सांवला, पर सुन्दरता इतनी कि व्यक्ति देखता रह जाए। किन्तु यौन विषय में वह पूर्णतः रिजर्व थी। युवावस्था होते हुए भी जैसे वह sex और उसकी अनुभूतियों से दूर रहती थी। मात्र यह सुमन ही नहीं बल्कि सूपा प्रयोगशाला की प्रत्येक महिला सेक्स को कम से कम महत्व देती थी। यह कारण था सूपा का। उसकी प्रयोगशाला में अदृश्य रूप से ऐसी वैज्ञानिक किरणों का अदृश्य जाल छाया रहता था कि कामुक व्यक्ति भी सेक्स भावना को त्यागकर एकाग्रचित्त से प्रयोगों में लगा रहता था।

प्रयोगशाला के बाहर स्त्री-पुरुष स्वतन्त्र थे, उनमें सामान्य व्यक्ति की तरह ही यौन भावनाएँ उपजती थीं, किन्तु सुमन उन सबसे पृथक थी। वह अहर्निश उसके नए-नए प्रयोग और उनके अनुसंधान पर ही सोचा करती थी।

इसके अतिरिक्त सुमन मार्शल आर्ट्स की अद्‌भुत फायटर थी। वह निहत्थी अकेले ही अनेक लोगों पर भारी थी। सुमन के मार्शल आर्ट का गुरू था तिब्बत के एक कबीले का बौद्ध लामा। यह लामा अपने फन में विशेष दक्ष था। एकदम दुबला-पतला, घास-फूंस के तिनकों जैसी दाड़ी और लटकती मूँछों से युक्त लामा शाइसंग महान योद्धा था। उसकी आयु कितनी थी, यह सुमन को ज्ञात नहीं था किन्तु वह देखने में पचपन-साठ वर्ष का लगता था। शाइसंग ने कुछ विलक्षण दाव सुमन को सिखाए थे, जो व्यक्ति को चकित कर देने में सक्षम थे।

सुमन सूर्या के प्रति पूरी तरह आकर्षित थी। हालाँकि इस आकर्षण के मूल में यौन भावनाएँ नहीं थीं, फिर भी पता नहीं क्यों उसकी आत्मा, हृदय, मन सूर्या के लिए चाहते थे। उसने एक बार सूर्या से कहा भी था।

"सूर्या, पता नहीं क्यों, मेरा मन का आकर्षण मेरे प्रयोगों और चिन्तन के बाद तुम पर होता है। न मैं तुमसे यौन सम्बन्ध चाहती। यौन भावनाएँ मेरे अन्दर हैं ही नहीं। मैंने आज तक किसी पुरुष से संभोग नहीं किया। मैं अक्षत योनि हूँ, पूर्णतः कुमारी, जैसी माँ के गर्भ से आई थी वैसी ही। फिर भी मैं तुम्हें चाहती हूँ। अपने प्रयोगों के बाद अधिक से अधिक समय मैं तुम्हारे साथ व्यतीत करने की इच्छुक रहती हूँ किन्तु जब मैं अवकाश में होती हूँ तुम व्यस्त होते हो।" सूपा के बाद सुमन



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही सबसे रहस्यमयी उसे लगती थी। सूर्या भी उसका व्यक्तिगत रूप से सम्मान करता था। इन दिनों सुमन एक ऐसे प्रयोग पर कार्य कर रही थी जो सफल होने पर उसके जीवन की एक उपलब्धि तो होगी ही, साथ ही विश्व के सामने एक अजूबा भी।

ठीक समय पर पाँचों दल रवाना हो गए। सभी दलों में एक-एक विशेष कार थी। इन कारों की एक विशेषता यह भी थी कि आवश्यकतानुसार इंजिन की आवाज और कार की अन्य आवाज पूरी तरह समाप्त की जा सकती थी। दूसरी विशेषता यह कि इन कारों में बैठ जाने के बाद बाहर से देखने पर बैठने वाला दिखाई नहीं देता था। यहाँ तक कि ड्राइवर भी अदृश्य रहता था। ऐसी ही अनेक विशेषताएँ उन कारों में थीं।

पाँच दलों के लिए छः गाड़ियाँ थीं। जिस दल में सूर्या और सुमन थे, उसमें दो गाड़ियाँ थीं। एक गाड़ी में दल के चार सदस्य और दूसरी गाड़ी में सूर्या और सुमन थे। योजनानुसार ठीक समय पर गाड़ियाँ अपने-अपने गन्तव्यों पर पहुँच गईं और उन्होंने अपना-अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया।

वह नगर के धन कुबेर और उद्योगपति सेठ जौहरीमल की भव्यतम कोठी थी, जो अत्याधुनिक संसाधनों से युक्त किसी राजप्रासाद का भ्रम उत्पन्न करती थी। कोठी की सुरक्षा में चारों ओर जौहरीमल के गार्ड्स तैनात रहते थे और गेट के अन्दर गार्ड्स के अतिरिक्त खतरनाक कुत्ते भी सतर्क रहते थे।

कोठी के निवासियों के लिए विशिष्ट सुरक्षा व्यवस्था थी। स्थान-स्थान पर रक्षक, प्रत्येक कक्ष में संकटकालीन अलार्म और कक्ष में रह रहे व्यक्ति के पास अत्याधुनिक रक्षण हथियार। सुरक्षा की दृष्टि से यह कोठी अभेद थी। कोठी में अनेक कमरे थे। सभी कमरे साउण्ड प्रूफ और पूर्णतः सुरक्षित।

सेठ जौहरीमल चालीस वर्षीय, पूर्ण स्वस्थ व्यक्ति थे। अप्सरा सी सुन्दर पत्नी। चन्द्रमा की किरणों जैसा उज्ज्वल रंग था जौहरीमल की पत्नी का। दो पुत्र, एक पुत्री की माँ श्रीमती प्रमदा देवी की आयु लगभग 30 वर्ष थी। उनका सबसे छोटा पुत्र 5 वर्ष का, उससे बड़ी पुत्री 7 वर्ष की और ज्येष्ठ पुत्र 9 वर्ष का था। तीन संतानें एक पृथक कक्ष में सो रही थीं और जौहरीमल तथा प्रमदा अपने शयनकक्ष में निद्रालीन थे।

इसी कोठी में सेठ जौहरीमल के दो भाई अपने परिवार के साथ रहते थे। कुल कुटुम्बियों की संख्या थी तेरह। इन तेरह सदस्यों की सेवा के लिए बीस नौकर थे। इसके अतिरिक्त सुरक्षा गार्ड एवं अन्य लोग। जानवरों में पाँच कुत्ते, कुछ खरगोश और तोते थे। सेठ जौहरीमल को तोतों से विचित्र स्नेह था, एक तोता तो सदैव उनके साथ रहा करता था। वे जहाँ भी जाते वह तोता उनके साथ



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवश्य होता। तोता भी उन पर जान छिड़कता था। वह अपनी अटपटी बोली में सेठ जी से बिल्कुल उसी तरह बातें करता था जैसे कोई व्यक्ति व्यक्ति से करता है।

रात का ढाई बजा था। सभी गार्ड और कुत्ते चाक चौबन्द थे, पहरा दे रहे थे। कोठी का मजबूत गेट लगा था और गेट पर 4 सुरक्षाकर्मी उपस्थित थे। अचानक चारों सुरक्षाकर्मी गनमैन भौंचक्के रह गए। पता नहीं कब ? कैसे ? कहाँ से ? उनके बीच में एक अत्यन्त सुन्दर सांवली सलौनी युवती प्रकट हो गई।

"आप कौन हैं।" चारों ने एक साथ कहा।

युवती के पतले अधर दल खुले, मोहक मुस्कान उसके लाल ओठों पर नाचने लगी। वह सस्मित बोली—

"मैं मृत्युदूती हूँ। सेठ जौहरीमल का सिर कलम करने आई हूँ।"

"क्या ?" चारों एक साथ चौंककर बोलते हुए आश्चर्य से निहत्थी कमनीय रमणी को ऐसे देख रहे थे, जैसे वह पागल हो।

"हाँ दोस्तो।" कहते हुए उसने अपने उत्तुंग स्तनों पर दोनों हाथ रखे। वास्तव में उसके ब्रा में निपिल के ऊपर दो स्विच लगे थे, जिसे उसने दबाया था। क्षण मात्र में ही युवती के चारों ओर रजत सी सफेद किरणों का पारदर्शी जाल आ गया। इसके पूर्व कि गनमैन सम्हलकर अपनी गनों को सीधा कर पाते युवती ने पुनः अपने ड्रेस में लगे बटनों को दबाया। तत्क्षण उसके शरीर से सफेद रंग की चार धुँए की रेखाएँ निकलीं और पलक झपकते ही चारों गार्ड्स पर गिरीं। एक क्षण के आधे भाग से भी कम समय में चारों गार्ड अचेत होकर पृथ्वी पर लुढ़क गए।

"इन्हें उठाकर कम्पाउण्ड के अन्दर ले चलो।" युवती की आदेशात्मक ध्वनि गूँजी।

उसके आदेश के साथ ही चारों के भारी शरीर हवा में उठे और शून्य वातावरण में तैरते कम्पाउण्ड में प्रवेश कर गए। कम्पाउण्ड में प्रवेश करते ही वहाँ उपस्थित पाँच गार्ड्स ने हवा में झूलते गेट पर तैनात गनमैनों के शरीरों को देखा तो भय से चौंक उठे। उसी समय उनकी नजरों ने पारदर्शी युवती को भी देखा। उन गार्ड्स का भी वही हाल हुआ जो गेट पर नियुक्त संतरियों का हुआ था। अर्थात् वे पाँचों गार्ड्स भी युवती की घातक गैस के शिकार बन गए। सभी अचेत गार्ड्स के शरीरों को कम्पाउण्ड में रख दिया गया। इसके पश्चात् दामिनी-सी चमकती सुन्दरी आगे बढ़ी।

आगे कुत्तों की सुरक्षा थी। दबे पाँव चलती हुई सुन्दरी पर अकस्मात् ही एक कुत्ता आ गिरा और गिरते ही कूँ-कूँ करता हुआ दूर जा गिरा और अचेत हो गया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेष कुत्तों की पलटन की ओर सुन्दरी ने अपना हाथ किया। उसके नाखूनों से तेज रोशनी की रेखाएँ निकल-निकलकर कुत्तों को निस्तेज कर दिया। आश्चर्य की बात तो यह कि वे कुत्ते न तो भूखे थे और न ही उन्होंने ऐसा कोई ऐक्शन ही किया था।

सभी बाधाओं को निर्विरोध पार करते हुए रहस्यमय सुन्दरी सेठ जौहरीमल के शयनकक्ष के द्वार पर पहुँची। उसका दायाँ हाथ सुदृढ़ कपाटों पर रखा हुआ। हाथ से प्रकाश की रश्मियाँ निकलीं और कपाट पट्ट में छेद हो गया। कुछ क्षणों में ही कपाट की लकड़ी भस्म होकर नीचे आ गिरी। अब द्वार की कोई दीवार नहीं थी।

सुन्दरी निःसंकोच अन्दर प्रवेश कर गई। डबल बैड पर सेठ जौहरीमल और उसकी रमणीय सुन्दरी पत्नी लिपटे हुए सो रहे थे। बैड के पास ही छोटे से कीमती टेबिल पर यौन शक्ति संवर्धक स्प्रे रखा था। दोनों ही पति-पत्नी नग्नावस्था में निश्चित होकर सो रहे थे।

सुन्दरी ने स्प्रे उठाया, उसे गौर से देखा फिर जौहरी के अनावृत अंग पर स्प्रे की फुहार डाली किन्तु सेठ गहरी नींद में था। अचानक सुन्दरी का हाथ उठा। 'तड़ाक' का शब्द शयनकक्ष में गूँजा और इसके साथ ही सेठ की आँखें खुल गईं।

अपने सामने विचित्र से चमकती किरणों के लिवास में उसने युवती को देखा तो भयाश्चर्य से चीख उठा। उसकी चीख से प्रमदा की नींद भी खुल गई। सेठ अपनी पत्नी के मुलायम शरीर में घुसता चीखे जा रहा था।

"चीख मत सेठ। यहाँ तेरी चीख कोई नहीं सुनेगा।" दामिनी सुन्दरी का कठोर स्वर निकला।

"कौन हो तुम ? क्या चाहती हो ?" भय जड़ित स्वर में प्रमदा ने कहा।

"मैं मृत्युदूती हूँ। तेरे घर वाले का सिर लेने आई हूँ, लेकिन तू घबरा मत यह मरेगा नहीं।" सुन्दरी की घातक मुस्कान उसके ओठों पर अठखेलियाँ करने लगीं।

"न.....न.....ऐसा मत करो।" सेठ की आवाज कण्ठ कुहर से घुटी-घुटी-सी निकली। सुन्दरी ने उसके भयातंकित मुख को देखा और हल्के से हँस पड़ी।

"क्यों सेठ, बहुत डर लग रहा है ? यह डर उस समय नहीं लगा, जब ईमानदार श्रमिक नेता की गर्दन तूने कलम कराई थी। यह डर उस समय भी तुझे नहीं लगा जब उसकी जवान और खूबसूरत लड़की के क्वाँरे जिस्म को तूने रौंदा था। यही डर तुझे उस समय क्यों नहीं लगा सेठ, जब पत्रकार रश्मि वर्मा के गोरे तन पर तूने तेजाब डलवाकर उसे जिन्दा ही जला डाला था। दामिनी की दमक से भरी युवती का सुन्दर मुख क्रोध की कालिमा से काला हो गया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अचानक उसने अपने लिबास में हाथ डाला। अगले ही क्षण उसके हाथ में चाकू चमक रहा था। यह चाकू आम चाकुओं से अलग था। इसमें चाकू के फाल के स्थान पर ब्लैड के समान धार युक्त दो इंच चौड़ा फाल लगा था। सुन्दरी ने चाकू के हैण्डिल पर उभरे एक छोटे से पुशबटन को हल्के से प्रेस किया। चमकते हुए चाकू के फाल का आकार बढ़ता गया। वह लगभग तीन फुट के आकार में लम्बा हो गया था।

प्रमदा फटी-फटी नजरों से देखती रह गई। दामिनी सुन्दरी ने विचित्र चाकू "गों.....गों.....गों....." की दयनीय ध्वनि करते सेठ जौहरीमल की ग्रीवा पर रख दिया। चाकू उस स्थान पर रखा था, जहाँ से गर्दन कन्धों से जुड़ती है। "सूं.....ऽ.....सूं.....ऽ....." की हल्की ध्वनि हुई और एक सेकण्ड से भी कम समय में सेठ जौहरीमल की गर्दन कट गई। बहुत गम्भीरता से देखने पर भी नहीं लगता था कि सेठ की गर्दन काटी जा चुकी है। कटे हुए स्थान पर मात्र एक बाल जैसी बारीक रेखा अवश्य पैदा हो गई थी।

सुन्दरी ने एक झटके से सेठ के सिर के बालों को पकड़ कर उठाया। कटी हुई गर्दन उसके हाथ में आ गई। सुन्दरी के द्वारा गर्दन उठाये जाने के तुरन्त पश्चात् सेठ जौहरीमल के उस स्थान पर जहां से गर्दन काटी गई थी, आंतरिक्ष से एक सफेद पावडर गिरा। और उस पूरे स्थान पर फैल गया। कुछ क्षणों में ही गर्दन का शेष धड़ पूरी तरह सूख गया। न वहाँ कोई खून था और ना ही ऐसा लगता था कि अभी हाल ही में यहाँ से गर्दन काटी गई है।

"इस गर्दन को पीजूपीपू में रख लो।" सुन्दरी ने आदेश दिया। तुरन्त ही आंतरिक्ष में टंगी गर्दन गायब हो गई। सेठानी प्रमदा अचेत हो चुकी थी। सुन्दरी शान्ति से चलती द्वार से निकल गई। उसका कार्य पूर्ण हो चुका था।

दूसरे ही दिन प्रातः सारा शहर सनसनी से भर गया। जहां देखो, वहाँ एक ही चर्चा, एक ही बात। बात ही ऐसी थी कि पुलिस, जनता और चिकित्सक, जो भी सुनता भौंचक्का रह जाता। पहले तो उसे विश्वास ही नहीं होता कि जो सुना जा रहा है, वह सत्य है ? लेकिन सर्व सर्वत्र एक ही बात सुनता तो कोई विश्वास करता, अविश्वास करने वाला घटना स्थलों की ओर दौड़ पड़ता।

शहर में एक साथ, एक शैली में, एक ही ढंग से पाँच उद्योगपतियों की गर्दनें उतारी जा चुकी हैं। आश्चर्य की बात तो यह कि ऐसा लगता ही नहीं था कि कुछ घन्टे पहले रात में गर्दनें कटी हैं। उनमें कहीं भी ताजा कटने का कोई चिन्ह उपस्थित नहीं थे।

इस आश्चर्य में एक आश्चर्य उस समय और बढ़ा जब सेठ जौहरीमल के दिल की धड़कनों में स्पंदन दिखाई दिया। दरअसल सेठ जौहरीमल के भाई



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोहरमल ने उनके दिल के ऊपर के भाग को उठता-बैठता देखा था। तुरन्त उनके फैमिली डॉक्टर ने देखा और विश्वासपूर्वक परीक्षण कर कहा—

"सेठ जी के दिल की धड़कनें चालू हैं। उनमें श्वांस-प्रश्वास भी चल रही है और वे जिन्दा हैं।"

इसी प्रकार सभी पाँचों उद्योगपतियों की जिनकी गर्दनें काटी गई थीं मेडीकल चैकअप किया गया। पाँचों की स्थिति एक समान थी, पाँचों की सांसें जीवित थीं, उनके दिल भी जिन्दा थे और शरीर भी ठण्डा न होकर गर्म बना हुआ था। ऐसा कैसे संभव है ? यह किसी की बुद्धि की पकड़ में नहीं आ रहा था। निर्णय हुआ कि पाँचों उद्योगपतियों के शरीरों की वैज्ञानिक जांच देश के प्रसिद्ध मानवशास्त्री वैज्ञानिकों से कराई जाए।

दोपहर के समय सेठ जौहरीमल की पत्नी प्रमदा देवी को होश आया। उस दिन वह पुलिस को अपना बयान नहीं दे सकी। दूसरे दिन, एक नई बात हुई। पाँचों उद्योगपतियों के शरीरों को विशेष सुरक्षा व्यवस्था में एक अस्पताल के कक्ष में ही रखा हुआ था। प्रातः आठ बजे राजधानी से प्रसिद्ध मानवशास्त्रियों का दल आ गया। उन्होंने पहले शरीर की जांच की तो उसे पूर्णतः मरा हुआ पाया। इसके पश्चात् शेष चारों शरीरों का भी परीक्षण हुआ किन्तु उन चारों की भी पूर्णतः मृत्यु हो चुकी थी। फिर भी वैज्ञानिकों को यह चुनौती ही थी। वे पाँचों सघन परीक्षण में व्यस्त हो गए।

दूसरे दिन सेठ जौहरीमल की पत्नी का बयान पुलिस अधीक्षक बिन्दुशेखर शुक्ला ने स्वयं लिया। क्योंकि एकमात्र प्रमदा देवी ही उन पाँचों में से एक सेठ जौहरीमल के साथ सो रही थी—शेष चार उद्योगपति अकेले ही सोते हुए मारे गए थे। संभवतः प्रमदा देवी का बयान केस पर कुछ प्रकाश डाल सकता था। कैसे ? किस हथियार से ? किसने हत्या की, यह प्रमदा ही बता सकती थी। हालांकि गाड्र्स को होश आ गया था और सभी ने एक जैसा अविश्वसनीय बयान रिकॉर्ड कराया था। सभी ने रहस्यमय दामिनी सी दमकती-चमकती सुन्दरी के विषय में खूब नमक मिर्च लगा कर बताया था, जब कि शेष चार मृतकों के अंगरक्षकों और गार्ड्स ने भी इसी प्रकार की सुन्दरी का वर्णन किया था। वह सुन्दरी एक ही समय में अलग-अलग स्थानों पर जाकर कैसे कत्ल कर सकती है ? यह पुलिस अधीक्षक बिन्दुशेखर शुक्ल समझ नहीं सके थे।

बिन्दुशेखर शुक्ल लगभग 38-40 वर्ष के सुयोग्य अधिकारी थे। एक सप्ताह पूर्व ही उसने यहाँ ज्वाइन किया था। सिर मुंड़ाते ही ओले की कहावत चरितार्थ हुई। कातिल का कुछ पता नहीं चल रहा था और शहर के सभी व्यापारी उद्योगपतियों ने हड़ताल कर दी थी। मिल, दुकानें, कारखाने, व्यापारिक संस्थान



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो दिन से बन्द पड़े थे। राजनैतिक मंत्रीगण और विरोधी नेताओं का जमघट लगा था। हर ओर से प्रेशर था, जैसे भी हो कातिलों को पकड़ा जाए। पर कातिल कहाँ ? बिन्दुशेखर मानसिक रूप से बहुत अशान्त हो गये थे। मामले का कोई सूत्र हाथ में नहीं आ रहा था।

प्रमदा ने रोते हुए बयान दिया !—"मेरी नींद खुली तो एक चमकीली सुन्दरी को अपने बैड के पास खड़ा पाया। उसके शरीर से बिजली की रश्मियों की भांति किरणें निकल रही थीं। उसने......।" प्रमदा देवी ने अपनी आंखों के सामने घटित पूरा प्रसंग ज्यों का त्यों सुना दिया।

"क्या आप दुबारा उस स्त्री को देखें तो पहचान लेंगी ?" बिन्दुशेखर ने प्रश्न किया।

"नहीं, क्योंकि उसके चेहरे के पास विचित्र गति से प्रकाश की किरणें निकल रही थीं, जिसमें उसकी मुखाकृति पूरी तरह देखने में नहीं आ रही थी।" प्रमदा ने झुरझुरी लेकर कहा।

शुक्ला सोचने लगे कि मात्र चार गार्ड्स ही ऐसे हैं जिन्होंने उस रहस्यमयी को बिना किरणों के भी देखा है । उनके अनुसार युवती असाधारण रूप से सुन्दरी थी और उसका रंग सांवला था। बिन्दुशेखर शुक्ला बहुत समय तक प्रमदा से पूछताछ करते रहे फिर 'पुनः कष्ट दूंगा' कह कर अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ चले गये। उसे अब पोस्टमार्टम रिपोर्ट का सूक्ष्म अध्ययन करना था। उन वैज्ञानिकों की आरम्भ रिपोर्ट भी देखनी थी, जिन्होंने पाँचों उद्योगपतियों के शवों का वैज्ञानिक परीक्षण किया था।

घटना के दो दिन पश्चात्.........।

प्रातः पाँच बजे का समय था। दिसम्बर की तौषारिक ऋतु में प्रातः के पाँच बजे भी काफी अंधेरा रहता है। उस दिन भी तेज ठण्ड थी। नागरिक जन निद्रा देवी की गोद से पूरी तरह उठ भी नहीं पाए थे। स्व. सेठ जौहरीमल के गेट पर हमेशा के समान उस दिन भी सुरक्षा गार्ड्स तैनात थे।

एक गार्ड के पास कीमतीशाल ओढ़े एक 40-42 वर्षीय व्यक्ति आया। अचानक वह व्यक्ति कहां से आया, उसे पता नहीं चला। आते ही उसने गार्ड से कहा—"गेट खोल।" आदेशात्मक स्वर सुन कर गार्ड ने दृष्टि उठा कर उसे देखा। आगंतुक का चेहरा कीमती शाल में छिपा था, इसलिए वह पहचान तो न सका किन्तु आवाज सुन कर वह चौंका। आवाज पूरी तरह स्व. सेठ जौहरीमल से मिलती थी।

"गेट सात बजे खुलेगा।" संतरी ने लापरवाही से कहा—



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"क्यों ? अभी खोल।" आगन्तुक ने कुछ क्रोध व्यक्त करते हुए मुख पर आवरित उष्णीशाल का आवरण हटाया।

संतरी की आंखें विस्फारित और मुख भय-आश्चर्य से खुला रह गया। तब तक अन्य गार्ड्स भी वहाँ आ गए। आगन्तुक को देखते ही वे भी सन्न रह गए। उनके सामने सेठ जौहरीमल खड़े थे।

"भ..........व.........भूत...।" कहते हुए सन्तरी गेट से भागा। सेठ ने चाबी वाले सन्तरी की जेब से चाबी निकाली और गेट खोलते हुए सख्ती से बोले–

"मैं थका हुआ हूँ, सावधान मेरे आगमन के विषय में किसी को मत बताना।" कहते हुए जौहरीमल चलता हुआ कोठी में प्रवेश कर गया।

अन्दर के सभी सुरक्षागार्ड प्रातः समय में बैठे ऊँघने लगे थे। सेठ जौहरीमल को किसी ने नहीं रोका। वह सीधा अपने शयनकक्ष के द्वार पर पहुंचा। द्वार पर हाथ से हल्का सा दबाव डाला। दरवाजा खुल गया, शायद प्रमदा देवी दरवाजा बन्द करना भूल गई थी।

प्रमदा देर रात तक रोती रही थी और रोते-रोते ही उसकी आँख लग गई। सेठ जौहरीमल ने शाल एक ओर रखा और निश्चिंतता से प्रमदा के पास में लेट गया। प्रमदा नींद में कुनमुनाई और वेख्याली में सेठ को आलिंगन में बाँध लिया। सेठ ने विरोध नहीं किया, वह चुपचाप सो गया।

लगभग 8 बजे प्रातः प्रमदा की नींद खुली। नौकरों को आदेश था कि प्रमदा को जगाया न जाए, तब वह उठे तभी आवश्यक सेवाएँ जैसे बैड टी आदि उपलब्ध कराई जाएँ।

जैसे ही प्रमदा की नींद खुली, उसने स्वयं की बाहों में सेठ को गहरी नींद में सोता पाया। एक क्षण तो नींद के झोके में वह भूल ही गई कि कल ही सेठ का अंतिम संस्कार किया गया है, किन्तु जैसे ही उसे वास्तविकता का भान हुआ, वह भयभीत होकर चीखी। साउण्ड प्रूफ कमरे से चीख की आवाज बाहर जाने का प्रश्न ही नहीं था।

सेठ की नींद टूटी। उसे लगातार चीखती देख सेठ ने स्वयं को उसकी बाहुकारा से मुक्त किया फिर बोला–

"क्या बात है प्रमदा.....क्यों चीख रही हो। मैं थका हुआ हूँ, कुछ देर सोने दो।" वैसा ही स्वर, वही उच्चारण, वही संबोधन। किन्तु प्रमदा अत्याधिक भय से अचेत हो गई। सेठ स्वयं उठा, उसने प्रमदा को बाँहों में उठाया और बाथरूम में ले जाकर शावर के नीचे खड़ा कर शावर स्विच खोल दिया।

सुगंधित गर्म जल की फुहारों में प्रमदा भीग उठी। शीत ऋतु में सेठ के प्रत्येक बाथरूम में ठण्डे और गर्म पानी की पृथक-पृथक व्यवस्थाएँ रहा करती थीं।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रमदा की आंखें दोबारा खुलीं तो स्वयं को सुदृढ़ बाँहों के बन्धन में पाया। उसे होश में आया देख सेठ बोला—

"प्रमदा क्या बात है ? क्यों डर रही थीं। ?"

प्रमदा ने एक क्षण सेठ की आंखों में देखा, वह देखती रह गई। सेठ गहरी आवाज में कह रहा था। "डरो मत.......डरो मत.....हां, अब तुम्हारा भय पूरी तरह समाप्त हो गया है। तुम पूरी तरह अभय हो गई हो। तुम प्रसन्न हो रही हो।" "हां मेरा भय समाप्त हो गया है। मैं प्रसन्न भी हो रही हूँ।" कहते-कहते प्रमदा सेठ से लिपट गई।

प्रमदा अनुभव कर रही थी, सेठ के शरीर में एक नवीनता है। बीस-इक्कीस वर्षीय युवक की भांति उसके यौवनिक अंगों में उष्णता है। संभवतः प्रमदा में काम की जागृति हो रही थी। वह सेठ के अंगों से खेलने लगी। सेठ ने उसका वर्जन किया।

"डार्लिंग प्रातः मुहूर्त में यह ठीक नहीं होता। यह समय तो ईश्वर के चिन्तन, मनन और साधन का होता है।"

प्रमदा और सेठ ने संयुक्त रूप से स्नान किया। अब प्रमदा को कोई भय अथवा डर नहीं था। वह यह भी भूल चुकी थी कि सेठ जौहरीमल का निधन हुआ था। स्नानादि से निवृत हो सेठ शयनकक्ष में ही पूजा करने बैठ गया और प्रमदा कमरे से बाहर निकली।

द्वार पर दो नौकरानियाँ सेवा में थीं। प्रमदा को कमरे से निकलते देख वह दोनों आज्ञापालन के लिए सिर झुका कर तैयार हो गईं। प्रमदा ने उन्हें देखा और बोली—"देखो, अभी सेठ जी पूजन पर बैठे हैं, डिस्टर्ब मत करना।" कहती हुई प्रमदा किचिन की ओर चली गई। दोनों नौकरानियों ने एक-दूसरे की ओर देखा। एक ने कहा—"मालकिन पर गहरा सदमा है। वह अभी भी सेठ जी को जिन्दा समझ रही हैं।"

"बेचारी मालकिन।" दूसरी ने सहानुभूति प्रकट की।

उसके आधा घंटा बाद ही........। सेठ जौहरीमल के घर पर ही नहीं, पूरे शहर में सनसनीखेज हंगामा व्याप्त हो गया। बिजली की तरह यह खबर पूरे शहर में तेजी के साथ फैल गई कि दो दिन पूर्व जिन पाँच उद्योगपतियों की हत्याएँ कर उनके सिर गायब कर दिए गए थे, वे सब जीवित अवस्था में अपने-अपने घर लौट आए हैं।

सारे शहर का जनसमुदाय पाँचों उद्योगपतियों के घर की ओर उमड़ पड़ा। पत्रकारों के दल के दल भी पुनर्जीवित उद्योगपतियों की ओर दौड़े। सेठ जौहरीमल की भव्य कोठी के आगे भी जनसंकुल का महासागर लहरा रहा था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस समय सेठ जी स्वयं चल कर गेट तक आए और जनसमुदाय का अभिवादन करते हुए जोर से बोले—

"दोस्तों मुझे आश्चर्य है कि मेरे दो दिन के प्रवास में मुझे मृत मान लिया गया। मैं जीवित हूँ और पूरी तरह जीवित हूँ। हम पाँच मित्र एक विशिष्ट स्थान पर गए हुए थे, लौटा तो यहाँ की स्थिति ही बदली हुई थी।"

पत्रकरों ने भांति-भांति के प्रश्न किए किन्तु सेठ जी ने कहा कि "जब हम पाँचों मित्र इकट्ठे हो जाएँ तो सभी से प्रश्न कर लेना।" कहकर सेठ जी स्वयं के सुरक्षा गार्ड्स से घिरे अपनी कोठी में चले गए।

लगभग 10 बजते-बजते जिले के प्रमुख अधिकारी गण सेठ जी की कोठी में थे। उन शेष चार उद्योगपतियों को भी सेठ जी की कोठी पर ही सुरक्षित पुलिस दस्ता ले आया था। अधिकारियों ने पाँचों से चर्चा की। पाँचों के व्यवहार में, बातचीत में शालीनता थी। वे सामान्य जनों के समान ही चर्चा कर रहे थे।

जिलाधीश के आग्रह पर पाँचों अपना मेडीकल कराने प्रसन्नता से तैयार हो गए। उन्हें विशेष सुरक्षा में लेकर पुलिस दल मेडीकल कॉलेज में ले गया, जहाँ वैज्ञानिक और चिकित्सकों का दल उनका बेचैनी से इन्तजार कर रहा था।

वैज्ञानिक परीक्षण हुआ। सारी बातें सामान्य थीं। अन्तर था तो मात्र इतना कि पाँचों के शरीर बीस-बीस, इक्कीस-इक्कीस वर्ष के लगते थे। जबकि उन पाँचों में किसी की भी आयु चालीस वर्ष से कम की नहीं थी।

पाँचों उद्योगपतियों का मानसिक परीक्षण भी हुआ। उनके हस्ताक्षरों को लेकर पुराने हस्ताक्षरों से भी मिलाया गया। उनमें भी कोई अन्तर नहीं था। पाँचों ने अपने परिचित मित्रों को परिवारजनों की पहचान में भी कोई त्रुटि नहीं की। लेकिन इन सब के साथ ही वैज्ञानिकों ने यह अवश्य सिद्ध किया कि पाँचों के शरीर पूर्णतः युवा थे। उनमें रक्त का परिभ्रमण सोलह वर्ष से बीस वर्ष के युवाओं से समान था। यह परिवर्तन तो प्रत्येक परिवार जन भी अनुभव कर रहे थे।

पूरे दिन उद्योगपतियों को परीक्षण में व्यस्त रहना पड़ा। रात्रि को दस बजे उन्हें यह कह कर मुक्त किया गया कि कल प्रातः पुनः उनका शेष परीक्षण सम्पन्न किया जा सकेगा।

सेठ जौहरीमल अपनी कोठी पर लौट आए। प्रमदा आतुरता से उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। दिन में उससे प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्रीमती ऐलिस थॉमस मिली थी। लगभग एक घन्टे तक उन्होंने प्रमदा से बन्द कमरे में चर्चा की थी। उस परिचर्चा में दिए परीक्षण निर्देशों को प्रमदा पूर्ण करना चाहती थी।

ग्यारह बजे रात में, अपने मित्र, रिश्तेदारों से मुक्त होकर सेठ अपने शयन कक्ष में पहुंचे। प्रमदा तब तक पूरी तरह अपना श्रृंगार कर चुकी थी। सेठ



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जौहरीमल में अनेक परिवर्तन देखे गए थे। जैसे उन्हें भोजन से पूर्व शराब पीने की आदत थी, किन्तु आज उन्होंने नहीं पी थी। सेठ ने कभी भगवत् स्मरण या पूजन नहीं किया था, किन्तु आज पूरे चालीस मिनट वह पूजा-अर्चना में व्यस्त रहे थे। यह परिवर्तन अकेले सेठ जौहरी में ही नहीं शेष चारों में भी था।

सेजशायी होते ही प्रमदा ने अपनी मरमरी बाँहों का हार सेठ के गले में डाल दिया। एलिस के निर्देशानुसार प्रमदा को अपने पति के समस्त अंगों का सूक्ष्म परीक्षण करना था। वह सेठ की कामाग्नि को उद्दीप्त करती रही। अन्ततः दोनों विक्सन हो गए।

प्रमदा ने सेक्स स्प्रे निकाल कर सेठ को दिया। सेठ की आम आदत हो गई थी कि जब भी वह पत्नी के साथ रतिरत होते योनांग के पूर्ण प्रहर्षण और अधिक समय तक स्तंभन के लिए स्प्रे का उपयोग करते थे। उस अवसर पर जैसे ही प्रमदा ने स्प्रे दिया, सेठ ने उसे एक ओर फंकते हुए कहा—

"अब इसकी आवश्यकता नहीं है।"

प्रमदा ने सेठ का अनावृत-परिपुष्ट शरीर देखा। वह वर्षों से सेठ के शरीर को, उसके अंगों को देख रही थी। प्रमदा ने गौर से गम्भीरता से परीक्षण किया—ऐसा सुपुष्ट और दीर्घ अंग सेठ का नहीं था, किन्तु अब है। यह तो उसे विश्वास हो गया कि सेठ के सिर और धड़ पृथक-पृथक हैं। धड़ एक दम नए युवक का है। सेठ ने जिस उत्साह और वेग से रतिकर्म किया, वह भी आश्चर्यजनक था। प्रमदा इस रतिद्वन्द्व में उससे अनेक बार पराजित हो गई किन्तु सेठ की आंगिक क्षमता और पौरुष में श्रमक्लान्तता और स्खलन का कोई चिन्ह दिखाई नहीं दिया।

रतिश्रम से थकी हुई प्रमदा ने अन्ततः सेठ से प्रश्न किया कि स्त्री के सम्पूर्ण तुष्टि की यह क्षमता दो दिनों में कैसे प्राप्त हो गई ? अपनी पत्नी पर दैहिक स्नेहमय पौरुष का चण्डवेगी प्रदर्शन करते-करते सेठ ने बताया।

"हम पाँच, एक ऐसी प्रयोगशाला में थे, जहां अनेक डाक्टर-वैज्ञानिक प्रयोगरत थे। हमें वहाँ कौन ले गया, हम नहीं जानते। डॉक्टर्स ने हमारे शरीरों पर पता नहीं किन्न दवाओं का लेपन किया, किन दवाओं को स्प्रे किया ? कौन-कौन से इन्जेक्शन लगाए। हम कभी अचेत होते तो कभी होश में आ जाते।

अंत में हम सभी ने स्वयं को एक कमरे में पाया। हमारे सामने एक स्क्रीन थी, उस स्क्रीन पर एक ऋषि की कल्पना को साकार करता एक भव्य वृद्ध पुरुष की बोलती तस्वीर उभरी।

"इस नए जीवन के लिए मैं आप सब को बधाई देता हूँ। सारी दुनिया के सामने आप पूरी तरह मर चुके हैं। हमने तुम्हारे विकारग्रस्त शरीर को समाप्त कर एक नया और विलक्षण शरीर प्रदान किया है। इन शरीरों से विश्वामित्र के समान एक नई सृष्टि का निर्माण होगा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुम पाँचों भाग्यशाली हो, जो इस नयी सृष्टि के सञ्चालक के प्रथम पुरुष बने हैं ! मैं तुम्हें नयी सृष्टि रचने के लिए आदेश देता हूँ। प्रत्येक व्यक्ति को एक पक्ष (पन्द्रह दिन) तक, प्रत्येक दिन दस स्त्रियों से मिथुन कर्म करना है। जब सम्पूर्णतः स्त्री संतुष्ट हो जाए तो तुम्हें जो टेब्लेट्स दी जा रही हैं, उनमें से एक टेब्लेट खा लेनी है। इस टेब्लेट से तुम्हारे अंग से वीर्य स्खलन होकर स्त्री के जननांग में पहुँचेगा और उसे गर्भधारण होगा। प्रतिदिन दस स्त्रियों को एक व्यक्ति गर्भवती बनाएगा तो एक दिन में ही पचास स्त्रियाँ गर्भवती होगीं। इस प्रकार एक पक्ष में सात सौ पचास स्त्रियों के गर्भ में नई सृष्टि का बीज स्थापित होगा। तुम देखना कि उन स्त्रियों के गर्भ से कैसी विलक्षण सृष्टि उत्पन्न होगी। एक विशेष बात यह कि तुम सिर्फ हाय सोसायटी धनी उच्च शिक्षित और पूर्ण स्वस्थ कुमारी से ही देह सम्पर्क करोगे। अगर मापदण्ड के विपरीत तुमने किसी अन्य स्त्री से संभोग कर उसको गर्भवती बनाया तो उसी दिन तुम्हारे जीवन की इहलीला समाप्त हो जाएगी। यह भी याद रखो अगर तुमने यह बात संसार के किसी भी व्यक्ति को बताई और उसने किसी अवांछित को बता दिया तो तुम्हें, उसको जिसको तुमने बताया और उसे जिसने जाना, तीनों को उसी समय मार दिया जाएगा।" सेठ ने अपनी बात समाप्त कर प्रमदा की ओर देखा और पुनः बोला—

"इसलिए प्रमदा इस रहस्य को किसी पर प्रकट मत करना। अगर ऐसा होता है तो हम दोनों की, और जिसे तुम बताओगी, सुनिश्चित रूप से मृत्यु हो जाएगी। अगर तुम्हें सेक्स का यह दिव्य-आनन्द लेना है तो मेरे लिए नयी उम्र की कुमारियों की व्यवस्था करने में मेरी सहायता करो।" सेठ ने पुनः कहा।

"यह कैसे संभव है ?" प्रमदा सेठ की बातें सुनकर चकित होते हुए बोली।

"स्त्रियों को कुछ भी असंभव नहीं है। तुम जिस विद्यालय की चेयरमेन हो वहाँ हजार से अधिक लड़कियाँ हैं।" सेठ ने योजना का प्रथम चरण बताया।

"चलो मान भी लिया जाए कि कुमारी लड़कियों का प्रबन्ध हो जाएगा लेकिन क्या वे गर्भधारण के पश्चात् अपने घरों में रह सकेंगी ?"

"नहीं.......उन्हें उस ऋषि संरक्षण में छोड़ दिया जाएगा।" सेठ ने कहा। प्रमदा ने एक क्षण सोचा फिर कहा—

"यानि की उन सब का अपहरण होगा ?"

"मैं नहीं जानता।"

"खैर छोड़ो, अब मुझे पुनः अपना पौरुष दिखाओ।" प्रमदा उससे लिपटती हुई पुनः कामाग्नि की लपटों में धधकने लगी।

"सत्य तो यह है कि पूरे जीवन में मैंने पहली बार यह जाना कि पौरुष क्या होता है ? स्त्री को मिथुनकर्म का वास्तविक आनन्द कैसे आता है ? तुमने मेरे



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आनन्द की ग्रन्थियाँ खोल दी हैं। देह के अंगों में सुखानन्द की निर्झरणी बहने लगी है।" सेठ, प्रमदा की कामवृति को तुष्टि के चरम शिखर की ओर ले जाने लगा। यह उसका चौथा अवसर था।

❑❑

चार दिन व्यतीत हो गए। सूर्या आश्चर्य में था। इन गत चार दिनों में एक बार भी होलीफादर सूपा न तो स्क्रीन पर दिखाई दिया था और न ही उसका क़ोई सन्देश मिला था। यह उसके जीवन का प्रथम अवसर था कि सूपा इतने समय तक दिखाई नहीं दिया था। वह पलंग पर लेटे-लेटे सोचने लगा।

सूपा का व्यक्तित्व रहस्यमय था, कोई नहीं जानता था कि सूपा किस देश की जाति, समाज का है। उसके नाम से भी पता नहीं चलता था और न ही सफेद, घनी ऋषि जैसी दाड़ी के कारण उसका वास्तविक मुख दिखाई देता था। कोई यह भी नहीं जानता था कि होलीफादर कहाँ रहता है ? वह भारत में ही कहीं से अपने मिशन का संचालन करता है ? अथवा कहीं विदेश में रहते हुए सेटेलाइट चैनल के माध्यम से कार्य करता है। अस्तु, सूपा कहीं भी रहता हो किन्तु उसके अधीनस्थ वैज्ञानिक और यहाँ का मिशन इंचार्ज सभी जानते थे कि वातावरण में व्याप्त वायु की भाँति सूपा सर्वत्र है। उसे प्रत्येक क्षण की खोज खबर है। उसके पास हजारों आँखें और लाखों हाथ हैं। वह जब चाहे किसी को दण्ड और पुरस्कार दोनों ही अल्प समय में देने में सक्षम था।

सूपा प्रत्येक वैज्ञानिक कार्यकर्ता के सामने रोज स्क्रीन पर नहीं आता था। पूरे मिशन में मात्र दो ही ऐसी शख्यिस थीं जिन्हें वह रोज दिखाई देता था। उनमें प्रथम था सूर्या और द्वितीय थी मादाम सिल्वा।

मादाम सिल्वा की आयु लगभग चालीस वर्ष थी। अत्यन्त आकर्षक नैन-नक्श और विलक्षण प्रतिभा की धनी थी। सूपा के पश्चात् मादाम सिल्वा से ही 'मिशन' के कार्यकर्ता भयभीत रहते थे।

सिल्वा का रहन-सहन, वेशभूषा सभी कुछ विचित्र था। वह सदैव गंभीर रहती थी। कभी किसी ने उसको हँसते-मुस्कराते नहीं देखा था। उसमें क्रूरता की पराकाष्ठा थी। मिशन से बगावत करने वाले को वह स्वयं कठोरतम दण्ड निर्धारण करती थी। एक बार एक महिला वैज्ञानिक शुभदा ने मिशन का रहस्य अपने प्रेमी जो सी. बी. आई. का महत्त्वपूर्ण सदस्य था, बता दिया।

शुभदा मिशन के मजबूत नियन्त्रण से मुक्ति पाना चाहती थी। यह तब ही संभव था, जब भारी सैनिक कार्यवाही हो। इसके लिए आवश्यक था कि प्रयोगशाला पकड़ी जाए। सी. बी. आई. सदस्य और शुभदा एक होटल के कमरे में


Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थे, जहाँ शुभदा ने प्रयोगशाला में चल रहे गोपनीय कार्यों की सूचना अपने प्रेमी को दी।

यद्यपि शुभदा ने पूरी तरह सावधानी रखकर ही अपने प्रेमी से सम्पर्क किया था, लेकिन उसी क्षण मिशन इंचार्ज मादाम सिल्वा को उसकी बगावत की सूचना मिल गई। सूर्या तुरन्त होटल पहुँचा, शुभदा को बुलाया और 'होलीफादर' का आदेश दिया।

आदेशानुसार शुभदा को तत्क्षण प्रयोगशाला पहुँचना था। सूर्या के इस प्रकार आकस्मिक आगमन पर शुभदा घबरा अवश्य गई थी। इस होटल में उसकी उपस्थिति की सूचना कैसे सूर्या को मिली, उसे यह घबराहट नहीं थी। घबराहट थी तो यह कि सूर्या के सन्देशानुसार उसे होलीफादर सूपा ने इसी क्षण विज्ञानशाला में आमंत्रित किया था।

उसे दो वर्ष मिशन की प्रयोगशाला में कार्य करते व्यतीत हो गए थे, पर दो वर्ष में पहली बार उसे होलीफादर सूपा का आदेश मिला था। इसके पूर्व उसे हमेशा मादाम सिल्वा के सहायक टॉम से आदेश मिला करते थे। उन आदेशों में कहीं सूपा के आदेश का हवाला नहीं होता था।

शुभदा का अन्तर्मन कह रहा था संभवतः अपने प्रेमी से हुई वार्ता का रहस्य प्रकट हो गया है। जाने के पूर्व शुभदा ने अपने प्रेमी से कहा था—

"संभवतः हमारी गोपनीयता भंग हो गई है। मैं अब शायद न रहूँ। तुम जल्दी से जल्दी कार्यवाही शुरू कर दो।" और शुभदा होटल से सूर्या के साथ चली गई।

विशाल हॉल में, जिसमें मीटिंग के लिए प्रयोगशाला के सभी वैज्ञानिक एकत्र होते थे, उस समय भी एकत्रित थे। मीटिंग अचानक कॉल की गई थी। सभी को आश्चर्य था कि दो दिन पूर्व ही मीटिंग हुई थी, इतनी शीघ्र मीटिंग काल का रहस्य किसी की समझ में नहीं आया था।

शुभदा को सीधे मीटिंग हाल में ले जाया गया। मीटिंग हॉल खचाखच भरा था। हॉल के डॉयस पर मादाम सिल्वा गंभीर मुद्रा में बैठी हुई थी। वह अपनी चिरपरिचित वेशभूषा में थी। उसका कद लम्बा, शरीर का रंग काला था। वह अपनी कमर में मानव अस्थियों की मेखला पहनती थी, जिससे उसका गुप्तांग ढका रहता था। कमर के ऊपर का भाग पूरी तरह नग्न रहता था। उसके एक हाथ में मानव खोपड़ी का मदिरा पात्र रहता था जिसमें से वह बार-बार सुरा की चुस्कियाँ लेती रहती थी। उसकी आँखें सदैव मद से भरी रहती थीं, लेकिन उसके स्वर में कभी लड़खड़ाहट नहीं होती थी। सिल्वा की सेवा में सदैव एक नरकंकाल रहा करता था, जिसके हाथ में शराब की बोतल होती थी। समय-समय पर वह कंकाल सिल्वा के कपालपात्र में शराब डाला करता था। माना जाता था कि मादाम एक



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रेष्ठ वैज्ञानिक होने के साथ-साथ काले जादू की भी मलिका थी। समझा जाता था कि मादाम का सम्बन्ध एक आदमखोर कबीले से था, जहाँ उसने काले जादू की मारक शक्तियों को अपना गुलाम बनाया था। लेकिन उसकी अपाजेय शक्तियाँ भी होलीफादर से पराजित हो गई थीं, इस प्रकार मादाम सिल्वा भी होलीफादर की सेविका बनी थी। होलीफादर ने उसके मूलनाम में परिवर्तन कर नया नाम सिल्वा रखा और काले जादुई शक्ति की स्वामिनी को वैज्ञानिक भी बना दिया किन्तु सिल्वा ने अपनी मूल संस्कृति नहीं छोड़ी।

शुभदा के आते ही मादाम अपने आसन से, जिसमें मानव हड्डियाँ लगी थीं, उठकर खड़ी हो गई। वह बोली—

"डॉक्टर शुभदा, कृपया यहाँ तशरीफ लाएँ।"

काँपते पैरों से शुभदा डॉयस पर पहुँची। सिल्वा ने उसे तेज नजरों से देखा फिर हॉल में उपस्थित वैज्ञानिकों, सहायकों को सम्बोधित किया।

"यह डॉक्टर शुभदा है। एक अच्छी वैज्ञानिक थी। आज इसने हमसे, होलीफादर सूपा से विद्रोह कर दिया।"

शुभदा अन्दर तक काँप गई। जो सन्देह था, सत्य सिद्ध हुआ। मादाम कह रही थी।

"शुभदा हमसे, हमारे मिशन से मुक्त होना चाहती थी। इसने अपने सी. बी. आई. के अधिकारी प्रेमी को हमारे प्रयोगशाला के रहस्य बता दिए हैं। बेचारा वह अधिकारी ? इसके आने के बाद एक साँस भी नहीं ले सका। इसके कुँवारे शरीर की मुलायमता और यौन संसर्ग की इच्छा लिए यमलोक में पहुँच गया। मुझे उस पर सहानुभूति है।

"तुमने.....तुमने उसे मार दिया राक्षसी।" शुभदा चीख उठी।

मादाम ने उसकी चीख-चिल्लाहट और क्रोध पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह आगे बढ़ी और शुभदा का स्कर्ट फाड़ दिया। शुभदा की गौर वर्णी सुचिक्कन जंघाएँ अनावृत हो गईं। शुभदा उस पर झपटी किन्तु सिल्वा ने उसे किसी खिलौने की तरह उठा लिया।

विवश पंछी के समान शुभदा तड़पी। कुछ ही क्षणों में मादाम ने उसके बदन के सभी कपड़े फाड़ दिए और उसे छोड़ दिया। शुभदा अपनी नग्नता को छिपाती, रोती डॉयस पर इधर-उधर दौड़ने लगी। डॉयस से नीचे भी वह उतरी किन्तु डॉयस के चारों ओर खड़े वलिष्ठ पुरुषों में से एक ने उसे उठाकर पुनः डॉयस पर फैंक दिया। शुभदा के पैर की हड्डी टूट गई। वह डॉयस के फर्श पर बिना जल के मरती हुई मछली के समान तड़फने लगी, बिलबिलाकर रोने लगी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मादाम की साँसें तेज होती गईं। सुन्दर चेहरे पर विकृति आती गई। अचानक उसने शुभदा पर छलांग लगा दी। वह उसकी जंघाओं पर बैठकर झुकी और समुन्नत स्तनाग्र पर अपना मुख लगा दिया।

असहनीय पीड़ा से शुभदा की चीखें तेज होने लगीं। सिल्वा उसके स्तन मार्ग से खून पीने लगी। एक-के बाद दूसरे स्तर को उसने अपने तीक्ष्ण दाँतों से काटा। शुभदा के स्तनों से रक्त के फब्बारे छूट पड़े जिन्हें आनन्द से मादाम चाटने लगी। उसका सारा मुख खून से भर गया।

अचानक उसने अपने दांतों से उभरे हुए स्तन का अगला भाग काट लिया। निपिल सहित ढेर सारा माँस का टुकड़ा उसके मुख में आ गया। वह कचर-कचर कर माँस को चबाने लगी। मादाम के ओठों के किनारों से खून-माँस बहने-टपकने लगा। एक के बाद एक, उस उन्मत्ता राक्षसी ने कुछ ही देर में शुभदा के स्तनों का पूरा माँस खा लिया। शुभदा अचेत हो गई थी। इसके बाद भी उसने शुभदा को नहीं छोड़ा। एक तेज चाकू से उसका पेट फाड़ दिया फिर वक्षस्थल के नीचे से धकधक स्पंदित करता लालिमा से युक्त शुभदा के हृदय को निकाला और उसे चबाती अपनी कुर्सी पर बैठ गई।

"ये अंजाम है होलीफादर से विद्रोह करने का। आप सब को यह नसीहत के रूप में याद रहे, इसलिए आपको यहाँ बुलाया गया था। अब आप सब जा सकते हैं।" कहते-कहते मादाम सिल्वा का काला नग्नप्रायः शरीर वातावरण में घुलने लगा। कुछ क्षणों में ही वहाँ से मादाम और सहायक नरकंकाल अदृश्य हो गए थे।

उस घटना के पश्चात् प्रत्येक वैज्ञानिक पर मादाम सिल्वा का महा-आतंक स्थापित हो गया। इस घटना को दो वर्ष से अधिक बीत चुके थे। तब से वर्तमान तक किसी ने होलीफादर सूपा और उसके मिशन के प्रति विद्रोह की कल्पना तक नहीं की थी।

इसके अतिरिक्त इस प्रकार की अनेक, दरिन्दगी से भरे, मादाम सिल्वा के कुकृत्य स्मरण आए। पता नहीं क्यों उसके मन में पहली बार सिल्वा के प्रति घृणा का बीजारोपण हो रहा था। उसे लग रहा था कि होलीफादर सूपा भी इस पैशाचिकता में सम्मिलित हैं। क्या प्रयोगशाला में सम्पन्न हो रही वैज्ञानिक खोजें और संधान पूरी तरह मानव हित में हैं ? सूर्या सोचने लगा। 'शायद नहीं' उसके मन ने कहा।

अचानक स्क्रीन रोशन हुआ, साथ ही सूपा के आगमन के पहले की ध्वनि बजी। सूर्या की चिंतन शृंखला खण्डित हो उठी। उसने चौंक कर स्क्रीन की ओर देखा। सूपा की मुस्कराती तस्वीर सामने थी।

"क्या बात है मेरे बेटे ? आज मैं तेरे चेहरे पर विचित्र चिंतन देख रहा हूँ


Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साथ ही तेरे विचारों से निर्मित तस्वीर भी मेरी दृष्टि में आ रही है। इस समय उस तस्वीर पर मादाम सिल्वा दिखाई दे रही है। क्या उसके पुष्टांगों पर दिल आ गया है ?"

"नहीं फादर......। वश खाली था, वैसे ही कुछ घटनाएँ स्मृति में आ गईं, जिनके मूल में मादाम थी।" सूर्या ने झेंप कर कहा। वह जानता था कि सूपा अपनी वैज्ञानिक शक्ति से किसी के भी विचारों को चित्ररूप में, उसके अपने स्क्रीन पर देखा करता है।

"मैं तुझे वास्तविक प्यार करता हूँ बेटे। तेरी अपेक्षा या मेरे प्रति अशुभ चिंतन मुझे पीड़ित करता है। तेरा प्यार मेरी एकमेव कमजोरी है, इसलिए तू भविष्य में इस प्रकार का चिंतन मत करना जिससे मुझे कष्ट हो।" सूपा का स्वर भाव से भरा था।

सूर्या को लगा जैसे वह सचमुच सूपा के प्रति बुरे विचार, विचार कर उसके प्रति अन्याय कर रहा है। वह भावुक हो उठा—

"नहीं फादर भविष्य में ऐसा नहीं होगा। कृपया मुझे क्षमा करें।"

"मैं चार दिन से अपनी नई सृष्टि की व्यवस्थाओं में व्यस्त था। कुम्भक ऋषि कुम्भ से, महाभारत के आचार्य प्रवर द्रोण, दोने से, ज्ञागसेनी पञ्च पति प्रिया, कृष्णा या द्रौपदी अग्निकुण्ड से उत्पन्न हुई थी। अब मैं नए प्रयोग भी इसी आधार पर करना चाहता हूँ। इस हेतु मैंने फार्मूले के प्रथम चरण को तैयार कर लिया है। मैं आज ही सामूहिक रूप से हमारे दस टॉपमोस्ट वैज्ञानिकों को यह प्रयोगात्मक फार्मूला दे रहा हूँ। आज का तेरा काम होगा......।"

सूपा सूर्या को उसका आज का करणीय कार्य बता रहा था। सूर्या ध्यानपूर्वक सुनता रहा। उसने सूपा द्वारा बताया गया पता नोट किया—"167 बी. 100·1 साउथ एक्सटेंशन।" सूपा की आकृति लुप्त हो गई। सूर्या ने घड़ी देखी रात के दस बजे थे। वह उठा और झटपट तैयार होने लगा। उसने एक फुट लम्बा, एक फुट चौड़ा चमकता हुआ रूमाल निकाला। यह रूमाल भी सूंपा के द्वारा बनाया गया था। तांत्रिक पद्धति और विज्ञान पद्धति से निर्मित इस रूमाल की विशेषता थी कि अगर सूर्या इससे अपना सिर ढक ले तो वह जनसामान्य की दृष्टि से अदृश्य हो जाएगा।

(तंत्र में एक यक्षिणी सिद्धि का प्रयोग मिलता है, जिसके सिद्ध होने पर यक्षिणी साधक को ऐसी चादर देती है, जिसे ओढ़ लेने पर साधक अदृश्य हो जाता है)

—लेखक

यह रूमाल सिर्फ सूर्या पर ही असरकारी था, क्योंकि जो तत्व और उनकी विशेषता सूर्या में थी, उन्हीं तत्वों पर यक्षिणीदत्त ऐसी वस्तु प्रभाव डालती थी। सूर्या को पता था, उसे आज कहाँ जाना है ? और किस काम से जाना है ?



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टाइटजीन्स पर ओवर कोट और सिर पर फेल्ट हेट लगाकर अपने सभी साधनों से सम्पन्न होकर सूर्या अपनी कार की ओर बढ़ा। ड्रायवर तैयार खड़ा था, सूर्या को समीप आता देख वह लपक कर कार की ओर बढ़ा। लेकिन सूर्या ने उसके साथ चलने को इंकार करते हुए, उससे चाबी ले ली। ड्रायवर ने फुर्ती से कार का गेट खोला और सूर्या कार की ड्रायविंग सीट पर जा बैठा।

"यात्रा शुभ हो मिस्टर सूर्या।" सूर्या के समीप दूसरी ओर बराबर से गंभीर आवाज उभरी। सूर्या ने पहचाना, कुछ चौंका भी, यह मादाम सिल्वा की आवाज थी। वह चौंका इसलिए कि उसके इस कार्य में साथ रहने का अर्थ है क्रूर हिंसा का नग्न ताण्डव।

"मैं आपको प्रणाम करता हूँ मास्टर सूर्या।" यह थी, उस नर कंकाल की फटी-फटी आवाज जो पिछली सीट से आई थी।

"प्रणाम मिस्टर विलि। आपको भी प्रणाम मादाम सिल्वा।" सूर्या ने मुस्करा कर कहा। मादाम ने मधुर स्वर में 'थैंक्यू' कहा। सूर्या ने कार स्टार्ट की।

कार ने स्पीड पकड़ी। शहर की सीमा पार हुई। शहर पीछे छूटने लगा। शहर से लगभग 25 कि. मी. दूर एक सुरम्य घाटी थी। यह घाटी हिल स्टेशन के समान आकर्षण रखती थी। शहर के धनकुबेरों ने यहाँ फार्म्स खरीद कर अपने-अपने शानदार भवन बना रखे थे। कुल मिलाकर पच्चीस-तीस मकान थे। सारे मकान एक दूसरे से दूर-दूर बने थे। ऐसे ही पहाड़ी उपत्यका में बना था, एक छोटा पर अत्याधुनिक संसाधनों से युक्त एक भवन। यह भवन सेठ जौहरीमल का था। इस समय जौहरीमल की पत्नि प्रमदा देवी वहाँ थी, और उसके साथ थी, वैज्ञानिक श्रीमती ऐलिस थॉमस।

प्रमदा और ऐलिस यहाँ लगभग आठ बजे से थीं। सेठ जौहरीमल को भी यहाँ रात 11 बजे पहुंचना था। प्रमदा ने अपने पति की चेतावनी को भुलाकर श्रीमती ऐलिस को सेठ की कामक्षमताओं के विषय में झूम-झूम कर प्रसन्न होते हुए बताया। ऐलिस और प्रमदा समवयी थीं। सीत्कारियाँ लेते हुए प्रमदा ने जिस ढंग से सेठ के सेक्स पॉवर का बखान किया, उससे एलिस की भावनाएँ भी आन्दोलित हो उठीं। इसी दौरान प्रमदा ने 'नयी सृष्टि' के विषय में भी सविस्तार वर्णन किया। ऐलिस उसकी सहेली थी, उससे वह छिपा नहीं सकी। जीवन विज्ञान से सम्बन्धित ऐलिस की मौलिक चिन्तनशैली और संधान से सम्बन्धित उसके लेखों ने, पुस्तकों ने ऐलिस को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्रदान की थी।

"अच्छा बता प्रमदा, सेठ जी के 'उस अंग' में अथवा उसकी बनावट में आकार में भी कुछ अंतर है, अथवा सामान्य पुरुष के समान ही है।"

"क्या बताऊं ऐलिस, मैं तो रति के मद में इतना चूर और आनंदित हो गई थी



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि कुछ जान न सकी, लेकिन मुझे याद आता है, उसमें कहीं-कुछ परिवर्तन जरूर है।" प्रमदा मिथुन क्षणों का स्मरण करते हुए बोली—

"याद कर प्रमदा........याद कर.....।" कहते-कहते स्वयं ऐलिस का चेहरा, लाल हो गया, दिल की धड़कनें बढ़ गईं।

प्रमदा से उसका मनोभाव छिपा नहीं रह सका। प्रमदा हँस उठी, हँसते-हँसते उसने ऐलिस के रसयुक्त अधरों को चूम लिया और उसके कटि प्रान्त के नीचे हाथ रखती हुई, प्रगल्भता से बोली—

"ऐसा लगता है, तेरी काया में भी हलचल मच रही है। अरी पगली, तू सच मान, तूने आज तक ऐसा 'पुरुष सुख' नही भोगा होगा, जिसे भोग कर मैं हवा में उड़ी जा रही हूँ। बोल अगर तू तैयार हो तो...........तो तेरे मनोरम देह की कामगंगा में मैं सेठ को नहलवा सकती हूँ।"

"यह......यह कैसे हो सकता है ?" तेज धड़कते दिल पर काबू रखने का प्रयास करती हुई ऐलिस के गले से फंसी-फंसी सी आवाज निकली ।

"अरी रहने दे। औरत में जब सेक्स जागता है तो उसका सारा सतीत्व और संकोच, समाज का डर, सभी कुछ खत्म हो जाता है।"

"हां, यह तो है, मैं तो सिर्फ एक बार 'उस अंग' की बनावट का अध्ययन करना चाहती हूँ।" ऐलिस ने मद्धिम स्वर में कहा।

"क्या तू बिना 'सेक्स' के उसका अध्ययन कर सकती है ?"

"नहीं।" ऐलिस की नजरें झुकीं।

"तो फिर तैयार हो जा। मुझसे पहले तेरा नम्बर।" प्रमदा ने गोप्यांगों को छेड़ते हुए कहा।

"नहीं, पहले तू....।" ऐलिस ने कुछ घबरा कर कहा।

चल मैं ही सही, पर तू तैयार तो हो जा।" प्रमदा पुनः हँस उठी।. ऐलिस बाथरूम की ओर चली गई।

ऐलिस ने स्नान कर स्वयं को सजाया ही था कि बाहर कार रुकने की आवाज आई। ले, ऐलिस वे आ गए।" कहते हुए प्रमदा बाहर की ओर दौड़ी लेकिन ऐलिस के पैर आगे नहीं बढ़े। उसे रह-रह कर कुछ घबराहट हो रही थी। सारे शरीर में इस तेज सर्दी में भी ऊष्मा थी।

सेठ अन्दर आ गया। सेठ की बाहों में लता के समान लिपटी प्रमदा भी थी। अचानक सेठ की नजर घबराई हुई खड़ी ऐलिस पर पड़ी। उसने प्रमदा को स्वयं से पृथक करने का प्रयास करते हुए सम्मान से कहा।

"नमस्कार मैडम। आप और यहाँ ? वह भी इस समय ? आदेश दें, मैं आपके



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किस काम में आ सकता हूँ। जीवविज्ञान शोध संस्थान के लिए कुछ आर्थिक सहायता चाहें तो..........तो आदेश करें।"

"इन्हें, ऐसी कोई सहायता की आवश्यकता नहीं है। ये आपके उस काम में जो ऋषिवर ने आपको सौंपा है, बहुत मददगार सिद्ध होंगी।" इसलिए मैंने ही इन्हें यहाँ आमंत्रित किया है।" प्रमदा ने चहकते हुए बताया।

"ओह ! तो तुमने सारी बातें इन पर प्रकट कर दीं।" सेठ जौहरीमल ने बेचैनी से कहा—

"नहीं......।" प्रमदा हल्के से मुस्कराई और ऐलिस की ओर आंख दबा दी।

"लेकिन इसके लिए तुम्हें ऐलिस को अपनी 'शक्ति' दिखानी होगी। तभी तो यह आपका काम कर सकेगी।" प्रमदा ने सेठ जौहरीमल के पेन्ट की चैन खींचते हुए कहा।

"मैडम क्या आप प्रसन्नता से 'मेरा साहचर्य' स्वीकार करती हैं।" सेठ ने ऐलिस की ओर देखा।

"जी।" ऐलिस के अधर कांप उठे। उसने भू-स्पर्शी दृष्टि किए-किए ही संक्षिप्त उत्तर दिया—किन्तु इसके पूर्व मैं आपको प्रमदा के साथ क्रियाशील होता हुआ देखना चाहती हूँ।" ऐलिस का कण्ठ बोलते हुए अवरुद्ध सा हुआ।

"हाँ.......हाँ......क्यों नहीं। आइए न बैडरूम में।" कहते हुए सेठ ने प्रमदा की यौवन रस से उमगती काया को गोद में उठाते हुए कहा। तब तक प्रमदा ने सेठ के शरीर से उसका पेन्ट पृथक कर दिया था।

ऐलिस डगमगाते कदमों से चलती हुई बैडरूम में पहुंची। सेठ और प्रमदा ने अपना कार्य प्रारंभ कर दिया। प्रमदा किसी वेश्या से भी अधिक बेशर्मी से कामचेष्टाएँ कर रही थी। उसकी कामुकता भरी क्रियाओं से ऐलिस के सर्वांग में अदृश्य अनंगदेव का वैभव उमड़ने लगा, इसके बावजूद भी उसे अपना लक्ष्य याद था।

ऐलिस अनावृत देही सेक्स क्रिया में रत जोड़े के अति समीप पहुंच गई। उसकी संधानात्मक दृष्टि सेठ जौहरी के पुरुषांग पर केन्द्रित थी। ऐलिस ने अस्पर्श दृष्टि परीक्षण के प्रथम दृष्टयः पाया, जैसे सेठ का पुरुषांग आम पुरुषांग से पूरी तरह भिन्न था। उसका आकार-प्रकार भी पृथक था।

"क्या यह अंग देह में पृथक से जोड़ा गया है ?" अनायास ही ऐलिस के मस्तिष्क में आया। 'संभवतः ऐसा ही कुछ है।' उसने मन ही मन विचार किया।

अकस्मात् ऐलिस चौंकी। सेठ के उस असूर्यम्पश्य अंग का क्षण प्रतिक्षण स्वरूप बदलता जा रहा था। उसकी दीर्घता में भी वर्द्धन हो रहा था। कुछ क्षणों में ही वह अंग कांच के समान चमकने लगा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समय गुजरता गया। प्रमदा पर ऐलिस को आश्चर्य हो रहा था। इस आयु में इतनी सेक्सी औरत ? ऐलिस चकित थी, लगभग एक घन्टा व्यतीत हो गया। प्रमदा सेठ के वक्ष पर पड़ी हांफ रही थी। उसका सारा शरीर पसीने से नहा गया था।

अन्ततः ऐलिस को सेठ ने आलिंगत किया। प्रथम बार ऐलिस ने सेठ के अंग का हाथ से स्पर्श किया तो उसमें सामान्य से अधिक कठोरता थी साथ ही, उस अंग में विचित्र सी ठण्डक भी थी। ऐलिस को पूरी तरह विश्वास हो गया कि यह अंग पृथक से जोड़ा गया है। किन्तु गजब का ऑपरेशन है यह ?

शनैः-शनै ऐलिस के शरीर में आश्चर्यजनक रूप से काम का उत्ताप बढ़ता गया। ऐसा उत्ताप उसने अपने जीवन में प्रथम बार अनुभव किया था। इसके साथ ही उसने यह भी जाना कि सेठ के पुरुषांग के मूल से एवं आसपास से एक चिकने एक गुलाबी रंग के पदार्थ का रिसाव हो रहा है। ठीक वैसे ही जैसे शरीर के लोमरन्ध्रों से पसीना निकला करता है।

ऐलिस तुरन्त परिणाम पर पहुंची कि यह अंजान पदार्थ के कारण ही प्रमदा और उसमें प्रबल सेक्स की बढ़ोत्तरी हो रही थी। इससे अधिक ऐलिस कुछ अधिक सोच भी नहीं सकी, क्योंकि अब उसकी चेतना, मन काम की प्रशान्ति पर केन्द्रित हो गया।

प्रमदा उस समय भी अनावृत देह थी और निरन्तर ऐलिस को प्रेरित कर रही थी। पर्याप्त समय हो चुका था, ऐलिस ने चरम शिखर का स्पर्श कर लिया था पर वह सेठ के ऊपर से हटी नहीं थी।

अकस्मात सेठ जौहरी के वातानुकूलित कमरे का दरवाजा तेज शोर करता एक ओर जा गिरा। कमरे में उपस्थित तीनों (सेठ, प्रमदा, ऐलिस) कुछ समझ नहीं सके कि क्या हुआ ? प्रमदा ने द्वार पर जो कुछ देखा वह भयभीत होकर चीखी। नर कंकाल के कन्धे पर एक श्यामवर्णी स्त्री बैठी हुई थी। उसके पैर लटकते हुए कंकाल के सीने पर रखे थे। श्यामा ने अपने शरीर पर काला लबादा ओढ़ रखा था।

कमरे में प्रवेश करते ही श्यामा ने अपना लबादा उतार फेंका। अब वह अपने वास्तविक वेश परिधान में थी। उसकी कमर पर मेखला के स्थान पर मनुष्य के हाथों की हड्ड्याँ लटकी हुई थीं, शेष शरीर नग्न था। यह मादाम सिल्वा थी। सिल्वा का कण्ठ खुला, गगनघोषी हुंकार से कमरे की छत व दीवारें झनझना उठीं। सिल्वा की आंखों से अंगारे निकल उठे।

"मूर्ख सेठ, तेरी बीबी ने इस औरत को, जो तेरी अंकशायिनी बनी हुई है,



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सारे रहस्य प्रकट कर दिए।" कहते हुए सिल्वा ने किसी भारहीन गुड़िया की तरह सेठ के ऊपर से उठा लिया।

अत्यधिक भय से ऐलिस का कण्ठ रुंध गया। सिल्वा ने ऐलिस को ऊपर से ही पृथ्वी पर पटक दिया और उसके ऊपर बैठ गई। डॉ० शुभदा के समान ही उसने ऐलिस से भी अमानवीय व्यवहार किया। सर्वप्रथम उसने अपनी लम्बी अंगुलियों की सहायता से ऐलिस की दोनों आंखें निकाल लीं और अपने मुँह में रख कर मजे से चबाने लगी। फिर सिल्वा ने उसके दोनों स्तन काटे, उनसे रक्त पान किया। फिर तेज चाकू से दोनों स्तनों के तुंग उभारों को पूरी तरह छील दिया। स्तनों का माँस भी सिल्वा ने चाव से खाया। तब तक ऐलिस का देहान्त हो चुका था। सिल्वा ने जब चाक करके ऐलिस का हृदय निकाला, तब तक ऐलिस पूर्णरूपेण मृत्यु को प्राप्त हो गई थी। सेठ खामोशी से देखता रहा। उसके मुख पर न अप्रिय भाव थे और ना ही प्रिय। वह तटस्थ वृत्ति से देखता रहा।

प्रमदा आंखें फाड़े देखती रह गई। ऐलिस का काम तमाम कर सिल्वा प्रमदा की ओर बढ़ी। ऐलिस के खून से उसका मुख रंग गया था जो टपक-टपक कर सिल्वा के सुपुष्ट स्तन, उदर आदि तक फैला हुआ था।

अपनी ओर बढ़ते हुए देख प्रमदा की चेतना जैसे जागी। उसने चीखना चाहा, पर जैसे आवाज उसके कण्ठ में थी ही नहीं। इसके पूर्व कि सिल्वा प्रमदा को पकड़ कर उसे भी चट करे, अकस्मात ही द्वार पर एक नारी कण्ठ का हुंकार घोष हुआ। सूर्या द्वार के पास ही खड़ा था। उसे लगा जैसे उसके कदमों के नीचे धरती कांप उठी हो।

उसके सामने द्वार पर नितम्ब प्रसारित सघन श्यामल, मुक्त केशराशि को फैलाए खड़ी थी। उसके एक हाथ में जलता हुआ खप्पर था और दूसरे हाथ में काले रंग की रस्सी थी। अनायास ही सूर्या के मुख से निकल उठा—

"संभूति ई....ई....।"

लेकिन आगन्तुका ने सूर्या की ओर देखा तक नहीं, वह सूर्या के शरीर से रगड़ खाती कमरे में प्रवेश कर गई। उसके पूर्व कि सिल्वा प्रमदा को पकड़ पाती, खप्पर धारिणी ने अपने हाथ में पकड़ी रस्सी फेंकी। जैसे नाग क्रुद्ध होकर लपका हो, वैसे ही क्षण भर में सिल्वा का रक्तरंजित शरीर पर रस्सी लिपट गई। खप्परी ने उसे झटके से खींचा, सिल्वा खिंचती हुई उसके पैरों में आ गिरी।

सिल्वा को विवश देखकर नरकंकाल खप्परधारिणी की ओर वेग से दौड़ा। उसने हुंकारते हुए अपना ज्वलित खप्पर आगे किया। खप्पर की विकराल ज्वाला ऊंची उठी और यू आकार में मुड़ कर कंकाल की ओर लपकी। कंकाल भागा और द्वार से निकल गया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्या की दृष्टि में प्रशंसा के भाव आए। सिल्वा फर्श पर पड़ी तड़फ रही थी। खप्परधारिणी नागिन की तरह फुंकारती हुई बोली–

"याद रख मुझे.....मेरा नाम वैरोचनी है। वैरोचनी भैरवी हूँ मैं। मुझमें नित्य श्मशान धधकते हैं, सैकड़ों मुर्दे जलते हैं। मैं उन मुर्दों की भस्म में स्नान करती हूँ, मुर्दों में ही रहती हूँ। आज मैं तेरी पैशाचिक लीला सदैव के लिए मेरे इस खप्पर में धधक रहे श्मशान में जला कर राख कर दूंगी, भस्म करूंगी तुझे, फिर तेरी राख से स्नान करूंगी।" भैरवी वैरोचनी ने दांत किटकिटा कर कहा।

"वैरोचनी.......। तू क्या समझती है, तेरा टोटका मुझे विवश कर देगा। ले देख।" कहते हुए सिल्वा ने एक क्षण को आंखें बन्द कीं।

अचानक सिल्वा के शरीर का आकार बढ़ने लगा। कुछ ही देर में उसका शरीर उसके मूल शरीर से दोगुना हो गया। जैसे-जैसे सिल्वा का शरीर फूलता जाता था, वैरोचनी की रस्सी भी रबर या इलास्टिक के समान बढ़ती जा रही थी। सिल्वा के तमतमाए श्याममुख पर आश्चर्य के चिन्ह उभरे। भैरवी हँस उठी।

भैरवी के हास्य से सिल्वा और अधिक क्रोधित हो गई। उसने अपनी 'शक्ति' का आहवान किया। सिल्वा का श्यामल शरीर ऊष्मा होने लगा। धीरे-धीरे गर्मी बढ़ती गई। देखते ही देखते उसका शरीर अग्निपिण्ड के समान धधकने लगा। भैरवी की काली रस्सी धुंआ छोड़ते हुए जल उठी।

"इस समय तो मैं जा रही हूँ भैरवी, पर शीघ्र ही तुझे इस अपराध का दण्ड दूंगी।"-कहते-कहते सिल्वा का शरीर वायु में घुलने-मिलने लगा।

"सूर्या बाहर चल कर गाड़ी स्टार्ट करो।" सूर्या के कानों में अदृश्य सिल्वा का स्वर गूंजा। सूर्या कुछ क्षण और यहाँ रहना चाहता था पर उसने अपना निर्णय बदल दिया। वह बिना कुछ बोले कार की ओर बाहर चल दिया।

सूर्या कार का गेट खोलकर बैठना ही चाहता था कि लाल साड़ी में जगमग करता, मय खप्पर के वैरोचनी का रूप सौन्दर्य प्रकट हुआ।

"आज मैं तुझे छोड़ रही हूँ पिशाचिनी। इसे तू अपनी विजय मत मानना, यह मेरी कृपा है।" वैरोचनी ने तीखे स्वर में कहा। फिर वह सूर्या की ओर उन्मुख हुई बोली–

"कालपुरुष है तू बिल्कुल मेरे जैसा किन्तु तू अराजक वादियों की कठपुतली बन गया है। ऐसा क्यों ? छोड़ दे इन राक्षसों का संग और आ मेरे मृदुल क्रोड़ में। मैं तुझे वह सब कुछ दूंगी, जिससे तेरा जीवन स्वर्ग हो जाएगा।" वैरोचनी ने कटाक्ष पूर्वक देखते हुए सूर्या के अधरों को चूम लिया और दोबारा बोली–

"जा, मेरी यह मिष्ठता हमेशा तुझे याद रहेगी।" वैरोचनी मुड़ी और वापस सेठ के आवास में चली गई।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्या हतप्रभ ! चकित ! उसके शरीर के अणु-अणु आन्दोलित हो उठे। सचमुच वैरोचनी के अधरोष्ठों के चुम्बन की गर्मी अभी भी उसके ओठों पर थी, लग रहा था, जैसे रस से भरे वैरोचनी के आरक्त अधर अभी भी उसके ओठों पर चिपके हुए हैं किन्तु उस चुम्बन में मादकता नहीं पवित्रता थी, ममत्व था।

"चलो सूर्या।" सिल्वा की डूबती सी आवाज उभरी। उसका स्वर सुनकर सूर्या जैसे मायालोक से बाहर आया। उसने कार स्टार्ट की उसे मोड़ा और शहर की ओर चल दिया। कार में पिछली सीट पर विलि (नरकंकाल) बैठा था।

❑❑

अर्द्धरात्रि के बारह बजने वाले थे। संभूति अपने पति पीयूष की प्रतीक्षा करते हुए पलंग पर लेटी-लेटी एक पुस्तक पढ़ने लगी। उसका मन अमर्षभाव से भरा था। बार-बार उसका गुस्सा पीयूष पर बरसने को आतुर था, पर पीयूष ! हमेशा की तरह आज भी गायब था। प्रति रात पीयूष कहां जाता है ? संभूति के तलाश करने के बाद भी उसे ज्ञात नहीं हुआ था।

उसने गुपचुप पीयूष के दोस्तों से भी पता किया किन्तु हरेक ने एक ही बात कही—इन दिनों पीयूष दोस्तों की महफिल से दूर रहता है, वह कहां ? किसके साथ जाता है ? कुछ पता नहीं। संभूति की स्वाभाविक सोच हुई।

'क्या पीयूष का सम्बन्ध किसी स्त्री से हो गया ? और क्या वहीं अपनी रातें उसके साथ व्यतीत करता है ? किन्तु संभूति का निष्पाप हृदय इसे मानने को तैयार नहीं हुआ। यह भी सच था कि पीयूष जब से पुनर्जीवित हुआ है, तबसे उसने संभूति को शयनसुख भी नहीं दिया था। जबकि उसी समय से संभूति स्वयं में अनियंत्रित से कामजाग्रति के उद्दाम भाव का गहन अनुभव कर रही थी।

दिन तो जैसे-तैसे संभूति का कट जाता पर, रात्रि आते ही उसके यौवन में काम की तरंगें स्वतः ही पैदा हो जातीं। जितना वह स्वयं पर नियंत्रण का प्रयास करती, प्यास उतनी ही बढ़ती जाती। इसके लिए उसने ध्यान का भी सहारा लिया किन्तु ध्यानकाल में भी वही भाव जागते। नेत्र बन्द करते ही मिथुन जोड़े-विविध काम क्रियाएँ करते दिखाई देते। उसकी समझ में नहीं आ रहा था, कि ऐसा क्यों हो रहा है ? पीयूष इस ओर बहुत उदासीन है, तब फिर वह कहां जाए ? धर्म से पराङ्गमुख होकर किसी पुरुष को अपना शरीर अर्पित नहीं करना चाहती थी वह।

रात्रि में कामातिरेक भाव जागृति के समय उसकी स्मृति पट्टलि पर सूर्या की स्मृतियाँ उभर आतीं। उसकी दृष्टि के सामने सूर्या का नवयौवनी देह नाचने लगता। उसके हृदय की धड़कनें बढ़ जातीं।

पलंग पर लेटे-लेटे ही यकायक संभूति को लगा जैसे उसका यौवनवसित देह



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अत्यन्त हल्का हो गया है। वह स्वतः ही पलंग से सदेह ऊपर उठती जा रही है। एक विचित्र सा आनन्द उसके शरीर की कोषिकाओं में समाता जा रहा है।

वह स्वयं की आनन्दमयी अवस्था का अनुभव कर ही रही थी कि उसकी दृष्टि के संमुख प्रकाश का झमाका सा हुआ। 'अरे, कौन है यह ?' स्वतः ही उसके ओठों से स्वर फूटा।

ठीक उसी के समान रूप-वय और यौवन से समृद्ध। उसने सुर्खलाल साड़ी, वैसा ही पारिधानेय वस्त्र और उसी रंग का तंग लोकट ब्लाउज पहन रखा था, जिसमें से उसका दर्शनीय स्तन वैभव आधे से अधिक दिखाई दे रहा था। उस प्रतिरूपिणी के गले में रुद्राक्ष की माला और ललाट पर सिन्दूर से लगा गोल टीका था। उसके एक हाथ में खप्पर था, जिससे ऊंची-ऊंची अग्निज्वाला उठ रही थी।

"कौन हो तुम ?" संभूति चकित भाव से कहती है।

"जो तू है, वही मैं हूँ। हम दोनों समान हैं, एक ही पदार्थ से निर्मित। आ तू मुझमें समाहित हो जा फिर द्वितीया का भाव ही समाप्त हो जाएगा।" वह अपनी गौर-मृदुल बाँहें आमंत्रण की मुद्रा में पसारती है।

संभूति के शरीर से अणु-अणु बिखर उठते हैं। प्रत्येक अणु में वह स्वयं ही प्रतिबिम्बित होती है। चमकते सभी अणु लाल साड़ी पहने खप्परधारिणी के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। उसका शरीर उठता है और ठोस दीवार को भेदता हुआ तारों भरे आकाश की छाँव में आ जाता है।

वह व्योमपथ मे संचरण करती है। धवल प्रकाश में नहाई इमारतें पीछे छूटती जाती हैं। वह आंतरिक्ष पथ से चलती हुए एक फार्म हाउस के प्रांगण में उतर आती है। उसके हाथ में खप्पर आ जाता है तो दूसरे हाथ में पाश (रस्सी)।

अचानक खप्परी के शरीर से पुनः अणु-अणु निकलते हैं और संभूति का शरीर उससे अलग हो जाता है। यह कौन सा स्थान है ? कहां आ गई वह ? हटात उसकी दृष्टि द्वार पर खड़े सूर्या पर पड़ती है।

"सूर्या इस समय ? क्या यह सूर्या का ही आवास है ? अगर हां तो यह द्वार पर प्रहरी की भांति क्यों खड़ा है ?" संभूति सोचती है। उसकी इच्छा हुई कि वह सूर्या से कुछ बातें करे। इच्छा होते ही संभूति का शरीर उठा और उड़ता हुआ सूर्या के पास आ खड़ा हुआ।

"सूर्या, यह कौन सा स्थान है ? तुम यहाँ पहरेदार की भांति क्यों खड़े हो ?" वह सूर्या से प्रश्न करती है, किन्तु सूर्या उसकी ओर नजर उठा कर भी नहीं देखता।

"सूर्या तुम सुनते क्यों नहीं ?" कुछ तेज स्वर में संभूति उसका स्पर्श करते हुए कहती है किन्तु सूर्या फिर भी उसे नहीं देखता और न ही सुनता।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संभूति को आश्चर्य होता है। अचानक उसकी दृष्टि कमरे में जाती है। "अरे ! यह क्या ?" वह अपनी आंखों पर हाथ रख लेती है। कमरे के पलंग पर नग्न पुरुष के ऊपर नग्नस्त्री आरूढ़ थी। उसी के पास पूर्णतः नग्न हुई एक और युवती भी खड़ी विपरीत रति आसक्त युवती को प्रोत्साहित कर रही थी।

यह दृश्य था, सेठ जौहरीमल और ऐलिस के साहचर्य का। उसके पास नग्न खड़ी युवती प्रमदा थी। (इसके पश्चात् खप्पर धारिणी युवती ने जो कुछ किया वह प्रसंग पाठक पिछले पृष्ठों में पढ़ ही चुके हैं।)

संभूति को प्रथम बार पता चला कि रक्ताम्बरा का नाम वैरोचनी है। उसने वैरोचनी का कारनामा देखा और चकित हुई। उसके पश्चात् जब वैरोचनी ने सूर्या का चुम्बन लिया तो वह रोमांच से भर उठी। पता नहीं क्यों उसका अंग-अंग पुलकित हो उठा।

जब वैरोचनी वापस कमरे की ओर लौटी तो संभूति बुरी तरह चौंकी उसने वैरोचनी के पास अल्पकाल के लिए पीयूष की प्रसन्न छवि देखी। वैरोचनी को उसने कहते भी सुना—

"भगवन आपके आदेशानुसार मैंने अपना अभियान प्रारम्भ कर दिया है।" सुन कर पीयूष की छवि लुप्त हो गई। वह पीयूष ही था अथवा कोई अन्य ? संभूति सोचने लगी।

वैरोचनी जब दोबारा रति कक्ष में आई तब तक सेठ जौहरीमल कपड़े पहन चुका था। जबकि प्रमदा उस समय भी निःसंज्ञेय सी नग्नावस्था में ही खड़ी थी। वैरोचनी ने प्रमदा का स्पर्श किया। उसके स्पर्श से प्रमदा जैसे होश में आई। उसके सामने ऐलिस का क्षत-विक्षत, रक्त रंजित शव पड़ा था। वह अपने दोनों हाथों में अपना मुख छिपा कर फूट-फूट कर रो पड़ी।

"तुम्हारा जीवन संकटमय है। मैं हर समय तुम्हें नहीं बचा सकती। आओ मेरे पास, मैं तुम्हें एक ऐसे सुरक्षित स्थान का पता बता देती हूँ, जहां तुम्हारा शत्रु कभी कोई आक्रमण नहीं कर सकता। यद्यपि तुम 'इस पुरुष' के संसर्ग होकर इतनी कामुक हो गई हो कि एक नहीं अनेक पुरुषों से निरन्तर रतिकर्म कराओ, तब भी तुम्हारे अंगों में जल रही विकराल काम ज्वालाएँ शान्त नहीं होंगी। इसके लिए तुम्हें स्वयं पर नियंत्रण रखना होगा, प्राणों को ऊर्ध्व बनाना होगा, योग साधना होगा।" कहते हुए वैरोचनी उसे एक ओर ले गई। वैरोचनी ने उसे किसी स्थान का नाम पता बताया।

"लेकिन मेरे पति ? उनका क्या होगा। ?" प्रमदा ने प्रश्न किया।

"मूर्ख, वह तेरा पति नहीं है। तेरा पति तो अब शेष नहीं रहा, जिसे तू अपना पति मान रही है, वह तेरा नहीं। अगर तू अपना जीवन चाहती है तो मैंने कहा, उस



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थान के लिए अभी इसी क्षण के लिए चल दे। मेरे जाने के बाद, जब तुझ पर आक्रमण होगा तो तू भी तेरी सहेली की तरह इसी हालत को प्राप्त हो जाएगी।"

मृत्यु का भय किसे नहीं होता ? प्रमदा ने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने अपनी पत्नी को जाता देख सेठ तुरन्त बोला—

"तुम कहां जा रही हो प्रमदा ?"

वैरोचनी ने सेठ जौहरी को जलते हुए नेत्रों से देखा और 'तड़ाक' से एक थप्पड़ उसके गाल पर जड़ दिया फिर गुर्रा कर बोली—

"हरामजादे, अपनी औकात में रह। अब तूने दोबारा किसी औरत के स्मर भवन को अपना शिकार बनाया तो इस बार मैं तेरा सिर कलम करूंगी। और याद रख फिर तेरा सिर किसी कन्धे पर कभी नहीं दिखाई देगा।"

वैरोचनी ने प्रमदा का कांपता हाथ पकड़ा और बाहर निकाल ले गई। सेठ की कार बाहर खड़ी थी। प्रमदा को उसी के निर्दिष्ट पते पर पहुंचना था। वैरोचनी ने अपने ज्वलित खप्पर में हाथ डाला, स्वर्ण धातु का चमकता हुआ कवच उसने निकाला और प्रमदा को दिया—

"यह सिद्ध कवच है, तेरी सुरक्षा में सहयोग करेगा। इसे कटि में बाँध लेना।" प्रमदा कवच लेने में डर रही थी, क्योंकि कवच तप कर पूरी तरह गर्म था। उसे डरते देख वैरोचनी ने प्रमदा के स्तनों के मध्य घाटी में बलात रख दिया। प्रमदा को लगा जैसे किसी ने वहाँ बर्फ का टुकड़ा डाल दिया हो। वह ड्रायविंग सीट पर बैठी और कार स्टार्ट कर चल पड़ी।

उसके जाते ही सेठ जौहरी बाहर आकर वैरोचनी से बोला—

"यह अच्छा हुआ कि प्रमदा चली गई। अब मैं तुम्हें सेक्स की दुनियाँ में ले चलूंगा। एक ऐसी दुनिया, जिसके लिए संसार की हर औरत तरसती है।"

"जरूर........जरूर.........सेठ.......लेकिन इस समय मेरी कोई इच्छा नहीं है। जब मुझे तेरी जरूरत होगी, मैं खुद आ जाऊंगी।" मन्दस्मित से सव्यंग कहते हुए वैरोचनी ने अपनी बाँहें पसारीं। "आओ......आओ........मेरा अपना तत्व, मेरा अपना सर्वांग। आओ......आओ.......।" इस बार फिर संभूति कणों में विशीर्ण हुई और वैरोचनी में समा गई। वैरोचनी अपने खप्पर सहित ऊपर आंतरिक्ष में उछली और आकाश में संतार करती हुई पुनः घर की ओर लौटी।

"खट, खट, खट, खट.........।" निरन्तर दरवाजा खट्खटाने से जैसे संभूति की निद्रा भंग हुई हो। उसने स्वयं को अपने पलंग पर पाया। क्या अभी जो उसने देखा वह स्वप्न था ? वैरोचनी, उसका खप्पर, मिथुन रत जोड़ा, एक नग्न युवती का क्षत-विक्षत शव और सूर्या को दिया चुम्बन। अनायास उसके हाथ की अंगुली अपने होठों पर आ गई। वह विचित्र से आनन्द से भर उटं।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"खट, खट.......खट.......।" दरवाजे की खट्खटाहट फिर हुई। वह उठी, लगता है श्रीमान पीयूष पधारे हैं। कहते हुए वह पलंग से उठी और द्वार खोला, देखा पीयूष ही था।

"कितनी देर कर दी। कब से द्वार पीट रहा हूँ।" उसने शिकायत करते हुए, द्वार पर ही संभूति की आंगिक कोमलता को बाँहों में भर उठाया और उसके रक्ताभ कपोलों पर अनेक चुम्बन जड़ दिए।

पता नहीं क्या बात थी। पीयूष का स्पर्श पाते ही वह मोम की तरह पिघलने लगती थी। उसका सारा अमर्षभाव कर्पूर की तरह उड़ जाता था। सारा शरीर आनन्द रस से भीगने लगता था।

"अरे छोड़ो, द्वार खुला है, कोई देखेगा तो क्या कहेगा ?" संभूति ने न चाहते हुए भी उसके बन्धन से निकलने का प्रयास किया। पीयूष ने उसे मुक्त कर स्वयं ही दरवाजे को अन्दर से लॉक किया और लज्जा की अरुणिमा में आरक्त संभूति को बाँहों में लिए-लिए बैडरूम की ओर बढ़ा।

"भोजन नहीं करेंगे।" आनन्द रस में डूबी, पीयूष की गोद में आंखें बन्द करती संभूति धीमे स्वर में बोली।

"भोजन नहीं, आज तुम्हारे अधरामृत का पान करूंगा प्रिये।" पीयूष ने चलते-चलते कहते हुए उसके अधर पल्लवों को चूमा।

"बड़े वेसब्र हो।" आनंदित संभूति अंगों को सिकोड़ती मन्द हास्य से हँस पड़ी। आज उसे लग रहा था, पीयूष की कामनाएँ युवा हो रही हैं, तारुण्यभाव प्रबल हो रहा है। उसके लोम-लोम में हर्ष नाचने लगा, प्रसन्नता से अंग चमकने लगे। उसे भी तो इसी क्षण की प्रतीक्षा थी। नारी सुलभ लज्जा न होती तो वह दिवाकाल में ही पीयूष को सहचर्य के लिए कहती, क्योंकि रात में तो पीयूष प्रातः 4 बजे के पहले आता ही नहीं था। (आज पहला अवसर था कि वह लगभग रात को 1·30 बजे लौट आया था।

दोनों पति-पत्नी कामदेव के रणांगन में पहुँचे ही थे कि विघ्न हुआ। द्वार पर पुनः खट्खटाहट हो रही थी। अभी तो आरम्भ भी नहीं हुआ था कि यह विघ्न ? संभूति क्षोभ से भर उठी।

"इस समय ? कौन आ गया ?" पीयूष चौंक कर बोला। बुझे मन से संभूति ने नाइटी पहनी, अण्डरगारमेन्टस् पहने फिर अमर्षभाव से भर कर भन्नाती हुई द्वार की ओर चल दी। द्वार खोल कर लगभग चीखती हुई बोली–

"कौन है ?"

सामने प्रमदा खड़ी थी। भयमीत और घबराहट से उसका मुख पाण्डुर था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संभूति को चीखते देख वह और भी डर गई किन्तु उसे देख वह चौंकी। आश्चर्य से बोली—

"आप ?........आप इतनी शीघ्र कैसे आ गईं ?"

स्वयं संभूति भी चकित थी, जो उसने अब से कुछ समय पूर्व दृश्य देखे थे उन दो नग्न महिलाओं में से एक प्रमदा भी थी। तो क्या वह जो देखा था सत्य है ?

"मैं अन्दर आ सकती हूँ न ? इधर-उधर देखते प्रमदा ने कहा।

"हाँ.....हाँ, आइए......।" अपने विचारों के नद्य से बाहर निकलती संभूति द्वार के मध्य से हट गई। प्रमदा द्वार से अन्दर आ गई। संभूति ने दरवाजा लगा दिया।

"आपका नाम प्रमदा है न ?" अटकते हुए कुछ शंकित स्वर में संभूति ने प्रश्न किया।

"हां, भगवान का शुक्र है कि आपने मुझे पहचान तो लिया।" प्रमदा ने संतोष की सांस ली। संभूति समझ गई कि जो उसने देखा, वह सत्य ही है।

रात के दो बज चुके थे। प्रमदा को ड्राइंग रूम में बैठा कर संभूति किचिन में गई। उसने चाय बनाई चाय पिलाते हुए प्रमदा से पूछा कि क्या वह भोजन करेंगी ? प्रमदा के न करने पर उसने ड्रांइगरूम में ही उसकी शयन व्यवस्था कर दी। प्रमदा उससे कुछ बातें करना चाहती थी, किन्तु संभूति की चेतना तो अपने 'शयनकक्ष' में लगी थी। वह प्रत्यक्ष में बोली—

"आप विश्राम करें। रात अधिक हो गई है। उधर उस ओर टॉयलेट है। रात में अगर कोई आवश्यकता हो तो मैं अपने पति के पास ही के कमरें में सो रही हूँ।" कहती हुई संभूति वहाँ से अपने शयनकक्ष की ओर चल दी, जहाँ पीयूष उसकी प्रतीक्षा कर रहा होगा।

"गृहस्थी में रह कर भी ऐसी सिद्धि ? इतनी कम आयु में ऐसे साधना ?" प्रमदा बड़बड़ाई।

संभूति अपने शयनकक्ष में पहुँची तो सिर पीट लिया। पीयूष गहरी नींद में सो चुका था। संभूति ने शयनरत पीयूष को अपनी चेष्टाओं से जगाने का बहुत प्रयास किया किन्तु पीयूष तो निद्रा के महोत्संङ्ग में था। पीयूष के वक्ष पर अपना सिर रखे संभूति की आंखों में आँसू आ गए।

अकस्मात् वह चौंकी। उसका मुख ठीक पीयूष के ह्रदय पर रखा था। संभूति को लगा जैसे पीयूष के ह्रदय की धड़कनों में स्पंदन नहीं है। उसने घबरा कर अपना कान पीयूष के दिल पर रखा, सचमुच कोई स्पंदन या ध्वनि नहीं थी। उसने, जल्दी से नाड़ी पर हाथ रख कर नब्ज का स्पंदन भी देखा, लेकिन वहाँ भी शून्यता थी। संभूति बुरी तरह घबरा गई। "हे, भगवान ! यह क्या हुआ ?" अब क्या करे वह ? किसके पास जाए ?



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संभूति को अनुभव हुआ जैसे सारी पृथ्वी घूम रही है। घूमती धरती के साथ ही वह भी उसके महा घूर्मणा चक्र में फंस गई है। उसकी चेतना डूबने लगी और वह निःसंज्ञ होकर पीयूष पर लुढ़क गई।

प्रातः जब उसकी चेतना लौटी तो स्वयं को पीयूष की बाँहों में बंधे पाया। उसे लगा यह स्वप्न है क्योंकि उसके चेतन पर रात्रि की स्मृतियाँ सघन थीं। उसने पीयूष की बाँह पर तेजी से चिकोटी भरी। दर्द से पीयूष हल्के से चीखा।

"क्या करती हो। सुबह-सुबह क्यों नोच-खसोट कर रही हो।"

"क्या यह स्वप्न नहीं है ?" कहते हुए संभूति ने स्वयं की बाँह पर भी चिकोटी काटी।

'सी' की ध्वनि करते हुए वह अपनी बाँह के उस स्थान को मलने लगी, जहां चिकोटी से अभी भी दर्द हो रहा था।

"क्या बात है ?" यह कौन सा व्यापार शुरू कर दिया तुमने ?" पीयूष चकित स्वर में बोला।

संभूति ने उसे रात वाली घटना सुनाई। सुन कर पीयूष हँस उठा—

"ऐसा लगता है अब तुम्हें किसी मनोवैज्ञानिक चिकित्सक को दिखाना ही पड़ेगा। पता नहीं कौन-कौन सी ? कैसी-कैसी ? अनुभूतियाँ होती हैं तुम्हें ! कभी दृश्य दिखाई देते हैं तो कभी कुछ और.......।"

"आप विश्वास तो करें, यह मेरी अनुभूति नहीं है। मैंने सचमुच तुम्हारा परीक्षण किया था। उस समय हृदय का और नाड़ी का स्पंदन पूरी तरह बन्द था। अनुभूति तो मुझे रात में.......।" अचानक संभूति को प्रमदा का स्मरण आया। बेचारी वह अकेली ड्राइंगरूम में बन्द होगी।

"अरे......बाप...रे....। मैं तो बिल्कुल ही भूल गई। नौ बज रहे हैं। बेचारी प्रमदा !" कहते हुए संभूति ड्राइंगरूम की ओर दौड़ी किन्तु ड्राइंगरूम में कोई नहीं था।

अचानक संभूति की नज़र खुले हुए किचिन पर पड़ी। द्वार पर हाथ में चाय की ट्रे लिए प्रमदा को उसने आते देखा।

"आपने क्यों कष्ट किया ? मैं स्वयं ही तो सेवा करती।" संभूति के मुख पर लज्जा आई। प्रमदा मुस्काई। वह नहा चुकी थी, उसके लम्बे घने काले केश अभी भी गीले थे। उस समय उसने संभूति का गाउन पहन रखा था, जिसे धोकर संभूति बाथरूम में रख कर भूल गई थी।

"मैं पराई हूँ क्या ? आप देर रात में सोई थीं, फिर अभी तो नई उम्र है, तुम्हारे सौन्दर्य ने तुम्हें सुबह के पहले सोने ही नहीं दिया होगा। आप दोनों को जागता देख, मैंने सोचा तुम लोगों को बैड टी की आवश्यकता होगी।" प्रमदा ने



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मीठी चुटकी लेते हुए संभूति से कहा। प्रमदा उसे 18-20 की युवती ही समझ रही थी।

संभूति के मुख पर लज्जा का सूर्योदय हुआ। उसने प्रमदा के हाथ से चाय की ट्रे ले ली फिर बोली—

"आओ.......मैं अपने पति से मिलाती हूँ।"

पीयूष से मिल कर प्रमदा प्रसन्न हुई। उसे लगा जैसे उसका छोटा भाई उसके सामने आ गया हो। उसने सस्मित कहा—

"तुम बिल्कुल मेरे छोटे भाई की तरह लगते हो। लेकिन वह बहुत शैतान है। आए दिन शरारतें करता ही रहता है।" अपने भाई की स्मृति में प्रमदा गद्‌गद् हो गई। संभूति ने वक्रदृष्टि से पीयूष को निहारा फिर मुस्करा कर बोली—

"और ये, जनाब भी कम नहीं। पन्द्रह दिन हो गए, रात-रात भर गायब रहते हैं।" संभूति का उलाहना सुन कर पीयूष ने प्रमदा के प्रति आत्मीयता प्रदर्शन करते हुए तत्क्षण अपनी सफाई प्रस्तुत की।

"झूठी, यह झूठ बोलती है दीदी। अरे कभी-कभार दोस्तों के साथ क्या चला गया, रात-रात भर गायब रहने का आरोप ही लग गया।"

प्रमदा 'दीदी' के आत्मीय संबोधन से जैसे अपना सब कुछ भूल गई। उसका हृत्पद्म खिल उठा। संभूति ने कुछ तेज स्वर में कहा—

"मेरा आरोप सच है।"

गलत........सरासर गलत.......।" पीयूष चीख उठा।

"अरे........रे.....तुम तो बच्चों की तरह लड़ने लगे।" मैंने तो अभी अपनी इस छोटी लड़ाकू बहन का नाम भी नहीं जाना।" प्रमदा के हृदय में प्रेम उमड़ा।

"इसका नाम क्या होगा ? संभूति है यह। और मैं पीयूष।" पीयूष बोला।

"चलो अब समझौता करो।" प्रमदा ने ममत्वमय आदेश दिया।

"अरी दीदी.....। तुम भी कहां, इनकी बातों में फँस गईं। ये तो इनका रोज का काम है।" संभूति पीयूष को चिढ़ाती प्रमदा के पीछे भाग कर आ गई, क्योंकि उससे आंखें तरेरते हुए पीयूष को देख लिया था।

"देखो.......समझाओ इसे दीदी...........। अरे.......नौ बज कर तीस मिनट। विद्यालय कब जाऊंगा। ?" पीयूष हड़बड़ाकर बोला ! और बाथरूम की ओर चला गया।

पीयूष के जाने के बाद दोनों कुछ गम्भीर हुईं। संभूति का सोचना था, प्रमदा की सुरक्षा कैसे हो ? जबकि प्रमदा का सोच कुछ अलग था। अचानक प्रमदा ने कहा—



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"एक बात बता संभूति, इस छोटी सी उम्र में तुझे किस प्रकार, कैसे ऐसी सिद्धियाँ हस्तगत हुईं ?"

"जिसे आपने देखा होगा, वह मैं नहीं हूँ। वास्तव में.............।" संभूति ने अपनी रात की यौगिक अनुभूति बताते हुए कहा—

"इसके पूर्व मैं अपनी प्रतिरूपिणी का नाम तक नहीं जानती थी। अब भी मुझे यह पता नहीं है कि वह कौन है ? कहाँ रहती है ? मेरे समान उसका स्वरूप क्यों है ? और वह मुझसे क्या चाहती है ?"

"यह तो बड़े आश्चर्य की बात है।" चकित होते हुए प्रमदा ने कहा। फिर कुछ सोच कर बोली—

"जिस तरह उस राक्षसी ने ऐलिस को खत्म किया, बिल्कुल ठीक उसी तरह दरिन्दगी से मेरी छोटी बहन शुभदा को भी मारा गया था। मुझे लगता है वह बर्बर हत्या उसी ने की होगी।" प्रमदा के हृदय की बात ओठों पर आई।

"शुभदा ? आपकी बहन ? कब कैसे मरी ?" संभूति ने कहा—

"शुभदा मुझसे 7-8 साल छोटी थी। अत्यन्त सुन्दर और कमनीयता की मूर्ति-शुभदा ने मानव विज्ञान का विस्तृत अध्ययन किया था। अपने शोध और विलक्षणता के कारण पूरे प्रदेश में उसका नम्बर प्रथम आया था। गोल्डमेडलिस्ट थी वह। मुझे अपनी बहन पर गर्व था। गोल्डमेडलिस्ट और प्रतिभा के आधार पर उसका चयन एक विज्ञान संस्था में हुआ था। आकर्षण वेतन, सुविधाएँ सभी उसे प्राप्त थीं। हालांकि हमें रुपयों की आवश्यकता नहीं थी, किन्तु शुभदा का सोचना था कि जिस खोज को वह करना चाहती है, उसके लिए करोड़ों की लागत से बनी प्रयोगशाला सिर्फ वहीं है। शुभदा का पोस्टिंग दिल्ली में हुआ था, लेकिन दो माह बाद ही उसे यहाँ भेज दिया गया। यहाँ की उत्तरी पहाड़ियों में मिले प्राचीनतम जीवाश्मों पर वह खोज कर रही थी। उसकी खोज इतनी गुप्त थी कि वर्ष तक हमें भी पता नहीं चला कि 'शुभदा यहीं' इसी शहर में है। पूरे दो वर्ष के दौरान मात्र एक बार ही शुभदा हमारे घर आई थी। और दूसरी बार आई उसकी क्षत-विक्षत लाश। उसके दोनों स्तनों को पूरी तरह काट दिया गया था और हृदय के स्थान को चीर कर हृदय को निकाल लिया गया था। मैं उसे बहुत प्यार करती थी। उसकी मृत्यु ने मुझे तोड़ दिया। महीनों तक मैं अपने-आपको नियंत्रित नहीं कर पाई।" कहते-कहते प्रमदा रो पड़ी।

संभूति स्वयं भी उसकी बात सुन कर दुःखी हो उठी। दोनों बात कर ही रही थीं कि पीयूष आ गया। संभूति को निश्चिंतता से बैठा देख कर बोला—

"अभी तो मेम साहब की बातें ही हो रही हैं। दस बज गए। भूखा ही जाना पड़ेगा।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"संभूति चौंकी ! सचमुच, वह बातों में इतना खो गई कि उसे ध्यान ही नहीं रहा कि उसे पीयूष के लिए नाश्ता बनाकर चार-परांठे टिफिन में रखना है। वह त्यौरा कर उठी।" बस अभी दस मिनट लगेंगे। आप तब तक अन्य कार्यों से निवृत हो लें।"

"आज शेष कार्य खत्म ! अब मैं जा रहा हूँ।" पीयूष ने निर्णय लिया।

"अरे रुकें तो सही !" पीयूष को जाते देख संभूति ने जल्दी से कमरे में गई और अलमारी खोली। उसके हाथ में पचास का एक नोट था।

"लो......., अब कल नहीं दूंगी।" संभूति ने अलमारी का पट बन्द करते हुए कहा। इसके पूर्व कि वह अलमारी बन्द कर पलटती, पीयूष ने उसे पीछे से ही बाँहों में भर लिया।

"अरे छोड़ो, क्या करते हो ? बाहर आपकी दीदी है।" संभूति ने सरगोशी की।

"कोई भी हुआ करे।" पीयूष ने उखड़ी सांसों से कहा।

"हूँ.........।" संभूति व्यंग से बोली—"रात में तो सो गए। तुम्हें जगाने का कितना अथक प्रयास किया मैंने। अब छोड़ो, पूरे पन्द्रह दिन हो गये, रात में तो कुछ बनता नहीं और दिन में.......।"

"ठीक, आज रात..........आज रात देखना।" पीयूष ने जैसे चुनौती स्वीकार की।

"हां............हां............ठीक है। अब पधारो महाराज। स्कूल को देर हो रही है।" हंसते हुए संभूति उसकी बाँहों में से निकल गई।

पीयूष के चले जाने के बाद संभूति स्नानादि से निवृत हुई, तब तक प्रमदा ने नाश्ता तैयार कर लिया। किचिन में ही दोनों बैठ गईं। नाश्ता करते हुए संभूति ने कहा—

"आपकी खोजबीन तो हो रही होगी। घर वाले भी चिन्तित होंगे।"

"मैं समझती हूँ, घर के किसी सदस्य को मेरी आवश्यकता नहीं है। जिसे मेरी आवश्यकता थी, उसे ही मेरी चिन्ता नहीं।" प्रमदा ने उदासी से कहा।

"हां, आप तो कार से आई होगीं न ?" संभूति को स्मरण आया।

"हां आई तो कार से ही थी, किन्तु पास के चौराहे पर कार पार्क करके फोन कर दिया था, ड्रायवर ले गया होगा।" प्रमदा ने बताया।

प्रमदा संभूति के घर-परिवार के विषय में पूछने लगी। संभूति उत्तर देती रही। उसे आश्चर्य हो रहा था कि प्रमदा कैसी साहसी स्त्री है। रात में जो घटित हुआ, उसका थोड़ा-बहुत प्रभाव भी प्रमदा पर नहीं था। वह सामान्य होकर घर गृहस्थी की बातों को कर रही थी। जबकि संभूति को अन्दर ही अन्दर एक चिन्ता लग रही थी कि अगर उस पिशाचिनी के समर्थक या वह स्वयं यहाँ आ जाती है तो वह किस प्रकार प्रमदा को उसके राक्षसत्व से बचा सकेगी ?



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवकाश के क्षणों में संभूति ने आज का समाचार पत्र देखा। मुख्य पृष्ठ पर ही बड़े-बड़े अक्षरों में छपा था।

**"उद्योगपति की पुनर्हत्या"—"सिर मिला। धड़ गायब।" "किशोरी से निर्मम बलात्कार और हत्या।" "एक और रहस्य जुड़ा।"**

संभूति जल्दी-जल्दी समाचार पढ़ गई, फिर उसने वही कॉलम प्रमदा को बताते हुए अखबार उसके हाथ में थमा दिया। खबर का संक्षिप्त सार इस प्रकार था।

कल रात नौ बजे उन पाँच उद्योगपतियों में से एक धनपत रायं के विहार उद्यान में जो उनकी कोठी के पीछे लगभग एक एकड़ में फैला था, में धनपतराय का कटा हुआ सिर बरामद हुआ। कटे हुए सिर के पास ही एक 14-15 वर्षीय किशोरी का नग्न-क्षत-विक्षत शव पड़ा था। किशोरी का गुप्तांग भारी मात्रा में फटा हुआ था, जो प्रथम दृष्टयः बलात्कार का संकेत देता था। धनपतराय का शेष धड़ गायब था।

"इस काण्ड की विस्तृत सूचना पुलिस अधीक्षक श्री बिन्दुशेखर शुक्ल को एक युवती ने शुक्ल के निवास पर जा कर दी और रहस्यमय ढंग से उनके निवास से गायब हो गई। पुलिस उस युवती को खोज रही है।"

"समाचार लिखे जाने तक बलात्कार और हत्या की शिकार किशोरी की पहचान नहीं हो सकी थी। इस काण्ड को देखने के बाद पुलिस ने शेष चार उद्योगपतियों की तलाश की। लेकिन चारों उद्योगपति अपने-अपने घरों से गायब थे। देर रात सेठ जौहरीमल अपने फार्म हाउस पर सोते हुए मिले, शेष की तलाश जारी है। पुलिस ने सेठ की सुरक्षा-व्यवस्था अपने हाथों में ले ली है। मामले की जाँच जारी है।"

प्रमदा एक सांस में सारा समाचार पढ़ गई। उसने समाचार पढ़कर संभूति की ओर देखा फिर बोली—

"फार्म हाउस में पुलिस को ऐलिस की लाश क्यों नहीं मिली संभूति ?"

"हाँ, मिलनी तो चाहिए थी, फिर भी नहीं मिली। शायद आपके आने के बाद सेठ जी ने एलिस का शव कहीं छिपा दिया होगा।" संभूति ने अनुमानतः कहा।

"शायद।" कहती हुई प्रमदा विचारों में खो गई। वह सोच रही थी कि पुलिस सेठ से उसके विषय में भी पूछताछ कर सकती है। क्या वह अपने घर चली जाए ? किन्तु उसकी आँखों के आगे ऐलिस की नृशंस हत्या का चित्र घूमा। वह काँप उठी। उसने निर्णय लिया नहीं वह किसी भी कीमत पर घर नहीं जाएगी। यद्यपि यहाँ भी उसकी सुरक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं था किन्तु उसे वैरोचनी की व्यवस्था पर दृढ़ विश्वास था।

□□



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्या को अतीव आश्चर्य था। आश्चर्य इसलिए कि वैरोचनी ने सिल्वा को तो असफल कर ही दिया, साथ ही होलीफादर सूपा की क्षमताओं पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया था। सूपा को उन सभी क्षणों की खबर रहती थी, जिनका सम्बन्ध मिशन के कार्य से होता है। सूपा वैरोचनी और सिल्वा के द्वन्द से कतई अपरिचित नहीं होगा, फिर भी उसने अपने मिशन की महत्वपूर्ण सदस्या की क्यों सहायता नहीं की। वह चाहता तो अपनी अदृश्य किरणों से अथवा किसी अन्य साधन से वैरोचनी को शिकस्त दे सकता था।

मार्ग में मादाम सिल्वा बिल्कुल नहीं बोली थी। हैडक्वाटर पहुँचकर वह विलि (कंकाल) के साथ सीधे अपने कक्ष की ओर चली गई। सूर्या भी अपने कक्ष में पहुँचा। हालाँकि यहाँ वह कम से कम समय रहता था। सूपा ने उसके लिए शहरी सीमा से बाहर सुरम्य वातावरण में एक छोटा-सा खूबसूरत मकान बनवा रखा था, फिर भी वह कभी कभार हैडक्वाटर में उसे किए गए एलॉट क्वाटर में रुक जाता था।

प्रत्यक्ष में यह हैडक्वाटर एक शोध संस्थान था, जिसमें वनस्पति और जीव विज्ञान से सम्बन्धित शोध कार्य चलते रहते थे। यह शोध संस्थान जीव विज्ञान के एक वैज्ञानिक ने स्थापित किया था। उनकी शोध प्रगति को देखते हुए भारत सरकार ने उनके समय से ही सहायता देना स्वीकार कर लिया था, जिसका क्रम निरन्तर, वर्तमान तक भी जारी था।

यह तो थी संस्थान की बाह्य बात, पर सत्यता यह थी कि यह संस्थान और इनके वैज्ञानिक पूरी तरह सूपा के नियन्त्रण में थे। यह संस्थान मानव आबादी से लगभग 30 कि. मी. दक्षिण में स्थित था। संस्थान के चारों ओर हरी-भरी पहाड़ियाँ थीं, उनके मध्य तलहटी में यह संस्थान बना था।

वास्तव में यह संस्थान जिसका नाम वी. लाइफ रिसर्च सेन्टर लिमिटेड था, के नीचे अर्थात् भूगर्भ में एक पूरा नगर बसा हुआ था, जिसमें अनेक प्रयोगशालाएँ थीं। इन प्रयोगशालाओं में शोधकर्ता वी. लाइफ के ही थे। बाहर के वे वैज्ञानिक भी थे जिन्हें कुछ समय के लिए ही सूपा उनसे सेवाएँ लेकर विदा कर देता था। जिनका मिशन के मूल उद्देश्यों से कोई विशेष सरोकार नहीं था।

वी. लाइफ के प्रबन्धक मिस्टर हार्डी थे। हार्डी लगभग साठ वर्षीय पूर्ण स्वस्थ व्यक्ति थे। आज तक उन्हें किसी ने भू-गर्भीय प्रयोगशाला में देखा नहीं था। प्रयोगशाला में संधानरत सभी वैज्ञानिक नाम से नहीं उनके नम्बर से जाने जाते थे। वर्षों तक साथ-साथ कार्य कर रहे वैज्ञानिकों ने कभी एक-दूसरे की शक्ल-सूरत नहीं देखी थी। सभी के चेहरे एक विचित्र से मॉस्क से ढके रहते थे।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रयोगशाला में प्रत्येक वैज्ञानिक की विशेष ड्रेस थी, जो सफेद चमकीले चाँदी के तारों जैसी किसी धातु के धागों से निर्मित थी।

उस प्रयोगशाला में मात्र दो व्यक्तित्व ही ऐसे थे, जो बिना नकाब के जाते आते थे। उनमें एक सूर्या और द्वितीय मादाम सिल्वा थी। सामान्यतः प्रत्येक कार्यकर्ता/वैज्ञानिक दोनों का सम्मान करते थे। सिल्वा के सम्मान के मूल में उसका आतंक था, जबकि सूर्या के सम्मान के मूल में उसका मृदुल और स्नेहिल व्यवहार।

सूर्या व्यक्तिगत तौर पर प्रयोगशाला के अनेक पुरुष और महिला वैज्ञानिकों को जानता था। अधिकांश महिला वैज्ञानिक उसे अपने एकान्त क्षणों का साथी बनाने की इच्छुक रहती थीं किन्तु सूर्या ने यह अवसर किसी को नहीं दिया था। उन महिलाओं में एकमेव सुमन थी, जो उसके अभिशप्त यौवन से परिचित थी, शेष सभी महिलाओं को उसके 'विष' का ज्ञान नहीं था।

सूर्या इस समय भूगर्भ प्रयोगशाला के समीप ही अपने कक्ष में विश्राम करने के लिए लेटा ही था कि स्क्रीन पर हल्का मद्धिम संगीत बजा। यह संगीत सूपा के स्क्रीन पर अवतरण होने के कुछ क्षण पूर्व बजा करता था। सूर्या लेटा नहीं, कुर्सी खींचकर बैठ गया और स्क्रीन की ओर देखने लगा। कुछ क्षणों पश्चात् स्क्रीन रोशन हुई, सूपा की ऋषि जैसी छवि दिखाई दी।

"होलीफादर सूर्या का सादर प्रणाम स्वीकार करें।" कुर्सी से उठकर झुकते हुए सूर्या ने अभिवादन किया।

"प्रसन्न रहो मेरे बच्चे।" सूपा ने आशीष दी।

सूर्या देख रहा था, सूपा के चेहरे पर, आँखों में कुछ चिन्ता के भाव थे। शायद सिल्वा की असफलता से सूपा को कुछ चिन्ता हुई हो।

"तुम ठीक समझ रहे हो मेरे बच्चे। भैरवी वैरोचनी ही मेरी चिन्ता के मूल में है। संभवतः तुम्हें आश्चर्य होगा, मेरी यांत्रिक शक्तियों ने भैरवी के आगे कार्य करना बन्द कर दिया था। वैरोचनी का कोई भी चित्र हमारे पास तक नहीं आ सका। तुम देखना चाहते हो ? देखो, मैं तुम्हें वैरोचनी और सिल्वा के द्वन्द के समय की मूवी बताता हूँ।" कहकर सूपा की आकृति स्क्रीन से अदृश्य हो गई।

अब स्क्रीन पर सेठ जौहरीमल के फार्म हाउस का दृश्य चमक रहा था। इस दृश्य में नग्नवदना ऐलिस जौहरीमल के शरीर के ऊपर पुरुषोचित क्रियाएँ करते हुए मिथुन कर्म में लीन थी। जब वह हार थककर चूर-चूर हो गई तो उसी समय सिल्वा और विली ने प्रवेश किया।

सूर्या सारी कार्यवाही देखता रहा। अचानक वह चौंका। उसका यह चौंकना इसलिए था—ऐलिस का खात्मा कर जैसे ही सिल्वा नग्न, हत्प्रभ खड़ी प्रमदा की



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओर बढ़ी थी, उसी समय वहाँ भैरवी का आगमन हुआ था किन्तु उसने देखा भैरवी के स्थान पर एक अग्निमय पिण्ड वहाँ फिल्म में उपस्थित था। उस अग्नि पिण्ड से ज्वाला निकल रही थी। वही ज्योतिर्मय अग्नि पिण्ड ही सिल्वा को छका रहा था, शिकस्त दे रहा था।

सूर्या ने वह दृश्य भी देखा, जब भैरवी ने उसका चुम्बन लिया था, यहाँ भी उसे भैरवी के स्थान पर वही ज्योर्तिमयी ज्वाला दिखाई दी थी। सूर्या की समझ में नहीं आया कि सूपा के कैमरे ने भैरवी की काया का चित्रांकन क्यों नहीं किया था ?

"माय चाइल्ड", अचानक सूपा की आवाज आई और स्क्रीन से फिल्म गायब हो गई। अब सूपा की तस्वीरं थी। सूपा कह रहा था।

"एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि भैरवी का तुमसे क्या सम्बन्ध है ? मादाम सिल्वा के अनुसार भैरवी ने तुम्हारे होंठ चूमे थे। मुझे बताओ बेटे, क्या तुम उस रहस्यमयी भैरवी को पहले से जानते हो ? वह तुम्हें कब ? कहाँ ? मिली। मेरे पास तुम्हारे जन्म से लेकर अब तक का महत्वपूर्ण चित्रण संग्रहित है, किन्तु मैंने अभी तक यह नहीं देखा कि तुम्हें कभी ऐसी असीम शक्ति की स्वामिनी मिली हो।"

"आपका कथन सत्य है फादर। इसके पूर्व मुझे कभी भैरवी नहीं मिली। हाँ लगभग एक माह होने को आया, तबसे वही भैरवी मुझे निरन्तर स्वप्न में अवश्य दिखाई देती रही है।"

"हूँ ऽ।" सूपा का सोचपूर्ण स्वर उभरा ! अचानक उसके चेहरे पर चमक आई।

"हाँ, मेरे बच्चे। तुम्हारे लिए एक प्रसन्नतादायी समाचार है। तुम्हारी यौन तुष्टि के निमित्त मैंने एक कण्डोम तैयार किया है, जिसे तुम पहनकर किसी भी स्त्री के साथ साहचर्य कर सकते हो। तुम्हारे वीर्य का परीक्षण किया गया तो उसमें तीक्ष्ण विष मिला। ऐसा विष जो साइनाइट से साम्यता रखता है। तुम्हें तुम्हारे आवास स्थल 'हिमालय' में यह कण्डोम उपलब्ध होगा किन्तु जब तुम इसका उपयोग करो तो सावधान अवश्य रहना। एक बात और उपयोग के बाद कण्डोम में कलेक्ट पदार्थ को सुरक्षित स्थान में जीरो से अधिक ठण्डे वातावरण में रखकर सुमन आयंकर को सौंप देना। तुम पर वांक्षित प्रयोग जो महिला कर रही है और उसी ने यह कण्डोम विकसित किया है और वही उसका अध्ययन भी करेगी।"

"थैंक्यू फादर, वैरी-वैरी थैंक्यू। क्या मैं उस महिला वैज्ञानिक से मिल सकता हूँ।" सूर्या ने ससंकोच कहा।

"आवश्यकता होने पर वह स्वयं तुमसे मिल लेगी।"

"एक बात और फादर।" सूर्या ने विनय की।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"कहो।"

"होली फादर, क्या मैं अपने जन्म से सम्बन्धित चित्रों को देख सकता हूँ। मैं अपने माता-पिता को देखना चाहता हूँ।"

"नो, यह इम्पासिबल है।" सूपा का स्वर कठोर हुआ।

"मैं आपकी कृपा का आभारी हूँ फादर।" सूर्या ने सिर झुका लिया। सूपा का चेहरा सामान्य हो गया।

सूर्या उठा, उसने कपड़े पहने। उसे हिमाश्रय जाना था। सूपा उसे यहाँ नहीं रहने देना चाहता, इसमें अवश्य ही कोई रहस्य होगा। सूर्या ने द्वार बन्द किया और बाहर निकलकर लिफ्ट की ओर बढ़ा।

लगभग तीन बजे थे। दो बजे की शिफ्ट कभी की समाप्त हो गई थी—इसलिए लिफ्ट के आसपास कोई नहीं था। सूर्या जैसे ही लिफ्ट के पास पहुँचा लिफ्टमेन ने अभिवादन किया। उत्तर में सिर हिलाते हुए सूर्या लिफ्ट में बैठ गया। लिफ्टमेन जो बार-बार टॉयलेट की ओर देख रहा था, से उसने लिफ्ट चलाने का आदेश दिया। यह वी. आई. पी. लिफ्ट थी इसलिए किसी के इन्तजार का प्रश्न ही नहीं था—फिर भी लिफ्टमेन बार-बार टॉयलेट की ओर देख रहा था।

"मिस्टर सूर्या......मिस्टर सूर्या।" अचानक उसके कानों में महीन पतला-सा नारी कण्ठोदजनित स्वर टकराया।

"यस।" सूर्या ने उत्तर दिया।

"कृपया एक मिनट मेरी प्रतीक्षा करें।" स्वर पुनः आया।

सूर्या चकित नहीं हुआ, बिना किसी टेलीफोन अथवा अन्य उपकरण के होली फादर की प्रयोगशाला के भूगर्भ में इस प्रकार सन्देश मिलना सामान्य बात थी। वह लिफ्टमेन को रुकने का संकेत कर शान्ति से बैठ गया। यह आवाज मात्र उसी को सुनाई दी थी, लिफ्टमेन को नहीं। वस्तुतः सूपा ने ही यह आश्चर्यजनक व्यवस्था कर रखी थी कि वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अन्य वी. आई. पी. बिना किसी यंत्रादि के भूगर्भ में बातचीत कर सकते थे। यह बातचीत किसी अन्य को सुनाई नहीं देती थी।

वास्तव में बात यह थी कि उधर से बोलने वाला जैसे ही किसी को सन्देश देता था, मुख से निकलने वाले अक्षरों की ध्वनि के दबाव से बोलने वाले की विशेष ड्रेस में लगे अति संवेदनशील यन्त्र उसे ग्राह्य करते थे फिर उन यंत्रों से एक अदृश्य तरंगों का छोटा-सा केबिन उसी क्षण तैयार हो जाता था, जिसके कारण क्या सन्देश आ-जा रहा है, किसी को सुनाई नहीं देता था। ऐसी अन्य व्यवस्थाओं के संचालन एवं अन्य हानिकारक गैसों से सुरक्षा के लिए ही यह विशेष ड्रेस प्रत्येक को पहनना आवश्यक था। सूर्या भी भू-गर्भ में आने पर ड्रेस पहनता था। हाँ



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसे मास्क लगाना आवश्यक नहीं था। मास्क सूर्या उसी स्थिति में लगाता था, जब प्रयोगशाला में जाना अनिवार्य होता था। उसका और सिल्वा का मास्क अन्य मास्क्स से अलग पारदर्शी था, जिसमें से उनका चेहरा दिखाई देता रहता था।

सूर्या को अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। टॉयलेट से एक महिला वैज्ञानिक उसे लिफ्ट की ओर आती दिखाई दी। उसने लबादा पहन रखा था और चेहरे पर मास्क भी था। सूर्या उसे इस कारण पहचान नहीं पाया। उसके हाथ में एक पैकेट था।

"सुमन आयंकर, आपको प्रणाम करती है मि. सूर्या।"

"ओह ! प्रणाम मिस आयंकर।" सूर्या मुस्कराया।

"मैं भी आपके साथ चल रही हूँ।"

"आइए।" कहते हुए सूर्या ने उसे अपने पास में स्थान दिया।

"मैं आपसे विशेष चर्चा करना चाहती हूँ मि. सूर्या। कृपया बताएँ मैं कब आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँ।" सुमन ने प्रश्न किया।

"जब भी आपकी इच्छा हो।" सूर्या ने हँसकर कहा।

"ठीक है। कल सन्ध्या के पश्चात् मैं नौ बजे आपके पास पहुँचूँगी। "आप हिमाश्रय में उपलब्ध होंगे न।"

"अवश्य।"

"थैंक्यू मि. सूर्या। दरअसल मैं अपने नवीन शोध के सन्दर्भ में आपसे मिलना चाहती हूँ। महान सूपा ने इस विषय में आपसे कहा होगा।"

"हाँ होली फादर, किसी कण्डोम का जिक्र कर रहे थे।" सूर्या की धड़कनें तेज हुईं। उसकी नजरें भी झुक गईं।

"यस मि. सूर्या, मुझे ही महान सूपा ने यह कार्य सौंपा है।

"लेकिन मिस आयंकर। इसके लिए किसी युवती की आवश्यकता होगी। अगर कण्डोम सक्सेस नहीं हुआ तो......तो मैं नहीं चाहता कि एक निर्दोष लड़की के जीवन की बलि हो जाए।" सूर्या ने गम्भीरता से कहा।

"आपका सोचना सही है, फिर भी.......। फिर भी इसका परीक्षण तो करना ही होगा। कोई भी लड़की तुम्हारे साथ सोने में गर्व का अनुभव करेगी।"

"और दुर्भाग्य हुआ तो इस दुनिया से कूँच कर जाएगी।" सूर्या का स्वर दुःख से भरा था।

बातें करते हुए वे दोनों लिफ्ट से ऊपर आ गए। अपने कक्ष में पहुँच कर दोनों ने अपनी ड्रेसेस बैग में डाली और बी. लाइफ रिचर्स सेन्टर से बाहर निकल आए। सुमन का घर सिटी में था जबकि सूर्या का हिमाश्रय यहाँ से 3-4 कि. मी. दूर था। दोनों ने अलविदा कहा और अपनी-अपनी कारों से चल दिए।

□□



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्यास्त हो रहा था। सन्ध्या की रंजित लालिमा से सन्ध्या सुन्दरी रूपिणी सौन्दर्यमयी प्रकृति का मुख ललाम हो उठा। पक्षियों की चहचहाहटें, शीत पवन के झोंके, पेड़ों की झूमती पत्तियाँ और हरित आच्छादन से भरी पहाड़ियों की शृंखला। सूर्या का बंगला ठीक पहाड़ी के दामन में था। पूर्णतः शान्त, प्रकृति की गोद में। सन्ध्या समय जब भी सूर्या हिमाश्रय में होता था तो वह फूलों के बीच लॉन में बैठकर सूर्यास्त का मनोरम दृश्य अवश्य देखा करता था।

सूर्या को शीत ऋतु बहुत अच्छी लगती थी, वह जब तेज ठण्ड का मौसम हो तो वह बहुत प्रसन्न रहता था। वह कड़कड़ाती ठण्ड में भी बिना ऊनी कपड़ों के ही रहता था। सूर्या का हिमाश्रय भी सामान्य रूप से इतना ठण्डा रहता था कि आम आदमी उसमें तेज गर्मियों के मौसम में भी नहीं रह सकता था। वह जिस कक्ष में सोता था, उसका तापक्रम हमेशा एक डिग्री सेल्सियस से कम कभी नहीं रहता था। यह शीत व्यवस्था कृत्रिम रूप से की गई थी। इससे अधिक तापक्रम होने पर सूर्या को घबराहट होती थी।

अगर अत्यावश्यक कार्य से सूर्या को बाहर जाना होता था तो वह सूपा द्वारा उसी के लिए विकसित ऐसी गोलियाँ अपने साथ ले जाता था, जिनके खाने से उस पर गर्मी का प्रभाव कम से कम होता था।

सूर्या आठ बजे तक ठण्डी हवा के झोकों में आनन्दित होता लॉन में बैठा रहा। उसे याद था कि नौ बजे सुमन आयंकर आएगी, किन्तु उसका आना व्यर्थ ही होगा। सूर्या चाहता तो उसके शोध के लिए किसी भी लड़की की व्यवस्था कर लेता पर पता नहीं क्यों उसकी इच्छा नहीं हुई। हाँ आज बार-बार उसके कानों में श्री माँ की चेतावनी गूँजती रही। उन्होंने कहा था—"तुम्हारे कारण अब किसी लड़की के प्राण न जाएँ।"

सूर्या के हिमाश्रय में छः सात नौकर थे। उनमें दो महिलाएँ और चार पुरुष थे। सूर्या का भोजन एक ग्रामीण वृद्ध जिसका नाम दयाल शर्मा था, बनाता था। सूर्या के शयनकक्ष में ही हिमानी व्यवस्था थी, शेष भवन सामान्य था। इसलिए किसी नौकर को वहाँ रहने में कोई परेशानी नहीं होती थी।

आठ बजे के बाद सूर्या ने हल्का भोजन किया, फिर शयन कक्ष में लेट गया। आज उसे कोई काम नहीं था। हालांकि वह संभूति से मिलने जाना चाहता था किन्तु सुमन के आगमन के कारण उसने संध्या समय संभूति के घर जाने का फिर कभी के लिए स्थगित कर दिया। उसे श्री माँ की याद भी आ रही थी किन्तु वह वहाँ भी नहीं जा सका था। श्री माँ का आश्रम उसके आवास से काफी दूर लगभग 45 कि० मी० था। उसका आवास शहर के बाहर दक्षिणी छोर पर था तो श्री माँ का आश्रम शहर से बाहर उत्तरी छोर पर।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नौ बजे ! अचानक ही हिमाश्रय की विद्युत व्यवस्था भंग हो गई। सारा बंगला अंधकार में डूब गया। सूर्या बाहर निकला, दूर शहर की सारी बत्तियाँ रोशन थीं। उसने अपने बंगले से दूर एक फार्महाउस पर भी बिजली जलते देखी। वह सोच ही रहा था कि अचानक......।

कोई हवा में उड़ता हुआ उसके ऊपर आ गिरा। सूर्या सम्हल नहीं सका और गिर पड़ा। उसे किसी ने उठने नहीं दिया। एक नपा-तुला हाथ उसके सिर के पिछले हिस्से पर पड़ा। सूर्या की आँखों के आगे रंग-बिरंगे तारे नाचने लगे। कौन है यह हमलावर ? वह सोच नहीं सका किन्तु यह निश्चित था कि हमलावर मार्शल आर्ट्स का दक्ष खिलाड़ी था जिसमें सूर्या जैसे असाधारण शक्ति के स्वामी सूर्या को अचेत कर दिया था।

सूर्या को जब होश आया तो स्वयं को ड्राइंग रूम के सोफे पर पाया। ड्राइंग रूम में लाइट जल रही थी और उसका सिर सुमन आयंकर की मुलायम गोद में था। उसे आँखें खोलते देख सुमन ने प्यार से कहा—

"क्या हुआ मि० सूर्या। आप कैसे बेहोश हो गए थे। जैसे ही मैं आई, आपके बंगले की लाइट्स जल उठी। मैंने आपको बरामदे के नीचे बेहोश पड़ा पाया।"

"वह मार्शल आर्ट्स में दक्ष कोई अंजान व्यक्ति था बल्कि व्यक्ति नहीं कोई लड़की थी मिस आयंकर। यह मेरे जीवन की पहली घटना है, जब मुझ पर हुए आक्रमण के पूर्व मेरी इन्द्रियाँ और संवेदनाएँ सुप्त रहीं। मुझे इस घटना पर आश्चर्य हा रहा है।"

उस आक्रमणकारी का उद्देश्य क्या रहा है ? यह किसी को पता नहीं था। सूर्या को चेतन अवस्था में देख घर के नौकरों की भीड़ छट गई। सूर्या ने दयाल को सुमन के लिए चाय लाने को कहा फिर वह सुमन की ओर उन्मुख हुआ।

"हाँ तो मिस आयंकर। ऐसा लगता है, जैसे आज आपकी मधुचन्द्र राका है।" सुमन के दप-दप करते सौन्दर्य और उसकी आंगिक श्रृंगार सज्जा को गम्भीरता से देखते हुए सूर्या मुस्कराकर बोला।

"आपने बिल्कुल ठीक समझा। बिना अग्नि की साक्षी में, बिना वर की अनुमति से, आज मेरी सचमुच सुहागरात है।" सुमन का नाति गम्भीर स्वर निकला।

"ओह !" संभवतः सूर्या सुमन के भाव को समझ गया। वह गहरी निःश्वास लेकर बोला।

"मिस आयंकर आप अच्छी तरह जानती हैं कि आपका मधुमय जीवन मृत्यु की कालिमा में बदल सकता है।"

"हाँ, बहुत सोच-विचारकर मैंने यह निर्णय लिया है। मैं एक वैज्ञानिक हूँ और वैज्ञानिक का शोध ही सब कुछ है। उसके लिए मृत्यु जैसी बात या अवस्था कोई



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महत्व नहीं रखती। मैं वासनात्मक संवेग से भरकर तुम्हारे साथ मैथुन नहीं करना चाहती बल्कि मैं संसार के हित में प्रयोग करना चाहती हूँ। सीधे शब्दों में मैं जगत को एक खतरे से उभारना चाहती हूँ। मानवता की सुरक्षा के लिए मेरे प्राणों का मूल्य अधिक नहीं है सूर्या। यह भी संभव है कि मेरे द्वारा बनाया गया वह कण्डोम तुम्हारे विषाक्त वीर्य और उसके संवेग को सहन नहीं करके फट जाए और मैं मारी जाऊँ, पर इसका मुझे कोई भय नहीं है।" सुमन की गम्भीरता में और अधिक वृद्धि हुई।

"तो यह कण्डोम तुम्हारी खोज है सुमन। पर क्यों ? तुम मुझे क्यों इस अभिशाप से मुक्ति दिलाना चाहती हो।" भावुक होकर सूर्या ने सुमन का कोमल हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसकी स्नेहिल संवेदनाएँ सुमन के प्रति जाग उठीं।

"तुम नहीं समझ सकोगे सूर्या।" सुमन की आँखों से टपटप आँसू गिरने लगे।

"संभवतः तुम मुझे अत्यधिक स्नेह करने लगी हो सुमन।" सूर्या उसे अश्रुपात करते हुए देखकर बोला।

"नहीं, मैं तुम्हें प्यार नहीं करती सूर्या। मेरे जीवन में अभी तक ऐसा कोई पुरुष आया ही नहीं, जिसे मैं प्यार करती। मैं मात्र अपने लक्ष्य को प्यार करती हूँ, किसी अन्य को नहीं।" आँसू पोंछकर अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण करती सुमन ने मुस्कराने का प्रयास किया।

"क्या लक्ष्य है तुम्हारा।" सूर्या की उत्सुकता जागी।

"बहुत सम्भव है तुम्हें पता चल जाए, पर अभी इस समय तो कुछ भी कहना सम्भव नहीं। खैर छोड़ो इसे। मैं तुम्हें अपनी नयी खोज को बताती हूँ।" सुमन ने विषयान्तर करते हुए कहा।

"तुम किसी ऐसे व्यक्तित्व का आँखें बन्द कर ध्यान करो जो तुम्हें अत्यन्त प्रिय है।" कहते हुए सुमन ने अपने बैग से एक यंत्र निकाला। यह ऐसा यंत्र था जिससे चिकित्सक ब्लडप्रेशर आदि देखते हैं।

"जरूर पर, इसके पहले चाय।" सूर्या ने हँसते हुए चाय ला रहे दयाल की ओर संकेत कर कहा।

दोनों ने चाय पी, फिर सुमन अपने यन्त्र को तैयार करने लगी। यंत्र में चार पृथक्-पृथक् तश्मे थे, जिनका सम्पर्क एक केविल के द्वारा बीच में लगे स्क्रीन से था। उसकी बनावट चिकित्सकों को स्टेथस्कोप की तरह थी जिससे दिल की धड़कनें सुनी जाती हैं। अन्दर था तो मात्रा इतना कि स्थेस्कोप में चिकित्सक के कान में लगने वाली भुजाओं के स्थान पर किसी लचीली धातु से बने 4 पट्टे लगे हुए थे—ठीक वैसे ही जैसे ब्लड प्रेशर मापक के पट्टा होता है, जिसे चिकित्सक



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोगी की बाँह में सख्ती से लपेटकर नसों में परिभ्रमण कर रहे रक्त की गति को मीटर में देखता है। उक्त यन्त्र में चार पट्टे थे।

सुमन ने सूर्या को नीचे धरती पर बैठने को कहा। उत्सुकता से सूर्या बैठ गया। सुमन को कुछ स्मरण आया। उसने अपने कमनीय यौवन कान्ति से भरे शरीर पर आवरित ऊनी शाल को उतारकर बिछाया। फिर सूर्या से उस पर स्वास्तिकासन से बैठने का अनुरोध किया।

"अब दृष्टि को भ्रूमध्य में केन्द्रित करते हुए, रीढ़ की हड्डी को सीधा रखते हुए अपनी किसी प्रिय स्त्री-पुरुष का गहन ध्यान करो।"

सूर्या विशेष उत्सुक नहीं था। उसने विज्ञान के जो चमत्कार सूपा की प्रयोगशाला में देखे थे, वैसे कहीं अन्यत्र देखने को तो क्या सुनने को भी नहीं मिलते। बस वह तो सुमन का मन रखने बैठ गया था।

सुमन के दिए निर्देशों पर सूर्या ने स्वयं की चेतना को भ्रूमध्य में ले जाने का प्रयास किया तुरन्त एकाग्रचित्त होना, सूर्या की बचपन से ही आदत थी। अतः तुरन्त वह एकाग्र हो गया।

सुमन ने फुर्ती से यंत्र के तश्मे फंसाना शुरू किए। पहले दक्षिण हाथ में, फिर बाँए हाथ में वह कोमल धातु का बेल्ट कसा। इसके पश्चात् उसने एक बेल्ट सूर्या के सीने पर कसा और बेल्ट के बीच में लगे एक बटन को उसके ठीक हृदय के ऊपर सैट कर दिया, इसके पश्चात् उसने ठीक भ्रूमध्य में लगभग चार इन्च व्यास का एक ऐसा बटन लगाया जिसके हल्के से दबाने से उसके अन्दर की वायु निकल गई और वह सरलता से सूर्या के भ्रूमध्य में चिपक गया।

सुमन ने यंत्र चालू किया। हल्की-सी सूं.....सूं की ध्वनि पैदा हुई। सूर्या की सकल चेतना भ्रूमध्य की ओर तेजी से दौड़ी। उसे लगता था कि उसका समूचा अस्तित्व खिंचकर भ्रूमध्य की ओर तेजी से आ रहा है। कुछ क्षणों में ही उसका सारा शरीर शून्य हो गया।

"हाँ सूर्या, अब तुम अपने किसी प्रिय का स्मरण करो। जितना सघन तुम्हारा स्मरण होगा, प्रयोग उतना ही सक्सेज होगा।" सूर्या को सुमन की आवाज किसी गहरे अन्धकूप से आती प्रतीत हुई।

अचानक सूर्या की स्मृति में श्री माँ का गहन स्मरण हुआ। जैसे वह स्वप्न देख रहा हो। श्री माँ का रंग रूप स्पष्ट दिखाई दे रहा था। सुमन ने यंत्र के 4× 6" के स्क्रीन को देखा और उसके मुखमण्डल पर प्रसन्नता की चन्द्रिका खिल उठी।"

"वेल सूर्या, अब किसी और का स्मरण करो।" कहते हुए सुमन ने स्क्रीन के पास लगा एक छोटा-सा स्विच दबा दिया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्या की स्मृति में इस बार संभूति के अमल सौन्दर्य ने स्थान पाया। सुमन ने उसे भी देखा और सन्तुष्ट होकर पुनः उसी प्रकार से अन्य का स्मरण करने को कहा। इस बार सूर्या ने भैरवी वैरोचनी को अपने स्मृति पटल पर उकेरा।

"सूर्या, अब मैं विशेष पाइन्ट पर आ रही हूँ। सावधानी से अपने चित्त की उन गहराइयों में उतर जाओ, जहाँ तुम्हारे माता-पिता की अदृश्य स्मृतियाँ हैं। प्रयास करो, यह गहराई से सोचो कि तुम्हारे चित्त में जन्म जन्मान्तर के संस्कार हैं।" सूर्या को उस समय ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह किसी अन्धेरी लम्बी गुफा में दौड़ता चला जा रहा है।

गहन अन्धकार के बाद उसे आलोक दिखाई दिया। इस आलोक में वह हिमाच्छादित पर्वत शृंखलाओं को देख रहा था। साथ ही देख रहा था। स्वयं को हिमाच्छादित गुफाओं में, घाटियों में स्वयं को भ्रमण करता हुआ। उस समय उसका शरीर वर्तमान शरीर से कहीं अधिक बलिष्ठ और कद वर्तमान कद से लगभग 1½ गुना अधिक था।

इसी हिमानी धरा पर उसे अतीव सुन्दरी दिखाई पड़ी। वह बाँहें फैलाए सूर्या की ओर दौड़ती है और उसकी भुजाओं में आ गिरती है। सुन्दरी की रूप राशि सुमन से बहुत कुछ साम्य रखती थी।

अगले दृश्य में उसने देखा सुमन के समान रूप वाली रूप यौवन से सम्पन्न युवती उसकी बाँहों में दम तोड़ रही है। वह उसके वियोग में जार-बेजार होकर रुदन कर रहा है। अकस्मात सुन्दरी के शव में परिवर्तन होता है और वह खूबसूरत नागिन के रूप में बदल जाती है।

हिम के आंगन में सूर्या स्वयं को निस्पद अवस्था में पड़ा देखता है। इसके पश्चात् एक युवा वैज्ञानिक टीम को वह देखता है और उस टीम में वह एक युवा वैज्ञानिक को देखता है, उस वैज्ञानिक की शक्ल उसे कुछ परिचित लगती है। वही वैज्ञानिक उसके अंग से रक्त और शरीर से वीर्य का सार तत्व निकालता है।

उस वीर्य से निर्मित पिण्ड एक स्त्री के गर्भ में वह दो वैज्ञानिकों द्वारा स्थापित करते हुए भी सूर्या ने देखा। वह युवती कोई अन्य नहीं श्री माँ ही थी। इसके पश्चात् सूर्या संक्षिप्त में अपने जन्म से लेकर अब तक के दृश्य देखता है और अन्त में आकर यह शृंखला: होलीफादर सूपा तक आकर समाप्त हो जाती है। अब उसे उस युवा वैज्ञानिक को पहचानने में कोई त्रुटि नहीं होती। वह युवा वैज्ञानिक कोई अन्य नहीं होलीफादर सूपा ही था।

"अपने चित्त की परम गुहा से बाहर आओ सूर्या।" सूर्या को सुमन का आदेशात्मक स्वर सुनाई देता है।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहले के समान फिर वही अन्ध गुफा का रास्ता और फिर चेतना भूमध्य में। सुमन स्क्रीन का ग्राफ देखती है।

"सूर्या आँखें खोलो।" और सूर्या आँखें खोल देता है।

"कैसी यात्रा रही सूर्या ?" सुमन के अधर दलों पर मुस्कान नाची।

सूर्या भाव विह्वल हो उठा। वह उठा और यंत्र को ऑफ करती सुमन के मधुर-मोहक कलेवर को बाँहों में समेट लिया।

"अद्भुत ! बहुत अद्भुत !" कहते हुए उसने सुमन के सरस अधर पल्लवों को चूम लिया। अपनी कोमल हथेली से ओठों को पोंछती सुमन उसके आलिंगन से निकल गई।

"जूठा कर दिया है न मेरे ओठों को।" हँसते हुए सुमन ने शरमाकर अपने कोमल करतलों में मुख छिपाया और बैठ गई।

"तुम्हारी खोज सचमुच चमत्कारिक है सुमन।" गद-गद स्वर में कहते हुए सूर्या ने सुमन की कोमलता को बाँहों में भरकर सोफा पर बैठा दिया।

"अभी आपने पूरा परिणाम देखा ही कब है। लो देखो।" कहते हुए सुमन ने यंत्र के स्क्रीन के पास लगे स्विच को पुश किया। 4 × 6" के रंगीन फोटोग्राफ धड़ाधड़ निकलने लगे। लगभग 50 फोटो थे। सूर्या साश्चर्य एक-एक फोटो देखता रहा। उन फोटोज में श्री माँ, संभूति, भैरवी वैरोचनी के चित्रों के अतिरिक्त हिमालय के फोटो थे। उन्हीं फोटोज में एक उसके प्रतिरूप यति, यति की प्रेमिका, वैज्ञानिक टीम, नागिन, उसका जन्म होते हुए समय का चित्र एवं सूपा के चित्र भी थे।

"विलक्षण ! अद्भुत ! तुम सचमुच जीनियस हो सुमन।" सूर्या चित्र और घटनाओं की शृंखला बनाते हुए बोला।

"नहीं, मैं इस खोज की हकदार नहीं हूँ। दरअसल इस खोज का फार्मूला मेरे मामा ने विकसित किया था। वह अद्भुत वैज्ञानिक थे। मेरी माँ बंगलौर यूनिवर्सिटी की स्नातक है। उसने अपने समय में विज्ञान विषय में गोल्ड मेडिल प्राप्त किया था। मेरे सुयोग्य मामा लगभग बीस वर्ष से लापता हैं। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में ही यह फॉर्मूला विकसित कर लिया था, जिसमें मैंने कुछ परिष्कार या संशोधन भर किया है।" सुमन ने बताया।

"एक बात बताओ सुमन। इसमें एक अपूर्व सुन्दरी का चित्र है, जिसकी दैहिक आंगिक बनावट और रूप तुमसे अधिक मैच करता है। उसका क्या कारण है ?"

"इस विषय में मैं ठीक-ठीक कुछ नहीं कह सकती।' सुमन ने असमर्थता प्रकट की।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"तुम्हारे इन प्रयोगों से यह तो सिद्ध हो गया है सुमन कि फादर सूपा का मेरे जीवन में विशेष महत्व है।" सूर्या ने विचारते हुए कहा।

"यह तुम्हारा और सूपा का व्यक्तिगत मामला है। इस विषय पर मैं इस समय कोई टिप्पणी नहीं कर सकती।" सुमन के स्वर में कड़वाहट आ गई।

रात्रि के 11·00 बज चुके थे। सुमन उठते हुए बोली—"तुम्हारा बाथरूम किधर है सूर्या ? अब मैं अपने मूल उद्देश्य को पूरा करना चाहती हूँ। मैं उस प्रयोग को सम्पन्न करने से पहले अपने शरीर पर कुछ लेप आदि करना चाहती हूँ, ताकि सुरक्षा का विश्वास रहे।"

"सुमन, क्या तुम उस 'कार्यक्रम' को रोक नहीं सकतीं।" सूर्या ने कमजोर स्वर में कहा। उत्तर में सुमन ने स्पष्ट इन्कार कर दिया। सूर्या ने उसे बाथरूम दिखाया। फिर पुनः ड्राइंगरूम में आया। उसने सूपा द्वारा भेजे गए कण्डोम निकाले और नाली के पास जाकर जला दिए। वह सचमुच सुमन जैसी वैज्ञानिक से मानवता को वंचित नहीं करना चाहता था।

सुमन बाथरूम से जैसे ही बाहर आई, सूर्या उसे अपलक देखता रह गया। जैसे रूप और सौन्दर्य साकार रूप लेकर सुमन के रूप में उपस्थित हो गए हों। बिल्कुल सद्यवधु लग रही थी सुमन। भरपूर श्रृंगार किया था उसने। लाल सुर्ख साड़ी, वैसा ही पारिधानेय वस्त्र, ललाट पर गोल बिन्दी, माँग में सिन्दूर की दमकती आरक्त रेखा, हाथ में खनखनाहट का मधुर संगीत देती लाल चूड़ियाँ। सुमन के मुख पर मोहिनी की अमल छटा थी, एक अनोखे सूर्य की आभा से उसका मुखमण्डल दमक रहा था।

"सुमन......।" सूर्या उस अलौकिक रूप राशि की प्रत्यक्ष विग्रहवती सुमन को देखता रह गया। यद्यपि आयु में सुमन उससे एक-दो वर्ष बड़ी थी, किन्तु आयु का यह अन्तर उसके स्नेहिक और वधुभाव में बाधक नहीं था।

"हाँ सूर्या, हर नारी की लालसा होती है कि वह सुहागिन बने। मेरी भी लालसा है। मैं नहीं चाहती कि मैं बिना सुहाग के जोड़े से ही मृत्यु का आंलिगन करूँ। तुम भले ही इस रिश्ते को न मानो, लेकिन मैंने तुम्हारे नाम का सिन्दूर अपनी माँग में भर लिया है। जीवित रही तो याज्जीवन तुम्हारे नाम के सुहाग चिन्ह धारण करती रहूँगी, मर गई तो मेरी आत्मा को सुख मिलेगा कि मैं सुहागवती होकर मरी हूँ।" अवरुद्ध कण्ठ से कहते-कहते सुमन के नेत्रों से आँसुओं की निर्झरणी फूट पड़ी। उसने सूर्या के पैरों के पास बैठकर पत्नी के समान उसके चरण स्पर्श किए।

सूर्या की इच्छा हुई कि वह फूट-फूटकर रो उठे। काश वह अभिशप्त नहीं होता तो सुमन जैसी पत्नी पाकर स्वर्ग सुख से भी अधिक सुखी होता। उसने



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावातिरेक से सुमन को उठाकर अपने हृदय से लगा लिया। उसके मुख से कोई आवाज नहीं निकल सकी। सुमन, सूर्या के वक्ष से लग गई। उसे लग रहा था जैसे उसे संसार के सभी सुख एक साथ मिल गए हैं। वह संसार की सबसे अधिक भाग्यशाली वधु है। कुछ देर तक कक्ष में सन्नाटा छाया रहा। अन्ततः इस सन्नाटे को सूर्या ने ही भंग किया। हृदय से लगी सुमन की अभिरम्य देहयष्टि पर अत्यन्त स्नेह से हाथ फेरते हुए कहा—

"सुमन, आज और इसी क्षण से मैं तुम्हें अपनी अर्द्धांगनी के रूप में ग्रहण करता हूँ। एक न एक दिन मेरा अभिशाप अवश्य समाप्त होगा, मुझे विश्वास है।"

लेकिन सुमन.....आज......आज तुम अपनी जिद छोड़ दो। मैं अपनी सद्यवधु को इतनी शीघ्र नहीं खोना चाहता।" सूर्या की आँखों से आँसुओं की बारिश और तेज हुई।

"भारतीय नारी अपने सुहाग के लिए यमराज से भी टकरा गई थी। मेरा संकल्प है मैं स्वयं को मरने नहीं दूँगी। तुम देखना, मैं जीवन भर तुम्हारी अंकशायिनी बनकर सेवा करती रहूँगी।" सुमन के स्वर में दृढ़ संकल्प था।

"किन्तु वे कण्डोम तो मैंने जला दिए सुमन।" सूर्या ने मद्धिम स्वर में कहा।

"मैं जानती थी कि आप ऐसा ही करेंगे। इसलिए मैं अपने साथ अलग से कण्डोम लाई हूँ।" कहते हुए सुमन उससे पृथक हुई और अपने बैग से कण्डोम निकाल लिए।

"यह वधुवेष, चूड़ियाँ, साड़ी अचानक कहाँ से आईं सुमन।" उसने प्रश्न किया।

"मैं सारी सामग्री अपने बैग में ही लाई थी।" सुमन ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

"तुम्हारे माता-पिता ? क्या उन्हें पता है कि तुम क्या करने जा रही हो।" ?

"हाँ, मेरी माँ जानती है। उसने प्रसन्नता से अपनी बेटी की विदा की है। वह रात भर जागती हुई, मेरे फोन की प्रतीक्षा करेगी। अगर मैं अपने लक्ष्य में असफल हो जाऊँ तो तुम माँ को फोन पर अवश्य सूचित कर देना। फोन नम्बर बैग में रखी मेरी डायरी में है।" सुमन का स्वर फिर किंचित गम्भीर हुआ।

"तुम जीवित रहोगी प्रिये, अवश्य जीवित रहोगी।" सूर्या का धीर गम्भीर स्वर उसके कण्ठ से गुंजित हुआ।

"अब आओ, हमारी सुहाग सेज हम स्वयं ही सजाएँ।" सुमन प्रसन्नता से बाली।

"मेरे बैडरूम में तुम्हें अधिक ठण्ड लगेगी सुमन। इसलिए यही ड्राइंग रूम में........।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"नहीं, मैं आज ठण्ड, गर्मी और अन्य ऋतुओं से परे हूँ। आओ।" सुमन ने उसका हाथ पकड़ा।

"ऐसे नहीं ले जाऊँगा तुम्हें।" सूर्या ने चञ्चल स्वर में कहा।

"तो फिर कैसे ?" सुमन वक्र दृष्टि से देखती चकित स्वर में बोली।

"ऐसे.....देखो, ऐसे ले चलूँगा।" कहते हुए सूर्या ने लपककर सुमन की पुष्पभारित सुरभित देहयष्टि को गोद में उठा लिया और बैडरूम की ओर चल दिया।

नारी मृदुलता और पुरुष की कठोरता। प्रकृति और पुरुष का संमिलन, शिव और शक्ति का लयीकरण। सूर्या का पौरुष उद्दीप्त हुआ, सुमन का मृणालमय नारित्व खिलखिलाकर हँस उठा, पद्म दल खिल उठे। सुमन सम्पूर्णतः कुमारी थी। सूर्या को प्रथम बार ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह नारी शक्ति के सम्मुख वामन हो गया है।

कामोत्सव का समारंभ। सुमन निश्चित थी, जबकि सूर्या शंकित। अचानक सुमन के कण्ठ से चीख निकली। वह छटपटाने लगी। सूर्या के हाथ पैर ढीले पड़ गए।

उसकी क्रियाएँ रुक गईं, मन सोच कर स्तब्ध रह गया कि प्रथम चरण में ही सुमन ने महाप्रयाण की तैयारी कर ली। वह क्रियाहीन होकर निःस्तब्ध हो गया। सुमन, जिसने आंखें बन्द कर रखी थीं, आहिस्ता से खोलीं। उनमें मद का महासागर लहरा रहा था।

"क्या हुआ ? रुक क्यों गए। ?" लगभग कराहते हुए सुमन ने कहा।

"तुम.......तुम ठीक हो सुमन ?" मृत्यु के ताण्डव के स्थान पर मद की सरसता देख कर सूर्या जल्दी से बोला।

हां, ठीक तो हूँ।" कहते हुए सुमन का मोहक मुख वलय आरुणी हुआ।

"तो........तो तुम्हारी चीख ? यह कराह ?.,..... ।" सूर्या का अटकता स्वर था।

"पूरे बुद्धुराम हो। ये भी नहीं जानते कि मैं कुमारी हूँ। देखो तो बिस्तर पर।" कहते हुए सुमन ने अपना मुख उसके वक्ष में छिपाया।

सूर्या ने देखा, साफ-स्वच्छ सफेद, पलंग पर बिछी चादर पर खून के धब्बे थे। सुमन के अंग विशेष से भी रक्त रिस रहा था। सूर्या को स्वयं पर हँसी आ गई। इतनी छोटी सी बात वह क्यों नहीं समझ सका।

ज्यों-ज्यों सूर्या की क्रियाएँ बढ़ती जा रही थीं, सुमन के देह में आनन्द का सागर उमड़ता जा रहा था। सुमन के लोमरन्ध्रों के मुख जैसे खुल गए। उनमें से सुवास के समुद्र की तरंगें उछल-उछल कर बाहर आने लगीं। सुमन के कण्ठ से



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चीत्कार के मद्धिम-मद्धिम स्वर निकलने लगे। आनन्दातिरेक से कभी उसके कमल से नेत्र खुलते, कभी बन्द हो जाते।

और फिर सुमन को लगा, जैसे उसका सम्पूर्ण नारित्व पिघल गया है, वह सत्वरगति से नीचे की ओर भागता जा रहा है। उसकी धवल दन्तपक्तियाँ एक-दूसरे पर तेजी से जम गईं। नयनों से आन्दाश्रु बह उठे। उसने समस्त लज्जा को तिलांजली देकर सूर्या को अपनी मृणाल भुज लताओं में कस कर बाँध लिया। सारा संसार शून्यमय हो उठा।

अन्ततः वे क्षण भी आए, जब सूर्या ने अपने पौरुष तत्व की आहुति किसी स्त्री के कुण्ड में आहूत की। वह शिथिलगात्र होकर सुमन की सुकोमलता पर ढेर हो गया। सुमन के नेत्र बन्द थे।

कुछ क्षणों तक जगत से परे हुआ सूर्या निस्पद सा आंखें बन्द किए गहरी-गहरी सांसें लेता पड़ा रहा। इतनी तेज ठण्ड में भी दोनों के शरीर से पसीना बह रहा था। कुछ समय बाद सूर्या ने आंखें खोलीं।

सुमन की आंखें खुली-और स्थिर थीं। सूर्या सन्नाटे में आ गया। सूर्या ने उसके हृदय पर कान लगाया, नाड़ी देखी, श्वास का आरोह-अवरोह देखा और फूट-फूट कर रो पड़ा। पागलों की तरह सुमन के शरीर को चूमता सूर्या चिल्ला उठा—"नहीं.....नहीं सुमन। तुम मुझे इस प्रकार छोड़ कर नहीं जा सकतीं। मैं....... मैं भी जीवित नहीं रहूंगा। मैं भी............।"

सुमन खिलखिला कर हँस पड़ी। हँसते-हँसते ही बोली।

"अरे वाहरे पुरुष ! एक ही झटके में ही रुला दिया न ?"

"तुम........तुम जीवित हो.......। आँसुओं के मध्य अविश्वास से भर कर सूर्या बोल उठा।

"हां जीवित हूँ........सौ प्रतिशत। अच्छा अब मुझे मेरा काम करने दो।" कहते हुए सुमन उठी उसने कण्डोम को अंग से पृथक किया उसे थरमस जैसे एक पात्र में रख कर ढक्कन लगा दिया। सूर्या का वीर्य उसमें सुरक्षित हो गया।

"दूसरा कण्डोम निकालो न सुमन।" सुमन को अपने काम से निवृत देख सूर्या बोला सुमन ने हँस कर अंगूठा दिखाया और इन्कार में गर्दन हिलाती बोली—

"अब नहीं मिलेगा।" कहती हुए वह उसके पास से भाग कर पलंग के दूसरी ओर आ गई। लेकिन सूर्या..........। कुछ देर भाग-दौड़ हँसी-खिलखिलाहट चलती रही, अन्ततः सूर्या ने उसे पकड़ लिया। सुमन को एक और कण्डोम देना ही पड़ा।

एक बार फिर प्रकृति और पुरुष का युति उत्सव प्रारंभ हुआ। इस बार सूर्या के मन में कोई दुश्चिंता नहीं थी। कामकेलि के मध्य यकायक सूर्या चौंका, उसे लगा जैसे उन दोनों के अतिरिक्त कोई अन्य भी उस कक्ष में उपस्थित है। उसने



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी बाँयी ओर देखा, उसने साफ और स्पष्ट देखा, उसे पहचाना यह वही व्यक्ति था, जिसे सूपा की बलयकिरणों ने जला दिया था। (पाठक उस प्रसंग को देखें जब सूर्या को प्रथम बार भैरवी मिली थी। उस समय सूर्या नारी वैज्ञानिक वेणु के साथ उसके यौन संसर्ग की शिकार एक युवती लिलि की लाश को ठिकाने लगाने ले जा रहे थे। यह प्रसंग आरम्भिक पृष्ठों में लिखित है। देखें परिच्छेद तीन)

एक क्षण उस युवक की आकृति चमकी फिर लोप हो गई। कौन है यह युवक ? उसने सुमन को भी किसी की उपस्थिति की बात कही। उत्तर में सुमन ने टालते हुए कहा--

"अरे छोड़ो यह समय व्यर्थ विचारों का नहीं है। यहाँ कोई आ भी नहीं सकता। द्वार बन्द है ही। आपको भ्रम हुआ होगा।" सुमन सूर्या की काम-क्रियाओं में सहयोग देने लगी।

रात के दो बजे तक सूर्या और सुमन का यह महोत्सव चलता रहा। सुमन ने तीन बार सूर्या के शरीर का संग्रह कर अपने फलास्कनुमा पात्र में रख लिया। अचानक उसे कुछ स्मरण आया।

"ओह सूर्या........माँ......, कितनी बेताबी से माँ मेरी फोन कॉल की प्रतीक्षा कर रही होंगी।" सुमन फोन की ओर झपटी।

उसने नम्बर पुश किया। एक बार की बेल में ही फोन उठा लिया गया। उधर से सुमन की माँ चारुलता की आवाज आई। सुमन ने हर्षदायी आवाज में कहा--

"माँ यह मैं हूँ, सुमन। मैं ठीक हूँ, अपने कार्य में सफल हो चुकी हूँ। आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें।"

"थैंक्स गॉड। परमेश्वर सदैव तुम्हारा कल्याण करे बेटी। मैं प्रातः तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगी।" उधर से संतोष से भरी आवाज आई।

"ओ० के० माँ, मैं आठ बजे तक पहुँचूँगी।"

"ठीक है बेटी।" उधर से सम्पर्क कट हो गया।

सुमन ने फोन रखा ही था कि सूर्या के शयनकक्ष में लगी घन्टी घनघना उठी। यह घन्टी उस समय ही बजती थी, जब बाहर द्वार पर कोई खड़ा होता था। सुमन और सूर्या ने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने। सूर्या ने द्वार खोला तो चकित रह गया। द्वार पर विलि खड़ा था, उसके हाथों में एक 14-15 वर्षीय टीनऐजर बेहोश लड़की का नग्न प्रायः शरीर था।

□□



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूपा अपने कंट्रोल रूम में बेचैनी से टहल रहा था। वह बार-बार यंत्रों को देखता, स्विच्स को पुश करता। कभी किसी स्क्रीन को ऑफ कर देता, कभी किसी स्क्रीन को चालू कर देता। सूपा के चेहरे पर चिन्ता की रेखाएँ घनी होती ही जा रहीं थीं।

यह एक साउण्डप्रूफ रूम था। इस रूम में अनेक स्क्रीन और विविध संचारी यंत्र लगे हुए थे। इसी रूम से वह पूरे मिशन को कन्ट्रोल करता था। प्रत्येक वैज्ञानिक और मिशन से सम्बन्धित कार्यकर्ता का सम्बन्ध इस कंट्रोलरूम से था।

इस समय सूपा बार-बार सूर्या के 'हिमाश्रय' आवास पर फोकस कर रहा था, किन्तु लगभग आधे घन्टा पूर्व से हिमाश्रय से मिलने वाले सारे सिग्नल बन्द हो गए थे। यह लगभग 9·00 बजे रात से शुरू हुआ।

वह सूर्या को चिंतित बैठा देख रहा था कि अचानक उसका सारा बंगला अन्धेरे में डूब गया। उसी अन्धेरे में ही सूपा को लगा था कि सूर्या बाहर आया था और किसी काली छाया अचानक ही उस पर कूदी थी। इसके कुछ क्षणों पश्चात् ही उस बंगले का सम्पर्क कन्ट्रोलरूम से कट गया।

कुछ समय पश्चात् पुनः सम्पर्क जुड़ा जरूर लेकिन उसे सूर्या दिखाई नहीं दिया। बंगले में लाइट आ गई थी। इस समय सुमन को भी वहाँ पहुंच जाना चाहिए था, किन्तु वहाँ उसे सुमन भी दिखाई नहीं दी।

उसे सूर्या के नौकर भी दिखाई दिए। सूपा ने दयाल को भी चाय बना कर ड्राइंगरूम में ले जाते देखा। फिर उसने चाय के मगों को हवा में झूलते देखा, फिर उसने उन्हें तिरछा भी होते देखा। सूपा ने अनुमान लगाया कि सुमन आयंकर आ गई होगी। सूर्या और सुमन दोनों चाय पी रहे होंगे। किन्तु वे स्क्रीन पर क्यों नहीं आ रहे ? संभवतः सुमन और सूर्या के शरीर में लगे यंत्र खराब हो गए हैं।

सूपा ने प्रत्येक वैज्ञानिक के शरीर में बाल जैसा बारीक एक ऐसा यंत्र फिट कर रखा था, जिसके विषय में स्वयं उस व्यक्ति को भी पता नहीं था कि उसके शरीर में कोई यंत्र लगा है।

वास्तव में सूपा ने कायतन्त्र की कोषिकाएँ और रहस्यमय ग्रन्थियों के संयोग से उसने व्यक्ति के शरीर में ही वह यंत्र विकसित कर दिया था। यह विकास नवग्रहों की रश्मियों के सहयोग से विकसित किया गया था। सूपा ने अपनी प्रयोगशाला के प्रत्येक कक्ष में, गोपनीय रूप में ऐसे संग्राहक यंत्र लगा रखे थे, जो सौर रश्मियों को एब्जार्व कर तदानुसार व्यक्ति में उस अदृश्य यंत्र का व्यक्ति के देह में स्वतः ही निर्माण या विकास कर देती थी। सूपा के चिन्तन और शोध के अनुसार यह यंत्र जब तक नवग्रह सौरमण्डल में हैं, तब तक वे यंत्र असफल नहीं होने चाहिए।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किन्तु सूर्या के मामले में यह बात सत्य सिद्ध नहीं हो रही थी। सूर्या एक बार और भी स्क्रीन से लगभग 4 घन्टे गायब रहा था। और अब यह दूसरा अवसर था, जब सूर्या का सम्बन्ध स्क्रीन स कटा था। इस बार उसी का सम्बन्ध ही नहीं बल्कि उसके पास बैठी संभवतः सुमन का सम्बन्ध भी सौर स्क्रीन से कटा था।

सूपा ने लगभग ग्यारह बजे रात्रि में सामान्य फोन से सूर्या के बंगले पर सम्पर्क करना चाहा पर आश्चर्य ! सम्पर्क फोन से भी नहीं हो सका। उसे हर बार फोन 'बिजी' मिला। अन्ततः उसने मादाम सिल्वा से सम्पर्क किया। उसे आवश्यक निर्देश देकर निश्चिंत हो, सूपा विश्राम करने चला गया।

सिल्वा ने सूपा की इच्छानुसार विलि को हिमाश्रय में पहुंचने का आदेश दिया। शरीर के नाम पर विलि मात्र हड्डियों का ढांचा था। अतः उसके इस ढांचे में सूपा द्वारा नवग्रहों की रश्मियों से विकसित यंत्र था ही नहीं। फिर भी सूपा ने उसकी (विलि) की खोपड़ी को ऑपरेट कर उसमें अति संवेदनशील यंत्र रख दिया था।

हालांकि विलि को ऐसे किसी यंत्र की आवश्यकता नहीं थी। वह मादाम सिल्वा की तांत्रिक शक्तियों का एक भाग अथवा उसका गुलाम था। अगर विलि को कोई श्रेष्ठ स्तरीय तांत्रिक मिल जाए और उसे अपने वश में कर ले तो यह यंत्र सारी सूचनाएँ प्रेषित करता रहेगा। यही सोच कर सूपा ने विलि की खोपड़ी में लगभग एक छोटे से बटन (जो शर्ट में लगता है) के बराबर का तीव्र संवेदी यंत्र फिट कर दिया था।

सिल्वा ने विलि को अपनी पद्धति से आदेश दिया था। वह स्वयं अपने निवास जो पूरी तरह श्मशान के वातावरण में था, से निकल कर बाहर तक आई। विलि ने इस समय ढीला-ढाला पेन्ट और शर्ट पहन रखी थी। उसके पैरों में विशेष प्रकार के जूते थे, जिनके तश्मे पैरों की हड्डियों से कसे हुए थे। विलि के सिर पर फेल्ट हेट था जिसके अन्धेरे ने उसके कंकाली चेहरे को पूरी तरह ढक रखा था। हां उसकी आंखें अवश्य चमक रही थीं। जैसे उसके नयन कोटरों में लाल-लाल बल्ब लगे हों।

विलि ने आराम से कार का दरवाजा खोला और शान से कार की ड्रायविंग सीट पर बैठ कर कार स्टार्ट की और कार चल पड़ी सूर्या के 'हिमाश्रय' की ओर।

विलि के अपने जीवन में जो आदतें थीं, अब भी यथावत थीं। जैसे वह सिगरेट और पान खाने का शौकीन था। उसने अपने जीवनकाल में कभी शराब नहीं पी थी। सड़क के किनारे विलि ने एक पान की दुकान खुली देखी। दरअसल वह हाइवे पर बना ढाबा था, जिस पर ट्रक ड्राइवर खाना खाते थे। इसी ढाबे से लगी हुई थी, पान की गुमटी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलि का पैर ब्रेक पर गया। तेजी से भागती कार के टायर चीख कर सड़क पर घिसते हुए रुक गए। ढाबे पर बैठे-खाना खाते ड्रायवरों का ध्यान उस ओर सहज ही चला गया।

विलि ने अपने हाथों में काले रंग के दस्ताने पहने फिर कार की पिछली सीट पर पड़े काले ओवरकोट को उठाकर पहना और शान से अकड़ता हुआ बाहर निकला। दरअसल विलि को स्वतन्त्र रूप से इस प्रकार कहीं आने-जाने का अवसर कम ही मिलता था, किन्तु जैसे ही उसे ऐसा अवसर मिलता उसकी पुरानी स्मृतियाँ अंगड़ाई लेकर जाग उठती थीं और वह अपने आपको रोक नहीं पाता था। विलि के जीवनकाल में उसका दूसरा शौक था नई-नई खूबसूरत युवतियों से मित्रता।

विलि पान की गुमटी पर पहुंचा। ऊंचे लम्बे कद, के विलि ने अपने ओवरकोट के कॉलर उठा रखे थे। इसलिए उसका हड्डियों वाला चेहरा पूरी तरह ढंक सा गया था। एक विचित्र व्यक्ति को गुमटी वाले ने देखा, तो कांप सा गया। फिर उसने घर्घराता स्वर सुना।

"एक पैकेट विल्स और माचिस भी।"

पान वाले ने चौंक कर उसकी ओर देखा, फिर सहमते हुए उसने विल्स सिगरेट का पैकेट और माचिस निकालकर सामने रख दी। विलि ने उन्हें अपने ओवरकोट की जेब के हवाले किया और पलट कर तेजी से चल दिया। गुमटी वाला बौखला कर चिल्लाया—"साब पैसे......। पैसे तो देकर जाओ।" किन्तु विलि ने सुना ही नहीं। वह बराबर लम्बे-लम्बे डग भरता अपनी कार की ओर बढ़ता गया।

पान वाला दुकान से कूद कर जब तक विलि के पास पहुंचता, विलि अंधेरे में आ गया। उसने जान-बूझ कर अंधेरे में अपनी गाड़ी खड़ी की थी। भागकर दुकानदार उसके आगे पहुंचा।

"साब पैसे।" दुकानदार के स्वर में कठोरता आई।

उत्तर में विलि ने अपने ओवरकोट के खड़े कालर गिरा कर अपना फेल्ट हेट भी निकाल लिया। काले कपड़ों के ऊपर रखा नरमुण्ड, आंखों की जगह दो गड्ढों से निकलता लाल-लाल प्रकाश। दुकानदार ने तेज चीख मारी और जहां खड़ा था, वहीं गिर गया।

जब तक ढाबे पर खाना खा रहे, लोग दौड़ कर दुकानदार के पास आते, विलि कार में बैठ कर कार स्टार्ट कर चुका था। उसका हेट दोबारा अपने सिर पर था। उसके मुँह के छिद्र में जलती हुई सिगरेट फंसी थी, जिससे धुँए की कुण्डली ऊपर की ओर उठ रही थी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुनसान सड़क पर विलि मस्ती से कार चलाता जा रहा था। अचानक सड़क के बाँयी ओर से एक 14-15 वर्षीय किशोरी जो लगभग नग्न अवस्था में थी, अपने दोनों हाथ उठाए चीखती हुई सड़क पर आ गई। विलि ने तत्काल ब्रेक लगाए। कार उससे कुछ ही दूरी पर घिसटती रुक गई।

"प्लीज........प्लीज.........मुझे बचाइए।" वह भय से पत्ते की तरह कांपती, रोती बोली।

उसी समय चार हट्टे-कट्टे भीमकाय व्यक्ति, जिस ओर से लड़की आई थी, दौड़ते हुए आए। उन्हें आते देख विलि ने कार का दरवाजा खोल दिया। लड़की तुरन्त कार में घुस गई। अगर लड़की की चेतना पर भय हॉवी नहीं होता तो वह अवश्य देखती कि ड्राइविंग सीट पर बैठे-बैठे विलि का हाथ लम्बा होता गया और पिछली सीट के द्वार के पुश बटन पर जा लगा था, जिससे कार का दरवाजा खुला।

चारों गुण्डे कार में आराम से बैठे विलि के पास आ गए। उनमें से एक ने अपने हाथ में दबे रिवाल्वर को लहराया और दहाड़ भरी आवाज में चिल्लाया—"ए, लड़की को बाहर कर। वर्ना खुपड़िया में सुराख कर दूंगा।"

विलि ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"अबे बोलता है या करूं खलास।" दूसरे ने चाकू निकाल कर चमकाते हुए कहा।

"अरे यार, साले को बाहर खींच लो।" तीसरे ने सुझाव दिया।

अचानक विलि का शरीर सिकुड़ा। उसकी लम्बाई घटती गई। कुछ क्षणों में ही उसका आकार घट कर छोटा सा हो गया।

"अबे.......अ.....बे यह क्या हो रहा है। ?" चारों गुण्डे भयभीत होकर चीखे ! और फिर...........जिस जगह विलि का छोटा सा शरीर बैठा था, वहाँ से यकायक धुएँ की मोटी सी लकीर निकली और टेड़ी होकर कार की विण्डो से बाहर निकल गई। अब जिस जगह विलि बैठा था, वहाँ कोई नहीं था। पिछली सीट पर बैठी लड़की आंखें फाड़े ड्रायविंग सीट को देख रही थी, जहां विलि अब से कुछ क्षण पहले बैठा था।

लड़की भयमिश्रित आश्चर्य से देख रही थी। सड़क पर धुएँ की लकीर बाँस के लट्ठे के समान स्थिर खड़ी थी। चारों गुण्डे भयभीत होकर चीखते हुए भागे। अचानक धुएँ की लकीर सड़क से उठी, आंतरिक्ष में लम्बी हुई और विलि के रूप में प्रकट हो गई।

उड़ता हुआ विलि सड़क पर प्राण छोड़ कर भागते गुण्डों के सिरों पर पहुंचा। वह नीचे झुका, एक गुण्डे की गर्दन पकड़ कर उसे उठाया। प्राणों की



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हानि से भयभीत, आतंकित होकर कारूणिक चीख उसके कण्ठ से निकली। विलि ने उसे आंतरिक्ष में घुमाया और सड़क पर फेंक दिया। ऊंचाई से गिरने पर उसके सिर के टुकड़े-टुकड़े होकर सड़क पर गिरे और अचेत हो गए। उधर कार में वह लड़की भी विलि के कारनामे से डर गई! उसकी आंखें बन्द हुईं और वह भी सीट पर बेहोश होकर लुढ़क गई।

विलि ने इत्मीनान से ओवरकोट की जेब में हाथ डाला, उसमें से सिगरेट और माचिस निकाली फिर सिगरेट को मुँह में दबा कर जलाया। धुंआ उड़ाता विलि ड्रायविंग सीट पर आकर बैठा।

"बेबी, तुमको किधर जाना है ?"

किन्तु पिछली सीट से उसे कोई उत्तर नहीं मिला। विलि ने मुड़कर देखा, लड़की बेहोश होकर सीट पर पड़ी थी। विलि ने कार स्टार्ट की और सूर्या के आवास हिमाश्रय की ओर चल पड़ा।

दो बजे विलि की गाड़ी हिमाश्रय के गेट पर रुकी। मेनगेट पर ताला लगा था। विलि ने ड्रायविंग सीट पर बैठे-बैठे ही हाथ आगे बढ़ाया। हाथ गेट के ऊपर गया फिर नीचे की ओर झुका और भीतर की ओर लगे मजबूत ताले पर जम गया। एक क्षण पश्चात् ही ताला उसके हाथ में था। हाथ ऊपर आया, उसने गेट को धक्का दिया, द्वार खुलता चला गया। विलि ने कार गेट से निकाल कर पार्किंग में पार्क कर दी फिर पिछली सीट से बेहोश लड़की को उठाया। उसके अण्डरगारमेन्ट्स और कम्मर के ऊपर के कपड़े फट कर तार-तार हुए झूल रहे थे। विलि फूल सी कोमल, लड़की को अपने हाथों में उठाए-उठाए सूर्या के शयनकक्ष के द्वार पर पहुंचा और कुछ खड़ा रहा। उस समय भी लड़की उसके हाथों में थी।

सूर्या ने द्वार खोला और विलि के हाथों में बेहोश लड़की को देख कर चौंका।

"मि. सूर्या, यह बेबी हमको सड़क पर मिला। इसको गुण्डा लोग या तो किडनेप करना चाहता था या रेप। हम तरस खाकर इसको बचाया। जिधर भी इसका हॉउस हो उधर पहुंचाना तुम्हारा काम है। हम नहीं जानता ये बेबी किसका है ? कौन है ?" विलि का घर्घराता स्वर निकला।

"लेकिन मि. विलि, आप इस समय यहाँ कैसे ?" सूर्या के पीछे से सुमन अपने वस्त्रों को व्यवस्थित करती निकल कर बोली।

"मादाम, हमको मादाम सिल्वा ने आर्डर दिया कि हम मि. सूर्या के हॉउस पर जाकर यह एड्रेस करें कि इस टाइम सूर्या के हॉउस पर कौन-कौन हैं ? और क्या वर्क हो रहा है। क्योंकि आप लोगों का हैडक्वाटर से पूरी तरह सम्पर्क कट चुका है। ए ग्रेट सूपा मि. सूर्या की कुशलता के लिए चिंतित हैं। अगर आपका फोन राइट हो गया हो तो आप ग्रेट सूपा को अपना गुड न्यूज दे दें।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"हमारा सम्पर्क हैडक्वाटर से समाप्त हो गया ? यह तो असंभव बात है सूर्या ! हमारा फोन भी खराब नहीं है।" सुमन ने आश्चर्य से कहा।

"हां, यह आश्चर्य की बात है।" कहते हुए सूर्या विलि से उन्मुख हो बोला–

"मि. विलि, इस लड़की को आप ड्राइंगरूम के सोफे पर लिटा दें। और हां सुमन इस लड़की पर कोई चादर डाल दो और इसे होश में लाने का प्रयास करो। मैं तब तक फादर को अपनी और तुम्हारी कुशलता-सफलता की सूचना फोन से दे दूं।"

सूर्या ने फोन पर नम्बर पुश किए। घन्टी गई। इस नम्बर पर की गई कॉल सीधे सूपा के पास पहुंचती थी। कुछ देर तक घन्टी बजती रही फिर उधर से सूपा की आवाज उभरी।

"होलीफादर.......मैं सूर्या।"

"यस माय चाइल्ड ! कैसे हो ? अचानक तुम्हारा सम्पर्क कट गया। उस समय बंगले की लाइट चली गई थी और मुझे लगा था जैसे तुम पर किसी ने आक्रमण किया हो।" सूपा ने फोन पर कहा।

"यस होली फादर...............।" सूर्या ने सूपा को पूरी रिपोर्ट दे दी। उसने सुमन के प्रयोग की सफलता का वर्णन भी किया और विलि के आगमन का समाचार भी। यह मानकर कि बेहोश लड़की से उन सबका कोई सम्बन्ध नहीं है, उसने जिक्र नहीं किया।

"बधाई मेरे बच्चे। कुछ हद तक तुम्हारा अभिशाप कम तो हुआ। अब उसका निदान पूरी तरह हो सकेगा। अब तुम आराम करो और विलि को वापस भेज दो। कल प्रयोगशाला में तुम्हारा परीक्षण होगा तब ही पता चलेगा कि हैडक्वाटर से तुम्हारा और मिस आयंकर का सम्पर्क कैसे समाप्त हो गया।" उधर से फोन कट गया।

सूर्या ड्राइंगरूम में आया। दुग्ध-धवल प्रकाश में उसने लड़की के मुख को देखा तो चौंक उठा। टीनएजर लड़की की मुखाकृति पूरी तरह श्री माँ से मिलती थी।

"मि. विलि, अब तुम जा सकते हो।" सूर्या ने कहा।

"वेल मि. सूर्या। क्या आप हमको एक कप कॉफी नहीं पिला सकते।"

विलि के स्वर में हसरत थी।

"मिस आयंकर तुम.......।" सूर्या सुमन से कुछ कहना ही चाहता था कि सुमन उसकी बात काटकर मुस्कराती हुई जल्दी से बोली।

"नो......नो मिस आयंकर......। अब मिसेज सूर्या कहो।"

"ओह सॉरी मेम साहब।" सूर्या हँस पड़ा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"क्या आप दोनों ने मैरिज बना लिया मि. सूर्या।" विलि ने प्रश्न किया।

"यस विलि, हम दोनों अब 'दो बॉडीस वन सोल' हैं। सुमन ने हँसते हुए विलि के स्वर-शैली की नकल करते हुए कहा।

"ओह, यह बहुत हैप्पी न्यूज है। हमारा कॉन्ग्रेच्यूलेशन स्वीकार करो मि. सूर्या एण्ड मिसेस सुमन सूर्या।" विलि खड़खड़ करती आवाज़ में बोला।

सुमन कॉफी बनाने किचिन में चली गई। सूर्या लड़की के समीप बैठा उसके करतलों पर ठण्डे पानी की मालिश करने लगा। तीनों ने बैठकर कॉफी पी। उसके बाद विलि चला गया। उसके जाते ही सूर्या बोला—"सुमन वे फोटोग्राफ्स लाओ जो तुम्हारे यंत्र ने बनाए हैं।"

सुमन ने सारे फोटोग्राफ उसे ला दिए। सूर्या ने एक फोटो छाँटकर निकाला यह श्री माँ का चित्र था। यह चित्र उसके जन्म के समय का था। चित्र को गौर से देखते हुए सूर्या ने कहा।

"देखो सुमन.....देखो तो.....। यह चित्र इस लड़की का है या मुझे जन्म देती हुई श्री माँ का ?

"सचमुच यह हैरत की बात है।" सुमन भी चकित हुई।

सुमन ने लड़की का चैकअप किया, शरीर की सारी क्रियाएँ सामान्य थीं, मात्र भय के कारण वह अचेत हो गई थी। अचानक सूर्या को कुछ स्मरण आया। उसने अपनी डायरी में श्री माँ के आश्रम का फोन नम्बर खोजा। हालाँकि इस समय श्री माँ विश्राम कर रही होंगी, फिर भी संभवतः मिल जाए।

सूर्या ने नम्बर लगाया। उधर से तुरन्त फोन उठाया गया। सूर्या ने स्वयं का नाम बताकर श्री माँ से इसी समय बात करने का निवेदन किया। उधर से आश्रम की ही कोई महिला बोल रही थी। उसने फोन पर कहा।

"श्रीमान् सूर्या, आप अपना नम्बर दे दें। श्री माँ का आदेश था कि जब भी आपका कोई फोन, सन्देश आए, उन्हें किसी भी स्थिति में तुरन्त सूचित किया जाए। हम इस ओर से फोन लगाकर आपसे चर्चा कर लेंगे। इस समय श्री माँ विश्राम में हैं, उन्हें आपका सन्देश इसी समय दिया जा रहा है। आप 10 मिनट प्रतीक्षा करें।"

दस मिनट भी व्यतीत नहीं हुए, फोन की घण्टी बजी। सूर्या ने फोन उठाया, उधर निवृत्ति देवी कह रही थीं।

"कौन सूर्या ?"

"हाँ माँ, सूर्या बोल रहा हूँ। इतनी रात गए आपको कष्ट देने के लिए क्षमा करें। यहाँ मेरे पास एक 14-15 वर्षीय लड़की अचेत अवस्था में पड़ी है। वह



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्णरूपेण आपसे साम्य रखती है। ऐसा लगता है, जैसे मैं आपकी किशोर अवस्था का दर्शन कर रहा होऊँ।"

"तेरा पता बता बेटा। मैं इसी समय आ रही हूँ।" श्री माँ की आवाज आई।

"आप व्यर्थ परेशान होंगी माँ, मैं ही लेकर उसे आ जाता हूँ।"

"नहीं, मैं स्वयं आ रही हूँ, पता बता।"

सूर्या ने पता बताया। उधर से फोन डिस्कनेक्ट हो गया। सूर्या का हृदय प्रसन्नता से भर उठा। उसकी जन्मदात्री आ रही है, इस अवसर पर जब उसका परिणय हाल ही में सम्पन्न हुआ है।

"सुमन, माँ आ रही हैं।" प्रसन्नता से सूर्या का स्वर काँप रहा था।

"ओह, यह तो हमारा सौभाग्य है।" कहते हुए सुमन उठी।

"मैं तब तक तैयार हो लूँ। तुम भी ये लिपिस्टिक के निशान मिटा लो। हाथ-पैर धोलो।" कहते हुए सुमन बाथरूम में चली गई। वहाँ से लौटकर उसने हल्का-सा श्रृंगार किया। फिर लड़की के पास स्वयं बैठ गई और सूर्या को बाथरूम में भेज दिया।

सूर्या के बाथरूम में जाने के एकाध मिनट पश्चात् ही लड़की को होश आ गया। उसने आँखें खोलीं। संभवतः उसकी स्मृति में गुण्डों का आतंक और विलि के कारनामे आए। वह भयभीत अवस्था में उठकर बैठ गई।

"डरने की कोई बात नहीं है, बेबी। तुम सुरक्षित हो।" कहते हुए सुमन ने स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरा।

"मैं कहाँ हूँ ? आप कौन हैं दीदी ?" उसने क्षीण स्वर में कहा।

"तुम हमारे घर में हो बेबी। तुम्हें जल्दी ही तुम्हारे पापा-मम्मी के पास भेज दिया जाएगा। तुम्हारा क्या नाम है ?" सुमन ने प्यार से पूछा।

"मेरा नाम संसृति है। संसृति शुक्ला। मेरे पापा यहाँ के पुलिस अधीक्षक हैं। मैं कक्षा दस की छात्रा हूँ। सन्ध्या समय स्कूल से वापसी के समय कुछ गुण्डों ने मेरा अपहरण कर लिया। हम दस लड़कियाँ थीं। हमें बेहोश कर दिया गया था। जब होश आया तो हमने एक मकान में स्वयं को पाया। मैं साहस कर वहाँ से भागने में सफल हो गई किन्तु शेष मेरी हम उम्र लड़कियाँ अभी भी उनके कब्जे में हैं।"

"अब तुम पूरी तरह सुरक्षित हो।" सुमन ने संसृति को पुनः विश्वास दिलाया।

"अरे, तुम्हें होश आ गया बेबी।" यह थी सूर्या की आवाज जो बाथरूम से आ गया था।

"सुमन मैं गेट पर जा रहा हूँ। गेट बन्द होगा।" उसने सुमन से कहा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"विलि आया था, तब किसने गेट खोला था ? किसी ने नहीं न ! उसने गेट का ताला तक तोड़ दिया होगा, भले ही आप देख लें।" सुमन ने विश्वासित स्वर में कहा।

सूर्या बाहर चला गया। संसृति ने बाथरूम जाने की इच्छा प्रकट की। सुमन सोचने लगी, संसृति के लिए महिलोपयोगी वस्त्रों की क्या व्यवस्था करे ? क्योंकि संसृति के वस्त्र-परिधान छिन्न-छिन्न हो चुके थे।

लगभग पाँच मिनट बाद ही सूर्या के साथ श्री माँ अर्थात् निवृत्ति देवी ने ड्राइंग रूम में प्रवेश किया। सुमन ने सिर पर आंचल को व्यवस्थित किया और श्री माँ के चरण स्पर्श किए। सुमन को सद्यवंधु के रूप में सज्जित देख निवृत्ति देवी के ओठों पर पवित्र मुस्कान खेलने लगी।

"सदा सुखी रहो, सुहागिन रहो, दीर्घजीवी हो, पुत्रवती हो।" निवृत्ति देवी ने आशीष प्रदान की फिर सस्मित बोली।

"सूर्या की अंक शायनी हो न ?"

"जी माँ।" सुमन के अधर काँपे।

"परिणाम पर सोच लिया था न ?" निवृत्ति देवी के कथन का आशय सूर्या की अभिशप्तता की ओर था।

"आज हमारी मधुचन्द्र राका थी मांजी।" वह सानन्द सम्पन्न हुई। मुस्कराती सुमन की दृष्टि नीचे झुक गई, मुख श्री पर लज्जा की लालिमा का गहन मण्डन हो गया।

"अरे हाँ, वह लड़की कहाँ है ?" निवृत्ति देवी सोफे पर बैठती हुई बोली।

"वह बाथरूम में है मम्मी।" सुमन ने निवृत्ति देवी को नया संबोधन दिया। शायद जीवन में प्रथम बार निवृत्ति देवी ने यह संबोधन सुना था। उनका हृदय प्रसन्नता से ओत-प्रोत हो उठा।

कुछ देर बाद ऊनी चादर में अपने शरीर को छिपाए संसृति बाथरूम से वापस आई। निवृत्ति देवी आश्चर्य से देखती रह गई। उन्हें लग रहा था कि मानो अपने आपकी तरुणाई अवस्था के प्रथम चरण को देख रही है। संसृति स्वयं भी ठगी-सी खड़ी रह गई। उसके सामने ठीक उसी की रूपराशि और समानता लिए निवृत्ति देवी खड़ी थी। योग, संयम और साधना तथा ब्रह्मचर्य के कारण तीस वर्ष से अधिक लगती ही नहीं थी। अतः दोनों के देहयष्टि और रूप में कोई विशेष अंतर दिखाई नहीं देता था।

निवृत्ति देवी ने स्नेह से संसृति का माथा चूमा, उसे आशीष दी। संसृति अभिभूत हो उठी। निवृत्ति देवी के चरण स्पर्श करती हुई बालिका बोली।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"आंटी जी मेरे पापा आपसे मिलकर बहुत प्रसन्न होंगे, मम्मी भी चकित हो जाएँगी। प्लीज मेरे साथ चलिए।"

"संसृति के पिता यहाँ के पुलिस अधीक्षक हैं मम्मी। वी. एस. शुक्ल, यही नाम है बेबी तुम्हारे पिताजी का ?" प्रथम वाक्य निवृत्ति देवी से सम्बोधित था तो सुमन का द्वितीय प्रश्नवाचक वाक्य संसृति के लिए।

"जी दीदी।" संसृति ने स्वीकार किया।

प्रातः चार बजने वाले थे। निर्णय हुआ कि सूर्या, सुमन और निवृत्ति देवी संसृति को उसके घर छोड़ने जाएँगे। सूर्या ने संसृति से वी. एस. शुक्ल का आवासीय फोन नम्बर ज्ञात कर फोन लगाया। उधर से किसी पुरुष का स्वर उभरा।

"क्या मि. शुक्ला इस समय घर हैं ?

"जी नहीं, वे इस समय हैडक्वाटर में हैं। आप कौन सज्जन बोल रहे हैं ?"

"मैं बेबी संसृति से सम्बन्धित सूचना देना चाहता हूँ। कृपया मि. शुक्ला की पत्नी से बात कराएँ।"

"एक मिनट होल्ड करें।" उधर से तत्काल कहा गया।

सूर्या ने फोन संसृति को दिया। एक मिनट के पहले ही उधर से श्रीमती शुक्ल का बेताबी से भरा स्वर उभरा।

"हैलो, मम्मी यह मैं हूँ संसृति। मैं ठीक हूँ, आप घबराएँ नहीं।"

"तुम कहाँ से बोल रही हो बेटी। हम तुम्हारे लिए सन्ध्या से ही परेशान हैं। अपना पता बताओ, मैं आ रही हूँ।"

"नो मम्मी, यहाँ का पता तो मुझे ज्ञात नहीं है, लेकिन हम लोग जल्दी ही आ रहे हैं। साथ ही आप लोगों के लिए मैं एक सरप्राइज भी प्रजेन्ट करूँगी।" संसृति ने कहा और फोन रख दिया।

लगभग प्रातः 4·30 पर निवृत्ति देवी सहित सभी वी. एस. शुक्ल के शासकीय आवास पहुँचे। शुक्ल बंगले के बाहर ही बेचैनी से घूम रहे थे। उनके आसपास 7-8 पुलिस मेन भी सजग और चुस्त खड़े थे।

एक साथ दो कारें बंगले के सामने रुकीं। एक कार सिद्धाश्रम की थी, जिसमें निवृत्ति देवी के साथ संसृति थी। दूसरी कार में सूर्या और सुमन थे।

संसृति को कार से उतरते देख शुक्ल तेजी से लपके। दौड़कर उन्होंने चादर में लिपटी अपनी बेटी को गोद में उठा लिया। वे उसे पागलों की तरह चूमते हुए बोले—

"मेरी बेटी.....। तू ठीक तो है न ? तू कहाँ थी बेटी ?"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"ओह पापा, छोड़िए न। जो लोग मुझे यहाँ लाए हैं, उनका आभार तो मानिए, उन्हें धन्यवाद भी नहीं कहेंगे ?" संसृति ने शुक्ल की गोद में मचलते हुए कहा। तब तक सूर्या और सुमन भी गाड़ी से उतरकर शुक्ल के समीप आ गए थे किन्तु निवृत्ति देवी कार में ही बैठी थीं।

"पापा इस गाड़ी में मैं आपके लिए 'सरप्राइज' लेकर आई हूँ। आप दीदी और इन्हें लेकर अन्दर चलें, मैं उन्हें लेकर आती हूँ।" संसृति ने उनके कान के पास मुँह ले जाकर कहा।

"कौन है बेटी इस गाड़ी में ? मैं खुद उनका धन्यवाद कर घर में ले जाने का आमंत्रण देता हूँ।"

"नो पापा, सिर्फ मैं।"

"ओह.....बहुत हठी लड़की है तू। जा इन्हें शीघ्र ला।" कहते हुए शुक्ल सुमन और सूर्या की ओर उन्मुख हुए। सूर्या को देखकर शुक्ल मन ही मन चौंके किन्तु उन्होंने कोई भाव अपने चेहरे पर नहीं आने दिया। विनम्र स्वर में उन्होंने कहा।

"आइए, एक-एक चाय। कॉफी मेरे घर की भी स्वीकार करें।"

"श्री माँ भी साथ हैं, उनसे आग्रह करें।" सूर्या ने धीमे स्वर में कार की ओर संकेत कर कहा।

"श्री माँ ? सिद्ध-योग आश्रम की अधिष्ठात्री ?" साश्चर्य शुक्ल के मुख से निकला।

"जी हाँ।"

"उन्हें संसृति ला रही है।" शुक्ल ने कहा। उन्होंने श्री माँ के विषय में अपने अधीनस्थों से सुन रखा था। वे स्वयं भी आश्रम जाना चाहते थे किन्तु समयाभाव वश नहीं जा सके थे। सूर्या और सुमन शुक्ल के साथ बंगले के प्रवेश द्वार की ओर बढ़ गए।

"पधारें आंटी।" संसृति ने कार का फाटक खोलते हुए कहा।

निवृत्ति देवी जैसे नींद से जागीं। संसृति ने देखा, उन्होंने उनके पद्मायत नेत्रों में आए आँसुओं को अपनी श्वेत-उज्ज्वल साड़ी के छोर से पोंछा। फिर अवरुद्ध कण्ठ से कहा—

"मैं चलती हूँ, बिटिया।"

"नहीं आंटी, यह तो संभव ही नहीं। मैं आपको लिए बिना नहीं जाऊँगी। मैंने पापा से वादा किया है।" संसृति के मुख पर दृढ़ निश्चय था।

अन्ततः निवृत्ति देवी को गाड़ी से उतरना ही पड़ा। उन्होंने बाहर कदम रखा ही था कि सामने से आ रही सुन्दर स्त्री को देखकर संसृति ने उसकी ओर संकेत कर कहा—



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"मेरी माँ।"

अन्दर पहुँचकर शुक्ल ने अपनी पत्नी से श्री माँ के बाहर होने का समाचार और उनके पास ही संसृति की उपस्थिति की सूचना दी थी। ममता को प्रतीक्षा सहन नहीं होती। श्रीमती शुक्ल तेजी से बाहर की ओर भागीं। श्री माँ के चरण स्पर्श करते हुए संसृति की जनयत्री ने अपनी बेटी को गले लगा लिया फिर अश्रु भरे स्वर में प्रार्थना की।

"श्री माँ यह हमारा सौभाग्य है कि आपकी चरणरज यहाँ पड़ी। हमारे घर को भी पवित्र करें।" श्रीमती शुक्ल चकित दृष्टि से बार-बार श्री माँ की तपःमण्डित मुखच्छवि की श्री शोभा देख रही थी। कितना साम्य है, संसृति और श्री माँ में।"

निवृत्ति देवी धीमे-धीमे कदम रखती, बंगले में प्रवेश कर गई। ड्राइंग रूम में उनके प्रवेश करते ही शुक्ल आश्चर्य से, स्तंभित देखते रह गए। संसृति मन्द-मन्द मुस्काती निवृत्ति देवी के पास खड़ी थी।

अचानक शुक्ल की आँखों से अश्रु भर उठे। वे विकल स्वर में लगभग चीख उठे।

"दीदी.....।"

निवृत्ति देवी के नयन कोरों में भी अश्रुनीर झलका। उन्होंने आगे बढ़कर शुक्ल को अपने गले से लगा लिया।

"पगले, रोता क्यों है ? संयोग और वियोग तो इस संसार की रीति है। इस संसार के आवर्त चक्र की घूर्मणा में कौन किससे, कब मिल जाए ? कब बिछुड़ जाए ? किसी को पता नहीं।" निवृत्ति देवी ने शुक्ल के सिर के बालों पर हाथ फेरते हुए वाष्पित कण्ठ से कहा।

संसृति, उसकी माँ शिवानी और सुमन, सूर्या भी आश्चर्य से उछल पड़े। बिन्दुशेखर अभी भी अपनी दीदी के गले से लगे हुए थे। शिवानी ने सुना था कि उसकी बड़ी ननद योग साधिका थी और संसार के वैभव को तिलांजली देकर कहीं अज्ञात स्थान पर चली गई है। लेकिन संसृति को अपनी बुआ के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं था, यह भी नहीं कि उसकी कोई बुआ भी है।

शिवानी ने सिर पर आंचल डालकर निवृत्ति देवी के पुनः चरण स्पर्श किए। सूर्या और सुमन ने जान-बूझकर नहीं कहा कि श्री माँ के पुत्र-पुत्रवधु हैं।

निवृत्ति देवी ने पारिवारिक समाचार पूछे। गाँव के आश्रम और स्वामीजी के विषय में भी जानकारियाँ लीं। शुक्ल ने बताया—

"गाँव में अमन-चैन नहीं है। स्वामीजी का आश्रम अब अधिक विस्तृत हो गया है। जिला कलेक्टर ने राज्य शासन के निर्देशानुसार मुख्य सड़क से आश्रम तक



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पक्की सड़क बनवा दी है। उनके शिष्यों में प्रदेश के मुख्यमंत्री से लेकर जनसामान्य भी शामिल हैं।"

गाँव के लोगों की जानकारी देते हुए शुक्ल ने कहा—"जो पवित्रता अब से 20-22 वर्ष पहले थी, अब नहीं है। अब अधिकांश लोग मदिरामयी हो गए हैं, एक-दूसरे से लड़ाई, विद्वेष होते हैं। यह उस समय से शुरू हुआ जब से स्थानीय पूर्व सामंत नाहरसिंह की स्टेट पर आगरा के किसी गाँव से आया शिवराम वर्मा।

वर्मा ने गाँव के युवकों को माँस-मदिरा का शौकीन बना दिया। गाँव के 6-7 नवयुवक जो सवर्ण घरानों के थे, सरेआम उत्पात मचाते घूमते हैं। सामंत नाहरसिंह की प्रशासन पर मजबूत पकड़ है। वर्मा के कारण आए दिन अपराध होना आम बात है।"

अपने परिवार के विषय में शुक्ल ने बताया—"दादाजी की किसी हत्यारे ने हत्या की थी और वह हत्यारा पारिवारिक परम्परा में आ रहे सभी ग्रन्थों को भी ले गया। समझा जाता है कि स्वामी जी के पास कुछ माह रहे एक विलियम नाम के उनके शिष्य ने यह क्रूर कर्म किया था। मैं आज तक उस हत्यारे को खोज रहा हूँ।"

पिताजी स्वस्थ हैं, वे अपना अधिकांश समय भगवत पूजा में ही बिताते हैं, शेष समय वे खेतों की ओर जाकर अपना मन बहलाते हैं। माँ भी स्वस्थ है। मैं समय-समय पर जब भी गाँव जाता हूँ, माँ आपकी स्मृति में आँसू बहाती मिलती है। कहती है—"लालू अब तो बहुत बड़ा अफसर बन गया है क्या अपनी बड़ी बहन को नहीं ढूँढ़ सकता।" सच कहूँ दीदी मैंने आपको हर जगह खोजा। मैं प्रतिवर्ष एक माह का अवकाश लेकर हिमालय जाता हूँ तो मात्र आपको खोजने। आपके जाने के बाद से आज तक मेरी कलाई सूनी है।" कहते हुए बिन्दुशेखर की आँखों में पुनः आँसू आए।

"ऐसा मोह क्यों लालू ? सत्य को क्यों नहीं समझता पगले।" श्री माँ का स्नेहिल स्वर निकला। उनकी आँखों से चेहरे पर पवित्रता की दिव्य आभा थी।

आठ बजे तक परस्पर चर्चा होती रही। सुमन की माँ प्रतीक्षारत होगी, ऐसा सोचकर सूर्या और सुमन ने अनुमति माँगी। उनके जाने के बाद भी श्री माँ 2-3 घण्टे और वहाँ पारिवारिक वातावरण में रहीं।

संसृति सोच रही थी जिस काले ओवरकोट वाले विचित्र रहस्यमय व्यक्ति ने उसे बचाया, वह कौन था ?

□□



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संसृति की सूचनाओं पर पुलिस प्रशासन निरन्तर उन स्थानों पर खाक छानता रहा, जहाँ-जहाँ अपनी स्मृतियों के आधार पर संसृति ने स्थानों की निशानदेही की थी। इस पूरे क्षेत्र में फार्म हाउस थे। इन्हीं में एक फार्म हाउस सेठ ज़ौहरीमल का भी था। पुलिस के सारे प्रयास विफल रहे और शेष नौ कुवाँरी लड़कियों का कहीं सुराग भी नहीं मिला।

बिन्दुशेखर शुक्ल पर अखबार वाले अंगुलियाँ उठाते हुए लिख रहे थे। पुलिस अधीक्षक की ही लड़की कैसे वापस आ गई ? शुक्ल परेशान हो उठे। तीन रातें और दो दिन। उन्होंने एक घन्टे भी विश्राम नहीं किया था।

दो दिन बाद वे प्रातः चाय पर अखबार देख रहे थे कि मुख्य पृष्ठ पर नजर पड़ते ही चौकें। समाचार का शीर्षक था—

'रहस्यमय ढंग से गायब और रहस्यमय ढंग से वापसी' नीचे विस्तार से समाचार था। अचानक रहस्यमय ढंग से गायब नौ लड़कियाँ एक-एक कर कुल आधा घन्टे के अन्दर अपने-अपने घरों में पहुँच गईं। सर्वप्रथम जिला न्यायिक अधिकारी सी. एल. गौतम की पुत्री यशोधरा वापस घर पहुँची तो गौतम परिवार के अधिकांश सदस्य सो रहे थे। सी. एल. गौतम उस रात घर नहीं थे। उसके बाद से आधा घन्टे के अन्दर सभी लड़कियाँ घरों में पहुँच चुकी थीं। आश्चर्य की बात तो यह कि नौ ही लड़कियाँ अधिकारियों की थीं किन्तु उनकी वापसी पर एक भी स्थान से पुलिस के पास से सूचना नहीं आई। संयोगवश एक समाचार पत्र के रिर्पोटर की नजर में उनमें एक लड़की पर पड़ गई, जो गेट से अपने घर में घुसती ही जा रही थी।

रिपोर्टर व्यक्तिगत रूप से उसे जानता था। वह उस समय कार्यालय से मोटर सायकिल पर अपने घर की ओर जा रहा था कि गेट पर लापता लड़की को देख कर रुक गया। उसने लड़की को वहीं रोककर गेटमेन के सामने ही इन्टरव्यू ले डाला। लड़की के कथनानुसार सभी नौ लड़कियाँ अपने-अपने घरों को लौट आई थीं। एक लड़की संसृति के विषय में उसने अनविज्ञता प्रकट की।

रिपोर्टर ने उन सभी जगहों पर फोन किए। प्रत्येक स्थान से उसे लड़की की वापसी की सूचना मिली। एक साथ उसी अखबार के नौ रिपोर्टर और छायाकार तीर की तेजी से छूटे और प्रत्येक लड़की का इन्टरव्यू रात में ही ले लिया।

हरेक लड़की ने एक ही बात बताई। वे सब नौ लड़कियों ने अपने परिवारजनों को 'सडन सरप्राइज' देने के लिए एक विचित्र योजना बनाई। इस योजना के अन्तर्गत हम सबने यहाँ से 200 किमी दूर एक पिकनिक स्पॉट पर होटल बुक कराया और एक शाम चुपके से चली गईं। पिकनिक पर खूब मजा आया, सैर सपाटा हुआ। दो दिन बाद हम सब ने अपने पारिवारिकजनों की



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घबराहट और चिंता को ध्यान में रखते हुए वापस लौटने का निर्णय लिया। फलस्वरूप लगभग रात को बारह बजे वापस आ गईं।

अखबार के सम्पादक ने अंक रोक कर, पृथक से एक पृष्ठ और लगाया, उसमें नौ लड़कियों के चित्र, उनसे वार्तालाप छापा गया था। लड़कियों के कथनानुसार संसृति उनके साथ थी ही नहीं, जबकि संसृति के कथनानुसार उन सभी लड़कियों के साथ थी और उनका अपहरण किया गया है।

शुक्ल ने तत्क्षण फोन कर अपने अधीनस्थ D. S. P. राणा देव कुमार सिंह को सभी लड़कियों के बयान लेने का आदेश दिया। राणा देवकुमार सिंह ने तत्क्षण कार्यवाही शुरू कर दी। सन्ध्या तक सारी लड़कियों के बयान आ चुके थे। सारी लड़कियों ने एक ही बात कही, जो अखबार में छप चुकी थी। राणा को सन्देह हुआ कि सभी लड़कियाँ झूठ बोल रही हैं। वह जन सामान्य लोगों की लड़कियाँ होतीं तो राणा कभी का उनसे सच उगलवा देता किन्तु विवशता थी, वह उन पर अपना पुलिस रवैया नहीं अपना सकता था। उसने बाद में जांच की पूरी रिपोर्ट और सन्देह भी बिन्दुशेखर शुक्ला के सम्मुख प्रस्तुत किया। पूरी रिपोर्ट का अध्ययन कर बिन्दुशेखर को भी राणा की बात से सहमत होना पड़ा। बिन्दुशेखर ने उस होटल से भी फोन द्वारा सम्पर्क कराया, जिसमें नौ लड़कियाँ तीन रात और दो दिन रही थीं। होटल से जो जानकारी मिली, उससे लड़कियों की बात प्रमाणित होती थी, अर्थात् लड़कियों ने पूर्व में उस होटल को बुक कराया था और उसमें रही भी थीं।

अगर लड़कियों की बात सत्य है तो संसृति झूँठ बोल रही है। संसृति को झूँठ बोलने से क्या लाभ है ? बिन्दुशेखर ने संसृति को भी सन्देह के दायरे में रख कर सोचना प्रारम्भ किया। उनके चिन्तन में सूर्या भी आया। सूर्या को देखकर बिन्दुशेखर चौंके थे। चौंकने का कारण था कि बिन्दुशेखर ने पुलिस रिकॉर्ड में खतरनाक गुण्डों की जमात में स्थान देकर उसका चित्र लगाया गया था। रिकार्ड के अनुसार सूर्या किसी मामले में पकड़ा नहीं गया था, किन्तु अनेक अपराध उसके इर्द-गिर्द घूमते थे।

कम आयु के अत्यन्त आकर्षक मेधावी नवयुवक का आतंक शहर के सभी होटलों में और अण्डरवर्ल्ड के लोगों में था। ऐसा उल्लेख भी पुलिस रिकॉर्ड में था। बिन्दुशेखर के सन्देह की सुई सूर्या पर ही नहीं सुमन और अन्त में श्रीमाँ जो उसकी सगी बहन थी, पर भी घूमी।

कुछ दिनों पूर्व जब वह यहाँ ज्वाइन हुआ ही था तब गृह मंत्रालय से 'सिद्धयोग आश्रम' की गतिविधियों की जांच से सम्बन्धित आदेश उसको प्राप्त हुआ था। आदेश में उल्लेख था कि इतने बड़े आश्रम की व्यवस्था की पूर्ति के लिए



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्रम के पास आय के क्या स्रोत हैं ? आश्रम में दान स्वीकार नहीं किया जाता किन्तु प्रतिदिन 200 से 300 तक व्यक्ति भोजन करते हैं। आश्रम में पाँच विदेशी गाड़ियाँ हैं। उसकी भव्य इमारत भी करोड़ों रुपयों की है। इतनी विपुल राशि सिद्ध योग आश्रम की अधिष्ठात्री श्रीमाँ के पास कैसे ? कहाँ से आई ?

बिन्दुशेखर ने अत्यन्त स्नेह से अपनी पुत्री संसृति से पुनः पूछताछ की विशेष कर काले कोट वाले (विलि) के विषय में उसने संसृति से अनेक प्रश्न पूछे। सूर्या और सुमन के कथनानुसार उन्हें संसृति अचेत अवस्था में उनके लॉन में मिली थी। रात को दो बजे सूर्या अपनी पत्नि को छोड़ कर लॉन में क्यों गया था ? श्रीमाँ रात्रि विश्राम को छोड़कर क्यों सूर्या के साथ थीं ?

बिन्दुशेखर को वह प्रसंग स्मरण आया, जिसमें विलियम और एक अन्य विदेशी के साथ उसकी बहन गाँव छोड़कर भागी थी। बमुश्किल अपनी इज्जत को उसके पिता ने झूठ बोल-बोल कर बचाई थी किन्तु गाँव के अधिकांश लोग अब भी यही मानते थे कि पश्यन्ती विदेशियों के साथ भाग गई थी। क्या उसकी सहोदरी भगनि का सम्बन्ध किसी अपराधी संगठन से हो गया है ? बिन्दुशेखर का सन्देह बलवान होता जा रहा था।

उन्होंने उसी समय डी. एस. पी. राणा देवकुमार सिंह को बुलाया और अपने नए विचारों से अवगत कराते हुए उन्होंने सूर्या, सुमन और अखण्ड (सिद्ध) ध्यानयोग आश्रम की प्रत्येक गतिविधियों के सूक्ष्म निरीक्षण का आदेश दिया। हालांकि पुलिस की दृष्टि में अपहरण काण्ड दफ्तर दाखिल होकर समाप्त किया ज़ा चुका था फिर भी गोपनीय ढंग से इसकी पड़ताल प्रारम्भ करने का आदेश पाकर राणा खुश भी था। उसे भी लग रहा था कि केस खत्म नहीं हुआ है बल्कि और अधिक रहस्यात्मक हो गया है। अगर श्रीमाँ, सुमन और सूर्या का कहीं भी फाल्ट दिखाई देता है तो यौवन के विकास पथ पर निरन्तर अग्रसर होती बिन्दुशेखर की पुत्री भी कठघरे में खड़ी होगी किन्तु इसकी चिन्ता बिन्दुशेखर को नहीं थी।

यह संयोग की ही बात थी कि जिस समय बिन्दुशेखर और राणा के मध्य यह ग़ंभीर चर्चा चल रही थी, अनायास ही संसृति के कानों में अपना नाम पड़ा। उसने उत्सुकता से अपने पिता और राणा के मध्य हुई पूरी चर्चा को सुना और लगा कि वह स्वयं भी सन्देह के घेरे में आ गई है। उसे अपने मददगार सूर्या और सुमन तथा श्रीमाँ पर सन्देहास्पद आरोपों को सुन कर मानसिक दुःख हुआ।

संसृति सोचने लगी। उन नौ लड़कियों ने झूँठ क्यों बोला कि संसृति उनके साथ नहीं थी। संसृति की स्मृति में लड़कियों में से एक उसकी घनिष्ठ सहेली शर्मिष्ठा चौहान का स्मरण हुआ। शर्मिष्ठा पूरी बात जानती होगी, क्योंकि वह उन्हीं लड़कियों के साथ होगी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूसरे ही दिन संसृति ने शर्मिष्ठा को पकड़ा। शर्मिष्ठा काफी खुश थी। शर्मिष्ठा ही क्यों शेष आठ लड़कियाँ भी खिली-खिली थीं। संसृति ने अनुभव किया कि शर्मिष्ठा में कुछ परिवर्तन आ गया है। उसका लावण्य पूर्व से कहीं अधिक स्निग्ध हो गया था। उसका स्तनमण्डल भी पूर्णतः विकसित होकर अत्यधिक आकर्षित हो चुका था। उसकी हीरक आँखों में मद भी छलछला उठा था।

संसृति उसे उद्यान के एकान्त में ले गई फिर 'पिकनिक' की मौज-मस्ती का जिक्र करते हुए बड़ी चालाकी से संसृति ने पवित्रासेन का संदर्भ देते हुए कहा। "यार देख, मुझसे कुछ मत छिपा। मुझे सब पता है, पवित्रा ने मुझे सब कुछ बता दिया।"

"क्या ?" शर्मिष्ठा बुरी तरह चौंक उठी—"साली गद्दार।" शर्मिष्ठा के मुख से निकला। "उसने वादाखिलाफी की। अगर यह बात किसी दूसरे से कह देती तो ......? .......तो हम सबकी पोल खुल जाती।" शर्मिष्ठा ने गहरी सांस ली।

"तू तो मेरी पक्की सहेली है यार। मैं तेरे मुँह से ही सुनना चाहती हूँ।" प्रत्यक्ष में झूमते हुए संसृति ने हंस कर कहा।

"ठीक है, जब तुझे पता चल ही गया है तो क्या छिपाना ? चल उधर घनी बेलों के उस पार। वहाँ बैठ कर बातें करेंगे।"

संसृति और शर्मिष्ठा, ऐसे स्थान पर पहुँचीं जहाँ घने बेल-बूटे थे। अगर उनमें बैठ जाएँ तो सामान्यतः बैठने वालों पर किसी की नजर नहीं पड़ती थी।

"अब बता।" किताबों को एक ओर रख हरी मखमली दूवी पर बैठती हुई संसृति ने प्यार और अपनत्व से कहा। शर्मिष्ठा उससे सट कर बैठ गई। उसके गोरे-गुलाबी मुखड़े पर मस्ती का लेपन हुआ, आँखों में नशा छा गया।

"बहुत मजा आया यार। तेरे भाग जाने के बाद हम सबको एक-एक गोली (टेवलेट) दी गई। डर के मारे हम सबने तुरन्त खाली, क्योंकि तत्काल गोली खाने का निर्देश दिया गया था। गोली चॉकलेट से भी अधिक स्वादिष्ट थी।

"हम सबको नींद आ गई। जब नींद खुली तो हम सभी ने एक आलीशान भवन के बड़े हॉल में पाया। वहाँ सभी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। हमारी स्थिति में एक विशेष बात यह थी कि हम सभी ने अपने आपको नग्न पाया था। वहाँ कुछ ऐसा कपड़ा भी नहीं था कि जिससे नग्नता को ढका जा सके। यहाँ तक कि हॉल में बिछे डबल बैण्ड्स के बिस्तरों पर भी चादर या रजाई नहीं थी। तकिया भी डनलप में सैट थे। दरवाजे पर भी कोई पर्दा नहीं था।

कुछ समय तक तो हम अपने हाथों से अपने नंगेपन को ढकती रहीं। पर कब तक ऐसा करती रहतीं। उस समय दिन था या रात, कुछ पता नहीं लगा। हाँ सभी को भूख अवश्य लगी हुई थी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ देर बाद द्वार खुला। खाने की ट्राली को धकाती हुई एक खूबसूरत जवान महिला उस द्वार से आई। वह भी पूरी तरह जन्मजात नग्न थी। उसके बाद दो लड़कियाँ और आईं। वे भी नग्न थीं। हम सब लड़कियाँ आश्चर्य में थीं कि हम सब कहाँ आ गईं, जहाँ सब नंगी ही नंगी हैं।

वे तीनों नग्न लड़कियाँ बहुत खुश दिखाई दे रही थीं। तीनों की आयु बीस से पच्चीस वर्ष के मध्य होगी। दो लड़कियों ने डायनिंग टेबिल पर खाना लगाना शुरू किया। गर्म-गर्म खाने की सुगन्ध से हमारी भूख और तेज हो गई। हम सब अपनी लाज-शर्म भूल कर डायनिंग मेज की ओर ललचाई नजरों से देखने लगीं। हमारी भूख का उन्हें भी पता था।

"कम.....कम..... ब्युटी एण्ड लकी गर्ल्स, वेलकम।" उनमें से एक ने हम सबको बुलाया। हम सभी भुक्खड़ों की भांति खाने पर टूट पड़ीं। क्या बताऊं यार उससे अच्छा खाना उसके पहले कभी खाया ही नहीं था, ऐसा स्वाद पहले कभी मिला भी नहीं।"

खाना खा चुकने के बाद उनमें से एक लड़की ने कहा।

"स्वीट गर्ल्स। तुम सब बेहद भाग्यशाली हो। समझ लो तुम अब जीते जी स्वर्ग के द्वार पर खड़ी हो। किसी लड़की के भयभीत होने की जरूरत नहीं। अभी तुम्हें यहाँ जबरदस्ती किडनेपिंग से लाया गया है, लेकिन विश्वास करो, अगली बार तुम खुद व खुद यहाँ आने के लिए लालयित हो उठोगी। यहाँ मजा है मस्ती है, नशा है और जिन्दगी का सबसे बड़ा आनन्द सागर है। इस समुद्र में जिसने एक बार भी गोता लगा लिया, उसके जन्म लेने का उद्देश्य पूरा हो गया। हम औरतें सिर्फ उसी के लिए इस दुनियाँ में आती हैं और उसे पाना ही हमारा लक्ष्य है। यहाँ तुम पूरी तरह स्वतन्त्र हो, मौज-मस्ती करो। अभी तुम्हें यह हॉल कैदखाना लग रहा होगा लेकिन यही हॉल तुम्हें दुनिया का सबसे अच्छा स्थान भी लगेगा। तुम यहाँ से कभी जाने की इच्छा नहीं करोगी। तुम्हारी दुनिया, तुम्हारे माँ-बाप, भाई-बहन, सखी-सहेलियाँ, यहाँ तक कि तुम स्वयं अपने आपको भूल जाओगी। यहाँ तुमको कोई डराएगा नहीं, कोई रेप नहीं करेगा। नया संसार तुम सबको मुबारक हो।" उस सर्वांग अनावृत लड़की ने अपनी बात समाप्त की और वे तीनों द्वार से निकल गईं।

नौ लड़कियाँ, मादरजाद नंगी। हम सभी की उम्र पन्द्रह को पार कर चुकी थी। शीना और ईशा दोनों बीस-बीस वर्ष की हैं, उनके सभी अंग पूरी तरह विकसित हो चुके हैं। मैं सोलह की और शेष लड़कियाँ सत्रह से उन्नीस के बीच में थीं। पता नहीं कुछ खाने में मिला था या कुछ और बात। हम सबमें एक अजीब प्रकार का आनन्द छाता जा रहा था। कामांगों में स्फुरन भी होने लगा था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अचानक फिर द्वार खुला। वही तीनों लड़कियाँ पूर्ववत् स्थिति में पुनः आईं। इस बार उनके हाथों में 10 × 10 का एक वीजन पर्दा, वी. सी. आर. इत्यादि सामग्री थी। उन्होंने एक स्टेण्ड पर विजन का पर्दा लगाया और वी. सी. आर. के तार उसमें फिट कर दिए।

हम सब लड़कियाँ प्रसन्न थीं कि चलो फिल्म का मृजा तो लेंगी ही।

"स्वीट गर्ल्स। हमारी जानकारी के अनुसार तुम सब अभी क्वाँरी हो। तुमने अभी यौन सुख की कल्पनाएँ ही की होंगी। इस महासुख और परम-आनन्द की प्राप्ति के क्या-क्या ढंग हैं ? इसकी सुखकारी झलक आपको अभी देखने का सौभाग्य मिलेगा। मेरा दावा है, तुम सब सीत्कार करने लगोगी। तुम्हारे शरीर से आनन्द की सरसता की नदियाँ फूट पड़ेंगी।" कहती हुई उस लड़की ने वी. सी. आर. ऑन कर दिया।"

"सच तो यह था संसृति हम सभी के शरीरों में वैसे ही आनन्द की लहरें उमड़ रही थीं। टी. वी. के बड़े पर्दे पर रंगीन फिल्म के पहले दृश्य से ही लड़कियों के शरीर जल उठे। वे तीनों लड़कियाँ टी. वी. ऑन के बाद चली गईं।

ब्लू फिल्म का एक-एक दृश्य स्त्री पुरुषों की मिथुन क्रियाओं का जीवंत चित्रण था। मजे की बात तो यह कि फिल्म के नायक-नायिका टीन एजर ऐज के ही थे। चार नायक और चार नायिकाएँ। कभी एक नायक के साथ चार नायिकाएँ होतीं तो कभी नायिकाओं के नग्न तन को पशुओं की तरह चाटते नायक युवक। आधे घन्टे में ही सारी लड़कियाँ सेक्स भावना से सरावोर हो उठीं। हमारी लाज शर्म सब कुछ समाप्त हो गई। यौनाग्नि से जलते हुए शीना और ईशा ने तो एक दूसरे को चूमना-चाटना शुरू कर दिया। उन्हें ऐसा करते देख सभी लड़कियों ने अपने पार्टनर को चुन लिया, जो लड़की ही थी मात्र मैं ही शेष रह गई।

कामाग्नि की महाज्वाला तो मुझमें भी जल रही थी। आठों लड़कियाँ सेक्स क्रियाओं में रत थीं, किन्तु मैं अकेली ही थी। मैं कुछ समय तक तो स्वयं पर नियंत्रण करती रही फिर मेरा वश नहीं रहा। अन्ततः मैं स्वयं अपने हाथों से अपने अंगों को मसलने लगी।

हम नौ ही लड़कियों के कण्ठों से सीत्कार निकलने लगे। हममें से प्रत्येक लड़की एक-एक पुरुष की इच्छा कर रही थी। अचानक दरवाजा खुला और मुस्कराता हुआ एक व्यक्ति उस हॉल में आ गया। वह नग्न नहीं होकर कपड़े पहने हुए था।

जैसे वह हमें अक्षय निधि के रूप में मिला था। सारी लड़कियाँ उससे लिपटने लगीं। हम सबने उसके कपड़े तार-तार कर एक मिनट में ही फाड़ डाले। अब पूर्णतः नग्न था। हमने सबने मिलकर उसे पटक दिया और ब्लू फिल्म की



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तरह उससे सेक्स क्रियाएँ करने लगीं। वह एक अकेला और हम नौ। उसने हम सब को ऊपर से हटाया और एक-एक कर सभी को सन्तुष्टि देने का प्रस्ताव किया, किन्तु प्रश्न था कि सर्वप्रथम उसके साथ कौन सहवास सुख भोगेगी ?

अन्ततः लाटरी सिस्टम पर हम सभी लड़कियाँ सहमत हो गईं। कागज पर नाम लिख कर गोलियाँ डाली गईं। और फिर नौ गोलियों में से एक गोली उसी ने उठाई सर्वप्रथम मेरा नाम निकला। मुझे जैसे वरदान मिला। उसके बराबर जीवन में मुझे कभी प्रसन्नता नहीं हुई।

"सच संसृति मुझे अपने भाग्य पर गर्व हुआ।" कहते-कहते शर्मिष्ठा उत्तेजित हो उठी। उसका गोरा मुखड़ा उत्तेजना से लाल हो उठा। श्वास फूलने लगी। उसने संसृति को बाहें भर कर चूम लिया। स्वयं संसृति भी अपने आप में तीव्र उत्तेजना का अनुभव कर रही थी। ऐसी उत्तेजना वह जीवन में प्रथम बार अनुभव कर रही थी। शर्मिष्ठा ने स्कर्ट हटा कर संसृति की स्निग्ध जंगा पर हाथ रखा और फिर अपने अनुभव के कथाक्रम को आगे बढ़ाती हुई बोली।

"उसने मुझे बाँहों में भर कर उठाया और बैड पर लिटा कर मेरे अंग का निरीक्षण किया और बोला "बेबी, तुम पूरी तरह क्वारी हो। मुझे तुम्हारी ही आवश्यकता थी।" कह कर उसने एक स्विच दबाया। तुरन्त बेल बजी, तत्काल उन तीनों में से एक नग्न लड़की लहराकर चलती हुई आई। उसके हाथ में दो कांच की छोटी-छोटी शीशी थीं, जिसमें भिन्न-भिन्न रंगों की टेब्लेट्स दिखाई पड़ रही थीं।

उस व्यक्ति ने एक श्वेतरंग की गोली शीशी से निकाली और नीले रंग की गोली मुझे खाने को दी। "इसको खाने से तुम्हें सेक्स का सच्चा आनन्द मिलेगा।" फिर उस लड़की ने अपने पास की शीशी से एक पीले रंग की टेब्लेट निकाली और मेरी जंघाओं को विस्तीर्ण कर जननांग में वह गोली रख दी। दस सेकन्ड ही में मुझे लगा कि मेरे अंग का मुख कुछ खुल गया है। इसके पश्चात् उसने मिथुन क्रियाएँ शुरू कीं।

आरम्भ में मुझे बहुत कष्ट हुआ, मेरे शरीर से रक्त भी निकला किन्तु उसके बाद में आनन्द के महान क्षणों को भोगने लगी। कुछ समय में ही मेरा ज्वर उतर गया। मैं चरम शिखर का स्पर्श करती पूर्ण संतुष्टि के सोपान को पा चुकी थी। उसने अपना पौरुष तत्व भी मेरे शरीर को अर्पित किया।

इसके पश्चात्.....ठीक मेरी ही तरह एक-एक सभी लड़कियाँ आती गईं। उसने शीना और ईशा का परीक्षण कर कहा कि वे कुमारी नहीं रहीं। इसके पूर्व भी वे किसी से सम्भोग सुख भोग चुकी हैं। इसलिए उन्हें सबसे अंत में........।" बाद में शीना ने बताया कि 17-18 वर्षीय घर के नौकर से उसने दो-तीन बार सहवास



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किया था, इसी प्रकार ईशा ने भी अधेड़ पुरुष जिसे वह अंकल कहती है, जो उसके पिता का मित्र भी है, के साथ संभोग सुख लूटा है।

हम सभी लड़कियाँ निरन्तर दो दिन-दो रातें उस व्यक्ति के साथ सहवास सुख भोगती रहीं। प्रत्येक लड़की ने सात-आठ बार उससे मिथुन कर्म कराया। हम समाज, संसार सब कुछ भूल गई थीं। हम उस हॉल से कभी बाहर नहीं आना चाहती थीं किन्तु हम सभी लड़कियों को जबरदस्ती वापस भेजा गया।

हममें से प्रत्येक को यह कहा गया कि अगर किसी ने यहाँ का विवरण बताया तो..............। प्रमाण रूप में हमें एक वीडियो कैसेट दिखाया गया जिसमें हमारी प्रत्येक सेक्स क्रिया का विहंगम चित्रांकन किया गया था। किसी से कहने पर उन्हीं वीडियो कैसेट्स को माता-पिता और स्कूल प्राचार्या को तो दिखाया ही जाएगा, साथ ही उन कैसेट्स के ब्लू प्रिन्ट के फोटोग्राफ्स पोस्टर्स के रूप में छपवा कर शहर में वितरित कर दिए जाएँगे। और अगर हमने उसके आदेशों का पालन किया तो प्रति माह में दो बार हमें वह सहवास सुख देगा। इसके ऐवज में हमें प्रतिमाह में दो बार दो-दो कुमारी लड़कियों को अपने साथ ले जाना होगा। सच कहती हूँ संसृति अब मैं उस सुख के लिए पागल सी हो गई हूँ। घर आने के दो दिन बाद ही मैंने एक लड़के को फंसा कर संभोग कराया किन्तु वह व्यर्थ। उस व्यक्ति के सामने वह लड़का नथिंग है यार। बिल्कुल बेकार, किसी काम का नहीं।" इस बार तू चलना मेरे साथ। तू भी यही कहेगी कि जीवन का वास्तविक आनन्द वही है।"

संसृति का सन्देह सत्य में बदल गया। इस सेक्स काण्ड को सुनकर वह दहल उठी। एक बार तो उसके मन में भी लालच जागा कि वह भी 'इस दुनिया' को देखे, किन्तु अन्तः संस्कारों ने उसे धिक्कारा।

"बोल न संसृति ? चलेगी न मेरे साथ।" शर्मिष्ठा ने उसकी जंघा से आगे हाथ बढ़ाते हुए कहा। शर्मिष्ठा का स्पर्श उसे भला लग रहा था। उसने रोमांचित होते हुए प्रश्न किया।

"लेकिन, हमें कहाँ जाना होगा ? कब जाना होगा।"

"अगले सप्ताह। यहाँ से दिलबाग गार्डन चलेंगे, समय वही सन्ध्या काल। वहाँ से हमें उस व्यक्ति की कार ले जाएगी। शेष लड़कियों को भी अलग स्थान दिए हैं।"

"रात भर गायब रहने पर परिवार सदस्यों को लौटकर क्या बताएँगे।" संसृति का पुनः प्रश्न हुआ।

"अरे यार, उसकी क्या चिन्ता। वो सब व्यवस्था भी हो जाएगी।" कहते हुए शर्मिष्ठा ने उसे आलिंगन में लिया।

"अरे छोड़, कोई आ रहा है।" संसृति ने स्वयं को मुक्त करते हुए कहा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सचमुच दो लड़कियाँ धीरे-धीरे चलती, बातें करती आ रही थीं। संसृति अपना कार्य पूरा कर चुकी थी। उसने आज जासूसी का प्रयोगात्मक अनुभव किया था। एक छोटा-सा बाकमेन के बराबर आकार का शक्तिशाली टेप रिकॉर्डर ऑन की हुई अवस्था में उसके हैगिंग बैग में पड़ा हुआ था। शर्मिष्ठा ने जो भी बताया उसमें टेप हो चुका था। वे दोनों उठीं और क्लास रूम की ओर चल दीं।

शर्मिष्ठा सोच रही थी, उसे एक साथी मिल गई, एक और शेष है, जबकि संसृति कुछ निर्णय नहीं कर पा रही थी। उसके प्रति उसके पापा का सन्देह दूर करने के लिए यह कैसेट पर्याप्त था। इससे अनेक लड़कियाँ वासना के दल-दल में फँसने से बच सकती हैं। सूर्या अंकल, सुमन आंटी और बुआ के प्रति, उसके पिता ने जो सन्देह पाल रखा है, वह भी समाप्त हो सकता है। अगर वह कैसेट नहीं दे तो वह भी उस सुख-आनन्द से परिचित हो सकती है जिसका वर्णन शर्मिष्ठा ने किया और भोगा भी।

□□

सन्ध्या की अरुणिम आभा में संभूति और प्रमदा श्री माँ के अखण्ड योग आश्रम के विशेष कक्ष में बैठी थीं। प्रमदा ने अपने जीवन के गोपनीय पन्नों को भी श्री माँ के सामने खोल दिया था। उसने सेठ जौहरीमल द्वारा स्वयं से की गई मिथुन क्रियाओं को भी निःसंकोच कह दिया था और अब वर्तमान में उत्पन्न भीषण कामेच्छाओं के विषय में कहते हुए प्रमदा रो पड़ी। वह कह रही थी।

"श्री माँ, अब मैं शुभ सात्विक वातावरण में रह रही हूँ। मुझे संभूति जैसी बहन और पीयूष जैसा भाई मिला है। वहाँ कोई वासनात्मक वातावरण नहीं, फिर भी मेरे शरीर में कामदेव का दावानल दहक रहा है। हर क्षण, हर पल मेरा मन पुरुष लालसा से तड़फता है। मुझे भय है कि मैं ऐसे संवेगों को न सहकर दोबारा सेठ जौहरीमल के सामीप्य लाभ के लिए न चल दूँ। ऐसा हुआ तो निश्चय ही मेरी मृत्यु तो होगी ही, वैरोचनी की परोक्ष पराजय भी होगी। मैं चाहती हूँ माँ आप मुझे कोई यौगिक क्रिया प्रदान करें, जिससे मुझमें उठ रहा काम का तूफान क्षीण हो सके।"

"ध्यान, एकमेव ध्यान ही ऐसी क्रिया है प्रमदा बहन। अपनी कुण्डलनी शक्ति का स्मरण करो। उसकी जाग्रति का उद्योग करो। उसी से ज्ञान का तृतीय नेत्र खुलता है। इसी ज्ञानाग्नि के स्फारन से कामदेव भस्म होता है।"

"लेकिन उस कुण्डलनी शक्ति की जागृति कैसे होती है ? मैं कैसे उस शक्ति को जगाऊं ?" प्रमदा विवश स्वर में बोली।

"ध्यान से, मात्र ध्यान से ही सब कुछ सम्भव होता है। यद्यपि ध्यान बिना



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीक्षा के कुछ विशेष असर नहीं करता तथापि कुछ न होने से कुछ तो अच्छा है ही।" श्री माँ ने प्रमदा को समझाया।

"नहीं श्री माँ, मात्र इतने से ही मेरा कल्याण सम्भव नहीं। आप कृपा कर मुझे ध्यान की दीक्षा प्रदान करें।" अश्रुपूरित नयनों से प्रमदा श्री माँ के चरणों में गिर पड़ी।

"उठो प्रमदा। इस तरह की विकलता ठीक नहीं। हालांकि मैं बिना किसी पर्व विशेष के दीक्षा नहीं देती फिर भी आज.....आज मैं तुम्हें ध्यान दीक्षा का एक चरण प्रदान करूँगी।"

श्री माँ के अलंकरण से अलंकृत निवृत्ति देवी ने प्रमदा को शक्तिपात दीक्षा प्रदान की। प्रमदा ध्यान में बैठ गई। संभूति प्रसन्न थी कि प्रमदा को एक अध्यात्म मार्ग मिल गया है।

शक्ति देवी की आरती का समय हुआ लेकिन प्रमदा का ध्यान भंग नहीं हुआ। संभूति को प्रमदा के समीप उपस्थित रहने का आदेश देकर श्री माँ आरती के लिए मन्दिर चली गईं। संभूति प्रमदा के पास ही बैठ गई। कुछ क्षण व्यतीत हुए। अनायास संभूति को अनुभव हुआ कि उसके नेत्र बार-बार बन्द होते खुलते हैं। एक विचित्र-सा नशा भी उसे अनुभव हो रहा था। वह आसन पर स्थित हुई, ध्यान का संवेग जागृत हुआ और प्रमदा के पास ही वह भी ध्यानस्थ हो गई।

संभूति को कुण्डलनी देवी का दर्शन हुआ। आरम्भ में नागाकृति पश्चात् युवामार्तण्ड के भाष्वर प्रकाश की अनुभूति, इसके पश्चात् उसने परमसुन्दरी के सौन्दर्य की जगमगाहट देखी। आलोक में नहाती योषाकृति स्पष्ट हुई। वह कोई अन्य नहीं स्वयं उसकी ही प्रतिमूर्ति थी। स्वतः प्रकट योषिता के अंग-प्रत्यंग से नीला आलोक झर रहा था।

"देवि, संभूति ! मुझे आज पुनः तुम्हारी आवश्यकता है।" नीलालोक प्रावर्रिता के अधरपुट खुले। संभूति चौंकी।

"कुण्डलनी शक्ति या भैरवी वैरोचनी ?" वह सोच भी नहीं पाई थी कि भैरवी का नीलमण्डित कलेवर उसमें समाता चला गया। पूर्व की भाँति वह अनुभव करने लगी, भैरवी का शरीर ऊपर उठता जा रहा है। आश्रम के इस कक्ष की ठोस भित्तियों का भेदन करता शरीर तारों से भरे विस्तारित आकाश के नीचे। वह हल्के-फुल्के बादलों की घटाओं के बीच संतार करती शहर के बाहर एक विशाल इमारत के ऊपर उड़ती रही।

यह इमारत होलीफादर सूपन का वैज्ञानिक संस्थान 'वी. लाइफ रिसर्च सेन्टर' थी। इमारत के ऊपर चक्कर लगाकर वैरोचनी पहाड़ियों की श्रृंखला की ओर उड़ी। पहाड़ी की चोटी पर कुछ देर मंडराने के बाद वैरोचनी की सुलम्बि देह



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधोमुखी हुई। उसके दोनों हाथ नीचे हुए और वह धनुष से छूटे बाण की भाँति पहाड़ी से आ टकराई।

संभूति को लगा जैसे वैरोचनी का शरीर ठोस पहाड़ी धरातल से टकरा कर चूर्ण-चूर्ण हो जाएगा, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। वैरोचनी का शरीर पहाड़ी धरातल का भेदन करता उसके गर्भ में प्रवेश कर गया।

पहाड़ी का गर्भ या एक नया संसार ? वैरोचनी एक विचित्र स्थान पर खड़ी थी। चारों ओर भयावह सन्नाटा। वह दीवार पार कर अन्दर गई। यह विशाल हॉल था, जिसमें लाशें भरी हुई थीं। किसी का सिर कटा हुआ था किसी के हाथ-पैर। कहीं ताजा कटे सिर खूँटियों से लटक रहे तो कहीं-कहीं पुर पंजर।

कहीं हड्डियों के ढेर लगे हुए थे। संभूति आश्चर्य और जुगुप्सा से देख रही थी। इतनी बड़ी मात्रा में सड़ी-गली लाशें, कंकाल और हड्डियों के ढेर क्यों ? वैरोचनी उन लाशों के बीच से गुजरती एक सुरंगनुमा रास्ते की ओर बढ़ी और उसी के सदृश्य एक अन्य हॉल में पहुँची।

वहाँ विचित्र प्लॉन्ट चल रहा था। संभूति देख रही थी, हॉल में चालीस-पचास व्यक्ति सिर से पैर तक लबादों में लिपटे कार्य कर रहे थे।

भट्टियों पर बड़े-बड़े कढ़ाव रखे हुए थे, उन कढ़ावों में एक सफेद द्रव्य पदार्थ खौल रहा था, प्रत्येक कढ़ाव के ऊपर एक जारनुमा बर्तन रखा था, कढ़ाव से जार तक अनेक नलियाँ लगी थीं और कढ़ावों में।

कढ़ावों के खौलते पदार्थ में लाशें उबल रही थीं, उनका माँस पक रहा था और गैस के रूप में लाशों का सार पदार्थ या रस, जार में एकत्रित होकर शीशियों में जा रहा था। लाश का सारा पदार्थ माँस-मज्जा आदि खत्म होने के बाद शेष रहे कंकाल को कढ़ाव पर कार्यरत व्यक्ति कुशलता से निकालकर एक प्लेटफॉर्म पर रख देता था। खाली कढ़ाव में उसी समय एक अन्य लाश दूसरे प्लेटफॉर्म से सरकती हुई, धीरे से आ गिरती और कंकाल दूसरे प्लेटफार्म से सरककर एक पंक्ति में खड़ा हो जाता।

सभी अपने-अपने काम में लगे हैं किसी को इतना अवकाश नहीं कि वैरोचनी को देख लें। अकस्मात् वैरोचनी ने झपटकर एक शीशी उठा ली, इस शीशी में लाश से निकाला गया सार तत्व था। कढ़ाव पर काम करते व्यक्ति का ध्यान भंग हुआ, विचित्र-सी आवाजें गले से निकालता वह वैरोचनी पर झपटा। वैरोचनी ने उसकी पकड़ से बचते हुए, उसके शरीर पर आवरित लबादे की ओर अपना जलता हुआ खप्पर किया। खप्पर से अग्नि ज्वाला ऊँची होकर मुड़ी और लपकते हुए उसके लबादे से जा लगी। सारा लबादा आग की लपटों से घिर गया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्चर्य की बात यह कि उस व्यक्ति ने कोई प्रतिरोध नहीं किया। हॉल में काम करते अन्य किसी भी व्यक्ति ने अपने जलते हुए साथी की ओर देखा तक नहीं। वे सब पूर्ववत् कार्य करते रहे। कुछ क्षणों में ही उसका लबादा जल गया। लबादे के नीचे कोई आदमी नहीं बल्कि कंकाल था जो स्थिरता से खड़ा था।

तभी खटाक की आवाज हुई, पता नहीं कहाँ से एक बाँस जैसा दुबला-पतला मरियम आदमी ठीक कंकाल के सामने कूदा। काला ओवरकोट, फेल्ट हैट, मुँह में दबी हुई धुँआ छोड़ती सिगरेट। हमारे पाठक इसे अच्छी तरह पहचानते हैं। यह कोई अन्य नहीं मि. विलि था।

विलि के ढांचे में लगे नरमुण्ड ने ढेर सारा सिगरेट का धुँआ उगला। फिर खड़खड़ाती आवाज उसके मुख से निकली।

"मादाम.....भैरवी। तुम मेरा पीछा क्यों करता ? मेरा बिलीव करो मैं गुडमेन हूँ किन्तु जो बैडकर्म कर रहा हूँ, वह मेरा मजबूरी है। मादाम सिल्वा का आर्डर हमको सब कुछ है। हम तुमको एक गुड वार्निंग देता कि तुम जिधर से भी आया, उधर से अभी इस टाइम लौटने का। वर्ना तुम्हारा लाइफ खत्म समझो। उधर उन कंकालों को देखता है न, उधर ही तुमकू भी मादाम सिल्वा स्टैण्ड कर देगा।"

"मैं तुमको सिल्वा की कारा (कैद) से स्वतन्त्र कराने आई हूँ मि. विलि।" वैरोचनी कहती है। सुनकर विलि हँस देता है। उसकी आवाज आती है।

"मादाम, हमको हण्ड्रेड इयर इसी हड्डियों के ढांचे में रहना है। हम इधर मादाम सिल्वा का गुलाम रहे या आपका। हमको पूरे सौ वर्ष गुलामी ही करना है।"

"नहीं तुम मेरे पास स्वतन्त्र रहोगे। अपनी इच्छा के स्वामी होगे, जो चाहोगे वही करने की तुम्हें स्वतन्त्रता होगी। और यहाँ ? तुम्हारा उपयोग मानवता के विरुद्ध किया जा रहा है, जिससे तुम्हारी आत्मा बहुत दुःखी है।"

"हमारा सोल खुश रहे या दुःखी। हमको बस मादाम सिल्वा का यह लाशों का वाइन बनाना ही है। ये सारे कंकाल जो तुमको दिखाई दे रहे हैं, ये सब सोल ही हैं। इन सबको हमारे समान कंकालों में कैद कर रखा है। मैं इनका चीफ हूँ। यहाँ प्रोडक्ट वाइन को मादाम सिल्वा पीती है। इस वाइन से ही उसका एज इतना कमसीन होता है। वर्ना मादाम सिल्वा का एज एक हजार वर्ष से भी अधिक है। इसी वाइन को होलीफादर सूपन भी पीते हैं। कुछ दिनों बाद मिस्टर सूर्या भी इसको पीने लगेगा।"

"ओह ! मि. विलि अब तुम सबकी स्वतन्त्रता का समय आ गया है।" क्या यहाँ हो रही सारी बातें सूपन सुन देख रहा है अथवा सिल्वा को हमारी बातचीत का पता चल रहा है।" वैरोचनी ने प्रश्न किया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"ना मादाम। हम सब सोल हैं, घोस्ट हैं। इन्सान गद्दारी करता है लेकिन घोस्ट अपने ओनर से कभी गद्दारी नहीं करता। यह प्लेश इतना सेफ है कि यहाँ आदमजाद कभी इन्टर्ड नहीं होता। इसलिए यहाँ कोई टी. वी. कैमरा नहीं, कोई यंत्र नहीं। ओनली मेरे सिर की हड्डी में एक यंत्र लगा है, जिसका कनक्शन ग्रेट सूपा के कन्ट्रोल रूम से है। लेकिन कन्ट्रोल रूम में रखा मेरा स्क्रीन प्रायः बन्द पड़ा रहता है। जब हम कभी सेन्टर से आउट होता है, तब ही वह स्क्रीन स्टार्ट होता है।" विलि ने बताया। "मि. विलि, क्या आप मुझे मादाम सिल्वा तक पहुँचा सकते हो।"

"सॉरी मैडम। हम आपका हेल्प नहीं कर सकता। वैसे आपका इधर आना भी एकदम इम्पॉसिबल है। हमको वण्डर है कि तुम इधर कैसे इन हुआ।

"गुडबाय मि. विलि।" कहते हुए वैरोचनी अपने खप्पर सहित हवा में घुल मिल गई। विलि कुछ बड़बड़ाने लगा। पता नहीं क्या कह रहा था ?

आश्रम में आसनस्थ संभूति के नेत्र खुल गए। उसने आश्चर्य से इधर-उधर देखा। कहाँ है वह स्थान जहाँ लाशों के ढेर लगे थे ? कहाँ है वह हॉल जिसमें सड़ी हुई लाशों की शराब बनाई जा रही थी ? कहाँ है वह रहस्यमय विलि ? संभूति को समझ में नहीं आ रहा था कि उसे ऐसी अनुभूतियाँ क्यों होती हैं ? उस पर आश्चर्य यह कि जो वह अनुभव करती है, वह सत्य घटित होता है। भैरवी वैरोचनी भी उसे रहस्य से कम नहीं थी।

सोचते हुए संभूति ने उस ओर दृष्टि डाली, जहाँ प्रमदा बैठी ध्यान कर रही थी किन्तु अब वह यहाँ नहीं थी। संभूति मन ही मन काँप उठी। श्री माँ का आदेश था कि वह प्रमदा को देखती रहे किन्तु वह ध्यान में खो गई। वह उठकर खड़ी हुई और प्रमदा को खोजने द्वार से निकलना ही चाहती थी कि सामने से श्री माँ, सूर्या, सूर्या के साथ एक किशोरी, जिसकी मुखच्छवि पर श्री माँ का बिम्ब था, आ रहे थे। उनके साथ बुर्खे ओढ़े प्रमदा भी थी। जिस रात प्रमदा संभूति के घर आई थी, उसके प्रातः से ही उसने अपनी सुरक्षा की खातिर बुर्खा ओढ़ना प्रारम्भ कर दिया था।

संभूति चकित थी। संसृति का देह और रूप विन्यास देखकर। क्या वह श्री माँ की स्वजात कन्या है। उनके समीप आने पर अपराधी के समान क्षमा माँगती संभूति बोली।

"क्षमा करें श्री माँ। मैं ध्यान में खो गई। इसी बीच कब प्रमदा दीदी उठकर आपके पास चली गईं, मुझे ज्ञात नहीं।"

"कोई बात नहीं। किन्तु प्रमदा कह रही थी कि जब उसकी ध्यान तन्द्रा खुली तो तुम यहाँ नहीं थीं। उसने आधा घण्टे तक तुम्हारी प्रतीक्षा भी की किन्तु तुम न



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आई तो विकल भाव से मुझसे प्रमदा ने कहा। अरे हाँ यह मेरी लाड़ली भतीजी संसृति।" कहते हुए श्री माँ ने संसृति के सिर पर स्नेह से हाथ फेरा।

"बिल्कुल आपकी प्रतिच्छाया लगती है यह श्री माँ।" संभूति ने साश्चर्य कहा।

"हाँ तुम कहाँ थी संभूति।" श्री माँ को पुनः स्मरण आया।

"मैं यहाँ से कहीं गई ही नहीं माँ। ध्यान आरम्भ किया तब भी यहाँ थी और ध्यान भंग हुआ तब भी यहीं। प्रमदा दीदी को क्यों दिखाई नहीं दी। शायद ये ठीक से न देख पाई हो।" संभूति ने विचार व्यक्त किया।

"नहीं.....नहीं। मैंने अच्छी तरह देखा था और देखा ही नहीं लगभग आधा घण्टा प्रतीक्षा भी की।" प्रमदा ने जोर देकर कहा। संभूति मौन हो गई। एक क्षण श्री माँ की दृष्टि शून्य में स्थिर हुई, उनके तपःमण्डित तेजस्वी मुख पर गाम्भीर्य का अनुलेपन हुआ, फिर वे सामान्य हो गईं और विषयान्तर कर चर्चा करने लगीं।

संभूति की इच्छा हुई कि वह अभी जो अनुभूत हुआ है, उसके विषय में श्री माँ से निवेदन करे। साथ में यह प्रार्थना भी जिसमें भैरवी वैरोचनी के रहस्य का उच्छेदन भी हो किन्तु उसने सभी के सामने यह बात नहीं कही। कुछ समय सामूहिक चर्चा के पश्चात् श्री माँ ने सूर्या और संसृति से एकान्त में चर्चा करने की इच्छा प्रकट की तो संभूति ने जाने की अनुमति चाही।

"अब आज्ञा दें माँ। घर पर वे प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

"ठीक है संभूति, आश्रम की गाड़ी तुम्हें घर छोड़ आएगी।" श्री माँ ने अनुमति देते हुए कहा। उत्तर में संभूति सविनय बोली।

"हम चले जाएँगे श्री माँ।"

"नहीं प्रमदा की सुरक्षा के लिए आवश्यक है कि तुम आश्रम की गाड़ी में ही जाओ।"

"जैसी आपकी इच्छा श्री माँ।" संभूति ने कहा।

निवृत्ति देवी ने अपनी सहायिका को फोन पर आदेश दिया कि आश्रम की गाड़ी से संभूति और प्रमदा को उनके घर भेज दिया जाए फिर वह सूर्या की ओर उन्मुख होकर बोली–

"हाँ तो सूर्या, अब पूरी बात बताओ।"

उत्तर में सूर्या ने शर्मिष्ठा से संसृति की हुई बातचीत के महत्वपूर्ण अंश सुनाए फिर कहा–

"पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी मुझ पर, आप पर और संसृति पर भी सन्देह कर रहे हैं माँ। मैं संसृति को अपने माता-पिता के पास ले गया, क्या यह मेरी भूल थी। मैं जानता हूँ, इस समय मि. बिन्दु शेखर शुक्ल ने एक शक्तिशाली माइक्रोवेव माइक संसृति के स्कर्ट के बेल्ट में लगा दिया है। मासूम संसृति उस माइक के



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय में नहीं जानती। जो बातचीत हमारी यहाँ हो रही हैं उसे आश्रम में ही, हमारे आस-पास सुना जा रहा होगा।"

"सूर्या, पुलिस विभाग की सेवा ही ऐसी है रे। देख संसार इतना दूषित और कलुषित हो गया है कि सहज ही किसी पर विश्वास नहीं होता। आज का पुत्र, अपने माता-पिता का, आज का भाई, अपने भाई का और आज के पति-पत्नी भी एक-दूसरे का विश्वास खण्डित कर रहे हैं। स्वार्थ और पाप के पंक में लिपटे-लिथड़े नाते रिश्ते ! ऐसा लगता है कि हम सब एक द्वितीय को ही नहीं स्वयं को भी छल रहे हैं। बता तो सूर्या ऐसे प्रदूषित वातावरण में अगर बिन्दु शेखर सन्देह करता है तो दुःख और आश्चर्य कैसा ?" श्री माँ ने शान्त स्वर में बिना किसी उत्तेजना के कहा।

सूर्या और श्री माँ चर्चा करते रहे फिर श्री माँ ने संसृति से भी चर्चा की। उसके शिक्षण आदि के विषय में भी पूछा। बहुत समय तक श्री माँ संसृति को लाड़ करती रही। वह भी उनसे इतना घुलमिल गई थी कि उसे लग ही नहीं रहा था कि वह किसी अंजानी जगह में आ गई है। कुछ समय उनके समीप रहकर संसृति ने आश्रम में अन्य स्थानों की इच्छा प्रकट की। एक सहायिका के साथ श्री माँ ने उसे शेष आश्रम देखने के लिए भेज दिया।

संसृति के जाने के बाद श्री माँ गम्भीर हुई। उन्होंने सूर्या को भेदक दृष्टि से देखा और मन्द पर गंभीर स्वर में बोली।

"बेटे तूने अपने जन्म का रहस्य जान लिया। सुमन आयंकर के आविष्कार के विषय में मुझे सूचना मिल चुकी है। तू यह भी जान चुका होगा कि यौवनावस्था के आरम्भ काल में ही मैंने तुझे जन्म दिया था, किन्तु तू यह नहीं जानता कि मेरी गोद से तुझे किसने छीना ? किसने मेरे ममत्व और पवित्र स्नेह देने वाले मेरे पति की हत्या की ?"

सूर्या चौंक उठा। उसके मन में भी यह विचार आया था कि उसे क्यों श्री माँ ने अपने अंक से दूर कर दिया था ? उसकी माँ विवाहित थी, उनके पति की हत्या किसने की ? उसे यह तो ज्ञात हो गया था कि हिमालयीन शव के वीर्यत्व से उसका जन्म हुआ है। उस सहस्रों वर्ष पूर्व मृत्यु को प्राप्त हुए शव के सार तत्व को वैज्ञानिक विधि से श्री माँ के गर्भ में स्थापित किया गया था।

"मैं नहीं जानता माँ, किन्तु तू अवश्य बता कि 'मेरे पिता' का हत्यारा कौन है ? तेरे अमृती दूध ने अपने पुत्र के शरीर को फौलादी बनाया है माँ। ये शरीर तेरा ही दिया हुआ ऋण है माँ। मुझे बता अम्ब, कौन है वह क्रूर हत्यारा, जिसने मेरी माँ की गोद भी सूनी कर दी।" कहते-कहते सूर्या के नेत्र जल उठे, उसके स्वर में संकल्प की अपराजेय सत्ता का स्थायित्व आ गया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"मेरे बेटे। मुझे तुझ पर गर्व है। लेकिन तू संयम से काम ले। क्रोध मनुष्य के विवेक को समाप्त कर उसे पशु बना देता है। तू धैर्य से सुन, व्यथित मत होना। तुझे मेरे ममत्व से वंचित करने वाला तेरा होलीफादर सूपा है। उसने ही मेरे पति विलियम की नृशंस हत्या की। मुझे अपार वेदना दी उसने, मेरे बच्चे। जितनी पीड़ा, कष्ट और त्राश वह दे सकता है, उसने दी और मैंने सहन की। आज उसकी बड़ी प्रयोगशाला है, वह एक महान आविष्कारक है। ये सब आविष्कार विलियम के सूत्रों के परिणाम हैं। वास्तव में आविष्कारक तो विलियम थे। उन्होंने अपनी मृत्यु के कुछ दिनों पूर्व और तेरे जन्म के बाद मुझसे कहा था कि उसका अभिन्न मित्र सूपन मानवता विरोधी कार्य कराना चाहता है। मैं उनकी वह डायरी जिसमें विलियम ने अपनी विलक्षण खोजों का संकलन किया था, उनसे ले नहीं सकी और वे तेरे कथित होलीफादर का निशाना बन गए। बहुत दिनों तक मुझे उनके अचानक गायब होने का रहस्य ज्ञात नहीं हुआ और एक दिन उनकी दुःखी आत्मा ने स्वयं प्रकट होकर उनकी मृत्यु का रहस्य खोला और तुझे कहीं दूर जाने को कहा, किन्तु तब तक देर हो चुकी थी। उसके आदमी तुझे छीनकर ले गए। उसने इस इमारत को बम से उड़ा दिया जिसमें मैं थी। सूपन समझा कि मैं मर गई किन्तु...... ।"

"श्री माँ ने आदि से अन्त तक सारी गुजरी हुई कथा सूर्या को सुना दी। सुनाते-सुनाते श्री माँ जैसी मोह रहित साधिका अनेक बार रो पड़ी थीं। विशेषकर उस समय जब उसके दादाजी पं. शशिशेखर की हत्या के प्रसंग को सुनाते हुए श्री माँ एक सामान्य स्त्री के समान फूट-फूटकर रो उठी थीं।

सूर्या का हृदय हाहाकार कर उठा! उसकी आत्मा तड़फ उठी, जिसे वह मानवता में देवताओं का शान्ति सन्देश देने वाला देवदूत समझ रहा था। वह मानवता का भयंकर शत्रु होगा। उसने कल्पना भी नहीं की थी। सूर्या का रक्त उबल पड़ा, आँखों से खून बरसने लगा।

"तेरे दूध की शपथ माँ, मैं उस राक्षस के हजारों टुकड़े कर दूँगा।" अत्यधिक क्रोध से सूर्या की आवाज काँप उठी।

"नहीं बेटे, शान्ति से विचार कर। क्या तू जानता है, सूपा कहाँ रहता है ?" श्री माँ ने अपनी आँखों के कोरकों से अश्रुओं की बूँदों को अपनी साड़ी से पोंछते हुए कहा। सचमुच सूर्या को आज तक नहीं पता था कि सूपा रहता कहाँ है ?

"नहीं माँ, सचमुच मैं उस पिशाच के ठिकाने को नहीं जानता।" सूर्या का स्वर तो क्षीण हुआ, किन्तु आक्रोश कम नहीं हो सका।

"शान्ति रख बेटे.....। माँ प्रकृति बड़ी दयालु है। वह अवश्य कोई मार्ग का संधान करेगी। हमें तदानुसार प्रेरणा देगी। तब तक तू यह प्रयास कर कि सूपा का



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विश्वास पूर्ववत् बना रहे। उसके मूल निवास का भी पता लगाने का प्रयास भी कर।"

"मैं प्रयास करूँगा माँ।" सूर्या कृतसंकल्पित हुआ। इसके पश्चात् श्री माँ ने कहा—"सूर्या बेटे, सुमन आयंकर भी सूपा से उत्पीड़ित है। सुमन की ही भाँति उसी प्रयोगशाला में ऐसे अनेक लोग मिल जाएँगे। प्रयास कर ऐसे लोगों का पता लगाकर उन्हें भी एकत्रित कर।"

"यह बड़ा मुश्किल कार्य है माँ। प्रयोगशाला के प्रत्येक कर्मचारी, कार्यकर्त्ता, वैज्ञानिक सभी के शरीर में कोई यंत्र अज्ञात स्थान पर लगा है। वह व्यक्ति कहीं भी किसी से मिले, किसी से कहीं भी बात करे, वह सूपा के कन्ट्रोल रूम में तुरन्त रिकॉर्ड होती है।" सूर्या ने सोचते हुए कहा।

"जब से तू यहाँ आया है और जब-जब भी तू यहाँ रहा है, क्या उस समय का तेरा रिकार्ड सूपा के कन्ट्रोल रूम में रिकॉर्ड हुआ है ? श्री माँ ने प्रश्न किया। सूर्या चौंका, सचमुच जब-जब भी वह यहाँ उपस्थित रहा है, सूपा के कन्ट्रोल रूम में कुछ रिकॉर्ड नहीं हुआ। उसने संक्षिप्त उत्तर दिया।

"नहीं।"

"जिस दिन सुमन और तेरी मधुचन्द्र राका थी, उस दिन का रिकॉर्ड भी सूपा के पास है ?"

"निश्चय ही नहीं।" सूर्या चकित था।

"यहाँ तपश्चर्या एवं अध्यात्म विज्ञान के अणु प्रसारित हैं। इसके अतिरिक्त मेरी संकल्प सिद्धि भी। इस कारण तेरे शरीर में लगा सन्देश प्रेषक यंत्र निष्काम हो जाता है। और सुमन..... ? वह स्वयं एक श्रेष्ठ वैज्ञानिक है। इसी के साथ वह बहुत खतरनाक लड़ाकू भी है। इसका प्रमाण उसने तुझे अपनी हनीमून नाइट के दिन दिया था। तुझे याद होगा, वह आक्रमण जो किसी अज्ञात आक्रमणकारी ने तुझ पर किया था और तू कुछ समय के लिए अचेत हो गया था। दरअसल तुझे अचेत कर उसने शरीर के उस स्थान की कोशिकाओं में स्वतः समृद्ध हो रहे उस यंत्र को सुमन ने असफल कर दिया था, जिसका सम्बन्ध सूपा के कन्ट्रोल रूम से था। अगर वह ऐसा नहीं करती तो वे सब सूचनाएँ और दृश्य जिसमें सूपा का पैशाचिक स्वरूप तूने देखा, सूपा को ज्ञात हो जाता और परिणाम ? परिणाम होता मादाम सिल्वा का दण्ड, जिसे वह अनेक महिला वैज्ञानिकों, पुरुष वैज्ञानिकों को दे चुकी है।

"माँ, मैं चकित हूँ, सुमन की कार्यशैली पर। मुझे यह भी आश्चर्य है कि इतनी गोपनीय ज़ानकारियाँ आपको कहाँ से प्राप्त हुईं ? क्या आपकी अतीन्द्रिय शक्तियाँ ही ये सब सूचनाएँ लाती हैं ?" सूर्या ने प्रश्न किया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"हाँ भी और नहीं भी।" श्री माँ ने विचित्र उत्तर दिया।

"क्या उन शक्तियों की सहायता से सूपा के निवास का पता ज्ञात नहीं किया जा सकता ?" सूर्या ने प्रश्न किया।

"हाँ, सूपा के निवास का पता ही नहीं लगाया जा सकता अपितु उसे दण्डित भी किया जा सकता है किन्तु जब भौतिक उपकरणों के साधनों की क्षमता समाप्त हो जाए तब ही उन शक्तियों का उपयोग किया जाना चाहिए अन्य अवस्था में नहीं।" श्री माँ ने स्पष्ट किया।

"संसृति की सूचनाओं का सम्बन्ध क्या सूपा से है माँ ?" एकाएक सूर्या ने प्रश्न किया।

"मेरा मन कहता है, इस प्रकरण में भी कहीं न कहीं सूपा का सम्बन्ध अवश्य है।" श्री माँ ने दृढ़ता से कहा।

"अगर ऐसा है तो विलि ने क्यों संसृति की सहायता की ? उसे सूपा के आदमियों से छीनकर मेरे पास क्यों ले गया ?" सूर्या के मन में सन्देह हुआ।

"किसी का अपहरण सूपा कराए तो उसकी यह कार्य पद्धति यह कभी नहीं हो सकती। सूपा विज्ञान पर आसक्त व्यक्ति है, अतः उसके कार्य, अपराध, नित्य जीवन जीने का ढंग सभी कुछ वैज्ञानिक पद्धति से होता है। जो दस लडकियों का अपहरण हुआ, वह सूपा के आदमियों का काम कदापि नहीं लगता। क्योंकि अपहरण काण्ड में कोई वैज्ञानिकता नहीं होकर आम अपराधियों द्वारा किए जाने वाले अपहरण की पद्धति है। फिर भी मेरा मन कहता है कि परोक्ष रूप में सूपा अवश्य इस काण्ड से सम्बन्ध रखता है।"

"संभूति और भैरवी वैरोचनी ? इन दोनों का क्या रहस्य है माँ ? वैरोचनी ने एक समय मुझसे विचित्र व्यवहार किया ? कौन है यह वैरोचनी ? क्या शत्रुता है उसकी सूपा से ?" सूर्या ने भैरवी वैरोचनी से सम्बन्धित रहस्यों का उदघाटन श्री माँ के मुख से सुनना चाहा।

"भैरवी वैरोचनी और संभूति ! समय आने पर ही इनके रहस्यों से पर्दा हटेगा सूर्य। अभी संभूति का पति भी रहस्य ही है। उसकी मृत्यु होना फिर उसका पुनर्जीवन। रात-रात भर घर से गायब रहना। ये सभी रहस्य हैं जो समयानुसार अनावृत होंगे।

"संभूति के पति को तो मैंने नहीं देखा किन्तु एक रहस्यमय पुरुष को अवश्य देखा है। वह सर्वप्रथम उसी रात में दिखाई दिया था, जिस रात भैरवी मिली थी। उसे सूपा की किरणों ने पिघला दिया था किन्तु इसके बाद भी मुझे एक बार दिखाई दिया। अंतिम बार वह मुझे हमारी मधुयामिनी के अवसर पर उसी कमरे में, कुछ क्षणों के लिए दिखाई दिया था।" सूर्या की जिज्ञासा पुनः हुई। श्री माँ सूर्या की



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बात सुनकर एक क्षण मौन हो गईं। सूर्या को लगा कि श्री माँ इस रहस्यमय युवक को भी अवश्य जानती हैं।

श्री माँ का मौन भंग हुआ। वे आसन से उठती हुई बोलीं—"बस बेटे, अब शेष बातें फिर कभी करेंगे। अब तू जा, मेरी साधना का समय हो रहा है। हाँ एक बात और.....हो सके तो विलियम के शव के विषय में ज्ञात करना। सूपा ने उसका क्या किया।" अंतिम बात कहते-कहते श्री माँ की आवाज में कम्पन आ गया।

"आपकी आज्ञा का पालन होगा माँ।" कहते हुए सूर्या भी उठा। तभी वहाँ संसृति ने प्रवेश किया। दोनों श्री माँ से जाने की अनुमति लेकर बाहर निकले। सूर्या को संसृति को छोड़ने के लिए उसके घर भी जाना था। जैसे ही उसने (सूर्या ने) कार स्टार्ट कर आगे बढ़ाई, एक जीप भी उसके पीछे चल दी। इस जीप में इन्सपेक्टर राणा था।

❑❑

संभूति और प्रमदा घर पर पहुँचीं तो रात के दस बज चुके थे। तेज तौषारिक ठण्ड से दोनों के बदन काँप रहे थे। यद्यपि दोनों ने ऊनी गर्म शाल ओढ़ रखे थे तथापि लगता था कि दन्तकटकट सर्दी के आगे ऊनी कपड़े महत्वहीन हो गए थे।

संभूति ने द्वार को देखा, ताला नहीं लगा था। उसे कुछ प्रसन्नता हुई, हाथ का हल्का-सा दबाव पड़ते ही कपाट खुल गए। संभूति और प्रमदा सीधे किचिन में गईं। तेज अदरक डालकर चाय बनाई। संभूति ने प्रमदा से सहज योग या अखण्ड सिद्ध योग के महत्व पर बोलते हुए चाय कप्स में डाली ही थी कि प्रमदा ने कहा—"एक कप पीयूष को देकर आती हूँ।"

"आप ठहरें, मैं जा रही हूँ।" कहते हुए संभूति ने चाय का कप उठाया और अपने शयनकक्ष की ओर बढ़ गई। द्वार पर पहुँचते ही उसके पैर ठिठक गए। उसके कानों में किसी युवती के मधुर हास्य का मन्द निनाद सुनाई दिया। युवती की आवाज आई।

"महात्मन, आज मैं अधिक समय तक रहना चाहती थी किन्तु संभूति के कारण.....। अब आपको अगर मुझसे अपना कार्य साधन करना है तो संभूति को .....।" उसने वाक्य अपूर्ण छोड़ दिया।

"हाँ, मैं स्वयं भी यही सोच रहा था।" अन्दर शयनकक्ष से संभूति को पीयूष का स्वर सुनाई दिया।

संभूति का अंग-प्रत्यंग जलने लगा। पता नहीं किसके साथ पीयूष रंगरेलियों में मस्त है। स्त्री कण्ठ से निकले हुए अपूर्ण वाक्य से उसे अनुमान हुआ कि अन्दर पीयूष के साथ कर्मरत युवती के कथन का यही आशय होगा कि जल्दी से जल्दी



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संभूति को रास्ते से हटा दिया जाए ताकि उन दोनों के मिलन में कोई बाधा न रहे। संभूति क्रोध से काँप उठी तो इसी के कारण पीयूष रात-रात भर घर से गायब रहता है। और वह पीयूष..... ? धिक्कार है उसे। इस सुहावने विन्टर सीजन में पति-पत्नी एक-दूसरे में समाए ऊष्मा का आनन्द ले रहे हैं और वह इस भीषण सर्दी में भी जल रही है। आज या तो पीयूष की प्रेमिका ही रहेगी या वह।

सोचते हुए संभूति ने शयनकक्ष के कपाटों पर जोर से धक्का दिया और क्रोध से दाँत पीसती हुई लगभग चिल्लाई—

"खोलो.....खोलो।" पर आशा के विपरीत उसके धक्के से द्वार खुल गया। जबकि उसे विश्वास था कि किवाड़ अन्दर से बन्द होंगे। क्रोध से उफनती संभूति ने आंधी की तरह शयनकक्ष में प्रवेश किया किन्तु यह क्या ? उसका सारा क्रोध कर्पूर की तरह उड़ गया।

अन्दर शयनकक्ष में पीयूष रजाई में घुसा आनन्द से सो रहा था। उसके अतिरिक्त कमरे में कोई था ही नहीं। संभूति ने यत्र-कुत्र देखा लेकिन वहाँ कोई स्त्री तो क्या उसके चिन्ह भी नहीं मिले। ऐसा कैसे संभव हो सकता है ? उसने स्वयं अपने कानों से किसी स्त्री का स्वर सुना था। इतनी शीघ्र कोई कमरे से कहाँ जा सकती है और न ही पीयूष इतनी शीघ्र सो सकता। द्वार पर तो वह स्वयं थी, अगर वह जाती भी तो किस रास्ते से।

संभूति ने कप मेज पर रखकर पीयूष को जगाया। वह सचमुच सो रहा था। संभूति ने खोजपरक दृष्टि से उसे देखते हुए चाय का प्याला दिया।

"मुझे चाय नहीं, तुम्हारे अधर रस का पान कराओ संभूति।" जम्हाई लेते हुए पीयूष ने कप उठाया और प्रेम से देखते हुए कामुक व्यक्ति की तरह कहा। संभूति के हृदय में एक मीठी धड़कन ने जन्म लिया किन्तु प्रत्यक्ष में वह बोली—

"क्यों जी घोड़े बेचकर सो रहे हो। सारे दरवाजे खुले हुए पड़े हैं। ऐसे में कोई चोर घुस जाता तो।"

"तो..... ? पीयूष हँस उठा।" बेचारे चोर को कुछ नहीं मिलता। इस घर की सारी जमा पूँजी तो बाहर थी। जब तुम घर में हो तो दरवाजे लगाना उचित है, नहीं हो तो.......कोई भला आएगा भी क्यों ? वह जानता है कि उसे कुछ नहीं मिलना।"

"बस, ये बातें करा लो तुमसे तो।" प्रत्यक्ष में संभूति ने उपहासात्मक स्वर से कहा पर अन्दर ही अन्दर वह अपने सौन्दर्य महत्वता पर सरसता से ओत-प्रोत हो उठी।

संभूति का अन्तरमन चाह रहा था कि पीयूष उठे और उसे आलिंगनबद्ध कर उसके स्नैग्ध को अभिभूत कर दे। शायद संभूति की अन्तःइच्छा को पीयूष के मन



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने ग्राह्य कर लिया। वह लेटे-लेटे ही विचित्र गति से, अचानक उछला और पलक झपकते ही संभूति के यौवन मण्डित, स्वर्ण-सी दमकती काया की मुलायमता को बाहों में बाँधकर पलंग पर आ गिरा। इस आकस्मिकता से संभूति के गले से घुटी-घुटी-सी चीख निकल पड़ी, लेकिन उस चीख को पीयूष ने वहीं रोक दिया। उसने अपने ओंठ संभूति के पतले, कोमल, आरक्त अधर दलों पर रख दिए। संभूति स्वर्गानन्द से भर उठी। संभूति कोई विरोध नहीं करके स्वयं भी अपने अधरों का रसपान कराने में प्रवृत्त हो गई।

अचानक पीयूष ने उसे छोड़ दिया। संभूति को लगा जैसे वह हरितमा से उसे निकालकर मरुद्यान के बाहर मरुधरा पर पटक दिया हो। अपने कमल नेत्रों से मद को छलकाती वह कम्पित स्वर में बोली—"क्या हुआ ?"

"दीदी.....ई। दीदी आ रही है।" पीयूष ने धीरे से कहा।

संभूति त्वरा से उठी। वह पलंग से उठकर खड़ी हुई ही थी कि बाहर खुले द्वार पर प्रमदा दिखाई दी।

"क्या हुआ संभूति ? बहुत देर कर दी। तेरे इन्तजार में चाय ही ठण्डी हो गई।" प्रमदा ने शिकायत की।

"हाँ दीदी, ये सो रहे थे।" बिस्तर ठीक करने का उपक्रम करती हुई संभूति ने कटाक्षपूर्वक पीयूष की ओर देखा तो चौंकी पीयूष के ओठों पर उसके ओठों से निकलकर लालिमा लग गई थी।

"एक मिनट दीदी, तुम चलो मैं आई।" संभूति ने व्यस्त होने का अभिनय करते हुए कहा। संयोगवश प्रमदा की नजर पीयूष के ओठों पर नहीं पड़ी। वह मुड़ी और चली गई। उसके जाते ही पीयूष ने संभूति के अंग वैभव को पुनः बाँहों में बाँध लिया। "तुम्हारे ओंठ लाल हो गए हैं।" बाँहों में बंधी संभूति ने धीरे से कहा।

"ओंठ ही नहीं संभूति मैं तो समूचा लाल हो रहा हूँ।" पीयूष ने उसके कपोल पर दीर्घ चुम्बन लेते हुए कहा।

"छोड़ो भी.....। मैं अभी आई।" संभूति को विवशता से कहना पड़ा।

आशा के विपरीत पीयूष ने संभूति को तत्क्षण अपने बाहुबंधन से मुक्त कर दिया। प्रमदा की उपस्थिति से संभूति को कोफ्त होने लगी। उसने कप उठाया और किचिन की ओर चली गई।

संभूति ने दोबारा चाय गर्म की और कप में डालकर प्रमदा की ओर बढ़ा दी। उसी समय प्रमदा की दृष्टि संभूति के कपोल पर पड़ी जहाँ चुम्बन का हल्का-सा लाल निशान बन गया था। वह मुस्करा उठी।

"पीयूष ने कब से लिपस्टिक लगाना शुरू कर दिया।" प्रमदा ने मुस्कराते हुए कहा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संभूति को तुरन्त स्मरण आया कि किसने ? कहाँ ? गलती की। उसके कपोलों पर लज्जा का राजिम आलेपन हुआ। उसने अपने आंचल से कपोल को स्वच्छ करने का प्रयास करते हुए लज्जित स्वर में कहा।

"पता नहीं, ऐसे ही कहीं, वे ख्याली में मुझसे ही लग गया होगा।"

प्रमदा हँस उठी। वह संभूति के हाव-भाव और गौरवर्णी मोहक मुखमण्डल पर काम तरंगों की ऊष्मा का मण्डन देखकर ही समझ गई थी कि पीयूष ने उसकी कामसंवेदी तंत्रिकाओं को आन्दोलित कर दिया होगा। वह समयानंद लेते हुए गम्भीर होने का अभिनय करते हुए बोली—

"संभूति, तू तो मुझसे योग-ध्यानादि में वरिष्ठ है। मैं आज लम्बे समय तक तुझसे योगादि विषय पर अपनी जिज्ञासाओं की पूर्ति परिचर्चा से करना चाहती हूँ। इसलिए मैं चाहती हूँ कि आज तू मेरे साथ ही सो।"

"संभूति को लगा जैसे आकाश टूट रहा हो। बमुश्किल आज रात उसे लग रहा था कि पीयूष का साहचर्य लाभ मिलेगा किन्तु तब जब कि पीयूष में सहज कामनाओं की इच्छाएँ उठ रही हैं, प्रमदा उसे अपने साथ सुलाना चाहती है। वह अन्दर ही अन्दर झुंझला उठी, पर प्रत्यक्ष में वह सामान्य स्वर में बोली।

"दीदी, हो सकता है, वे मेरे उनके पास न रहने पर नाराज हो जाएँ।"

"क्यों नाराज होगा ? मैं कोई पुरुष हूँ जो तुझसे बलात्कार करेगा। चल मैं उससे बोल देती हूँ।" प्रमदा ने संभूति की भाव-भंगिमाओं का आनन्द लेते हुए कहा।

"नहीं.....नहीं.....मैं.....मैं खुद उनसे कह दूँगी।" मरे से मद्धिम स्वर में संभूति की आवाज निकली।

प्रमदा हँस पड़ी। हँसते हुए ही वह बोली।

"अच्छा, कोई बात नहीं। आज रहने दे, हम फिर कभी चर्चा करेंगे।"

संभूति प्रसन्न हो उठी। उसे लगा जैसे प्रमदा ने कृपाकर उसे वरदान दे दिया। उसका मुख कमल खिल उठा। वह अत्यधिक प्रसन्नता से मुग्ध होकर बोली।

"थैंक्यू.....थैंक्यू दीदी।"

"किस बात के लिए।" प्रमदा ने आश्चर्याभिव्यक्ति का अभिनय किया। संभूति पुनः लज्जारुण हो उठी। सचमुच वह अत्यधिक प्रसन्नता में बहकर उसे थैंक्यू क्यों कहने लगी।

"चल अब विश्राम करें। आज भोजन की इच्छा नहीं है। हाँ अगर पीयूष को भूख लगी हो तो उसे खिला दे।" प्रमदा ने प्यार से कहा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"वे तो भोजन कर चुके होंगे दीदी।" संभूति ने जल्दी-जल्दी चाय के बर्तनों को धोते हुए कहा। आश्रम जाने के पूर्व ही वह भोजन बनाकर रख गई थी। शायद आश्रम से लौटने में अधिक समय लग जाए, इसलिए ही उसने पूर्व में ही भोजन बना दिया था।

संभूति जल्दी-जल्दी अपने कामों से निवृत्त होकर जब शयन कक्ष में पहुँची तो पीयूष सो चुका था। संभूति को सचमुच ताव आ गया। उसने अमर्ष भाव में भरकर सोते हुए पीयूष को जोर से झकझोरते हुए जगाया।

"हे भगवान, तुम आदमी हो या मुसीबत। इतनी जल्दी सो गए।"

पीयूष आँखें मलता हुआ उठकर बिस्तर पर बैठ गया। उठते हुए उसने कहा—"मेरी महिमामयी भगवती, देख तो रात के बारह बजने वाले हैं।" उसने घड़ी की ओर संकेत किया।

"तो ?.....तो क्या हुआ ?" संभूति आँखें तरेर कर देखती हुई अपने लिए शैया पर स्थान बनाती हुई बोली।

"छी.....छी.....आज नहाई नहीं क्या ?" पीयूष अपनी नाक पकड़ता बोला।

"क्यों ? क्या मुझमें से दुर्गन्ध आ रही है।" संभूति ने जले-कटे शब्दों में कहा।

"नहीं तो क्या सुगन्ध की सरिता बह रही है ? पीयूष ने उसे स्वयं से पृथक करने का प्रयास किया। संभूति की आँखों में आँसू आ गए। यह पीयूष का उपहास है या उपेक्षा ? संभूति समझ नहीं सकी। पीयूष की ओर पीठ करके वह रो उठी।

पीयूष शान्त चुपचाप पड़ा रहा। उसके मौन ने संभूति को और अधिक दुःखी कर दिया, वह सिसक उठी। पीयूष ने करवट लेकर स्नेह से उसकी पीठ पर हाथ रखा और बोला—

"ऐ.....ऐ संभूति !"

"मत छुओ मुझे.....। दुर्गन्धित हूँ न मैं।" वह सिसकियों के मध्य बोली।

"इतनी बात पर कुपित हो गई।" कहते हुए पीयूष ने बलात उसका मुख अपनी ओर कर लिया। उसके गालों पर जार-बेजार आँसुओं की आर्द्रता को हाथ से हटाते हुए पीयूष ने उसका मुख कमल चूम लिया।

"रहने दो.....रहने दो.....।" सचमुच संभूति का क्रोध अभी भी शान्त नहीं हुआ था। पीयूष ने बाहुबद्ध कर संभूति के पुष्पभारित, यौवन रस से सराबोर शरीर को उठा लिया। संभूति को लगा वह फूल से भी हल्की हो गई है।

पीयूष उसे आलंगित किए-किए ही पलंग से उतरा।

"क्या करते हो ठण्ड लग रही है।" संभूति के मुख से अनायास निकला। वह उसे उठाता हुआ उछला।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"अरे.....अरे.....गिर जाऊँगी।" वह भयभीत होकर पीयूष को अपनी भुजलताओं में सख्ती से कसती हुई बोली। पीयूष ने कोई उत्तर नहीं दिया। संभूति सभीत अवस्था में देख रही थी कि उसे बाँहों में उठाए पीयूष उड़ता हुआ शयनकक्ष के द्वार से बाहर आ गया फिर वह हवा में ही मुड़ा और उसका रुख बाथरूम की ओर हुआ।

बाथरूम का द्वार बन्द था। संभूति ने भय से हल्के से चीखकर आँखें बन्द कर लीं, क्योंकि उसे लग रहा था कि अगले ही क्षण बाथरूम के किवाड़ से टकराना है। किन्तु नहीं, बाथरूम का दरवाजा खुल गया। अगले ही क्षण वे दोनों बाथरूम में थे। पीयूष ने शाबर खोल दिया।

"अरे.....अरे.....मैं ठण्ड से मर जाऊँगी।" पीयूष की बाँहों में बद्ध संभूति चीखी और प्रगाढ़ता से पीयूष से लिपट गई।

पर यह क्या ? शाबर से गर्म लेकिन अति सुगन्धित पानी की फुहारें छूटीं। संभूति का तन-मन महक उठा। उसे शीत की अनुभूति के स्थान पर ऊष्मा का अनुभव होने लगा। अत्यधिक उत्साह से वह कुमुदनी के समान खिल उठी।

पीयूष ने क्षण-मात्र में ही उसके मोहक तन से वस्त्रों का आवरण हटा दिया। वह लाज से दुहरी हो गई। पीयूष ने उसकी नग्न पीठ पर हाथ फेंरा संभूति को लगा कोई ऊष्मादायी लेप उसकी पीठ पर लगा दिया हो। पीयूष ने उसके सर्वांग पर हस्त संचालित किया। संभूति लज्जा के स्थान पर आनन्द से भर उठी। उसने अपने गोप्यतम अंगों को भी पीयूष के सम्मुख उन्मुक्तता से प्रस्तुत कर दिया। प्रत्येक अंग पर पीयूष का आनन्दवर्षी हाथ गया। संभूति को अनुभव हुआ कि उसके सभी अंगों पर दिव्यतम सुवासित पदार्थों का आलेपन हो चुका है। उसके रोम-रोम से दिव्य सुवास झरने लगे।

संभूति कुछ शंकित थी तो कुछ चकित भी। शंकित इसलिए कि संभूति के अनावृत अंगों पर पीयूष हस्तचालन कर रहा था किन्तु उसके शरीर में लेश मात्र भी विकार नहीं था। जबकि नारी की नग्न अवस्था और कामांगों का चिन्तन मात्र पुरुष को उत्तेजित कर देता है फिर वह तो पूर्ण नग्न और उन्मुक्तता का खुलकर प्रदर्शन कर रही है। तो क्या पीयूष के पौरुष में क्षीणता आ गई है ?

संभूति को अनुभव हो रहा था, जैसे उसके अंगों में मृदुलता-मुलायमता के साथ ही कठोरता भी आती जा रही है। कामांग के पद्मदल भी कठोर हो गए हैं। अकस्मात् पीयूष के कण्ठ से मंत्र ध्वनि का गुंजन उठा।

"त्वं प्रकृति त्वं परा त्वं निखिल विश्व विभूतिनी। त्वं सकल कलि कलुष भंजनि मुक्ति-मुक्ति प्रदायिनी।। सुर स्वरति त्वं सरस सुरसरि त्वं सुरासुर मोहिनी। सतत वन्दन शुभ सुभग वन्दन शत नमन कामेश्वरी।। क्लीं-क्लीं कामेश्वर्यै नमः।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओम क्लीं, ओ्‍ल ब्लीं ओम क्लीं, ह्रीम क्लीं ब्लौं क्लीं हौं ओम हुम क्लीं स्वाहा।" स्पष्ट बोलते हुए पीयूष ने उसका सुगन्धित जल से अंगाभिशेष किया।

"स्वर्णवस्त्रं, रोप्यं वस्त्रं सूत वस्त्र प्रदायऽहं।" कहते हुए पीयूष ने शून्य में दोनों हाथ ऊपर किए। अचानक उसके रिक्त हाथों में वस्त्रों का ढेर आ गया। सर्वप्रथम सूत से बने अण्डर गारमेन्ट उसने संभूति की सुचिक्कन जंघाओं में पिरोकर कटिक्षेत्र के अधो अंग का प्राच्छादन कर सूत से निर्मित कंचुकी (ब्रेजरी) से स्तनमण्डल की समुन्नति को आवरित किया। चाँदी जैसे चमकते तारों के ताने-बाने से बुना ब्लाउज और पेटीकोट तथा स्वर्ण तारों से निर्मित साड़ी पीयूष ने प्रिया को प्रदान की।

वस्त्रों के पश्चात् रत्न जड़ित अलंकारों को पीयूष ने संभूति को पहनाया। स्वर्ण निर्मित, रत्नमण्डिंत मेखला उसने संभूति की दर्शनीय कटि में पहनाई। हाथों में रत्नजड़ित चूलिकाएँ भी आदान कीं। कज्जल, महावर, एवं अन्य श्रृंगारिक वस्तुओं की धारणा से संभूति का रूप देवांगना से भी सहस्रगुना सौन्दर्यमय हो उठा।

पीयूष ने सौन्दर्य की यौवन की अगाध राशि संभूति को पुनः उठाया और आहिस्ता से चलते हुए शयनकक्ष में आ गया। पर यह क्या ? शयनकक्ष में पलंग तो था ही नहीं। पलंग के स्थान पर लाल-सुगन्धित फूलों की सेज बनी थी। पुष्पों का यह कोमल आस्तरण धरती से लगभग दो फुट ऊँचा रहा होगा।

पीयूष ने रमणोत्सा संभूति की सुरभित काया को आहिस्ता से धरती पर उतार दिया। वह चकित भ्रमित मृगी के समान परमाश्चर्य से देखतीं आदमकद दर्पण के सामने खड़ी हुई। वह अपनी प्रतिच्छाया को पहचान न सकी। यह वह स्वयं है अथवा कामदेव की प्रिया रति का प्रत्यक्ष रूप विग्रह ? अथवा साक्षात शम्भु वल्लभा गौरी का ही अमल और चित्त मोहन रूप दर्पण के सामने है। संभूति ने स्वयं के शरीर पर चिकौटी भरी। उसे पीड़ा का अनुभव हुआ तो उसे यह विश्वास हुआ कि यह स्वप्न का सुख नहीं वास्तविकता का महा आनन्द है। पुलक और हर्ष के उत्सव उसके रोम-रोम में नाच उठे।

पीयूष शैया के पास खड़ा होकर मंत्र बोल रहा था—

"आः सुरेखे वज्ररेखे हुम् फट स्वाहा।" पुष्प शैया पर पीयूष ने अधोमुखी त्रिकोण बनाते हुए कमलासन आदि त्रय-आसनों की स्थापना की फिर शैया को श्रद्धा से नमस्कार किया।

"शय्ये ! त्वं मृत रूपाऽसि साधनीयाऽसि साधकैः
अतोऽत्र जप्यते मंत्रो हयस्मांक सिद्धिदा भव।।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ समय तक पीयूष नेत्र बन्द किए किसी अज्ञात मंत्र का जप करता रहा फिर वह स्वयं की रूपराशि को अतृप्त दृष्टि से निहारती परम रूपसी रमणी संभूति की ओर उन्मुख हुआ। उसने आहवान किया।

"ओ दिव्य रूप, सौन्दर्य और यौवन की अर्करूपिणी संभूति। शक्ति और सुचारुता की प्रत्यक्ष मूर्ति ! हे अमृत स्राविणी भैरवी। हे गौरी रूपा संभूति मैं तेरा आह्वान करता हूँ।"

संभूति को लगा जैसे पीयूष उसे खींच रहा है, वह खिंचती हुई उसकी बाँहों में आ गिरी। पीयूष ने सुवासित जल से उसका अभिसिंचन किया।

"ऐं क्लीं वज्राकांक्षण्यै नमः इमां शक्ति पवित्री कुरु मम शक्ति कुरु-कुरु स्वाहा।" अभिसिंचन के पश्चात् पीयूष ने संभूति से श्रद्धा-सम्मान से विनय युक्त स्वर में कहा—"देवी, मुक्ति-मुक्ति प्रदायनी, हे शक्ति पूरणी, सृष्टि आधारिणी भैरवी, मैं भक्ति भाव से तेरे समस्त प्रभावान अंगों में निवास कर रही देवियों की पूजा करना चाहता हूँ। तू मुझ पर कृपा कर और प्रसन्नता से मुझ पुरुष को तेरी पूजा करने की अनुमति प्रदान कर।"

संभूति को प्रत्यक्षतः अनुभव हुआ, वह सचमुच दैव्या है। वह परम रूपसी होने के साथ-साथ विपुल बल और शक्ति की स्वामिनी है। उससे पृथक न तो कोई स्त्री है और न ही कोई देवी। वह स्वयं सम्पूर्णा है। हर्ष से उसका हृदय प्रफुल्लित हुआ, उसके अधर दल खुले और नादमयी वाणी अनुगुंजित हुई।

"पुरुष, तू महाभाग्यवत्ता को प्राप्त है, इसलिए तू शिव है, शिव से पृथक नहीं। तू मेरे सभी अंगों में निवास कर रही शक्ति के विविध रूपों का सहर्ष पूजन कर उन्हें उत्थापित और प्रसन्न कर। इस उत्सव के लिए मैं अति प्रसन्नता से तुझे पूजन की स्वीकृति प्रदान करती हूँ।" संभूति ने कहते हुए अपनी कुन्दन-सी दमकती काया पर आवरित वस्त्रों का आवरण हटाना शुरू किया। फिर वह सालंकार उत्तानावस्था (चित्त) में पुष्प शैया पर लेट गई।

पीयूष ने पदनख से शीर्ष पर्यन्त (पैरों के नाखून से चोटी तक) संभूति के अंगों का समन्त्र सपदार्थ पूजन किया। अंगों में बस रही देव शक्तियों को प्रसन्न किया। संभूति के अंग-अंग से दिव्यता झरने लगी जैसे प्रकाश की रश्मियाँ फूट पड़ी हों। उसे आज तक यह ज्ञात ही नहीं था कि स्त्री का शरीर ऐसा दिव्य धाम है जिसमें विविध शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। और स्त्री को कुछ पता ही नहीं। इन शक्तियों के होते हुए भी उसे अबला, निर्बला और असहाय क्यों माना जाता है ? नारी क्यों अपनी सुप्त शक्ति को नहीं जगाती ? क्यों संसार के कष्ट, अन्याय, तिरस्कार और अगाध पीड़ा सहन करती है ? पुरुष तो उसका पूजक है, सेवक है फिर क्यों वह निरन्तर प्रताड़ना का शिकार होती रहती है।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्यों-ज्यों पीयूष उसके अंगों का पूजन करता जाता, त्यों-त्यों पूजित अंग से किसी न किसी रूप का प्रादुर्भाव हो उठता। संभूति हर्षातिरेक से उस समय किलक उठी तब 'पुरुष' नें उसके नारी चिन्ह की कोमलता का स्पर्शन पूजन किया। कामरंध्रि में विस्फारण हुआ और एक लाल रंग की ज्योतिर्मयी अग्नि ज्वाला का प्रकटीकरण हुआ। वह निर्ताप ज्वाला उसके प्रजनांग पर कुछ समय तक जलती रही फिर पीयूष का पर्युषन स्वीकार कर पुंनः उसी अंग में समा गई।

इसी प्रकार कटि, नाभिमण्डल और उदर देश के पूजन पर अपने ही विविध रूप संभूति ने देखे। परस्पर सटे उत्तुग स्तनों की शीर्षा पर भी उसने पोषिणी शक्ति और वैष्णवी का दर्शन किया। ग्रीवा, भ्रूमध्य और शिरोदेश में भी उसने अपने रूप का हार्द दर्शन लाभ लिया।

लगभग तीन बजे तक पीयूष उसके रति भवन का दर्शन करते हुए एकाग्रता से जप करता रहा। इसके पश्चात् उसने जल का विसर्जन किया। वह अपने पूजन से निवृत्त हो चुका था।

संभूति ने पूजन समाप्ति के पश्चात् पीयूष को निष्काम रूप से देखा। उस समय तक उसके शरीर में कहीं वासना का कोई संवेग नहीं था किन्तु इसके पश्चात् जैसे उसके कमनीय अंगों में कामदेव स्वयं ही प्रकट हो गए। अत्यधिक कामाकांक्षा और उत्तेजना से उसके अंग के अणु-अणु जलने लगे। शरीर की महक और बढ़ गई। संभूति के लज्जा आदि पाश तो पहले ही समाप्त हो चुके थे।

संभूति उछली। उसके कण्ठ से विचित्र आनन्द से भरा सीत्कार स्वर निकला। उसने पीयूष को अपनी मृणाल बाँहों में जकड़ लिया और उसे पुष्पास्तरण पर पटक दिया। वह हाँफती हुई बोली–

"पुरुष.....आ.....तू मेरी कोमलता में प्रवेश कर। मेरा अभीष्ट मुझे आदान कर। मैं रमणी हूँ, तू रमण से मेरी प्रसन्नता का पात्र बन जा। मैं तुझे वैभव दूँगीं, यश दूँगी, यौवन और योषमणि दूँगी।" कहती हुई संभूति उसे अपने नीचे पटककर पुरुषारुढ़ होकर पीयूष के अंगों को चूमने लगी। ठ़ीक पुरुष की भाँति व्यवहार करती संभूति ने घाताघात कर सम्पूर्णतः पीयूष को अपनी गहनता में समाविष्ट कर लिया। इसके पूर्व उसने ऐसा अलौकिक-आह्लादकारी रति रमण नहीं किया था।

प्रमदा चकित-उद्भ्रान्त इस नर-नारी की दिव्य लीला को चित्रलिखित-सी देखती जड़वत खड़ी थी। प्रमदा ने आरम्भ से अन्त तक खुले द्वार से पीयूष का मिथुन उपासन देखा था जबकि नैतिक दृष्टि से उसे किसी की रति क्रियाएँ नहीं देखनी चाहिए थी किन्तु यह मैथुन कर्म कब था।

दरअसल प्रमदा ने बाथरूम में संभूति की चीख सुनकर सोते हुए उठकर यह देखने की कि संभूति क्यों चीख रही है ? आई थी। बाथरूम का द्वार खुला था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसकी नजर अनायास ही बाथरूम में जा ठहरी। उसे विश्वास नहीं हुआ कि जो वह देख रही है वह सत्य है। उसने पीयूष के सारे शरीर से प्रकाश फूटते देखा था। हालाँकि वह दर्शनीय दृश्य था फिर भी उसने अपनी नजरें उधर से हटा लीं किन्तु वह वहाँ से जा नहीं सकी।

कुछ समय पश्चात् जब पीयूष संभूति को बाँहों में लेकर निकला तो वह प्रथम बार तो संभूति के रूप वैभव प्राचूर्य के कारण बहुमूल्य वस्त्रालंकारों के कारण उसे पहचान न सकी। पीयूष उसे अपनी बाँहों में लिए शयनकक्ष में प्रवेश कर गया। वह मूर्ति की तरह खड़ी रह गई। उसे न पीयूष ने देखा और न संभूति ने।

जब वह शयनकक्ष के सामने से निकली तो वहाँ का दरवाजा भी खुला था और नीति विरुद्ध प्रमदा की नजर बैडरूम में भी जा घुसी। उसने प्रकृति और पुरुष का एक अवर्णनीय रूप देखा। प्रथम बार जाना कि काम की अवस्था में भी उपासन कर्म होता है बल्कि मैथुन स्वयं में एक उपासना की आनन्द मार्गण धारा है।

❑❑

मादाम सिल्वा के हाथ में नर खोपड़ी से बना पात्र था, जिसमें खून में डूबे हुए थे, माँस के टुकड़े। मादाम सिल्वा ने लाश से बनी सुरा की चुस्की ली फिर खोपड़ी में रखे खून में लिपटे नरमांस के टुकड़े को उठाकर चबाते हुए आग्नेय नजरों से विलि की ओर देखा जो अटेंनशन की मुद्रा में एक ओर खड़ा था।

"हाँ तो विलि, इतनी गहन सुरक्षा में वह भैरवी कैसे वाइन लैब में घुस गई।"

"माई मादाम, हमको कोई नॉलिज नहीं, वह भैरवी किस तरफ से लैव में एन्टेर हुआ ?"

"हूँ।" मादाम सिल्वा माँस खण्ड का चर्वष करते हुए हुंकारी। उसके ललाट पर चिन्ता की रेखाएँ उभरीं। कौन है यह भैरवी ? क्या शत्रुता है उससे उसकी ? यह तो निश्चित है कि वह बहुत शक्तिशाली है।

अचानक टी. वी. का स्क्रीन रोशन हुआ और उसमें सूपा के आगमन का संगीत बजा। सिल्वा ने चौंककर स्क्रीन की ओर दृष्टि उठाई। महान सूपा का चिर-परिचित चेहरा दिखाई दिया।

"महान सूपा की जय हो। ऐ मेरे कबीले के अमर देवता, यह सिल्वा तेरे अदब में अपने आपको झुकाती है। मुझे हुक्म दे, ऐ अमर देवता अपनी गुलाम को हुक्म दे।" सिल्वा उठकर झुकती हुई आदर से बोली।

"तेरी गुलामी काबिले तारीफ़ है डूचा। सूपा तेरे फन, हुनर और इल्म का आशिक है। हमेशा तूने समय आने पर मिशन को मुसीबत से उबारा है। अब सुन, यति पुत्र सूर्या के शरीर का पूरा परीक्षण हो चुका है। उसके शरीर में ऑटो बर्थ



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यंत्र बराबर चालू है, फिर भी कभी-कभी वह स्क्रीन कन्ट्रोल से गायब हो जाता है। मुझे विश्वास है कि कोई तंत्र साधक या योग साधक के कारण ही ऐसा हो रहा है। डॉ. सुमन आयंकर का बॉडी चैकअप हुआ है, किसी कारणवश उसका ऑटो बर्थ यंत्र बन्द हो गया है। संभव है कि उस पर किसी नक्षत्र की रश्मियों ने प्रभाव किया हो। लेकिन उसकी कोई चिन्ता नहीं, वह विश्वसनीय लड़की है, उसमें दोबारा उसी यंत्र का स्वतः विकास हो जाएगा। तुम्हारा काम है कि सूर्या के सम्पर्क में आए किसी योगी तांत्रिक का ऐसा प्रभाव समाप्त हो जाए जो उसे हमारे सम्पर्क से दूर रखता है।"

सूपा एक क्षण रुका फिर बोला—"डूचा डार्लिंग सूर्या पिछले पन्द्रह दिनों में किस-किस से मिला, उन सबकी तस्वीरें और नाम पते अभी तुम्हारे पास पहुँच जाएँगे। उनमें से ऐसा कौन शख्स है जो हमारे यंत्र को फेल कर देता है, तुम तलाश करो। वैसे आज से ही सूर्या के पीछे हमारे गुप्तचर लग चुके हैं। वह कहाँ जाता है ? किस स्थान पर किससे मिलकर उसका यंत्र बन्द हो जाता है, यह भी शीघ्र ही पता लग जाएगा।"

"ओ. के. मेरे देवता, मैं तेरे हर हुक्म को जी जान से अंजाम दूँगी। अपनी गुलाम पर यकीन कर।" सिल्वा ने सिर झुकाकर कहा।

"सूपा की तस्वीर स्क्रीन से गायब होने ही वाली थी कि सिल्वा ने जल्दी से कहा—"मेरे महान अमर देवता। कल रात कोई भैरवी नामक स्त्री वाइन लैब में घुस आई थी। उसने वहाँ काम कर रहे मेरे गुलामों को भी परेशान किया। जब एक गुलाम ने उसकी गुस्ताखी की सजा देनी चाही तो उस जादूगरनी ने उस गुलाम को मेरी कैद यानि कि कंकाल से आजाद ही नहीं किया, उसकी रूह को अपने साथ ही ले गई। तेरी सूचना के लिए मैंने कहा। वैसे वह अब उस लैव में तो क्या कहीं भी नहीं घुस सकेगी। मैंने उसका सख्त इंतजाम कर दिया है। लेकिन मेरे देवता। मेहरबानी करके अपनी बाँदी को यह जरूर बता कि उस जादू की पुड़िया से तेरा क्या वास्ता है ? क्या दुश्मनी है ? वह तुझे तबाह करने पर क्यों तुली है।

"भैरवी ?" सूपा आश्चर्य से बोला—"मेरी प्यारी डूचा, मेरी किसी भैरवी से कोई दुश्मनी नहीं है। हाँ एक योगिनी पश्यन्ती से कभी दुश्मनी हुई थी, किन्तु मैंने उसे तभी मौत के घाट उतार दिया था। ले देख यह उसका फोटो है।" स्क्रीन से सूपा की तस्वीर गायब हुई और उसके स्थान पर पश्यन्ती की तस्वीर उभरी।

"नहीं मेरे महान देवता यह भैरवी की तस्वीर नहीं है। मैं उस भैरवी से आमने-सामने मिल भी चुकी हूँ। यह वही जादुई औरत है जिसने सेठ जौहरी के बैडरूम में ख़लल डाला था और मैं जान बूझकर, ऐसा शो क़रती हुई वापस लौट



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आई थी, माना उसने मुझे जादुई शिकस्त दे दी हो किन्तु यह मेरी एक्टिंग थी। मैं उसे मुगालते में रखना चाहती थी।"

"मुझे तेरी जादुई ताकतों पर पूरा-पूरा यकीन है डूचा।" सूपा ने कहा और वह स्क्रीन से गायब हो गया।

"काले देश की काली जादूगरनी डूचा, तू सावधान हो जा। यह मेरी अंतिम चेतावनी है। तू विद्या का उपयोग जनकल्याण के लिए कर।" नारी कण्ठ से गूँजती हुई आवाज सुनकर माँस खण्डों को चबाती सिल्वा चौंककर विलि की ओर देखने लगी। उसे ऐसा लगा था कि आवाज विलि के पास से ही आई थी।

"विलि, ये कौन बोला रे।" सिल्वा क्रोध से चीख उठी।

"ये मैं बोल रही हूँ डूचा।" इस बार स्पष्ट विलि के कण्ठ से आवाज निकली।

"तू.....विलि हरामजादे। ऐसा भद्दा मजाक ?" सिल्वा क्रोध से उफन उठी।

विलि के कंकाल से उपहासात्मक हँसी की गूँज उठी फिर आवाज आई। "मूर्ख डूचा, यह मज़ाक नहीं है। जिसे तूने विलि समझा है, वह अब तेरा नहीं रहा। उसकी आत्मा मेरे जलते हुए खप्पर में कैद हो गई है। ले देख, आँखें खोलकर देख।"

"विलि के कण्ठ से वैरोचनी की आवाज एक बार फिर गूँजी। विलि क़ा हाथ आगे बढ़ा, उसमें जलता हुआ खप्पर प्रकट हो गया। विलि ने हड्डियों वाला हाथ खप्पर में डाला और कुछ वस्तु निकालकर धरती पर पटक दी।

अत्यन्त हल्की, विस्फोट की आवाज हुई और फिर आदमकद आकार में धुँए की रेखा धरती से उठी। अगले ही क्षण सिल्वा के सामने विलि खड़ा था। मगर यह विलि कंकाल रूप में न होकर मनुष्य रूप में था। ठीक वैसा ही जैसा वह अपने जीवनकाल में था। पच्चीस-छब्बीस वर्षीय गोरे रंग का सुदर्शन युवक विलि, जिसे सिल्वा ने अपनी खुरदरी जिह्वा से चाट-चाटकर मार डाला था।

"मादाम सिल्वा हमको भैरवी ने इस कंकाल से फुल फ्री कर दिया है। अब हम तुम्हारा गुलाम नहीं रहा। मादाम भैरवी ग्रेटेस्ट लेडी हैं। हम उनका बहुत कद्र करता है। गुडबाय मादाम सिल्वा, अब हम चलता है। हम इसी लाइफ में फिर मिलेगा मादाम, जरूर मिलेगा, लेकिन जब मिलेगा तो हम अपना इन्तकाम के वास्ते मिलेगा। गुडबाय" विलि का सूक्ष्म शरीर धुँए की लकीर में बदला और दोबारा जलते हुए खप्पर में समा गया। विलि का कंकाल ठहाका लगाकर हँस पड़ा। उसके गले से वैरोचनी की हँसी निकल रही थी।

सिल्वा जहरीली नागिन के समान फुंकारती खड़ी हो गई। उसका हाथ आंतरिक्ष में उठा, अगले ही क्षण उसके हाथ में लगभग दो फुट का पतला पर खतरनाक काला नाग था। उसने नाग कंकाल की ओर छोड़ दिया। हवा की तेजी



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से कोबरा कंकाल से आ लिपटा। उसने जगह-जगह कंकाल को डँसना शुरू कर दिया।

अट्ठहास लगाते हुएं कंकाल बोला—"डूचा तू मूर्ख है। काले जादू का नाग शरीर घाटी पर असर करत्ा है, हड्डियों के ढाँचे पर नहीं।"

सिल्वा चौंकी। कंकाल में बैठी वैरोचनी ने ठीक ही कहा था। अगर कंकाल के स्थान पर कोई शरीरधारी होता तो अब तक मौत की गहरी नींद में सो चुका होता। सिल्वा ने हाथ ऊँचा किया "वापस.....वापस आ नूमा.....वापस आ.....।" उसके आदेश के साथ ही काला नाग कंकाल के काले ओवरकोट से निकलकर हवा में उछला और सिल्वा के पांस आकर गायब हो गया।

"उस रात तू भाग्य से बच गई डायन, लेकिन आज.....।" कहते हुए कंकाल ने अपने हाथ के खप्पर को तिरछा किया।

खप्पर की अग्निज्वाला प्रखर हुई, मुड़ी और तेजी से सिल्वा की ओर लपकी। एक क्षण में ही सिल्वा अग्नि ज्वाला से घिरकर पेट्रोल की तरह धधक उठी। कुछ क्षणों तक वह धूँ-धूँ जलती रही और इसके बाद अग्नि ज्वाला समाप्त हो गई। सिल्वा का सारा शरीर तपाए हुए सोने की तरह चमक उठा। वह अट्ठहास कर उठी।

"भैरवी.....देख तुझे जिस ज्वाला पर गर्व था, वह नाकाम हो गई। तूने मेरा गुलाम विलि मुझसे छीना और मैंने.....मैंने तेरे खप्पर की ज्वाला को तुझसे छीन लिया। जिस ज्वाला से तू मुंझे जलाकर राख करना चाहती थी, अब वही ज्वाला तुझे जलाएगी।"

सिल्वा के सुनहरे शरीर से ज्वाला प्रकट होकर तेजी से कंकाल की ओर आई। इसके पूर्व कि ज्वाला कंकाल का स्पर्श करे, कंकाल ऊपर उठा और छत से टकराया। एक विस्फोट की ध्वनि गूँजी, छत में छेद हो गया, जिससे कंकाल निकलता हुआ चला गया। उसके पीछे लपलपाती अग्नि ज्वाला भी थी। सिल्वा का अट्ठहास गूँज उठा। आखिर कब तक बचेगा कंकाल ? यह तो सिल्वा भी जानती थी कि कंकाल के भस्म होने से भैरवी की मृत्यु नहीं होगी किन्तु उसका बल अवश्य कम होगा। दूसरा, विलि का आवास कंकाल ही नहीं रहेगा तो वह कैसे उससे प्रतिशोधक भाव से टकरायेगा। हालाँकि विलि की हैसियत उसके काले जादू की शक्तियों के सामने मच्छर से भी कम थी। उसी ने तो विलि को कंकाल में कैद किया था। लेकिन भैरवी ने किस प्रकार कंकाली कैद से छुड़ा लिया, यह उसे रहस्य था।

कंकाल ने एक बार फिर एक छत में छेद किया और बाहर निकलता चला गया। यह पहाड़ियों का सिलसिला था। कंकाल हवा में कलाबाजी खाता, उड़ता



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेजी से पहाड़ी की तलहटी की ओर अग्रसर हुआ। इसी तलहटी में पहाड़ी से लगभग तीन-चार फर्लांग दूरी पर सूर्या का आवास था।

सूर्या तारों भरी रात में अपने प्रिय मौसम की ठण्डक का आनन्द उठाता छत पर बैठा था। अचानक उसकी दृष्टि उसी पहाड़ी की ओर उठी जिधर कंकाल का निरन्तर पीछा करती ज्वाला चमक रही थी। सूर्या चौंका, क्या यह सूपा का कोई वैज्ञानिक परीक्षण है ? पर नहीं सूपा इस प्रकार कभी परीक्षण नहीं करता कि वे जनसामान्य की दृष्टि उन पर पड़कर कौतूहल का निर्माण हो। हालाँकि यह क्षेत्र पूरी तरह सुनसान रहता था। यहाँ सूपा कोई परीक्षण भी करे तो भी कोई नहीं देखता। सूर्या ने पास में रखी दूरबीन उठाई, उसका फोकस सैट किया, दृश्य समीप आ गया।

सूर्या देखते ही चौंक गया, कारण था कि अग्नि ज्वाला की रेखा के प्रकाश में उसने साफ-साफ ओवर कोट, फेल्ट हैट पहने विलि को उड़ते देखा। इस बेचारे विलि के पीछे यह मारक-घातक ज्वालरेख क्यों लगी है ? क्या मादाम सिल्वा ने क्रुद्ध होकर विलि के पीछे अपनी काली जादुई शक्ति अग्नि ज्वाला के रूप में उसके पीछे लगा दी ?

अचानक पहाड़ी का वह हिस्सा प्रकाश से नहा गया। सूर्या की दूरबीन ने उसे भी देखा। वह एक सफेद-उज्ज्वल प्रकाश से आलोकित प्रकाश पिण्ड था, जिससे आलोक की धबल रश्मियाँ निकल रही थीं। वह आलोक पिण्ड प्रसत्वर गति से विलि के पीछे भागती ज्वाला को लपका और कुछ क्षणों में ही उस ज्वाला रेखा को ढक लिया फिर वह उद्भाषित आलोक पुंज ऊपर आंतरिक्ष की उन्नति की ओर उठा.....और.....और.....उठता हुआ वह सूर्या की दूरबीनी आँखों से ओझल हो गया।

कौन था यह ? यह ज्वाला क्यों विलि के पीछे थी। उस प्रकाश पुँज ने ज्वाला को स्वयं में समेटकर विलि की रक्षा की। क्या यह प्रकाश पुंज मादाम सिल्वा द्वारा भेजा गया था ? शायद ऐसा ही होगा। उसे याद आया कि सेठ जौहरी के बैडरूम में भैरवी के खप्पर से ऐसी ही ज्वाला निकली थी। उसने विलि को तो भयभीत किया ही था, मादाम सिल्वा को भी वहाँ से जाने के लिए विवश कर दिया था। सूर्या ने दूरबीन का फोकस दोबारा विलि पर सैटकर देखा, विलि धब्बे के रूप में उड़ता उसी के मकान की ओर आ रहा था। कुछ देर में ही विलि उसके भवन के ऊपर आ गया।

"ऐ विलि.....ई.....ई।" अपने छत के ऊपर से विलि को गुजरता देख सूर्या चिल्लाया। विलि का कंकाल मुड़ा, सूर्या को स्पष्ट नजर आया। विलि के एक हाथ में खप्पर था, वैसा ही खप्पर जो उसने भैरवी के पास देखा था। विलि आहिस्ता से सूर्या की छत पर आ टिका। उसे स्थिर हुआ देख सूर्या मुस्कराकर बोला—



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"क्या बात है मि. विलि ? क्या मादाम सिल्वा के कोप भाजन बने हो या भैरवी की खप्पर ज्वाला ने तुम्हें आतंकित कर दिया है ?"

"सूर्या, अच्छा हुआ तुम मिल गए। यह मैं हूँ भैरवी वैरोचनी।" कंकाल के ढाँचे से आवाज आई।

"भैरवी ?" सूर्या आश्चर्य से बोला।

"लेकिन यह तो मिस्टर विलि का ढाँचा है। तुम इसमें हो तो मि. विलि कहाँ है ?"

"विंलि मेरे इस खप्पर में है, लेकिन अब विलि इसी कंकाल में रहेगा।" भैरवी की आवाज आई।

"वैरी, वैरी थैंक्यू मादाम भैरवी। मैं अपना इन्तकाम लेना चाहता हूँ, इसके लिए मुझे इस ढाँचे की जरूरत है।" भैरवी के खप्पर से आवाज उभरी।

"लेकिन तुम रहोगे कहाँ विलि ? तुम्हारा शरीर ऐसा है कि तुम समाज में नहीं रह सकते।" भैरवी ने कहा।

"ये हमारा प्रॉव्लम है मादाम भैरवी। अपनी लाइफ एण्ड होने के बाद हमको पहली बार फुल फ्रीनेश की फीलिंग हो रहा है। हम किधर भी रहेगा एकदम सेफ रहेगा।" भैरवी के खप्पर से लहराती हुई धुँए की रेखा निकली और विलि का वायवीय देह प्रकट हुआ।

"ये क्या चक्कर है भैरवी जी। विलि तो मादाम सिल्वा का दासानुदास है, फिर उससे क्या कैसे इन्तकाम की बात कर रहा है ? और आप ? आप इस विलि के कंकाल में कैसे समा गईं। सूर्या ने चकित होते हुए कहा।

"ये सब बातें बाद में सूर्या। अभी बहुत काम करने हैं।" कंकाल से आवाज आई और उससे एक झिलमिलाता पारदर्शी शरीर निकलकर हवा में झूलने लगा। जैसे ही भैरवी का पारदर्शी आलोकमय शरीर कंकाल से निकला, विलि का सूक्ष्म देह अपने कंकाल में समा गया।

"शुभ रात्रि सूर्या। शेष बातें तुम्हें विलि बताएँगे।" कहते हुए भैरवी वैरोचनी का जगमगाता कलेवर आकाश में उठ गया और कुछ क्षणों में ही वह वायु में घुलमिल गया। सूर्या विलि की ओर उन्मुख हुआ और बोला।

"हाँ तो मिस्टर विलि ? अब बताओ क्या घटित हुआ ?"

"मि. सूर्या डेंजर सूपा का बेड नजर अब तुम्हारे पर उठ रहा है। तुमको अलर्ट रहना बहुत जरूरी है। वह तुम्हारा होलीफादर सूपा ने तुम्हारा जासूसी कराने के वास्ते उसके क्रिमनल लोग तुम्हारे पीछे लगाने का आर्डर बोला है। उसको शक है कि किसी योगी या तांत्रिक दर्शन ने तुम्हारे बॉडी के यंत्र को फेल



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर दिया है या टाइम-टाइम पर फेल कर देता है। अगर तुम्हारा कोई फाल्ट निकलता है तो वो होलीफादर तुम्हारे को गोली मार देगा।"

"मुझे कोई गोली नहीं मार सकता मि. विलि, क्योंकि गोलियाँ मेरे शरीर को चूमकर नीचे गिर जाती हैं।" सूर्या ने मुस्कराते हुए कहा।

"व्हाट ? ये कैसे पॉसिबल है मि. सूर्या ?

"इस दुनिया में सब कुछ संभव है मि. विलि।"

"ठीक है होगा। लेकिन अब हम आपसे कुछ हेल्प माँगता मि. सूर्या। क्या आप हमको हेल्प देगा।" इतना याद रखना कि आपका हेल्प मादाम सिल्वा और बेडमेन सूपा के ऐन्टी में होएगा।" विलि की आवाज में घृणा थी।

"ओ. के. तुमको क्या चाहिए मि. विलि।"

"फर्स्ट ऑफ ऑल, हम एक फर्स्ट क्लास गाड़ी (कार) माँगता, सेकण्ड में हमको रहने का वास्ते एक एकान्त हाउस। आफ्टर दिस, आई वान्ट ए ब्रेव, लवली एण्ड ब्यूटीफुल लेडी।"

सूर्या उसकी अंतिम माँग पर हँस उठा। हँसते हुए वह बोला—

"तुम खूबसूरत महिला का क्या करोगे मि. विलि। वह तुमको देखते ही डरकर बेहोश हो जाएगी।"

"वह वैरी जरूरी है मि. सूर्या। हम ब्रेव लेडी इसीलिए तो माँगता है कि हमको सीन कर वह डरे नहीं।"

"ठीक है, मैं कोशिश करूँगा।" लेकिन आज रात तुम कहाँ जाओगे ? कहाँ सोओगे।"

"हम ओनली डे टाइम में रिलेक्स करता मि. सूर्या। आल नाइट हमारा वर्किंग टाइम है। हम इधर से कहीं भी जाएगा, एन्जॉयमेन्ट करेगा आज। क्योंकि आज हम फ्री हुआ है, इसलिए हम वैरी हैपी है।"

"देखो मि. विलि किसी होटल में जाकर किसी को डराना मत। वर्ना तुम तुरन्त पकड़े जाओगे।"

"आपका बात हम मानेगा मि. सूर्या बट, आज हमको नहीं रोकने का। आज हम फुल एन्जॉयमेन्ट के मूड में हैं। क्या आप आज नाइट आपका कार नहीं दे सकता।"

"ठीक है, ले जाओ, लेकिन उसमें पैट्रोल कम है।" इसका अरेजमेंट हम खुद कर लेगा।"

सूर्या नीचे उतर कर आया। उसने अपनी गाड़ी की चाबी उठाई और विलि को देते हुए कहा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"विलि सुबह तक गाड़ी भेज देना।"

"श्योर.....श्योर.....थैंक्यू मि. सूर्या।" अपने हाथ में गाड़ी की चाबी लेकर विलि ने शराफत से कहा।

विलि ने गैरिज से गाड़ी निकाली और उसे चलाता हुआ मुख्य सड़क पर आ गया। शहर के बाहरी पैट्रोल पम्प पर उसने पैट्रोल लेने के लिए गाड़ी खड़ी कर दी।

"हाँ साब कितना।" इलेक्ट्रोनिक पम्प को चालू करते हुए पैट्रोल पम्प पर नियुक्त लड़के ने कहा। कार में अंधेरा, दूसरे विलि ने फैल्ट हैट पहन रखा था, लड़के को विलि का चेहरा नजर ही नहीं आया।

"फुल.....टेंक फुल कर दो।" विलि का घर्घराता स्वर निकला। लड़के ने टैंक फुल कर दिया।

"इतनी रात गए, कहीं जा रहे हैं क्या सर ?" लड़के ने पम्प बन्द कर कहा। वह सूर्या की गाड़ी को पहचानता था।

"बिल मि. सूर्या के अकाउन्ट में डाल देना।" कार से फिर वही स्वर निकाला।

"ठीक है सर।" लड़के ने सभ्यता से कहा। सच तो यह था कि विलि के पास रुपए थे ही नहीं। उसने कार स्टार्ट की ओर चल दिया। कार के डेस बोर्ड पर सिगरेट का पैकेट और माचिस रखी थी। विलि का हाथ बढ़ा, सिगरेट उसके हड्डियों वाले मुँह से लगाकर उसे जलाया।

इस बार विलि की कार का रुख सिटी के मुख्य उद्योगपतियों में से एक जी. नागपाल की कोठी की ओर था। नागपाल की उम्र लगभग तीस वर्ष की थी। लम्बा, चुस्त शरीर हँसमुख स्वभाव किन्तु वह अन्दर से ही उतना ही क्रूर और हिंसक। विलि अपने जीवनकाल में नागपाल की सोया फैक्ट्री में अकाउन्टेंड का कार्य करता था। उसी ने विलि की बहन मेरी से बलात्कार कर उसकी हत्या कर दी थी। वह कानून के सामने बहुत रोया, गिड़गिड़ाया किन्तु उसकी किसी ने नहीं सुनी। अन्ततः वह तंत्र-मंत्र सिद्धि प्राप्त पुजारिन ताशिया के पास जा पहुँचा।

ताशिया का आश्रम भी पहाड़ियों में था। वास्तव में ताशिया मादाम सिल्वा की पुजारिन थी। ताशिया ने उसे काले जादू,की स्वामिनी सिल्वा के हवाले कर दिया। सिल्वा ने एक रात उसे अपने बिस्तर का मेहमान बनाया और उसी रात सिल्वा ने अपनी जादुई ताकत से उसे विवश करके, उसके जिस्म के माँस-मज्जा को चाटते हुए उसे मार दिया। कितनी निर्दयता से मारा था, उस राक्षसी ने विलि को—पहले सिल्वा ने अपनी कामाग्नि बुझाई फिर उसके सारे शरीर पर ब्लैड जैसी तेजधार के चाकू से जगह-जगह चीरे लगाकर, उन चीरों से निकले हुए खून को चाटा फिर जिन्दा विलि का माँस काट-काटकर वह खा गई। सिल्वा ने उसके शरीर का सारा



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माँस चाकू से छीला था। तब तक विलि मर चुका था किन्तु मरकर भी वह नहीं मर सका। उसकी रुह को सिल्वा ने अपना गुलाम बनाकर उसी के कंकाल में सौ वर्षों के लिए कैद कर दिया। इस कैद से उसे भैरवी ने मुक्ति दिलाई।

विलि की कार नागपाल की विशाल कोठी के सामने रुकी। दरबान ने सम्मान से गेट खोला और कार पोर्च में जाकर खड़ी हो गई। कोठी में अभी जाग तो थी किन्तु विचित्र सन्नाटा छाया हुआ था।

नागपाल बेचैनी से अपने कमरे में टहल रहा था। उसके चेहरे पर गहरी चिन्ताओं के बादल छाए हुए थे। वह सायंकाल से लगातार पुलिस से सम्पर्क किए हुए था। अचानक फोन की घण्टी बजी। नागपाल ने तत्क्षण रिसीव किया। उधर से आवाज आई।

"हैलो मि. नागपाल हम विलि स्पीकिंग करता।"

"कौन विलि।" नागपाल ने चौंककर कहा।

"यानि की कि तुम विलि को नहीं जानता ? तुम अपने....।"

"सॉरी मि. विलि, मैं आपको नहीं पहचान पाया। इस समय मैं सख्त उलझन में हूँ, आप फिर कभी फोन कर लें।" नागपाल पुनः बोला।

"हम आपका उलझन सॉल्व कर सकता है मि. नागपाल। आज मॉर्निंग टाइम में गायब तुम्हारा सिस्टर को हम खोज सकता है।"

"क्या तुम..... ? क्या तुम जानते हो विभा कहाँ है।"

"यश मि. नागपाल।" संक्षिप्त उत्तर सुना नागपाल ने।

"आप मुझे कहाँ मिल रहे हैं। मैं तुरन्त आ रहा हूँ।" नागपाल ने जल्दी से कहा।

"हम बिल्कुल तुम्हारा पास से टाकिंग कर रहा है नागपाल।" सुनकर नागपाल उछल पड़ा। उसने चौंककर सामने देखा, जहाँ काले ओवर कोट और हैट लगाए विलि खड़ा था। उसके मुँह से धुँए की लहर बनाती सिगरेट भी सुलगी हुई थी। बन्द द्वार से यह कैसे अन्दर आ गया ? अभी हाल ही में यह फोन पर बोला था। इतनी शीघ्र.....।

"कौन हैं आप ?" नागपाल गुर्राया।

"अपने अकाउन्टेंड को नहीं पहचाना नागपाल ?"

उसी समय शयन कक्ष के टॉयलेट से नागपाल की पत्नी देवयानी निकली। ड्राइंग रूम में एक विचित्र और असभ्य आदमी को देखकर उसने नाक भौं सिकोड़े।

"मेरा अकाउन्टेंड ? 'विलि।' इस नाम का मेरा कोई कर्मचारी तक नहीं है ?



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्या उसे किडनेप किया गया है ?" नागपाल के स्वर में गहन चिन्ता और घबराहट थी।

विलि हँस उठा। जैसे अनेक हड्डियाँ खड़-खड़कर बज उठी हों। हँसते हुए उसने अपना हैट उतारकर हाथ में ले लिया। काले ओवरकोट पर रखे नरमुण्ड और उससे निकलते अट्ठहास को देख सुनकर देवयानी ने भयभीत होकर चीख मारी। जबकि नागपाल, उसने फुर्ती से अपने गाउन की जेब से छोटा-सा रिवॉल्वर निकाला और विलि की ओर तानते हुए गुर्राया—

"कौन हो तुम ?"

विलि का स्थिर हाथ एक झटके से आगे बढ़ा। पलक झपकते ही नागपाल के हाथ से रिवॉल्वर निकलकर विलि के हाथ में आ गया।

"अब हमारा डेथ रिवॉल्वर के रेंज से आउट हो गया है मि. पाल। हमको सिर्फ भैरवी ही डेड कर सकता है। सीन, योर दिस रिवॉल्वर।" विलि के कंकाल से आवाज आई।

नागपाल ने देखा, विलि ने अपने हाथों के बीच रिवॉल्वर को रखकर हल्के से दबाया, फौलादी धातु से बना अमेरिकन रिवॉल्वर चट-चटकर टूटते हुए छोटे-छोटे टुकड़ों में बदलकर फर्श पर गिर पड़ा। नागपाल की आँखें आश्चर्य और भय से फैल गईं।

"तुम्हारा सिस्टर इस टाइम तुम्हारे फ्रेण्ड जौहरी के फॉर्म हाउस में हाय एन् जॉय कर रहा है मि. पाल।"

"बकते हो तुम।" नागपाल चिल्लाया।

"रिलेक्स मि. पाल रिलेक्स। रियली तुम्हारा हनी वाइफ ब्यूटी क्वीन है। विलि के नरमुण्ड की बल्ब जैसे जल रही आँखों से प्रकाश की किरणें देवयानी से लिपटीं। इस समय देवयानी ने अत्यन्त झीना नाइट ड्रेस पहन रखी थी, जिसके नीचे न पेन्टी थी और न ही ब्रा।

"निकल जाओ यहाँ से।" आतंक से नागपाल चिल्लाया।

"तुम्हारा सिस्टर के फ्यूचर का एक और एन्फोरमेशन दे रहा हूँ मि. पाल। जब वह उधर से मार्निंग टाइम में रिटर्न होगा तो.....तो तुम अपने सर्वेन्टस् को सावधान कर देना। वह इसलिए कि जो भी यंग गर्ल्स जौहरी के साथ सेक्स करता है, वह इतना सेक्सी हो जाता है कि अपने सर्वेन्ट्स और रोड पर चलते आदमी को भी नहीं छोड़ता।" कहते हुए विलि आराम से देवयानी की ओर बढ़ा। देवयानी भयातंक से चीखती नागपाल के पीछे जा छिपी। "डोन्टमूव।" नागपाल फिर चिल्लाया, किन्तु विलि नहीं रुका। उसने नागपाल को पकड़ा और तिनके की तरह उठाकर शयनकक्ष के कोने में फेंक दिया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"नो.....नो माय सिस्टर.....। तुमको डरने का कोई बात नहीं। तुम्हारे को सिस्टर कहा है न। हम घोस्ट लोग इन दरिन्दों से ज्यादा गुड एण्ड बेस्ट हैं। बट माय सिस्टर आय, एम सॉरी। तुम्हारे हस्बैण्ड का डेथ आज से इस कोठी में भटकने लगा है। इसके डेथ से तुम वैरी हेप्पी होगा। एम. आई. राइट ?" विलि ने देवयानी से कुछ दूर रुककर शालीनता से कहा।

"नो टेन्शन माय सिस्टर.....नो टेन्शन।" कहते हुए विलि मुड़ा और हँसते हुए उसकी आवाज आई।

"सीन.....सीन मि. सूपा.....। गौर से सीन करो बेडमेन सूपा। हमने तेरे एक आदमी को, तेरे क्राइम के साथी को तेरे सामने ही कूड़े की तरह उधर फेंक दिया और महान सूपा तू कुछ नहीं कर सका। गुडवाय सूपा।" कहते हुए विलि ने अपने सिर पर हैट रखा, दरवाजा खोला और चला गया। देवयानी ने संतोष की सांस ली। उसके जाते ही वह उठी और काँपते हाथों से अपने फैमिली डॉक्टर का नम्बर डॉयल किया।

उधर विलि हवा में लगभग झूलता नागपाल के बेडरूम से निकला और पोर्च में खड़ी अपनी कार में घुस गया। अभी रात को मात्र ग्यारह ही बजे थे, कोठी के तमाम नौकर चाकर जाग रहे थे किन्तु विलि किसी को दिखाई नहीं दिया। विलि की कार स्टार्ट होकर एक कदम भी नहीं बढ़ी थी कि दिल दहला देने वाला विस्फोट हुआ। पोर्च में खड़ी दूसरी कार तक के परचक्के उड़ गए। कहने की आवश्यकता नहीं यह शक्तिशाली विस्फोट विलि की कार में हुआ था। कार छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटकर बिखर गई। कार के उसी मलवे में विलि के कंकाल के भी टुकड़े हो गए। पूरे इलाके में दहशत फैल गई। पोर्च में चारों ओर और गर्द का गुबार मंडराने लगा। इसी गुबार में अपनी लम्बी घनेरी नितम्ब देश तक झूलती फहराती केश राशि से सज्जित भैरवी की जगमग कंचन काया भी भटकती दिखाई दी।

❑❑

नागपाल की कोठी पर हुए बम विस्फोट के दो दिन बाद।

श्री माँ के अखण्ड सिद्ध योग आश्रम के एक लताच्छादित मण्डप के नीचे संभूति और प्रमदा दोनों बैठी हुई थीं। संभूति की रूप धार अब पहले से कई गुना अधिक तेज हो गई थी। सदैव उसके चन्द्र से मुख पर आनन्द, व्रीड़ा और मन्द-मन्द मुस्कान की चन्द्रिका फैली रहती थी।

उस समय दिन के ग्यारह बजे थे। श्री माँ अपने नित्य पूजन से अभी नहीं उठी थीं। इसलिए उनकी प्रतीक्षा में वे दोनों लताकुँज में आ बैठीं और चर्चा क़रने लगीं। चर्चा का विषय था पीयूष।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीयूष के अलौकिक और दिव्य संसर्ग की रात्रि के पश्चात् प्रातः आठ बजे संभूति की आँख खुली तो उसने स्वयं को अपने पलंग पर ही पाया। रात की सभी घटनाएँ उसके सामने मूर्त होती चली गई थीं।

कहाँ है वह फूलों का नर्म बिछावन ? क्या रात्रि को भोगा गया कामसुख स्वप्न था, पर नहीं ? हीरे आदि रत्नों से जड़ित स्वर्णाभूषण अभी भी उसके अंग पर थे। अचानक उसने स्वयं को देखा था और सम्पूर्ण नग्न पाया था। संभूति ने जल्दी से वस्त्र पहने थे। वही वस्त्र जो रात्रि में पीयूष ने उसे अपने सुरभि दाता, स्निग्ध तन पर पहनाए थे।

संभूति ने पास में देखा, पीयूष नहीं था। शायद टॉयलेट में हो या बाथरूम में। किन्तु पीयूष कहीं नहीं था। उस रात के बाद आज तक पीयूष घर नहीं पहुँचा था। हाँ उसका फोन अवश्य उसी दिन आया था, जिसमें उसने कहा था कि वह अत्यावश्यक कार्य से बाहर जा रहा है। उसने पीयूष से बहुत कहा कि वह तुरन्त घर आए फिर जहाँ जाना हो चला जाए, किन्तु पीयूष नहीं आया। लेकिन सुबह शाम उसके फोन अवश्य आते रहे। आज संभूति श्री माँ के पास इसीलिए आई थी कि वह पीयूष के रहस्यमय आचरण के प्रति खुलकर श्री माँ से कहते हुए रहस्य-अनावृत कराने का प्रयास करेगी।

उस रात के पश्चात् संभूति ने एक बात और भी अनुभव की थी। प्रथम तो यह कि उसे लगता था कि उसमें विशेष शक्ति शारीरिक और मानसिक भी आ गई है। उसे अपने मानस बल का विश्वास उस समय हुआ जब संसर्ग के दूसरे ही दिन उसकी इच्छा व मात्र दृष्टि से कूड़े के ढेर में अचानक अग्नि प्रकट हो गई, इच्छा मात्र से शीशा चटक कर टूट गया और देखते ही लोहे की मोटी छड़ कई स्थानों से मुलायम तार के समान मुड़ गई। क्या यह पीयूष के संसर्ग से प्राप्त सिद्धि कर अवस्था है ? अगर ऐसा है तो पीयूष को यह शक्ति कहाँ से ? कब ? कैसे मिली। उसने कभी पीयूष को साधना करते हुए नहीं देखा, किन्तु इतना अवश्य उसे विश्वास हो गया कि पीयूष के पास कोई बड़ी और चकित कर देने वाली शक्ति से प्राप्य सिद्धि अवश्य है। उसने यह भी नोट किया था कि पीयूष की मृत्यु के बाद ही उसमें सिद्धि की अलौकिकता प्रकट हुई है, इसके पूर्व वह मात्र सामान्य पुरुष ही था, वह भी काम sex शक्ति में बिल्कुल कमजोर। रोग के पूर्व कभी पीयूष उसे यौन तुष्टि नहीं दे सका था।

और प्रमदा ! जिस रात उसने संभूति और पीयूष का दिव्य रतिमंथन देखा था, उस दिन, दिन भर आनन्द से भरी रही किन्तु रात होते ही उसके शरीर में कामनाओं का, यौन इच्छाओं का ज्वार उमड़ने लगा। ज्यों-ज्यों रात बढ़ती और गई उसकी कामुकता, वेदना और पुरुष प्राप्ति की आकांक्षा बढ़ती ही गई, जबकि उसके पास में ही आनन्द और तृप्ति से संभूति सोती रही थी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रमदा ने स्वयं पर बहुत नियन्त्रण करने का प्रयास किया था किन्तु सेक्सी विकलता से वह अपने अंगों को मलती उठ खड़ी हुई। वह पागलों की तरह घर से निकली। उस समय रात के दो बजे थे। प्रमदा के वस्त्र अस्त-व्यस्त थे और बाल खुले हुए। वह प्रसत्वर गति से चली।

सुनसान सड़क पर चलते हुए, अचानक उसे लगा कि उसके चारों ओर बवण्डर पैदा हो गया है और वह किसी तिनके की तरह उसमें फँसकर तेजी से चक्कर लगाने लगी है। उसे लगा जैसे तेज-तेज घूमने से उसको चक्कर आने लगे हैं। उसने उस वात्याचक्र से निकलने का पूरा प्रयास किया किन्तु वह घेरे से नहीं निकल सकी और चेतना खो बैठी। उसकी चेतना जब लौटी तो उसने अपने ऊपर संभूति को झुके हुए पाया। वह उसे झकझोरती कह रही थी।

"उठो दीदी.....देखो तो सूरज कितना ऊपर आ गया।"

प्रमदा भी अपनी स्थिति को श्री माँ पर प्रकट कर देना चाहती थी। इसीलिए दोनों ने प्रातः पूजन से निवृत हो हल्का-सा नाश्ता किया और आश्रम की ओर चल पड़ीं। जबकि संभूति को पता था कि श्री माँ दोपहर बारह बजे से पहले किसी से नहीं मिलतीं, फिर भी दोनों आश्रम में आ गईं।

अचानक प्रमदा की दृष्टि दांयी ओर से आ रहे सूर्या पर पड़ी, वह चहककर बोली—"सूर्या !" संभूति ने भी उसे देखा। शायद सूर्या ने भी उन दोनों को वहाँ बैठे देख लिया था इसलिए वह भी उन दोनों की ओर मुड़ा।

"हालाँकि सूर्या अच्छा युवक प्रतीत होता है किन्तु समझ में नहीं आता कि यह उस रात (जिस रात सिल्वा ने ऐलिस को मारा था) उस राक्षसी के साथ क्यों था ?" प्रमदा ने धीरे से कहा।

"यह तो मुझे भी पता नहीं, बस इतना अवश्य जानती हूँ कि सूर्या बहुत अच्छे व्यक्तित्व का बुद्धिमान नवयुवक है।" संभूति ने प्रशंसा करते हुए कहा।

"सूर्या जैसे पुरुष औरतों के हृदयों में हलचल तो मचा देते हैं संभूति।" प्रमदा ने उसे देखते हुए कहा। संभूति की खोज परक दृष्टि प्रमदा पर गई, वह मुस्करा उठी और अत्यन्त धीमे स्वर में वक्र दृष्टि से देखती हुई बोली—

"ऐसा लगता है, तुम्हारे दिल में भी उसने कुछ हलचल मचा दी है।"

"नहीं.....नहीं.....।" प्रमदा बुरी तरह झेंप गई। तब तक सूर्या उनके समीप आ गया।

"आप दोनों को प्रणाम करता हूँ।" सूर्या ने शालीनता से कहा।

"कैसे हो सूर्या।" संभूति ने सस्मित कहा।

"ठीक हूँ। आप कैसी हैं ? मि. पीयूष के क्या हाल हैं ?



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"मैं भी ठीक हूँ। पीयूष दो दिन से बाहर गए हैं।" सामान्य औपचारिक चर्चा जैसी परिचितों में होती है, उनमें परस्पर होने लगी।

उनमें वार्तालाप चल ही रहा था कि श्री माँ की सेविका भी वहाँ आ उपस्थित हुई। उसने विनम्र स्वर में कहा।

"आप तीनों को श्री माँ उनके निजी आवास में बुला रही हैं, कृपया पधारें।" तीनों ही श्री माँ के निजी आवास में पहुँचे जो इस लताकुंज से लगभग सौ कदम ही था।

श्री माँ शान्त चित्त में बैठीं, कोई पत्र पढ़ रही थीं। उनके सामने पत्रों का ढेर था, उसे एक ओर सरकाते हुए श्री माँ ने बैठने का संकेत करते हुए पत्र पूरा पढ़ा फिर तीनों की ओर उन्मुख हुईं।

"सब कुशल तो है।" श्री माँ के अधरों पर पवित्र मुस्कान ने क्रीड़ा की।

"अभी तक तो सब कुशल था पश्यन्ती क्योंकि मैंने यह मान लिया था कि कामज्वालाओं में घिरकर हमारे साथ भागने वाली पश्यन्ती इस संसार में नहीं रही, किन्तु अब..... ? अब मुझे पता चला कि मेरे कार्य में विघ्न डालने वाली तुम्हीं हो। तुम्हीं वह भैरवी हो जो योग विद्या से रूप परिवर्तित कर मेरी प्रयोगशाला में घुस जाती हो।"

आवाज सूर्या के पीछे से आ रही थी किन्तु कोई दिखाई नहीं दे रहा था जब कि सूर्या समझ चुका था कि यह आवाज किसकी है ?

"मैं भैरवी नहीं हूँ सूपा और सुनले पिछली बार भी मैंने ही तेरी प्रयोगशाला को ध्वस्त किया था। 18-19 वर्ष तक तेरा पता नहीं चला तो समझी कि या तो तुझे शक्ति माँ ने सद्बुद्धि दे दी है, या तू मर गया है।" निवृत्ति देवी (श्री माँ) ने कठोर स्वर में कहा।

"तूने सूर्या के मनोमस्तिष्क में भी मेरे विरुद्ध विष भर दिया पश्यन्ती। सूर्या मेरी खोज है, उस पर मेरा अधिकार है। मैंने ही अपने प्रयोगों से उसके शरीर को फौलाद का बनाया है।" आवाज पुनः आई।

"सूर्या को मैंने वास्तविकता से परिचय कराया है सूपन। अगर सूर्या तेरे पास नर्क में रहे तो मैं उसे क्यों रोकने लगी। खैर छोड़ इन बातों को यह बता कि विलियम का शव कहाँ है ? उस शव का तूने मानवता के विरुद्ध क्या उपयोग किया ?"

"मैं तेरे प्यार को सलाम करता हूँ सुन्दरी। मुझे आश्चर्य है कि तू उतनी ही गहराई से आज भी अपने प्रेमी को प्रेम करती है। विलियम जीवित है पूरी तरह। लेकिन अब वह मेरा गुलाम है। मेरी प्रयोगशाला में जितने आविष्कार हुए हैं, हो रहे हैं, उन्हें विलियम ने किया है।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"विलियम मानवता के विरुद्ध कभी काम नहीं करता सूपन। तू असत्य बोल रहा है।" श्री माँ ने दृढ़ता से कहा। उनका वाक्य समाप्त ही हुआ था, उसी स्थान से जहाँ से सूपा की आवाज आ रही थी, उसका रूप प्रकट हुआ।

"पश्यन्ती योग में यह शक्ति है कि मन की गति से कहीं भी, कितनी ही दूरी पर शरीर को प्रकट किया जा सकता है। मैंने इसी सिद्धान्त की वैज्ञानिकता प्रमाणित की है। मैं वैज्ञानिक पद्धति से यहाँ उपस्थित हुआ हूँ।" सूपा को पीछे मुड़कर सूर्या ने देखा, उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ जबकि संभूति और प्रमदा चकित थीं।

"तेरी बाजीगरी से मैं कभी प्रभावित नहीं हुई सूपन। यहाँ आने का उद्देश्य बता मेरे पास समयाभाव है।" श्री माँ का स्वर दोबारा कठोर हुआ। उनकी कठोरता पर सूपा हँस पड़ा।

"सर्वप्रथम तो यह कि तू सूर्या को स्वतन्त्र कर दे, ताकि मेरी वह महत्वपूर्ण खोज जो सूर्या पर निर्भर करती है पूर्ण हो जाए। दूसरा यह कि मेरे काम में तू किसी प्रकार का व्यवधान न डाल। अगर सूपा का क्रोध जाग्रत हो गया तो........तो सूपा महाविनाश ला देगा, प्रलय ला देगा। सूपा आकाश से अंगारे वर्षा सकता है, सूपा समुद्र को सुखा सकता है, सूपा सूर्य की गर्मी को भी बर्फ में बदल सकता है।"

"सूपा कुछ नहीं कर सकता। सूपा से बड़ी ईश्वरीय शक्ति है मूर्ख वैज्ञानिक। अब भी तू अपने पापों का प्रायश्चित कर ले सूपा, पुण्यवान बन, कल्याणकारी बन, शुभ, शान्त और ज्ञानी बन सूपा ताकि तेरा यह इहलोक और परलोक दोनों सुधर जाएँ।" श्री माँ के मुख पर शान्ति और स्वर में पवित्रता थी।

"उपदेशक बन गई तू ?" सूपा सव्यंग हँस उठा। हँसते हुए ही बोला।

"सूर्या को मुक्त कर दे।"

"मैंने सूर्या को बाँधा नहीं है। वह पहले भी स्वतन्त्र था, अब भी है। तू चाहे तो उसे ले जा सकता है।

सूपा का शरीर ऊपर उठा और तैरता हुआ श्री माँ के पास आ स्थिर हुआ। सूर्या सावधान हुआ ताकि सूपा श्री माँ को नुकसान पहुँचाने का प्रयास करे तो वह उसे रोक सके। सूपा ने सूर्या की ओर देखा।

"माय बाय सूर्या। मैं तुझे इस मायावनी के मोह जाल से मुक्त कराने आया हूँ। पूरे तीन दिन से मैं तेरी प्रतीक्षा कर रहा किन्तु तू प्रयोगशाला नहीं पहुँचा। चल बेटे.....।" सूपा के स्वर में वात्सल्य की अगाधता थी।

"सूपा मुझे सत्यासत्य का बोध होने लगा है। मैंने अपना मार्ग अलग चुन लिया है। अब यह सूर्या किसी क्रूर हत्यारे का साथ नहीं देगा। ऐसे वैज्ञानिक से



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोई सम्बन्ध नहीं रखेगा जो प्राकृतिक नियमों को भंग कर मानवता को विनाश के पथ पर ले जाए।" सूर्या ने अपना निर्णय सुनाया।

"तेरा जीवन अभी भी मेरे पास है सूर्या। मैं ही तुझे तेरे समस्त अभिशापों से मुक्त करा सकता हूँ। उसका प्रमाण भी मैंने सुमन के रूप में तुझे दिया है।" सूपा ने सूर्या को समझाया।

"मेरा तन बदन जल रहा है सूपा, चला जा यहाँ से और एक बात और सुन ले कि सूर्या तुझे उस अपराध के लिए कठोर दण्ड देगा जिसके कारण श्री माँ दुखी हुई।" सूर्या क्रोध से चीख पड़ा।

"ओह ! तो तू नागिन का दूध पीकर ज्यादा जहरीला हो गया। जिस वासना की पुतली के बल पर इतना अकड़ रहा है बेटे वह.........।"

"सूपा.........।" सूर्या की मुट्ठियाँ भिंच गई।" हरामजादे माँ की शान में गुस्ताखी अब मत कर देना। तू भूल गया कि सूर्या वर्षों तक तेरी प्रयोगशाला का अंग बनकर रहा है।" कहते हुए सूर्या ने अपनी जेब में फुर्ती से हाथ डाला, अगले ही क्षण सूर्या के शरीर से सप्तरंगे प्रकाश की किरणें निकलने लगीं। सूर्या का कद सामान्य से 1½ गुना हो गया। सूपा चौंका।

"मेरी 'एस' किरणें ? सूर्या तूने मेरी 'एस रेज' पर कन्ट्रोल कर अपनी मृत्यु को बुला लिया है।"

"नो सूपा नो.....यह मेरी अपनी खोज है। तेरी एस रेज तेरी ही रक्षा कर सकती है, लेकिन मेरी एस रेज दूसरों की भी रक्षिकाएँ हैं।" कहते हुए सूर्या ने अपने दाँए हाथ की अंगुलियों को श्री माँ की ओर किया, एक सेकण्ड में ही वैसी ही किरणों का उद्भव श्री माँ के शरीर से फिर संभूति और प्रमदा के शरीर से भी होने लगा। सूपा के चेहरे पर आश्चर्य था, वह बोला।

"सूर्या एस रेज किरणें भी तेरी सुरक्षा नहीं करेंगी। अब मैं चलता हूँ। मैं जल्दी ही उस भैरवी को खोज लूँगा। तुम दोनों को चेतावनी देता हूँ कि मेरे कार्य में व्यवधान न डालो। यह मेरी अंतिम चेतावनी है।" कहते हुए सूपा का शरीर अणुओं में विभक्त हुआ और वह दृष्टि से परे हो गया।

संभूति और प्रमदा दोनों चकित थीं। उनके शरीर से अजस्व निकल रही रश्मियों के मध्य संभूति ने कहा।

"सचमुच सूर्या, तुम चमत्कारी हो। इन किरणों में मैं स्वयं में बहुत हल्का और सुखद अनुभव कर रही हूँ।"

"और मैं भी।" प्रमदा ने मुग्ध होकर स्वीकारोक्ति दी।

सूर्या ने अपनी जेब से लगभग दो इंच लम्बी-चौड़ी पट्टी निकाली उसमें एक ओर सात छोटे-छोटे स्विच लगे हुए थे। पट्टी में पंक्तिबद्ध सात रंगों की लाइनें



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थीं। यह पट्टी यूरेनियम से बनी थी। सूर्या ने एक स्विच दबाया। अगले ही क्षण तीनों महिलाओं सहित उसके शरीर से भी किरणों का उद्भव बन्द हो गया। अब वे सामान्य थे।

अचानक आश्रम के बाह्य द्वार या मुख्य द्वार की ओर गनन भेदी विस्फोट का स्वर गूँजा। अनेक चीख पुकारों का आर्त स्वर। इसके पूर्व कि श्री माँ और सूर्या आदि कुछ कहते, दूसरा विस्फोट हुआ। चारों तेजी से बाहर निकले। सूर्या और श्री माँ समझ गए थे कि सूपा ने अपनी ओर से एलान-ए-जंग कर दिया है। पता नहीं इसके इस ऐलान ने कितने जीवों की बलि ली।

चारों मेनगेट की ओर भागे। पूरे आश्रम में अफरा-तफरी फैल चुकी थी। मार्ग में ही आश्रम के वृद्ध सन्यासी स्वामी चैतन्यानन्द मुख्य द्वार की ओर से भागते आए। श्री माँ को जाते देख, दुःखी स्वर और अश्रुपूरित हो बोले—"श्री माँ द्वार पर दो शक्तिशाली बम फटे हैं। तीस-चालीस मीटर के क्षेत्र में गड्ढा हो गया है। मुख्य द्वार पूरी तरह से उड़ गया और वहाँ रखी दो जीप और दो मारुति कारें टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गई हैं। गेट पर जितने भी लोग थे, सभी के चिथड़े उड़ गए। अनुमान है कि 8-10 व्यक्ति तो होंगे ही।" सन्यासी ने हाँफते हुए कहा।

"श्री माँ शोक दग्ध हो उठीं। उनके दीप्ति मुख मण्डल पर दुःख की असंख्य रेखाएँ उभरीं।

"मैं जानती थी, सूपन क्रूर और हिंसक है। वह कायर इसके सिवाय और कर भी क्या सकता था।" श्री माँ के मुख से वेदना स्वर के रूप में प्रकट हुई।

द्वार पर जनसम्पर्क एकत्रित था। बीस लोग घायल हो गए थे, जबकि आठ-दस शवों के टुकड़े यत्र-कुत्र बिखरे हुए थे। चारों ओर माँस के टुकड़े, हड्डियों के टुकड़े और हाथ-पैर और सिर बिखरे पड़े देखकर श्री माँ की आँखों में आँसू आ गए। उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया, वाणी मौन हो उठी।

सूर्या ने घायलों की सहायता करते हुए उन्हें अस्पताल भेजने की व्यवस्था की। आश्रम में चार गाड़ियाँ थीं जो आश्रम के गैराज में खड़ी थीं। उन्हीं से घायलों को अस्पताल भेजा गया।

संभूति और प्रमदा ने श्री माँ को सम्हाला। वे उन्हें सहारा देते हुए आश्रम के अन्तःभाग में ले गईं। इसी बीच आश्रम के ही किसी व्यक्ति ने पुलिस स्टेशन फोन कर दिया किन्तु सूर्या ने पुलिस स्टेशन फोन न लगाकर पुलिस अधीक्षक बिन्दुशेखर को फोन किया। वे कार्यालरा में उपलब्ध थे। संयोग से फोन उन्होंने ही उठाया जबकि अधिकारी सीधे फोन नहीं उठाते।

"ऑफिसर, मैं सूर्या बोल रहा हूँ, श्री माँ के आश्रम से।" सूर्या ने सम्पर्क होते ही कहा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"हाँ सूर्या, मैं बिन्दुशेखर। एक मिनट पहले ही मुझे सूचना मिली है कि आश्रम में ब्लास्टिंग हुआ है। जल्दी बताओ श्री माँ कैसी हैं ?" बिन्दुशेखर की घबराई हुई आवाज सूर्या को सुनाई दी।

"वे पूर्णतः सुरक्षित हैं सर।"

"ठीक है, मैं वहाँ जल्दी ही पहुँच रहा हूँ। पुलिस पहुँचने वाली होगी और हाँ सूर्या जब तक पुलिस नहीं पहुँचे, किसी को जाने मत देना।"

"मैं जानता हूँ सर, विस्फोट किसने किया ?"

"ओह, कौन है वह ? क्या तुमने उसको ब्लास्ट करते देखा है ?" बिन्दुशेखर की आवाज में उतावलापन था।

"वह एक सनकी वैज्ञानिक सूपन है सर। मैंने उसको ब्लास्ट करते हुए तो नहीं देखा, पर मैं जानता अवश्य हूँ।" सूर्या ने गंभीर स्वर में कहा। "मैं आ रहा हूँ, शेष बातें वहीं होगी।" कहते हुए बिन्दुशेखर ने फोन रख दिया।

सूर्या ने द्वार पर गहन निरीक्षण किया। मेगनेट टुकड़े-टुकड़े होकर इधर-उधर पड़ा था। द्वार से दूर-दूर तक खाई बन चुकी थी। सूपा अगर मेन गेट पर ही विस्फोट करता तो आश्रम अन्दर 20-25 मीटर तक उड़ जाता। सूर्या सूपा के घातक बमों के विषय में जानता था। उसके द्वारा विकसित बम आम बमों से अधिक घातक और खतरनाक होते हैं। सूपा के बमों में बारूद आदि का उपयोग नहीं होता था बल्कि उसके स्थान पर अन्य विस्फोटक रासायनिक पदार्थ, जिसकी खोज स्वयं सूपा ने ही की थी, प्रयोग होता था।

विस्फोटक विशेषज्ञ दस्ता और पुलिस दल, खोजी कुत्ते आदि पहुँचे। उसके दस मिनट बाद ही पुलिस अधीक्षक बिन्दुशेखर शुक्ला। बिन्दुशेखर ने सूर्या से पूछताछ की। सूपा के विषय में शुक्ला कुछ नहीं जानते थे। सूर्या ने शुक्ला को आवश्यक जानकारी बताते हुए स्पष्ट किया कि सूपा को गिरफ्तार करना असम्भव नहीं तो मुश्किल अवश्य है। सूपा तो क्या उसकी प्रयोगशाला तक भी पुलिस नहीं पहुँच सकती।

"मैं उसे अवश्य हथकड़ी लगाऊँगा सूर्या। तुम मुझे प्रमाण दो कि वह ब्लास्ट के साथ-साथ अन्य आपराधिक, अमानवीय कार्यों में लगा है।"

"उसके विरुद्ध प्रमाण मुश्किल है सर। मैं जन्म से ही उसके साथ हूँ लेकिन मैं ही नहीं जानता कि सूपा कहाँ रहता है ? वह इसी शहर में है या भारत के किसी अन्य स्थान पर बैठकर अपनी प्रयोगशाला को रिमोट कर रहा है। यह भी हो सकता है कि वह कहीं विदेश में हो।"

सूर्या जन्म से ही उसके साथ है, फिर भी वह सूपा के निवास से अनभिज्ञ है ? ऐसा कैसे संभव है ? शुक्ला कुछ सोचने लगे।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"सूपा का पता, मात्र एक हस्ती ही लगा सकती है सर और वह है श्री माँ।" सूर्या की बात पर शुक्ला चौंक उठे।

"श्री माँ से सूपा का क्या सम्बन्ध ?" शुक्ला ने प्रश्न किया।

"मुझे पूरी जानकारी तो नहीं है किन्तु श्री माँ ने वर्षों पहले सूपा की अनैतिक प्रयोगशाला और अमानवीय प्रयोग को पकड़वाया था। उस समय सूपा चालाकी से बचकर भाग गया था।"

"तुम कैसे जानते हो ?" शुक्ला ने पुलिस के विशेष अन्दाज में सूर्या को घूरते हुए कहा।

"श्री माँ ने ही बताया था।" सूर्या को शुक्ल का स्वर अपमानजनित-सा लगा।

"जितना जानते हो, उतना बताओ सूर्या।"

"सारी जानकारी श्री माँ से ही ज्ञात करें।" मैं जितना जानता हूँ, उतना भी नहीं बताऊँगा। चलो मैं तुम्हें श्री माँ के पास छोड़ आता हूँ।" सूर्या का स्वर न चाहते हुए भी तेज हो गया।

"सॉरी सूर्या। लगता है तुम बुरा मान गए। दरअसल हम पुलिस वालों को कुछ इसी तरह बोलने की आदत सी पड़ गई है।" शुक्ल ने कोमल स्वर में कहा।

"यही कारण है कि आम नागरिक पुलिस के नाम से ही आतंकित है। वह कोई सूचना भी नहीं देना चाहता। सबसे ज्यादा कानून का दुरुपयोग, सभ्य, सज्जन नागरिकों के लिए आप लोग ही करते हैं। भारत की पुलिस को बदलना होगा मि. शुक्ला।" सूर्या के स्वर मैं पुलिस की व्यवस्था के प्रति आक्रोश था।

"अपराधी इसी भाषा को पहचानते हैं सूर्या। गैं मानता हूँ कि कभी-कभी आम नागरिक इस व्यवस्था के शिकार अवश्य हो जाते हैं।"

"असंस्कृत-असभ्य भाषा और मारमीट से अपराधी सुधर गए होते तो कहीं अपराध नहीं होते शुक्ला जी। अपराधियों की मूल भावना, हिंसावृत्ति, अराजकता आदि दैन्यताओं को हमारी जेलें भी नहीं बदल पातीं क्योंकि जेल अपराधियों की आरामगाह बन गई है। वहाँ उन्हें अपने दुष्कर्मों के प्रायश्चित का अवसर ही कहाँ मिलता है ? यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि अपराधियों के लिए जेल के नाम पर फाइव स्टार होटल की सुविधाएँ मिलती हैं। उन दुर्दान्त अपराधियों की सुरक्षा पर जनता जनार्दन से कर के रूप में लूटी गयी करोड़ों रुपयों की धनराशि खर्च की जाती है ? क्यों ? क्यों सुरक्षा कर रहे हैं हम अपराधियों की, देशद्रोहियों की ? जिन्हें फाँसी दी जानी चाहिए उन्हें पुरुस्कार ?" सूर्या का आक्रोश चर्म सीमा पर पहुँचा।

बातें करते-करते वे दोनों श्री माँ के निजी आवास तक पहुँच गए। वहाँ पता



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चला कि श्री माँ ध्यानस्थ हैं। संभवतः वैषादिक क्षणों की प्रशान्ति के लिए श्री माँ ध्यानस्थ हो गई हैं।

दिन भर पुलिस की पूछताछ, खोज पड़ताल चलती रही। सूर्या भी नहीं जा सका और न ही संभूति और प्रमदा। चार बजे के बाद ही शुक्ला श्री माँ से मिल सका। श्री माँ ने शुक्ल से कहा–

"लालू रात नौ बजे गाड़ी भेज देना, घर पर रात रहूँगी। वहीं सारी कथा, तेरी जिज्ञासा शान्त करने का प्रयास करूँगी।"

संभूति और प्रमदा घर चली गईं किन्तु सूर्या नहीं गया। उसने समय पाकर श्री माँ से कहा।

"बेटे, चाहे तो यहीं रुक जा। मैं लालू (शुक्ल) के घर रात्रि विश्राम करूँगी। हालाँकि मुझे तेरी सुरक्षा के प्रति निश्चिंत रहना चाहिए किन्तु माँ का हृदय है न ? अपने पुत्र के प्रति सदैव चिंता रहती ही है।" श्री माँ ने आर्द्र कण्ठ स्वर से कहा।

"आपका दूध पिया है माँ। उससे शरीर फौलाद बना है। आपकी कृपा, ममत्व मेरी सुरक्षा के अभेद कवच हैं माँ। जिसकी माँ तेरे जैसी हो, उसका काल भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" सूर्या के स्वर में प्रबल आत्मविश्वास था। अत्यधिक भावुक होने से उसकी आँखें भी आर्द्र हुईं। उसके आँसुओं को अपने आंचल से पोंछकर श्री माँ ने सूर्या को हृदय से लगा लिया।

"मुझे विश्वास है मेरे बेटे, तू एक नया इतिहास रचेगा, मानवता के लिए, राष्ट्र के लिए तू सदैव समर्पित रहेगा।" भावमयी भगवती स्वरूपा श्री माँ ने सूर्या को नन्हें बालक के समान अपनी गोद में समेट लिया।

❑❑

सूर्या की गाड़ी नागपाल की कोठी विस्फोट काण्ड में स्वाहा हो चुकी थी। (पाठक परिच्छेद उन्नीस का अवलोकन करें, जिसमें विलि नागपाल के घर गया था) अब सूर्या के पास गाड़ी नहीं थी और न ही जेब में रुपए। यहाँ तक कि उसके पास नित्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी रुपये नहीं थे।

वह तो पूरी तरह सूपा पर आश्रित था। जब भी उसे रुपयों की आवश्यकता होती थी, तब ही सूपा की प्रयोगशाला स्थित निजी बैंक से अपनी इच्छित राशि ले लेता था, किन्तु अब ? अब तो प्रयोगशाला में स्थित बैंक जाने का प्रश्न ही नहीं। वह अपने बिस्तर पर लेटा हुआ, अपनी आजीविका के विषय में सोचने लगा। कुछ सोचकर उसने सुमन को फोन किया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उधर से किसीं स्त्री का स्वर उभरा "हैलो"। सूर्या ने पहचाना यह सुमन की आवाज नहीं थी। उसने माउथ पीस में कहा।

"कृपया डॉ. सुमन आयंकर से बात करा दें।"

"आप कौन बोल रहे हैं।" उधर से प्रश्न किया गया।

"मैं सूर्या बोल रहा हूँ।"

"प्लीज होल्ड करें।"

कुछ देर पश्चात् सूर्या के कानों में आवाज सुनाई दी—"सुमन आयंकर हियर।"

"सुमन, मैं सूर्या बोल रहा हूँ। हनीमून नाइट के बाद तुम तो ऐसी गायब हुईं कि तुम्हारी परछाईं तक दिखाई नहीं दी। अपने पति से ऐसी बेरुखी ?" सूर्या ने उलाहना दिया।

"व्हाट ! क्या बकते हो। कैसी हनीमून नाइट ? कौन पति ? किसका पति ? सूर्या तुमने कोई नशा तो नहीं कर रखा।" उधर से खीज भरा, पर कुछ चकित, सुमन का स्वर आया।

"मजाक मत करो सुमन। मेरी सूपा से गहरी शत्रुता हो गई है। तुम तो जानती हो कि मैं सम्पूर्ण रूप से सूपा पर ही आश्रित था। अब इस समय मुझे कुछ रुपयों की सख्त आवश्यकता है। तुम तो जानती हो, मेरी गाड़ी भी विस्फोट की भेंट चढ़ चुकी है।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा मि. सूर्या। ऐसा लगता है, आप अपने साथ मेरा समय भी नष्ट कर रहे हैं। सॉरी सूर्या, इस प्रकार अनर्गल प्रलाप भविष्य में नहीं करें। मैं आवश्यक कार्य कर रही हूँ।" सुमन ने कहा और फोन काट दिया।

सूर्या चकित हो उठा। उसे लगा जैसे सुमन जान-बूझकर उससे मजाक कर रही है। उसने तत्क्षण दोबारा फोन लगाया। इस बार सुमन का ही स्वर उभरा।

"सुमन आयंकर।"

"सुमन, मैं चकित हूँ यार ! तुम्हारा मजाक......।"

"मि. सूर्या तुम पागल हो गए हो।" सुमन ने उसकी बात काटकर कठोर स्वर में कहा।

"सूर्या को सचमुच क्रोध आ गया। वह अमर्ष सहित बोला।

"सुमन तुम जानती हो किससे बात कर रही हो।" उस व्यक्ति से जिसके साथ तुमने पूरी रात देह सुख भोगा है। उसे तन मन से पति माना है।"

"तुम सचमुच पागल हो गए हो सूर्या। एक क्वारी लड़की से ऐसी बातें करना उसे गाली देना है।" तीखे स्वर में कहते हुए सुमन ने फिर (दोबारा) फोन काट दिया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्या परेशान हो उठा। सुमन के स्वर में उसे कहीं कृत्रिमता या मजाक अनुभव नहीं हुआ। बहुत संभव है सूपा ने सुमन के मस्तिष्क से उसके प्रतिस्मृतियाँ नष्ट कर दी हों। संभवतः इसीलिए सुमन उसे पूर्व रूप में, जिसमें वह उसे पति स्वीकार कर चुकी थी, भूल गई।

अकस्मात उसे विलि का स्मरण हो आया। उसकी कार के साथ विलि का कंकाल भी समाप्त हो गया था। उसने स्वयं उसके कंकाल के सैकड़ों टुकड़े देखे थे। कंकाल के समाप्त होने से विलि की आत्मा समाप्त नहीं हो सकती। वह अवश्य किसी न किसी रूप में होगी। इस समय कहाँ और किस रूप में उपस्थित होगी।

अचानक उसकी आँखों के सामने सफेद धुँए की एक लकीर प्रकट हुई। सूर्या सम्हलकर बैठ गया। इस समय वह अपने कोल्ड स्लीपिंग रूम के बैड पर बैठा हुआ था। धुँआ मानवाकार में आया और आकृति स्पष्ट होने पर सूर्या मुस्करा उठा। वह जिसके बारे में सोच रहा था, वह सामने था।

"हलो मि. विलि ! क्या हाल है ? अब तुम्हारा घर (कंकाल) तो नष्ट हो गया है। अब कहाँ रहते हो ?" सूर्या ने मुस्कराकर कहा।

"हमें बहुत दुःख है मि. सूर्या। हमारे कारण आपका गाड़ी ब्लास्ट होकर एण्ड हो गया है। बट, तुमको किसी प्रकार का फिक्र करने का नहीं है। जैसे हमको न्युवॉडी अवेलेवल हुआ, आपका गाड़ी भी इमीजेट मिलेगा। प्रजेन्ट टाइम में हम मादाम "भैरवी के खप्पर में निवास करता है। हालाँकि हम वैरी हैप्पी है बट हमको अपना इन्तकाल के बास्ते बॉडी वैरी-वैरी अर्जेन्ट है। जिसके लिए मादाम भैरवी अब से कुछ समय बाद एक कब्रिस्तान से हमारे लिए बॉडी अरेंज करने वाला है।" विलि ने बताया।

"विलि यह कैसे संभव होगा ?" उत्सुकता से सूर्या ने प्रश्न किया।

"अगर आप चाहें तो यह सीन सिटी के नार्थ कब्रिस्तान में देखा जा सकता है।" विलि के पारदर्शी शरीर के पास से ध्वनि उभरी।

"नार्थ कब्रिस्तान यहाँ से काफी दूर है मि. विलि। इतनी दूर मैं पैदल नहीं जा सकता।"

"आपको किसी गाड़ी का अरेंज किया जा सकता है। बस फुलरैडी होकर मुख्य सड़क पर आ जाएँ। हम आपको ओनली टेन मिनट्स में गाड़ी अरेंज कर देना।" कहते-कहते विलि का पारदर्शी वायवीय शरीर अदृश्य हो गया।

सूर्या के पास कोई कार्य नहीं था, इसलिए उसे कब्रिस्तान जाने में कोई दिक्कत नहीं थी। वह तैयार होकर मुख्य सड़क पर आ गया। उसे अपने निवास से मुख्य सड़क तक आने में दस मिनट लग गए।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह सड़क पर आकर खड़ा ही हुआ था कि उसे सड़क पर कार की हेडलाइट्स चमकती दिखाई दी। वह कार थी। कार सड़क के फुटपाथ पर उसके समीप आकर रुकी। उसका पिछला गेट खुला और कार के अन्दर से आवाज आई—"वैलकम मि. सूर्या।"

सूर्या खुले गेट से कार में बैठ गया। उसे कार में ड्राइवर के अतिरिक्त कोई दिखाई नहीं दिया। उसके स्वागतार्थ कही गई बात विलि ने कही थी जो सूक्ष्म रूप से कार में ही होगा।

"मि. विलि किसकी गाड़ी है यह।" ? सूर्या ने सहज प्रश्न किया।

"आपने मुझसे कुछ कहा सूर्या।" गाड़ी स्टार्ट करते हुए ड्राइवर ने पलटकर उसकी ओर देखते हुए पूछा। सूर्या उस व्यक्ति का चेहरा देखकर चौंका—यह कोई अन्य नहीं वही रहस्यमय व्यक्ति था, जो उसे अपनी सुहागरात की रात में एक क्षण के लिए सुमन के पास दिखाई देकर अदृश्य हो गया था। इसके पूर्व भी वह उसे दिखाई दिया था किन्तु यह प्रथम अवसर था जब उससे वह इतने समीप बैठकर बात कर सकता था।

"मि. अज्ञात, क्या मैं तुम्हारा परिचय जान सकता हूँ।" सूर्या ने प्रश्न किया।

"आपको अभी स्वयं का परिचय ही ज्ञात नहीं है, पहले अपने आपको तो पहचान लो सूर्या, फिर मेरा परिचय, तुम्हें स्वतः ही मिल जाएगा।"

"ओह ! फिर भी.....मैं तुम्हें किस नाम से पुकारूँ ?" सूर्या इस समय उससे बहस के मूड में नहीं था।

"मेरा कोई नाम नहीं है सूर्या किन्तु तुम जो चाहो मेरा नाम पुकार सकते हो।" उसने विनम्र स्वर से कहा।

इस समय उनकी गाड़ी एक चौराहे से गुजर रही थी कि अचानक बाँयी ओर की रोड से रात्रि गश्ती की एक पुलिस वान तेज़ी से आकर उनकी कार के आगे कुछ दूर मार्ग अवरुद्ध कर खड़ी हो गई। पुलिसवान से आठ-दस जवान रायफल्स लिए उतरे। सूर्या की गाड़ी पुलिसवान के समीप आकर रुक गई। गश्ती इन्चार्ज ने नम्बर देखा और जवानों को चीखकर आदेश दिया।

"चारों तरफ से घेर लो, यही कार है।" तुरन्त पुलिस के जवानों ने अपनी-अपनी रायफल्स तानी और फुर्ती से सूर्या वाली कार को घेरे में ले लिया।

गश्ती इन्चार्ज इन्सपेक्टर शान से अपनी रिवॉल्वर को ताने कार के ड्राइवर की ओर बढ़ा।

"ऐ, गाड़ी के अन्दर की लाइट ऑन करो।" वह आदेशात्मक स्वर में चीखा। अन्दर से कोई जवाब नहीं मिला।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"क्या बहरा है साले.....।" क्रोध से तमतमा कर इन्सपेक्टर ने चीखते हुए स्वयं ही ड्राइवर वाला गेट झटके से खोल दिया।

रोड पर खड़े बिजली के खम्बे में लगे मरकरी सोडियम लैम्प के प्रकाश में गाड़ी की ड्रायविंग सीट को खाली देख इन्सपेक्टर दो कदम पीछे हट गया। फिर उसे लगा जैसे पुलिस के डर से ड्राइवर पिछली सीट पर चला गया है।

"हवलदार सर्चलाइट लाओ।" इन्सपेक्टर चीखा।

हवलदार ने सर्चलाइट लाकर रोशन की। इस्पेक्टर फिर चीखा।

"अन्दर देखो गाड़ी में कौन है ?

हवलदार ने ड्राइविंग सीट से झुककर कार में प्रकाश डाला और आँखें बन्द कर लीं—साथ ही जल्दी से सर्चलाइट भी बुझा दी।

"क्या है ? इन्सपेक्टर उसकी हरकत पर गुस्सा हुआ "टार्च क्यों बन्द की।"

"साहब जी.....अन्दर.....अन्दर.....।" हवलदार हकलाता हुआ बोलने में झिझका।

"अबे, क्या है ? बोलता क्यों नहीं ?"

"साहब जी, अन्दर मेम साहब हैं.....पूरी तरह नंगी.....सूर्या के साथ।" हवलदार ने अन्ततः कह दिया।

"मेम साहब ! कौन मेम साहब ?" हालाँकि इन्सपेक्टर सूर्या का नाम सुनकर ही काँप उठा था। सूर्या सारे पुलिस बल में, थानों में एक खतरनाक खूँखार गुण्डे के रूप में प्रसिद्ध था। शहर के प्रत्येक थाने में सूर्या का चित्र लगा था। हालाँकि उसका नाम किसी कत्ल तस्करी में नहीं था, उसे मात्र मारपीट करने वाले अदम्य साहसी के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी। यह भी सच था कि आज तक उसे जुर्म करते हुए पुलिस ने पकड़ा नहीं था। सूर्या सदैव अन्याय के प्रति ही अपना क्रियात्मक आक्रोश व्यक्त किया करता था। उसके क्रोध का शिकार या तो शहर के गुण्डे हुए थे या फिर मजलूमों पर, निर्दोषों पर मारपीट का अत्याचार करने वाले पुलिस बल के जवान और अधिकारी।

डरते हुए इन्सपेक्टर ने कार के अन्दर रोशनी डाली। पिछली सीट खाली थी। इन्सपेक्टर अभय हुआ, उसने रोशनी में पूरी कार देख डाली। अन्दर की लाइट का स्विच दबाते हुए वह आग्नेय दृष्टि से हवलदार को घूरता बोला।

"क्यों रे, खुली आँखों से सपने देखता है ? अबे कार खाली है। देख।" हवलदार ने देखा और आश्चर्य से उछल पड़ा। उसने साफ-साफ देखा था कि इसी इन्सपेक्टर की घर वाली नग्नावस्था में सूर्या की गोद में पड़ी थी।

"मैं.....मैं सच कहता हूँ साहब, मैंने सूर्या और.....।"

"अबे चुप.....।" इन्सपेक्टर चीखा—"तुम सब नकारे हो। हराम की तनखा



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खाते हो साले। तुम्हारी आँखों के आगे गाड़ी खड़ी करके ड्राइवर चम्पत हो गया और तुम कुछ नहीं कर सके।" इन्सपेक्टर ने स्टाफ को कोसा।

वास्तव में हुआ ये था—पिछले चौराहे की एक फुटपाथी दुकान पर वे सब पुलिस वाले चाय पी रहे थे। इन्सपेक्टर शान से अकड़कर वॉन में बैठा था। अचानक उसे लगा जैसे फोन की घण्टी बजी हो। एक-दो बार की वेल ध्वनि को मानसिक भ्रम माना जा सकता था किन्तु निरन्तर "ट्रिन.....ट्रिन.....ट्रिन....." की आवाज को भ्रम नहीं माना जा सकता है।

"कमाल है, साला यहाँ कोई फोन भी नहीं, जिससे ट्रिन-ट्रिन आ रही है। पता नहीं कौन हरामजादा है।"

उसके हल्के से बोलने मात्र से ही घण्टी की आवाज आना बन्द हो गई और भारी स्वर उसके कानों से टकराया।

"साला दो टके का आदमी। अपने जैसा हरामजादा मुझे भी समझता है क्या ?"

"क.....क.....कौन ?" इधर-उधर आश्चर्य से देखते हुए इन्सपेक्टर ने कहा।

"मैं सूपा हूँ.....मुझे लोग होलीफादर सूपा कहते हैं। अब गौर से सुन। अगले चौराहे पर एक गाड़ी उसका नम्बर................है। गाड़ी इस क्षेत्र के सांसद की है, जिसे चोर चुराकर ले जा रहे हैं।" सूचना देकर आवाज बन्द हो गई।

"तुम्हें कैसे पता ?" इन्सपेक्टर ने पूछा किन्तु उसे उत्तर में फोन के डिस्कनेक्ट होने की आवाज सुनाई दी।

इन्सपेक्टर के जीवन में इस प्रकार से यह पहली सूचना थी। उसने कार से उतरकर जल्दी-जल्दी जवानों को वॉन में बैठाया और तेजी से वॉन को चौराहे की ओर ले चलने का निर्देश दिया। (इसके बाद की घटना पाठकों ने पीछे पढ़ी ही है)

इन्सपेक्टर स्वयं सूर्या वाली कार में बैठने ही वाला था कि पुलिस वॉन के टायरों से हवा निकलने का "सूं.....सूं.....सूं....." का तेज स्वर सुनकर चौंका। उसे निरन्तर वॉन के टायर पिचकते हुए दिखाई दिए।

"अबे.....वॉन के टायरों की हवा कौन निकाल रहा है।" चीखता हुआ वह कार को छोड़कर वॉन की ओर दौड़ा। कुछ क्षणों में ही सारे जवान वॉन के चारों ओर एकत्रित होकर आश्चर्य से पहियों की हवा निकलती देखते रहे। वे विवश थे, हवा बन्द करने का कोई तरीका उनके पास नहीं था।

अचानक सूर्या वाली कार स्टार्ट हुई और तीर की तेजी से आगे बढ़ी। इन्सपेक्टर पागलों की तरह चीखा—"रोको.....रोको.....।" पर कार फर्राटे भरती उसके सामने से निकल गई। वह मूर्खों की तरह पलकें झपकाता रहा। उसने स्पष्ट देखा था कार की ड्रायविंग सीट पर कोई ड्राइवर नहीं था। कार बिना किसी



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ड्राइवर के भागती चली जा रही थी। अचानक इन्सपेक्टर के मस्तिष्क में विद्युत सी कौंधी। वह बड़बड़ा उठा।

"हे पवन पुत्र रक्षा करो.....वह निश्चित ही भुतहा कार थी। मुझे टेलीफोन भी किसी भूत ने ही किया था।

उसी समय जब पुलिस दल के सामने से सूर्या की कार गुजरी थी—पुलिस अधीक्षक बिन्दुशेखर के आवासी फोन की घण्टी बजी। बिन्दुशेखर उस समय सो रहे थे। निरन्तर फोन की घण्टी से उनकी निद्रा भंग हुई। फोन छोटे से टेबिल पर उनके पलंग के पास ही रखा था।

हाथ बढ़ाकर बिन्दुशेखर ने फोन उठाया। उधर से ध्वनि आई।

"हेलो मि. बिन्दुशेखर अभी कब्रिस्तान में कुछ अलगाव और अराजकवादी एक कब्र को खोदकर उसमें से शव को निकाल रहे हैं। इसके पूर्व कि किसी को पता चले और आक्रोश साम्प्रदायिक दंगों के रूप में प्रकट हो, आप तुरन्त अपराधियों को पकड़ें।"

"सूचना के लिए धन्यवाद। आप कौन बोल रहे हैं, श्रीमान्।" बिन्दुशेखर ने जानना चाहा।

"मैं सूपा बोल रहा हूँ मि. शेखर।" इसके साथ ही फोन बन्द हो गया।

"सूपा.....।" बिन्दुशेखर के नेत्र संकुचित हुए। क्या आवश्यक है कि सूपा ने उसे वास्तविक जानकारी ही दी हो ? अचानक उनके शयनकक्ष में आवाज गूँजी।

"मि. शुक्ला, सूपा पर सन्देह करना मूर्खता है।" बिन्दुशेखर ने चौंककर इधर-उधर दृष्टि डाली, शयनकक्ष में सोई हुई उनकी पत्नी के अतिरिक्त अन्य कोई उपस्थित था ही नहीं।

"क्या यह आवाज भी सूपा की है ?" बिन्दुशेखर बोले।

"सभ्यता.....सभ्यता से बोलो मि. शुक्ला, सूपा को होलीफादर सूपा सुनने की आदत है।" आवाज पुनः गूँजी। निश्चय ही यह आवाज फोन या किसी अन्य साधन से नहीं आई थी। ऐसा प्रतीत होता था, मानो सूपा उनके शयनकक्ष में ही उपस्थित हो। एक क्षण सोचकर बिन्दुशेखर बोले।

"होलीफादर, इस समय आप कहाँ से, किस प्रकार बोल रहे हैं कि मेरे शयनकक्ष में ऐसा लग रहा है, मानो आप यहीं हैं।"

"महान सूपा प्राणदायी वायु की भाँति सर्वत्र है मि. शुक्ला। इससे अधिक आपको जानकारी चाहिए भी नहीं। अच्छा गुडबाय।"

इसी के साथ एक और स्थान पर फोन हुआ। यह फोन कॉल अल्पसंख्यक समुदाय के धर्म प्रमुख के घर आई।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मौलाना बदर-उ-दीन कट्टर धार्मिक थे। वे भी सो रहे थे। फोन की घण्टी से उनकी नींद भी खुली।

"मौलाना साहब कुछ धर्म विरोधी लोग कब्रिस्तान में, कयामत की रात का इन्तजार करती पाक रुहों के अमन चैन में खलल डाल रहे हैं। वे नापाक इरादों की खातिर मुर्दों को कब्र से निकालकर शहर के चैन-ओ-अमन को खतरे में डाल देना चाहते हैं।" मात्र इतनी सूचना के बाद फोन बन्द हो गया। मौलाना 'हेलो-हेलो' कहते रह गए।

मौलाना ने तुरन्त पुलिस स्टेशन फोन लगाया। ड्यूटी पर तैनात इन्सपेक्टर को उन्होंने यही सूचना देते हुए पुलिस को वहाँ पहुँचने का आग्रह किया, किन्तु वे यह न बता सके कि शहर के किस कब्रिस्तान में यह वाकया घटित हो रहा है ? इन्सपेक्टर की असमर्थता व्यक्त करने पर मौलाना क्रोधित हो उठे। उन्होंने फोन पर कहा।

"शहर में पाँच कब्रिस्तान हैं, सभी कब्रिस्तानों में पुलिस भेजो। अगर किसी कब्र को जरा-सा भी नुकसान हो गया तो आप इसके जिम्मेदार होंगे।"

"कृपया आप पुलिस अधीक्षक से सम्पर्क करें। शहर के सभी कब्रिस्तानों में जवानों को पहुँचाने का अधिकार मुझे नहीं है। मेरे पास इतना पुलिस बल भी नहीं है।" इन्चार्ज ऑफिसर ने अपनी असमर्थता पुनः व्यक्त की।

"मैं कुछ नहीं जानता। मुझे कब्रिस्तान की हिफाज़त चाहिए।" मौलाना बरस उठे।

"ज्यादा से ज्यादा मैं अपने इलाके में स्थित कब्रिस्तान में चार जवानों को भेज सकता हूँ। उन्हें भेज रहा हूँ।" कहकर इन्चार्ज ऑफिसर ने फोन रख दिया।

और शहर के उत्तरी छोर पर स्थित कब्रिस्तान में।

आकाश में चन्द्रमा का उदय नहीं हुआ था। वह कृष्णपक्षीय एकादशी या द्वादशी की अन्धकार से भरी रात थी। कब्रिस्तान में अंधेरे के साथ मिलकर सन्नाटा चप्पे-चप्पे से लिपटा हुआ था।

कब्रिस्तान से कुछ दूर ही सूर्या की कार रुक गई। विलि की आवाज आई—"मि. सूर्या तुम यहाँ से पैदल ही कब्रिस्तान के गेट से प्रवेश करो। उधर ही तुमको हम दोनों रिसीव करेगा। आप अपने साइंस से गेट के चौकीदार से बचकर ही जाना।"

सूर्या ने कार ड्राइवर को वहीं छोड़ा और कब्रिस्तान की ओर बढ़ गया। कब्रिस्तान के गेट पर ही चौकीदार की कोठरी बनी हुई थी। सूर्या ने देखा, चौकीदार की कोठरी का द्वार बन्द था और वह बाहर बरामदे में पड़ी खाट पर खर्राटे लेता हुआ गहरी नींद में सो रहा था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गेट पर मजबूत ताला लगा था। सूर्या ने अपने जेब से पेन निकाला, उसका ढक्कन खोला। वास्तव में यह पेन नहीं था बल्कि पेन के आकार में एक विचित्र वस्तु थी। पेन की निब के समान ही उसमें पॉइन्ट था। सूर्या ने पॉइन्ट को ताले की राड पर रखकर हल्के से पुश किया। पॉइन्ट से किसी द्रव पदार्थ का रिसाव हुआ। 10 से 15 सेकण्ड की देरी में ताले की राड पिघल गई और खट् की आवाज करता ताला खुल गया। सूर्या गेट खोलकर अन्दर प्रवेश कर गया। गेट के अन्दर ही कार का ड्राइवर खड़ा था।

संभवतः ड्रायवर भी विलि के समान कोई भूत ही है। सूर्या ने सोचा। उसके कानों में विलि की आवाज आई।

"मि. सूर्या मादाम भैरवी उधर उस न्युकब्र पर हमारा इन्तजार करता है।"

एक ताजा कब्र के पास भैरवी खड़ी थी। भैरवी या संभूति ? सूर्या पहचान नहीं पा रहा था। इस समय भैरवी के हाथ में न तो खप्पर था और ना ही त्रिशूल। उसके गले में रुद्राक्ष है या नहीं, वह अन्धेरे में देख नहीं सका।

"विलि ऐसा आभास हो रहा है कि अनेक आंखें हमें देख रही हैं। यहाँ विघ्न ही विघ्न हैं, इसलिए शीघ्र ही शव को बाहर निकाल कर ले जाना होगा।" कहते हुए भैरवी ने अपने दोनों हाथ कब्र की मिट्टी में धंसाए। कब्र की मिट्टी उछल-उछल कर बाहर आने लगी। कुछ क्षणों में ही कब्र की सारी मिट्टी निकल गई और उसमें ताबूत दिखाई देने लगा।

इसक पूर्व कि ताबूत कब्र से बाहर निकाला जाए—"धाँय.......धाँय.........धाँय .......।" की कर्णभेदी आवाजों से कब्रिस्तान निवासित सन्नाटा भंग हो गया। एक साथ अनेकों गोलियाँ सूर्या के शरीर से टकराईं, किन्तु भैरवी और वह रहस्यमय ड्रायवर पता नहीं कब कहां गायब हो गए। सूर्या पूरी तरह सुरक्षित था। गोलियाँ कब्रिस्तान के अन्धेरे कोने में खड़े पेड़ों के पीछे से चलीं थीं।

सूर्या का यहाँ रुकना व्यर्थ था। उसका हाथ अपने बेल्ट पर गया, नन्हां सा स्विच पुश हुआ और सूर्या का स्थूल शरीर अदृश्य हो गया। अंधेरे से निकलकर अनेक नकाबपोश कब्र की ओर दौड़े। हालांकि सूर्या का शरीर अदृश्य हो गया था लेकिन वह कहीं गया नहीं, एक ओर खड़ा होकर नकाबपोशों को देखने लगा। उसे जिज्ञासा थी कि वे लोग कौन हैं ? उसे विश्वास था कि गोलियाँ बरसाने वालों का सम्बन्ध अवश्य अपराध से था।

"कमाल है यार। वे तीनों जैसे हवा में गायब हो गए ? उनमें से एक व्यक्ति बोला।

"अबे यहीं कहीं होंगे। इतनी जल्दी कहां जा सकते हैं। मुझे लगता है कि उन्हें जरूर गोलियाँ लगी हैं।" उनमें से ही कोई बोला।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"चलो जल्दी करो, ताबूत को बाहर करो, पर सावधान, हम पर भी गोलियाँ चल सकती हैं।

उसी समय कब्र के आसपास का सारा क्षेत्र सर्चलाइटों के प्रकाश से जगमगा उठा। सूर्या ने देखा, वे आठ-दस नकाबपोश थे, वे सबके सब भौंचक्के हो गए थे।

"तुम सबको पुलिस ने चारों ओर से घेर रखा है, खबरदार किसी ने भी हिलने की कोशिश की तो भून दिए जाओगे। अपने-अपने हथियार फेंक कर हाथ ऊपर उठालो।" माइक पर बिन्दुशेखर शुक्ल की गर्जदार आवाज गूंजी। बिना किसी अवरोध के अपराधियों ने सरलता से पुलिस की बात मान ली। सभी ने हथियार डाल दिए और हाथ सिर पर रख लिए।

अकस्मात् पुलिस की सभी सर्चलाइट्स बुझ गई। कब्रिस्तान में घोर अन्धकार छा गया।

"सर्चलाइट्स कैसे बुझ गईं ? जल्दी से जलाओ।" बिन्दुशेखर की तेज आवाज का गुंजन हुआ।

सर्चलाइट्स के बुझते ही अपराधी अंधेरे का लाभ उठाते हुए भागेंगे ही, सोचकर कब्र के पास खड़े सूर्या ने अपराधियों की ओर छलांग लगाई और एक को कस कर पकड़ लिया। पर यह क्या ? सूर्या चौंका। वह आदमी है या हड्डियों का ढांचा ? जिसने काले कपड़े पहन रखे थे। अधिक सोच-विचार का समय नहीं था, सूर्या ने उसे कन्धे पर लादा और एक ओर भाग लिया। उसी समय सर्चलाइट्स जल उठीं।

बिन्दुशेखर ने कब्र के आसपास देखा, एक भी नकाबपोश का पता नहीं था। डी. एस. पी. एस. पी. सिंह चौंक कर चीखा।

"सर अपराधी भाग गए हैं।"

अचानक एक इन्सपेक्टर चीखा—"सर......उधर वह भाग रहा है, लेकिन......।" हैरत से उसका मुँह खुला रह गया। वह देख रहा था कि एक नकाबपोश हवा में उड़ता जा रहा है। वास्तव में उस नकाबपोश को सूर्या उठा कर भागा था। चूंकि सूर्या अदृश्य था इसलिए नकाबपोश उड़ता हुआ प्रतीत हो रहा था। अचानक एक सब इन्सपेक्टर ने एस. पी. सिंह के संकेत पर देखा, अपनी गन सीधी की ओर गोली चला दी। जब तक बिन्दुशेखर उसे वर्जते, गोली नकाबपोश को भेदती दूसरी ओर निकल गई किन्तु न तो नकाबपोश की चीख सुनाई दी और ना ही वह धरती पर गिरा। सूर्या उसे बेहिचक उठाए दौड़ता हुआ घनी झाड़ियों के दूसरी ओर पहुँच गया। यहाँ भैरवी और वह रहस्यमय युवक खड़ा था, जो कार चला कर लाया था।

"थैंक्यू मि. सूर्या, अब यही मेरा 'हाउस' होगा।" सूर्या ने विलि की आवाज सुनी।" लेकिन मि. विलि, कार्यक्रम तो कब्र से मुर्दा निकाल कर उसमें आपके प्रवेश करा देने का था।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"नहीं, ऐसा नहीं था, वास्तव में यह नकाबपोश मादाम सिल्वा का गुलाम कंकाल है। ये दस नकाबपोश मादाम सिल्वा के ही थे जो सदैव सिल्वा के साथ ही रहते हैं। सूपा हम सबको पुलिस के चंगुल में फंसाना चाहता था। सूपा ने कभी सोचा भी न था कि हम मादाम सिल्वा की साधना स्थली कब्र को खोज लेंगे। सूपा ने पुलिस अधीक्षक शुक्ला को एक अन्य कब्रिस्तान का पता बताया, जहाँ हमने जाना निश्चित किया था। शुक्ला को मैंने उसीं पद्धति से फोन किया और सूपा की ओर से संदेश देते हुए कहा कि अब कब्र खोदने वाले पहले वाले कब्रिस्तान (जो सूपा ने बताया था) के स्थान पर इस कब्रिस्तान में मिलेंगे, हम मिले भी यहीं, किन्तु सूपा की योजना विफल हुई और हमारी सफल। हम मादाम सिल्वा को पुलिस स्टेशन में भेजने में सफल हो गए।" भैरवी ने बताया।

"मादाम सिल्वा ? पुलिस स्टेशन ? मैं कुछ समझा नहीं ?" सूर्या भैरवी की बातों से उलझ गया।

"कृपया अपनी बात को और अधिक रूप से स्पष्ट करें।"

"सूपा जानता था कि हम विलि के लिए शरीर खोजेंगे तो किसी कब्रिस्तान में ही। कोई कब्र खोदी जाती है, तो निसन्देह उस धर्म के पालकों में आक्रोश होगा, इसी आक्रोश को सूपा साम्प्रदायिक दंगों के रूप में बदलना चाहता था।"

"यह कार्य तो सूपा को अत्यन्त सहज-सरल था, वह किसी भी धर्माचार्य को अपनी अदृश्य तरंगों से स्पंदित कर, जब चाहे तब साम्प्रदायिक दंगे जैसी कुघटनाएँ करा सकता है। वह यह सब क्यों करेगा ?"

"विनाशकाले विपरीत बुद्धि। सूपा अपने विचार को सामान्य रूप से क्रियारूप देना चाहता होगा।" भैरवी ने उसे बताया। वे बातें करते हुए कब्रिस्तान से कुछ दूर खड़ी कार के पास आ गए। कंकाल सहित सभी बैठ और अपने लक्ष्य की ओर चल दि़ए।

उधर कब्रिस्तान में। सूर्या के निकल जाने के बाद हत्प्रभ पुलिस पार्टी ने बिन्दुशेखर के आदेश से कब्र के अन्दर रखे ताबूत को उठाया। ताबूत में वजन इतना कम था कि लगता ही नहीं था कि इसमें किसी का शव होगा। सन्देह तो पूर्व से ही था, बिन्दुशेखर के आदेश से ताबूत को खोला गया।

जैसे ही ताबूत का बाह्य आवरण (ढक्कन) हटा तो दो जवान चौंक कर पीछे हट गए। ताबूत में सांबले रंग की अत्यन्त सुन्दर स्त्री लेटी हुई थी। सर्चलाइट का फोकस ताबूत में डाला गया। प्रथम दृष्टयः ही लगता था कि यौवनरस में आपातमस्त भीगी, किसी सुन्दरी का यम ने आहरण किया था।

बिन्दुशेखर ताबूत को बन्द कर पुनः कब्र में दफनाए जाने का आदेश देने ही वाले थे कि उनके कानों के समीप किसी स्त्री का नादमय स्वर गूंजा—



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"शेखर, यह शव नहीं, प्रतिमा है। इसे गौर से देखो। अगर तुमने इसे कब्र में दफना दिया तो तुम्हारा सारा सुरक्षा तंत्र भंग हो जाएगा। इस मूर्ति को यहाँ से हटा कर किसी सुरक्षित स्थान पर रखाओ और इस पर कड़ा पहरा लगा दो। इस प्रकार सूपा का एक बड़ा हथियार शक्तिहीन हो जाएगा।"

"कौन ?........" बिन्दुशेखर आश्चर्य पर मद्धिम स्वर में बोले। उनके साथ पुलिस दल में कोई लड़की आई ही नहीं थी, फिर कौन है यह ?

"मैं भैरवी हूँ शेखर। मेरी बात मानो।" उन्होंने पुनः वही आवाज कानों के पास सुनी।

बिन्दुशेखर आगे बढ़े और उन्होंने ताबूत में चिर निद्रा की मुद्रा में लेटी सुन्दरी कोमल कलेबर को स्पर्श किया। सचमुच वह मूर्ति ही थी। पत्थर की तरह ठोस। बिन्दुशेखर मूर्ति के शिल्प को देखकर चकित थे, ऐसा लगता था, जैसे मूर्ति अब बोली, अब बोली।

ताबूत को बन्द कराकर बिन्दुशेखर ने उसे पुलिस वान में रखाया फिर पुलिस पार्टी वहाँ से रवाना हुई। बिन्दुशेखर ने मय ताबूत के वह प्रतिमा पुलिस अधीक्षक कार्यालय के निकट बने मालखाने में जमा कराई और मालखाने पर सशस्त्र पहरेदारों में चार शस्त्र सहित संतरियों की व्यवस्था की। इसके पश्चात् ही वह अपने निवास पर गए।

❑❑

उस दिन संसृति के विद्यालय का वार्षिकोत्सव था। अतः संसृति सायं 4 बजे ही अपनी सहेलियों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने विद्यालय चली गई। बिन्दुशेखर भी कार्यक्रम में आमंत्रित थे किन्तु अधिक व्यस्तता के कारण वे नहीं जा सके और ना ही उनकी पत्नि शिवानी देवी जा सकीं। संसृति के साथ उसकी प्रिय सहेली शर्मिष्ठा भी थी। ज्ञातव्य हो कि शर्मिष्ठा अचानक गायब हुई 10 लड़कियों में से एक थी। (पाठक अनुच्छेद 16 देखें)

शर्मिष्ठा का तन-बदन अति प्रसन्नता से पूर्ण विकसित फूल की भांति खिली हुई थी, जबकि संसृति असाधारण रूप से गंभीर थी। बार-बार उसके सद्यविकसित पुष्प से दर्शनीय, सुन्दर मुखड़े पर घबराहट की रेखाओं का जाल छा जाता था।

शर्मिष्ठा उसे बार-बार प्रोत्साहित करती हुए कहती—

"नो यार, तू तो इस तरह घबरा रही है, जैसे सुहागरात में मिलन के आरंभ में नववधु घबराती है। अरे एक बार उस स्वर्ग में पहुँच कर तो देख फिर तेरी सारी घबराहट, बेचैनी पलक झपकते ही दूर हो जाएगी।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"शर्मिष्ठा, हम रात में ही लौट आएँगी न ?" संसृति ने अटकते स्वर में पूछा।

"कमाल करती है, यार। नहीं भी आ सके तो कौन सा गजब हो जाएगा। आखिर अब हम वयस्क हो गई हैं। क्या जिन्दगी भर माँ की गोद में पड़ी-पड़ी दूध ही पाती रहेंगी ? शर्मिष्ठा ने झल्ला कर कहा।

"नहीं.......नहीं......तू जा। मैं फिर कभी चलूंगी।" संसृति ने कमजोर स्वर में कहा। शर्मिष्ठा ने उसे गहरी नजरों से देखा फिर बोली–

"अच्छा ठीक है। हम रात ग्यारह बजे के पहले ही आ जाएँगे।" शर्मिष्ठा की बात खत्म हुई ही थी कि एक काली सूमो गाड़ी उनके पास आकर रुकी।

गाड़ी को देखते ही शर्मिष्ठा की प्रसन्नता दो गुनी हुई। गाड़ी का फाटक खुला और शर्मिष्ठा संसृति का हाथ पकड़कर उसे लगभग खींचती हुई गाड़ी में बैठ गई। उनके बैठते ही गाड़ी का दरवाजा अपने आप बन्द हुआ और गाड़ी चल पड़ी। कार की खिड़कियों पर गहरे काले रंग के शीशे लगे थे, जिनसे बाहर दिखाई नहीं दे रहा था। ड्रायवर और उनके मध्य भी एक वैसी ही काली दीवार थी, जिनके कारण न ड्रायवर दिखाई देता था और ना ही विण्डस्क्रीन के बाहर का दृश्य। वह इस समय शहर के किस क्षेत्र में हैं ? उनको कहां ले जाया जा रहा है ? दोनों तरुणियों को पता नहीं था।

निर्बाध रूप से सूमो निरन्तर एक घन्टे तक चलती रही। इस बीच शर्मिष्ठा ने संसृति की हालत खराब कर दी। गाड़ी चलते ही उसने संसृति के नवविकसित कोमल अंगों की मृदुलता को सहलाना-मलना प्रारंभ किया। धीरे-धीरे उसने संसृति और उसके स्वयं के सभी वस्त्रों को शरीरों से हटाकर सीट के नीचे डाल दिए। शर्मिष्ठा कामकला में कुशल नायिका के समान क्रियाएँ कर रही थी। संसृति भी भावनाओं में बद्ध होकर उसका सहयोग करने लगी। अकस्मात् संसृति को लगा जैसे किसी ने उसके कोमल कन्धों को दबाया हो।

संसृति चिहुक उठी और शर्मिष्ठा के वक्षस्थल पर रखे उसके हाथ कांप गए। घबराकर उसने अपने हाथ हटाए और बोली–

"किसी ने मेरे कन्धे को जोर से दबाया है शर्मि। उसका स्पर्श बहुत कठोर था।"

"अरे, यहाँ कोई नहीं है यार। चल शुरू हो जा।" कामोत्तेजना के मद में झूमती शर्मिष्ठा ने संसृति के अंगों से खेलते हुए कहा। संभवतः संसृति ने भी इसे अपना भ्रम ही माना, उसके मन में विरामित हुईं, कामतरंगों ने फिर उछाल भरी और संसृति के हाथ पुनः शर्मिष्ठा के वक्ष पर क्रिया करने लगे।

अचानक उसके हाथों को झटका लगा। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो किसी बलिष्ठ पुरुष ने बलाततः उसके हाथों को पकड़ कर खींचा हो। इसके साथ ही 'तड़ाक'



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की एक आवाज गूंजी और शर्मिष्ठा चीख कर सीट पर जा गिरी। उसके स्निग्ध कपोल पर अंगुलियों के चिन्ह उभर आए।

"खामोश, अब मत चीखना। कपड़े पहन कर संस्कारित लड़कियों की तरह चुपचाप बैठ जाओ। मंजिल पर पहुँचने के पहले यह सब करने को किसने कहा था ?" कार में पुरुष कण्ठ से निकली भारी आवाज गूंजी।

पलक झपकते ही लड़कियों का कामज्वर उतर गया। यंत्रचकित जैसे उन दोनों ने जल्दी-जल्दी अपने-अपने कपड़े पहन लिए। संसृति बहुत अधिक डर गई थी, जबकि शर्मिष्ठा उस अज्ञात व्यक्ति को उसी व्यवस्था का एक अंग मान रही थी, जिस 'स्वर्ग' में वे दोनों जा रही थीं, इसलिए वह अधिक भयभीत नहीं हुई थी।

सूमो एक झटके से रुकी, फिर उसका दरवाजा खुला। द्वार के बाहर दो सुन्दरता से सज्जित स्त्रियाँ दिखाई दीं। उनमें से एक ने मीठे स्वर में कहा—

"दोनों राजकुमारियों का स्वागत है। पधारें।"

शर्मिष्ठा अपने गाल को सहलाती उतरी। उसके पीछे संसृति भी उतरी किन्तु उनके बाद गाड़ी से कोई नहीं उतरा। संसृति ने देखा भी किन्तु वहाँ कोई नहीं था। स्वागतार्थ खड़ी दोनों युवतियों ने स्नेहपूर्वक संसृति और शर्मिष्ठा के हाथ, अपने हाथों लेकर वह बोलीं—

महान सूपा, होलीफादर द्वारा बनाए स्वर्ग में आप दोनों का स्वागत है।" संसृति ने देखा, चारों ओर धवल प्रकाश फैला हुआ था। यह एक विस्तृत मैदान था जिसमें हरी-हरी दूर्वा लगी हुई थी। एक ओर गार्डन था जिसमें अनेक फूलों वाले पेड़-पौधे लगे हुए थे।

दोनों युवतियाँ शर्मिष्ठा और संसृति का हाथ पकड़े गार्डन में ले गईं। संसृति देख रही थी कि उनके सिरों के ऊपर आसमान नहीं होकर विशाल छत थी, जिसमें पूरा गार्डन और उसकी दृष्टि सीमा तक छत का विस्तार था। ऊपर छत पर स्थान-स्थान पर तारे और चन्द्रमा बने हुए थे, जिनसे स्वच्छ-सफेद प्रकाश निकल रहा था।

दोनों युवतियाँ संसृति और शर्मिष्ठा को एक हॉल में ले आईं। यह हॉल पूरी तरह एक अस्पताल के वार्ड की तरह था। इस हॉल में लगभग तीस पलंग बिछे हुए थे। इसी हॉल से सटा, अत्याधुनिक उपकरणों से सज्जित ऑपरेशन थियेटर था।

शर्मिष्ठा और संसृति को पास-पास के पलंग पर लिटा दिया गया। उनके लेटने के तुरन्त बाद परिचारिका ने पहले शर्मिष्ठा को फिर संसृति को क्रमशः गिलासों में पीला सा तरल पदार्थ पीने दिया। शर्मिष्ठा निःसंकोच तुरन्त पी गई



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किन्तु संसृति झिझकी। उसे झिझकती देख शर्मिष्ठा ने उत्साहित करते हुए कहा—"पी यार, यह तो स्वर्ग का पेय है।"

शर्मिष्ठा के प्रोत्साहन पर संसृति ने भी वह पेय पदार्थ पी लिया। उसका स्वाद कुछ खट्मिठ्ठा था। तीन-चार मिनट के पश्चात उस पेय ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू किया। संसृति के मन में एक विचित्र सा उत्साह जागा। उसकी उदास मुखछवि पर प्रसन्नता का सागर लहाराने लगा। वह अपना घर, मान-सम्मान, माता-पिता सभी कुछ जैसे भूल गई। उसे चारों ओर रंगीनियाँ ही रंगीनियाँ बिखरी दिखाई दे रही थीं।

प्रसन्नता तो शर्मिष्ठा के चेहरे पर भी थी किन्तु वह अनुभव कर रही थी कि उसके पेट में कुछ तेजी से घूम रहा है। लगभग 10 मि. ऐसे ही व्यतीत हुए। इस मध्य हॉल में रिक्त सभी पलंग भर गए। प्रत्येक पलंग पर एक लड़की थी। हॉल में पलंगों पर चौदह से अठारह वर्ष की आयु की सुन्दरतम लड़कियाँ ही थीं। उन सभी को वही पीला द्रव पदार्थ पिलाया गया था।

हॉल का द्वार खुला और संसृति चौंक कर स्वयं को छिपाने का प्रयास करने लगी। खुले द्वार से सुमन ने प्रवेश किया। संयोगवश सुमन की दृष्टि संसृति पर नहीं पड़ी थी। वह सीधे ओ. टी. में प्रवेश कर गई उस समय सुमन चिकित्सक की वेशभूषा में थी।

आधा घन्टा व्यतीत होते ही शर्मिष्ठा के पेट में पीड़ा हुई। उसके चेहरे पर पीड़ा ने नर्तन किया और मुख कराह निकली। संसृति की दृष्टि अचानक शर्मिष्ठा पर पड़ी तो वह चौंक गई। उसके पेट का आकार असाधारण रूप से बढ़ चुका था। बिल्कुल ठीक वैसा ही जैसा आसन्न प्रसवा का बढ़ा हुआ पेट हुआ करता है।

"अरे शर्मि, ये तेरे पेट को क्या हुआ ?" संसृति ने चकित होकर पूछा—

"म......म......मैं.......मैं नहीं जानती संसृति, पर लगता है, मेरे पेट में कुछ घूम रहा है। ओह........मैं क्या करूं........ऽ........।" शर्मिष्ठा पीड़ा के कारण रो उठी।

उसी समय, शर्मिष्ठा का पलंग हिला, उसके पहियों में हरकत हुई और बिना किसी सहायता से पलंग खिंचता हुआ ऑपरेशन थियेटर के द्वार पर पहुँचा, उसी समय संसृति का पलंग भी हिला और ठीक शर्मिष्ठा के पलंग के पास जा पहुंचा। संसृति को समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्यों हो रहा है ? शर्मिष्ठा के पेट में उभार है, वह तड़प रही है। पर क्यों ? संसृति ने बार-बार अपने पेट पर हाथ फेर कर देखा, किन्तु उसका पेट पूर्ववत था। उसे किसी तरह की कोई पीड़ा भी नहीं हो रही थी।

ओ. टी. का द्वार खुला और दोनों पलंग अन्दर सरकते चले गए। ओ. टी. पहुँचते ही संसृति घबरा उठी। यहाँ अवश्य ही उसे सुमन मिलेगीं। वह उसे क्या



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तर देगी—कि वह यहाँ क्यों ? किसलिए आई ? संसृति का मस्तिष्क द्रुतगति से सोच रहा था। यहाँ उस 'स्वर्ग सुख' का अभी तक कहीं अता-पता नहीं चला था। क्या ओ. टी. में वह 'स्वर्ग' होगा, जिसका वर्णन शर्मिष्ठा ने किया था ? अगर ऐसी ही बात है तो सुमन आंटी भी इस कार्यक्रम में इन्वॉल्व हैं। ऐसा ही है तो उसे सुमन की ओर से कोई विशेष खतरा नहीं है।

शर्मिष्ठा का पलंग ऑपरेशन टेबिल पर पहुँचकर उसके सिर की ओर से उठा और पलंग से सरकती शर्मिष्ठा ऑपरेशन टेबिल पर जा पहुँची। टेबिल के पास डॉ. सुमन आयंकर के अतिरिक्त पाँच पुरुष और तीन युवतियाँ थीं। सभी के हाथों में दस्ताने और चेहरों पर झीने-पारदर्शी नकाब थे, जिनमें से उनके चेहरों को स्पष्ट देखा जा सकता था।

ऑपरेशन टेबिल पर शल्य क्रिया के कोई उपकरण आदि नहीं थे किन्तु टेबिल के ऊपर एक बड़ी मशीन लगी हुई थी। यह मशीन न्यूरो से सम्बन्धित सिर के परीक्षण 'केट स्किन' टेस्ट मशीन के समान थी।

सुमन टेबिल से हट कर पास में बने कांच के एक छोटे से केबिन में जा बैठी। उसके सुन्दर मुखमण्डल पर गहन गंभीरता थी। पाँच पुरुष और तीन युवतियों ने चांदी जैसे चमकदार लबादे ओढ़ लिए। वे आपादमस्त उस लबादे में ढक गए।

सुमन ने अपने सामने रखे स्क्रीन को ऑन किया। उसकी आंखों के सामने दर्द से तड़पती-कराहती शर्मिष्ठा का पूरा दृश्य था। सुमन ने एक स्विच दबाया, ऊपर मशीन से तेज प्रकाश की रेखाएँ निकलीं और शर्मिष्ठा के ऊपर से नीचे दौड़ती चली गईं।

दरअसल ये रेखाएँ शर्मिष्ठा के कपड़ों पर पड़ती हुई ऊपर से नीचे तक उतरती आई थीं। पलक झपकते ही शर्मिष्ठा के कपड़े कट कर ऊपर उछले और फर्श पर चिन्दी-चिन्दी होकर आ गिरे। अब शर्मिष्ठा का शरीर पूरी तरह नग्न था, किन्तु गहन पीड़ा के कारण शर्मिष्ठा को अपने शरीर का कोई होश-हवाश नहीं था।

अचानक केबिन में लगे माइक से किसी की आवाज आई—

"मैडम हॉल में शेष लड़कियों पर लिक्यूड एस नाइन्टी सेविन का असर नहीं हो रहा है। किसी भी लड़की के पेट का आकार नहीं बढ़ा।"

"इम्पॉसिबल" सुमन बुरी तरह चौंक कर बोली।

"आप स्वयं देख लें मैडम।" उधर से आवाज आई।

सुमन ने एक अन्य स्विच पुश किया। स्क्रीन पर पूरे हॉल का दृश्य उभरा। सभी लड़कियाँ प्रसन्न थीं, किसी भी लड़की का उदर-उभार नहीं दिखाई दे रहा था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"आश्चर्य की बात है।" सुमन बड़बड़ाई।

सुमन ने तत्क्षण यंत्र माध्यम से सूपा से सम्पर्क किया, किन्तु उस समय सूपा उपलब्ध नहीं था। यह भी एक आश्चर्य था कि सूपा वहाँ नहीं था। सुमन के कार्यकाल में यह प्रथम अवसर था, जब सूपा उसे उपलब्ध नहीं था। शेष कार्य स्थगित कर सुमन ने अपना ध्यान शर्मिष्ठा पर केन्द्रित किया।

अब पुनः स्क्रीन पर शर्मिष्ठा थी। सुमन ने शर्मिष्ठा के प्रत्येक अंग का परीक्षण किया। कम आयु की शर्मिष्ठा का जननांग इस स्थिति में कतई नहीं था कि उस द्वार को पूर्ण विकसित कर वह कार्य निष्पन्न करे। फिर भी सुमन ने प्रयास किया। यांत्रिक सहायता से उसने प्रजनांग के मार्ग को चौड़ा किया, किन्तु मार्ग अधिक चौड़ा नहीं हो सका।

सुमन ने अब ऑपरेट मशीन को हेण्डिल करना शुरू किया। एक स्वच्छ, चांदी के तार सी चमकीली और सिर के बाल सी पतली रेखा मशीन से निकली और शर्मिष्ठा के गर्भ स्थान से कुछ ऊपर स्थिर हो गई। टेबिल के पास खड़े सहायक शल्य चिकित्सक तैयार थे। उनमें से एक ने तुरन्त रक्त से भरी बॉटल शर्मिष्ठा को लगा दी।

ग्रीन सिंग्नल पाते ही पतली सी उज्ज्वल किरण शर्मिष्ठा के गर्भ स्थान पर आई और ब-मुश्किल एक सेकेन्ड ही लगा होगा, उस किरण ने चमत्कारिक ढंग से शर्मिष्ठा के गर्भ स्थल को चीर दिया। अगले ही क्षण सहायक शल्य चिकित्सक (महिला) ने शर्मिष्ठा के गर्भ स्थित बच्चे को उठा लिया।

संसृति आश्चर्य से फटी-फटी आंखों से देख रही थी। एक घन्टे के अन्दर ही शर्मिष्ठा माँ बन गई। इसके पहले शर्मिष्ठा के देह में कहीं कोई इस प्रकार के चिन्ह नहीं थे जो उसे गर्भवती सिद्ध करते हों।

जैसे शर्मिष्ठा के गर्भस्थल से शिशु को निकाला गया उसके बाद कुछ ही सेकेण्ड्स में शर्मिष्ठा का कटा हुआ स्थान, वैसी ही किरणों की सहायता से बन्द कर सिल गया। शर्मिष्ठा को पता ही नहीं चला कब उसका पेट कटा। उसने अनुभव किया था कि उसके पेट में एक गुद्‌गुदी सी हुई और महिला चिकित्सक ने उसके गर्भ से एक शिशु को उठा लिया। उसके तुरन्त पश्चात् उसका पेट पूर्ववत् हो गया।

शर्मिष्ठा की समस्त पीड़ा समाप्त हो गई। उसके हृदय में ममता का सागर तरंगित हो उठा। अब वह पूरी तरह प्रसन्न और स्वस्थ थी। और अपने सद्यःजात शिशु को गोद में लेने को आतुर हो उठी थी। सोलह वर्षीय शर्मिष्ठा जैसे परिपक्व-अवस्था की माँ हो।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शर्मिष्ठा के ऑपरेशन टेबिल से 5 फुट दूरी पर अक्समात् ही फर्श में आंतरिक्ष उत्पन्न हुआ और उस आंतरिक्ष को भरता भूगर्भ से 5×10 फुट के आकार का एक पारदर्शी धातु का केबिन ऊपर आया। केबिन के ऊपर आते ही उसका द्वार खुला और उसी क्षण चिकित्सक ने शर्मिष्ठा के शिशु को केबिन में पड़े विचित्र से टेबिल पर लिटा दिया।

केबिन के टेबिल में एक-एक इंच के फासले पर भिन्न-भिन्न रंगों की प्रकाश रश्मियाँ निकल रही थीं। केबिन में शिशु को लिटा दिया गया था। सुमन ने स्क्रीन पर शर्मिष्ठा को गौर से देखा फिर बोली—

"ओ. डी. मिशन थ्री, लड़की को ऑपरेशन टेबिल से हटा दो।"

चिकित्सकों में से एक ने शर्मिष्ठा को टेबिल से उठाया। वह फर्श पर खड़ी हुई और चलती हुई अपने शिशु वाले केबिन के निकट आई। उस समय भी वह पूर्णतः नग्न थी, किन्तु उसकी नग्नता का किसी पर कोई प्रभाव नहीं था।

सुमन ने आदेश दिया—"दूसरी लड़की को ऑपरेशन टेबिल पर लिटाओ" संसृति का पलंग खिसका। संसृति को लगा, जैसे उसके साथ भी ऐसा ही कुछ होगा, जो शर्मिष्ठा के साथ हुआ। वह चीखती हुई पलंग से कूदी।

"नहीं.........नहीं.......मैं ऑपरेशन नहीं कराऊंगी।"

उपस्थित चिकित्सकों ने उसे तत्क्षण पकड़ लिया। महिला चिकित्सकों ने उसके पेट पर हाथ फेरा और उदरावरित कपड़े को ऊंचा करते हुए कहा—

"मैडम, यह गर्भहीन है।"

सुमन की दृष्टि गई। वह केबिन से निकली और गुर्रा उठी—

"मूर्खो यह कैसे यहाँ आई ? इसमें एक माह पूर्व पॉजिटिव एस की स्थापना ही नहीं की गई थी तो गर्भ कहां से होगा ?

"मुझे बचा लो आंटी.......म........म........मैं पहली बार गलती से.......शर्मिष्ठा की लुभावनी बातों में फँस कर यहाँ आ गई।" संसृति रोती हुई बोली।

"छोड़ दो उसे ! और अभी इसे यहीं बैठने दो। फिलहाल इस समय सद्यःजात शिशु के डव्लप्मेन्ट कार्य करना है। लगभग 40 मिनट अभी डिस्टर्ब न करना।" कहते हुए सुमन पुनः अपने केबिन में जाकर स्विचों में व्यस्त हो गई। संसृति वहीं पलंग पर बैठ गई। वह बहुत घबरा चुकी थी। उसे विश्वास था कि सुमन उसके प्रति सहानुभूति रखेगी, उसका पक्ष लेगी, किन्तु सुमन ने ठीक से उसकी ओर देखा भी नहीं और न ही बात की। सुमन का व्यवहार अपरिचितों की तरह था। वह घबरा इसलिए रही थी कि पता नहीं अब उसके साथ ये लोग क्या व्यवहार करेंगे।

सुमन दत्तचित्त से अपने कार्य में व्यस्त हो गई। उसकी अंगुलियाँ कम्प्यूटर



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैसे उपकरण में लगे बटनों से खेलती रहीं। शर्मिष्ठा अपने शिशु के केविन के पास खड़ी देख रही थी।

पाँच मिनट.......दस मिनट.... शर्मिष्ठा की आँखें स्थिर और अपलक थीं। वह धरती का सबसे बड़ा आश्चर्य देख रही थी। शिशु केबिन में भिन्न-भिन्न किरणों का सम्पर्क पाकर निरन्तर बढ़ता जा रहा था। मात्र दस मिनट में उसका आकार 7-8 वर्ष के बच्चे के समान हो गया। शर्मिष्ठा ने उसके अंगों को देख कर पहचाना कि वह लड़की थी। शर्मिष्ठा को अपने बचपन के फोटो का स्मरण आया, वह फोटो ठीक उसी लड़की के समान था।

शनैः-शनैः लड़की का शरीर बढ़ा। मात्र 40 मिनट की अवधि में......। शर्मिष्ठा का ही प्रतिरूप। वह पूर्णतः शर्मिष्ठा की नकल थी। वैसा ही चेहरा, उसी की तरह आँखें, बालों की रंगत, शरीर का वर्ण, अंगों की बनावट, सब कुछ शर्मिष्ठा के ही समान।

सुमन प्रसन्नता से नाच उठी। उसने जीवन में बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर ली थी। एक माह पूर्व शर्मिष्ठा के स्थापित एक मासी भ्रूण को मात्र दो घन्टे में विकसित कर उसका प्रसव ही नहीं कराया था, अपितु उसे षोडश वर्षीय अनिंद्य सुन्दरी, वह भी उसकी माँ की कार्बन कॉपी में बदल दिया था। वह चाहती तो अपने मॉनीटर को सोलह वर्ष से अधिक बढ़ाती जाती और इसी लड़की को वृद्धावस्था में भी बदल सकती थी।

दोनों केविनों के द्वार एक साथ खुले, एक केविन से हर्षातिरेक से नाचती सुमन निकली और दूसरे केविन से मुस्कराती शर्मिष्ठा की कुक्षि से पैदा हुई लड़की। वह लड़की शर्मिष्ठा के पास आकर खड़ी हो गई। शर्मिष्ठा निर्वाक निःसंज्ञ सी, पत्थर की मूर्ति के समान खड़ी थी और संसृति ? जैसे उस पर भी आश्चर्यों के पहाड़ टूट पड़े थे। सच यह था कि अब कोई पहचान नहीं सकता था कि असली शर्मिष्ठा कौनसी है। उस समय दोनों ही नग्न थीं। नवीन शर्मिष्ठा के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे।

"ओह ! वण्डर, हू आर यू ?" नयी शर्मिष्ठा के अधर हिले और शब्द धारा बही।

सुमन की प्रसन्नता और अधिक बढ़ गई। उसने शर्मिष्ठा की मात्र कॉपी का ही निर्माण नहीं किया था बल्कि शर्मिष्ठा के समान ही मेन्टली विकास में पूर्णतः सफलता हासिल कर ली थी।

अचानक ऑपरेशन थियेटर की दीवार एक स्थान से दो भागों में विभक्त हुई। उसमें प्रकट हुए द्वार से गौर वर्णी, सफेद, दाड़ी मूछों से सज्जित, गलें में रुद्राक्षमाला डाले एक व्यक्ति ने प्रवेश किया। सुमन सहित सभी चिकित्सकों ने उसे



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देखा। वे हत्प्रभ रह गए उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उनके सामने सूपा था। महान सूपा। जिसे किसी ने आज तक इस प्रकार सदेह अपने पास नहीं देखा था।

सूपा ने स्वच्छ, भारतीय वेशभूषा धारण कर रखी थी। अत्याधिक प्रसन्नता से उसके पांव धरती पर ठीक से नहीं पड़ रहे थे। उसने स्तब्ध खड़ी सुमन को प्रसन्नता से बाँहों में भर लिया। अत्यन्त स्नेह से उसने सुमन के ललाट को चूमा।

"बधाई........बधाई......माय लवली डॉटर.......।" अब हम विश्व के किसी भी व्यक्तित्व को जब चाहें प्रकट कर सकते हैं। सारे ब्रह्माण्ड में हमारी ही सत्ता होगी, हमारा ही कानून होगा। हम प्रत्येक राष्ट्र के राष्ट्राध्यक्षों की वहाँ के प्रमुख लोगों की डमियाँ बना कर उन्हें अपने हाथों की कठपुतलियाँ बनाएँगे। एक दिन हम पूरे विश्व के अधिपति होंगे, प्रशासक होंगे, और हजारों वर्षों तक रहेंगे। धरती के बाद फिर अन्य ग्रहों को भी अपना गुलाम बनाएँगे। हम अपराजित होंगे, हम अजेय होंगे हॅ.....हॅ....।" सूपा पागलों के समान अट्ठहास लगाने लगा।

अचानक सूपा का अट्ठहास रुका। उसके चमकते नेत्रों में खून उतरा, हिंसा और अमर्ष प्रकटे। वह एक रिक्त स्थान को घूरता, नाग के समान फुँकारते हुए बोला।

"देख .....देख ले मूर्ख सूर्या....। तू क्या समझता है कि तू मेरी नजरों से छिपा रह सकेगा। मैं तुझे उसी गाड़ी में पहचान चुका था, जिसमें तूने लड़की को चांटा मारा था। तू हॉल में आ गया, मैंने आने दिया। तू ऑपरेशन थिएटर में आ गया, मैंने नहीं रोका। जानता है क्यों ? इसलिए कि तेरी दर्दनाक मौत तुझे यहाँ बाँध कर ला रही थी, मैं क्यों रोकता ?" सूपा का खतरनाक स्वर गूँजा।

सूर्या का स्थूल शरीर प्रकट हुआ। उसके ओठों पर मुस्कान थी।

वह शान्ति से बोला—

"महान वैज्ञानिक सूपा। सर्वप्रथम तो मैं तेरे आविष्कार को सादर प्रणाम करता हूँ काश, कितना अच्छा होता कि तू अपनी खोज मानवता के हित में रखता किन्तु तेरी वृत्तियाँ राक्षसी हैं। तू भी अन्य शक्तिशाली अपराधियों के समान विश्व सम्राट बनने का स्वप्न देख रहा है। खेद है सूपा तेरा यह सुनहरा स्वप्न कभी पूरा नहीं होगा।"

"आस्तीन के सांप.....। मैंने तुझे दूध पिला-पिला कर पाला। मैंने तुझे पाला है। इसलिए तुझे मारने का अधिकार है मुझे। मुझे गर्व है सुमन पर, जिसने पर्याप्त मात्रा में तेरा वीर्य इकट्ठा कर लिया है। एक माह के बाद मेरे पास तेरे जैसे सैकड़ों सूर्या होंगे, जो मेरे गुलाम होंगे। अब मुझे तेरी जरूरत नहीं।" कहते-कहते सूपा ने अपनी जेब की ओर हाथ बढ़ाया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्या ने उसे मौका नहीं दिया कि उसका हाथ जेब तक पहुँचे उसकी प्लाइंग किक सूपा के हाथ पर पड़ी। सूपा दर्द से दोहरा हुआ, उसी समय सूर्या ने उसकी जेब में हाथ डाला। सूपा की जेब में 4 इन्च लम्बी 2 इन्च चौड़ी एक धातु की सफेद चमकदार धातु की पट्टी रखी थी। सूर्या ने उसे निकाल लिया। इसी के साथ सूर्या अपने स्थान से गायब हो गया। सुमन सहित सभी चित्रलिखित से खड़े रह गए। सब कुछ इतनी जल्दी घटित हो गया कि मार्शल आर्ट्स में दक्ष सुमन भी कुछ नहीं कर सकी।

अदृश्य रह कर सूर्या ने पट्टी को देखा। उसका वैज्ञानिक मस्तिष्क तेजी से सक्रिय हुआ। पट्टी पर हल्के-हल्के, बिन्दु रूप में उभार थे। सूर्या ने तिरछी पट्टी पर एक उभार को दबाया किन्तु कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। मात्र 10 सेकण्ड में सूर्या को उसका संचालन आ गया।

सूर्या ने स्विच दबाया, धातु की पट्टी से ब्लैड जैसी तेज धार से युक्त एक और पट्टी निकली। आश्चर्य की बात थी कि इतनी देर में न तो सूपा ने कोई प्रतिकार किया था और नाही वह वहाँ से भागा था। बल्कि कुछ भयभीत अवस्था में चुपचाप खड़ा हो गया था।

"सूपा, अब तू अपने भगवान को याद कर ले। सूर्या अपनी माँ पर हुए अत्याचारों का इन्तकाम लेगा।" कहते हुए सूर्या का शरीर प्रकट हुआ।

इसके पहले कि सुमन कोई ऐक्शन ले, वातावरण में विद्युत सी चमकी। ब्लैड जैसी तेजधार का हथियार सूपा की बाँह पर गिरा। आघात तेज था सूपा का हाथ कट कर दूर जा गिरा। सूर्या ने दूसरा वार सूपा की दूसरी बाँह पर किया। वह बाँह भी कट कर एक ओर गिर पड़ी।

सूपा के चेहरे पर न कोई पीड़ा थी और न ही उसकी कटी बाँहों से खून निकला था। सूर्या तीसरा बार सूपा की गर्दन पर करना ही चाहता था कि सुमन अपने स्थान से उछली। संभवतः सूर्या उसकी ओर से पूरी तरह सावधान था इसलिए अपने स्थान से हट गया। इसके पूर्व कि गुर्राती हुई सुमन उस पर दोबारा हमला करती, सूपा आदेशात्मक स्वर में चीखा—

"नो.....नो......सुमन......नो ऽ.... !"

सुमन क्रोध से भरी थी, किन्तु सूपा के आदेश ने उसे यंत्र के समान रोक दिया। तब तक विलक्षण चमत्कार घटित हुआ। सूपा की कटी हुई बाँहें जो धरती पर पड़ी थीं, अपने स्थान से उछलीं और पुनः सूपा के कटे कन्धों से आ जुड़ीं, तब तक सूर्या तीसरा वार सूपा की गर्दन पर कर चुका था। सूपा की गर्दन तत्काल कट कर नीचे गिरने ही वाली थी कि सूपा ने दोनों हाथों से अपनी कटी गर्दन को पकड़ लिया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूपा का कटा सिर अट्ठास कर उठा। सूर्या चकित सा खड़ा रह गया। सूपा का कटा सिर कह रहा था—

"मूर्ख सूर्या, वर्षों तक सूपा के साथ रह कर भी उसकी शक्ति को नहीं पहचान सका ? उसके अपने घर में तू सूपा को मार सकता है ?" सूपा के हाथ उठे और अपनी गर्दन उसने यथास्थान रख ली। कुछ क्षणों में ही उसकी गर्दन पर कहीं भी कटने का निशान नहीं था।

"सूर्या.......देख तेरी मृत्यु को।" सूपा कहर भरे स्वर में गुर्राया। सूपा ने अपने दांए हाथ की अंगुलियाँ सीधी कीं, उसमें से तीक्ष्ण चमकीली किरणें निकलीं। सूर्या ने तत्क्षण अपना स्थान छोड़ दिया। घातक किरणें दीवार से टकराईं और तत्क्षण दीवार मोम की तरह पिघल कर पाँच छिद्रों में बदल गई।

सूपा चौंका, सूर्या के शरीर से एक शरीर निकला, फिर दूसरा और इसी प्रकार एक-एक कर प्याज के छिलकों की तरह पाँच शरीर निकल कर खड़े हो गए।

"सूपा देख.......किस सूर्या को मारेगा ? ये पाँच सूर्या कुछ क्षणों में ही पच्चीस सूर्याओं में बदल जाएँगे फिर पच्चीस सूर्या एक सौ पच्चीस में। आज तू बच गया सूपा, इसलिए कि मुझे विश्वास नहीं था कि तू मिल जाएगा किन्तु इस बार तू मिला तो पता चल गया कि तू यहीं रहता है।" कहते-कहते पाँच सूर्या सचमुच पच्चीस सूर्याओं में बदल गए।

सूपा का शरीर अदृश्य होने लगा। किसी भी सूर्या ने उसे रोका नहीं। सूपा के जाने के बाद सभी सूर्या एक सूर्या में समाहित होने लगे। इसी के साथ प्रकटीकरण हुआ एक व्यक्तित्व का। यह कोई अन्य नहीं वही रहस्यमय नवयुवक था, जो समय-समय पर उसे मिलता रहा था। उसे देखते ही, सूर्या चौंका। अनायास उसके मुख से चकित स्वर निकला।

"तुम ?.......तुम ....इस समय ?"

"हाँ मैं। सूर्या आज मैं तेरे साथ न होता तो आज सूपा तेरा जीवन समाप्त कर देता।" सूर्या को रहस्य समझ में आया कि एक के बाद एक क्यों उसके शरीर प्रकट हो रहे थे। संभवतः यह रहस्यमय युवक कोई सिद्ध योगी है।

"तुम कौन हो भाई ?" सूर्या ने अन्ततः पूछा ही।

"समयानुसार तुम्हें पता चल जाएगा। इस समय इन तीनों लड़कियों को यहाँ से ले चलो, और हां, साथ ही इस वैज्ञानिक सुन्दरी युवती को भी, जिसने एक पैशाचिक सत्ता के नरपिशाच को सहायता देकर मानव समाज के साथ गद्दारी की है। इसे यथोचित दण्ड मिलना ही चाहिए।" रहस्यमय युवक ने सुमन की ओर संकेत कर कठोर स्वर में कहा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्या ने आग्नेय दृष्टि से सुमन को घूरा। सुमन कांप उठी, उसे लग रहा था कि सूर्या उसे अवश्य कुछ कहेगा, किन्तु सूर्या कुछ नहीं बोला। बोला तो वह रहस्यमय नवयुवक। उसने सुमन की ओर देखते हुए कहा—

"वैज्ञानिक सुन्दरी, तुम्हारा विज्ञान योग शक्ति के सम्मुख तुच्छ है। हमारी सिद्धियाँ भौतिकता की दास नहीं, देखो मैं यहाँ अपने विज्ञान से तुम चारों लड़कियों के पंचभौतिक शरीरों को पंचभूतों में विलय कर दूंगा और बाहर निकल कर उन्हीं पंचभूतों को पुनः संघटित कर लूंगा। इस प्रकार तुम यहाँ से अदृश्य होकर इस भूगर्भ से बाहर पुनः प्रकट हो जाओगी। तुम्हारे शारीरिक अणुओं को यहाँ से जाने में कोई नहीं रोक सकता क्योंकि अभी विज्ञान उन अणुओं के अवरोध को बना ही नहीं पाया है।" कहते हुए नवयुवक एक रूप से ही चार स्वरूपों को प्राप्त हुआ। उसने सुमन, शर्मिष्ठा, संसृति और शर्मिष्ठा की प्रतिमूर्ति (शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न) के सिरों पर अपने हाथ रखे। कुछ क्षणों में उन चारों को लगा जैसे उनके शरीर वातावरण में बिखरते जा रहे हैं। कुछ देर बाद समुन के सहायक शल्य चिकित्सक आश्चर्य से पहले झपकाते वहाँ खड़े थे। ओ. टी. से चारों लड़कियाँ सहित सूर्या और वह नवयुवक गायब थे।

❑❑

संभूति यह स्पष्टतः समझ चुकी थी, उसका पति पीयूष सामान्य-साधारण व्यक्ति नहीं है, किन्तु पीयूष की यह अलौकिकता और सिद्धिपरकता, उसे बिना किसी साधना-तपश्चर्या के कैसे ? कहाँ से ? प्राप्त हो गई, वह समझ नहीं सकी थी संभूति। उस रात के पश्चात् (पाठक परिच्छेद 18 का अवलोकन करें) संभूति की दृष्टि में जो आया था, वह भी आश्चर्यजनक था।

संभूति ने अनेकों बार अपनी स्वयं की प्रतिरूपा भैरवी की उपस्थिति पीयूष के पास सघन रूप से अनुभव की थी। उसने पीयूष को भैरवी के साथ भिन्न-भिन्न स्थानों पर कार्य सम्पादित करते हुए देखा था। संभूति को सिल्वा ने कारागार से विलि को मुक्त कराते हुए देखा था, उसी रात उसने विलि और सूर्या को बातचीत करते देखा था, तो विलि के कंकाल को नागपाल के घर विस्फोट में नष्ट होते हुए भी देखा था। संभूति पर कब्रिस्तान काण्ड भी प्रकट था। (अनुच्छेद 21 में वर्णित प्रसंग)

इसके पश्चात् संभूति ने ऑपरेशन थिएटर में शर्मिष्ठा का प्रसव, द्वितीय शर्मिष्ठा का वैज्ञानिक पद्धति से विकास और सूपा तथा सूर्या का द्वन्द्व भी देखा था। उसे प्रत्येक घटना के मूल में पीयूष और भैरवी ही दिखाई दिए थे। अब तो उसे लगने लगा था कि वह स्वयं ही भैरवी है, और वही अनेक कार्यों को सम्पादित



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर रही है, किन्तु वह क्यों ऐसा कर रही है ? उसे रहस्य था। अभी तक उसकी सारी शक्तियाँ सिर्फ रात्रिकाल में ही जाग्रत होती हैं, वह रात्रि में कार्य को क्रियारूप देती है, ऐसा क्यों ? वह नहीं जानती।

प्रातः के चार बज चुके थे, संभूति की नींद दो बजे रात में ही खुल गई थी कारण था पीयूष। दो बजे तक पीयूष उसे आलिंगनबद्ध किए प्रगाढ़ निद्रा में सोता रहा था। दोनों के शरीर युग्मावस्था में थे। अचानक संभूति ने अनुभव किया था कि पीयूष के शरीर की कठोरता उसकी कोमलता से पृथक हुई हो। तत्क्षण उसकी निद्रा भंग हो गई। उसने देखा पीयूष का शरीर अणुओं में विघटित होता जा रहा है। वह समझ गई कि पीयूष को कहीं जाना है।

संभूति बिस्तर पर ही नेत्र बन्द कर बैठ गई। बन्द नेत्रों के उस पार काली घनी चादर को चीर कर दिखाई दे रहे आलोक जगत में उसने शर्मिष्ठा का प्रसव और सुमन की वैज्ञानिकता और सूर्या, सूपा का द्वन्द्व तो समझ गई कि पीयूष कहाँ गया है ? "खट, खट, खट.....।" बाहर किसी ने द्वार को खट्खटाया।

संभूति कुछ चौंकी। उसने अपने पारिधानेयवस्त्र (पेटीकोट आदि) को व्यवस्थित किया ब्रॉ और साड़ी ठीक की फिर शयनकक्ष से निकल कर द्वार को खोला। द्वार पर सुमन, सूर्या और शर्मिष्ठा खड़े थे।

"आप ? इतनी सुबह ?" कहते हुए सूर्या ने उनका स्वागत किया। उसने जानबूझ कर नहीं पूछा कि पीयूष कहाँ है ? क्योंकि वह जानती थी, पीयूष अब कहाँ होगा ?

"हाँ, यह शर्मिष्ठा की पुत्री है, इसका नाम तो मुझे भी नहीं पता। अदृश्य शक्तियों के स्वामी मेरे मित्र, मैं उसका नाम भी नहीं जानता, के निर्देशानुसार इसे छोड़ने तुम्हारे पास आया हूँ। मैं जल्दी में हूँ।" सूर्या ने कहा।

"यह सुमन आयंकर ही है न ?" इसे कहाँ छोड़ोगे ?" संभूति ने मुस्कराकर कहा।

सुमन और सूर्या दोनों चौंके। संभूति सुमन को कैसे जानती है ? उन दोनों में से कोई बोल भी नहीं पाया था कि संभूति स्नेह से सुमन का हाथ पकड़ कर बोली—

"आओ बहन, तुम भी आओ प्रतिष्ठा।"

"प्रतिष्ठा" सूर्या शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न सुन्दरी के नामकरण पर चौंका।

"हाँ शर्मिष्ठा संभूति इस कन्या का नाम प्रतिष्ठा बुरा है क्या ?" संभूति के अधरोष्ठों पर पुनः मुस्कान ने क्रीड़ा की।

"सचमुच बहुत अच्छा नाम है।" सूर्या ने सस्मित कहा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"चलो सूर्या, अब चाय पीकर जाना।" संभूति ने आग्रह किया।

"नहीं जाने दो फिर कभी।"

"मेरे पति से नहीं मिलोगे ?" संभूति के अधरों पर एक विशेष अर्थ लिए मुस्कान की चित्ताकर्षिणी रेखा खिंची।

"हाँ, जरूर।" सूर्या ने कहा।

सभी बातें करते हुए अन्दर आ गए। संभूति के शयनकक्ष का द्वार बन्द था, जबकि वह खुला छोड़ कर गई थी। ड्राइंगरूम में बैठा कर संभूति रसोईघर की ओर बढ़ी। रसोईघर की लाइट जली हुई थी। वहाँ प्रमदा थी और चाय तैयार कर चुकी थी।

"अरे दीदी..........आप की चाय ही बन गई।" संभूति प्रसन्न हो उठी।

"तू पूरी अघोरन है। अभी तक कुल्ला दातून कुछ नहीं। जा मुँह धो।" प्रमदा ने उसे छोटी बच्ची के समान प्रेम से डांटते हुए कहा।

"सॉरी दीदी।" संभूति ने गलती स्वीकारी फिर कहा—"घर में मेहमान आए हुए हैं।"

"मुझे पता है।" तू जा, अपना काम कर मैं उन्हें चाय पिलाती हूँ।"

"चाय तो मुझे भी पीना है दीदी।"

"नो.......बिना ब्रुश किए चाय नहीं मिलेगी।" प्रमदा ने सख्ती से कहा। संभूति प्रमदा के निश्छल प्रेम में डूबती बाथरूम की ओर चली गई।

चाय पीने के मध्य परस्पर परिचय हुआ। प्रमदा ने अपना परिचय सुमन और प्रतिष्ठा को पीयूष की बड़ी बहन के रूप में दिया। सूर्या पीयूष की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे उपस्थित न देख कर अन्ततः उसने प्रमदा से पूछा—

"प्रमदा दीदी, मि. पीयूष अभी तक नहीं उठे क्या ?"

"क्या कहू सूर्या, पीयूष बहुत लापरवाह है। कभी तो जल्दी उठ आता है, कभी जगाए-जगाए नहीं उठता! उसकी आदत संभूति ने खराब की है। खैर, मैं उठाती हूँ उसे।" प्रमदा उठी ही थी कि संभूति आ गई।

"उसे उठा तो सही, दिन चढ़े तक सोता रहेगा क्या ?" प्रमदा ने चाय के बर्तन उठाते हुए, संभूति से पीयूष को जगाने को कहा।

संभूति पीयूष को उठाने जाने ही वाली थी कि आंखें मलते हुए पीयूष ने ड्राइंगरूम में प्रवेश किया। सभी अथितियों को उसने शालीनता से शुभ प्रभात कहा। सूर्या अपने स्थान से उछल पड़ा। उसे जैसे अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। पीयूष के रूप में उसके सामने वही रहस्यमय युवक खड़ा था, जो अब से कुछ देर पूर्व तक उसके साथ था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"आ.......प.......तो आप ही पीयूष हैं।" सूर्या ने उसे प्रणाम का उत्तर देते हुए बोला। पीयूष ने सूर्या को अपरिचित दृष्टि से देखा फिर बोला–

"जी हाँ"।

"लेकिन पीयूष.......। तुम.......और तुम्हारी विद्या ? सचमुच चकित कर देने वाली है।" सूर्या ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

"यह ? और इसकी विद्या ? महामूरख है पीयूष। देखो अभी तक कुल्ला दांतुन भी नहीं। जा तो.....तब तक संभूति तेरे लिए चाय बनाती है।" प्रमदा ने पहले सूर्या की ओर फिर पीयूष की ओर देख कर उससे कहा।

उस दिन पूरे दिन उल्लास रहा। प्रतिष्ठा अधिकतर मौन ही रही, जबकि सुमन पर घटित परिस्थितियों ने कोई प्रभाव नहीं डाला। पर यह सच था कि पीयूष को देख कर वह भी चकित थी। क्या पीयूष भी कोई सिद्धि प्राप्त पुरुष है ? उसने सोचा। सुमन ने पीयूष से बातचीत करने का प्रयास भी किया किन्तु बात न हो सकी। पीयूष साढ़े नौ बजे तैयार होकर विद्यालय चला गया, उसके बाद उचित समय पर सुमन ने संभूति से पीयूष विषयक जिज्ञासा जानकारी ली किन्तु संभूति कुछ न बता सकी।

उधर प्रातःकाल में शर्मिष्ठा ने स्वयं को अपने पलंग पर पाया। उसी की भांति संसृति ने भी स्वयं को पाया। दोनों को रात्रि घटित एक स्वप्न लग रहा था। शर्मिष्ठा को तो जैसे विश्वास ही नही हो रहा था कि रात में उसे प्रसव भी हुआ था और उसके गर्भ से एक बच्ची ने सीजर्स द्वारा जन्म लिया था। शर्मिष्ठा ने अपने पेट पर काटा हुआ निशान देखा, पर वहाँ कोई ऐसा चिन्ह नाममात्र को भी नहीं था, जिससे कहा जा सके कि रात में उसके पेट को चीर कर बच्ची निकाली गई थी।

शर्मिष्ठा ने संसृति को फोन लगाया और रात में हुई घटना की ओर संकेत कर कहा। इस संसृति की भी यही प्रतिक्रिया मिली कि वह सारा स्वप्नवत है। शर्मिष्ठा ने सहमते-सकुंचते हुए संसृति से अपनी स्वजात कन्या के विषय में पूछा कि वह इस समय कहां है। संसृति को भी यह पता नहीं था कि नवीन शर्मिष्ठा कहाँ है ? दोनों के माता-पिता भी नहीं जान सके थे कि उनकी लाड़लियाँ कहां गई थीं ? और कैसे वापस आईं ?

रात में लगभग 10 बजे पीयूष वापस लौटा। पूरे दो घन्टे तक गपशप चलती रही, बारह बजे सूर्या आया। वह कुछ गंभीर था, उसने आते ही विस्फोटक सूचना दी। उसके अनुसार सत्ताधारी पार्टी के वरिष्ठ नेता और केन्द्रीय गृह मंत्री का नया जन्म हो चुका था। यही नहीं असली गृहमंत्री का अपहरण करके नवीन गृहमंत्री श्री सुब्रतोदास गुप्ता को उनके स्थान पर सूपा ने सैट भी कर दिया था। इस बात की



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी को कानों-कान खबर नहीं थी। अगर नकली गृहमंत्री को आज रात विवश कर गिरफ्तार नहीं किया गया तो प्रातः राष्ट्र के महत्वपूर्ण आंतरिक सुरक्षा के दस्तावेज और अन्य रहस्य सूपा शत्रुराष्ट्र को भारी मूल्य पर बेच देगा।'

गृहमंत्री की सुरक्षा-व्यवस्था इत्यादि इतनी कठोर थी कि आम व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता था। उसने इस विषयक पुलिस अधीक्षक से भी इस विषय पर बात की तो बिन्दुशेखर भी चिन्ता में पड़ गए। प्रत्यक्ष में उनके पास गृहमंत्री के विरुद्ध कोई सबूत नहीं था, किन्तु वे सूर्या की बात को भी अनदेखा नहीं करना चाहते थे, फिर भी वे विवश थे, एक निरुपाय व्यक्ति के समान।

अन्ततः सूर्या पीयूष के पास आया था, और चाहता था कि वह अपनी सिद्ध-विद्या से नकली गृहमंत्री सुव्रतोदास गुप्ता का अपहरण करें अथवा उसे वहीं मार दें। सूर्या की बात सुनते ही पीयूष ने अपने कानों पर हाथ रख लिया और बोला—

"सूर्या भाई, मैं एक सीधा-साधा व्यक्ति हूँ। पता नहीं आपको यह भ्रम कैसे हो गया कि मैं सिद्ध व्यक्ति हूँ। आप मेरा विश्वास करो।"

बहुत कहने पर भी पीयूष निरन्तर ना करता रहा। उसकी नकार में सूर्या को कृत्रिमता या टालने का भाव अथवा अभिनय दिखाई नहीं दिया। सूर्या ने संभूति से भी कहा कि वह उसकी सहायता करे, किन्तु भैरवी की अनुपस्थिति में संभूति भी विवश थी।

अन्ततः सूर्या को विलि का स्मरण आया, किन्तु विलि ? उसे खोजना ही संभव नहीं था। यद्यपि विलि भैरवी के आधीन नहीं था फिर भी उसका मिलना मुश्किल ही था। सूर्या ने स्वयं ही निर्णय लिया कि वह अकेला ही नकली गृहमंत्री की 'कुछ' व्यवस्था करेगा। उसे ज्ञात था कि सूपा ने गृहमंत्री के आवास पर अपने दृष्टिकोण से सुरक्षा व्यवस्थाएँ कर रखी होंगी। उस सुरक्षा का भेदन संभव नहीं था। सूर्या का वहाँ जाना आत्महत्या करने जैसा था।

सूर्या बुझे मन से पीयूष के घर से चल दिया। इस समय न तो उसके पास गाड़ी थी और ना ही कोई मोटर सायकिल जैसा वाहन । इस नगर से राजधानी काफी दूर थी। पाँच-छः घन्टे में तो प्रातःकाल ही हो जाएगा। बिना अलौकिक सहायता से वह आज रात सुब्रतो गुप्ता को नहीं पा सकता, फिर भी वह प्रयास तो करेगा ही।

सूर्या के जाने के आधा घन्टा बाद। सुमन, प्रतिष्ठा, प्रमदा का बिस्तर ड्राइंगरूम में लगा और संभूति-पीयूष अपने शयनकक्ष में। एकान्त होते ही पीयूष ने संभूति की पुष्पसुरभित हेमवर्णी काया को बाहुबद्ध कर लिया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"नहीं..........,आज बिल्कुल भी नहीं। आज तुम्हें सारे रहस्य खोलने होंगे, तभी ..........तभी हाथ लगाने दूंगी।" रूठने का अभिनय करते हुए संभूति अंगूठा दिखाती उसकी पकड़ से छूटती हुई बोली।

"कैसे रहस्य ?" कहते हुए पीयूष उसकी ओर लपका। संभूति पलंग के दूसरी ओर जा पहुँची।

"कौन हो तुम ? अलौकिक सिद्धों, यतियों जैसी विद्या तुम्हें कहाँ कैसे मिली ?"

"पगली हुई हो। मेरा किसी विद्या से कोई सरोकार नहीं।" पीयूष ने कहा।

"तुम असत्य बोल रहे हो। अचानक गायब होना, बिना द्वार खोले ही कमरे में प्रकट हो जाना। यह कोई सिद्ध-विद्या नहीं ? मैंने स्वयं तुम्हारे चमत्कार देखे हैं। अभी कल ही तुमने सूपा के ऑपरेशन थियेटर में एक सूर्या के शरीर में से पच्चीस उसके तद्रूपी शरीरों को प्रकट किया था।"

"सूपा ? ऑपरेशन थियेटर ? समझ गया, तुम फिर तुम्हारे भावलोक में स्वप्न श्रृंखला दिखाई दी होगी।" पीयूष ने उसका उपहास किया।

"नहीं, यह स्वप्न श्रृंखला नहीं, सच्चाई थी। तुम कल रात मेरे साथ सोए हुए थे किन्तु दो बजे रात में तुम्हारा शरीर अणुओं में विघटित हुआ था और तुम गायब हो गए थे।"

"यह भी तुम्हारे भावलोक का ही कोई दृश्य होगा श्रीमती संभूति। मैं तो कहता हूँ जल्दी ही तुम्हें किसी सुयोग्य मनोचिकित्सक से जांच करानी चाहिए। मैं कल ही तुम्हें राजधानी ले चलूंगा। चलो अब सब बातों को छोड़ो, रात युवाओं के लिए होती है, रात में कामदेव की उद्दीप्ता और रति की सरसता बरसती है। आओ ........आओ................।" पीयूष की बाँहें आमंत्रण की मुद्रा में फैलीं। इसके पहले ही संभूति का यौवन पीयूष की बाँहुकारा में कैद हो, एक जबरदस्त विस्फोट हुआ। संभूति और पीयूष कांप उठे। विस्फोट उनके ड्राइंगरूम में हुआ था। दोनों घबराकर बाहर निकले, तभी उनके शयनकक्ष में गगनभेदी धमाका हुआ। ईंट-पत्थर, दीवारें, छत, सभी कुछ उड़ गया। संभूति को लगा उसके और पीयूष के शरीर के सैकड़ों टुकड़े हो गए हैं। उसकी आंखों के आगे महाकराली, दैत्यवदना माँस-मज्जादि आदि को चबाती, अट्टास लगाती खड़ी थी। संभवतः यही मृत्यु की देवी है। कराली ने झपट कर उसे उठा लिया। उसकी एक बाजू में पीयूष दबा हुआ था। साथ ही उसने दोनों के शरीर के टुकड़ों को भी देखा। उसकी चेतना घोर अंधकार में डूबती चली गई। संभवतः यही मृत्यु का अंधकार था।

चारों ओर हाहाकार, चीख पुकार, आहें-कराहें। पीयूष के आसपास तीन ओर छः मकान पूरी तरह ध्वस्त हो गए थे। बीस आदमियों से अधिक घटनास्थल पर



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मर चुके थे। उनकी लाशों के टुकड़े इधर-उधर फैल गए थे। सारी सड़क पर खून भरे माँस के लोथड़े जो घरों से उड़-उड़ कर वर्षा के रूप में सड़क और उसके आसपास मकानों पर जा गिरे थे।

विस्फोट के तुरन्त पश्चात पुलिस अधीक्षक बिन्दुशेखर शुक्ला सहित लगभग पच्चीस पुलिस जवानों से भरी एक लॉरी घटनास्थल पर पहुँची। बिन्दुशेखर की आंखों के सामने ही ब्लास्टिंग हुई, किन्तु वे कुछ भी नहीं कर सके।

शुक्ला ने पुलिस जवानों को मलवे में जीवित व्यक्तियों को खोजने का आदेश दिया। साथ ही वायरलेस से अन्य अधिकारियों को सूचना दी, अस्पताल में फोन कर उन्होंने स्ट्रेचर्स सहित, चिकित्सकों एवं अन्य स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को तुरन्त आने को कहा।

आसपास के सारे इलाके की नींद हराम हो गई। सारे शहर में सनसनी फ़ैलते देर न लगी। स्वयंसेवी, सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की भीड़ आने लगी। लाशों पर अपनी-अपनी रोटियाँ सेकने वाले नेताओं की होड़ घटनास्थल पर पहुँचने के लिए लगने लगी।

स्वयं बिन्दुशेखर भी मलवे में दो घन्टों से अधिक समय तक खोजते रहे। मलवे में उन्हें प्रतिष्ठा और प्रमदा के धड़ तथा मलवे से दूर उनके सिर मिले। प्रतिष्ठा को उन्होंने अपनी पुत्री संसृति की सहेली के रूप में शिनाख्त कर तुरन्त उसकी सूचना उसके पिता (शर्मिष्ठा के पिता) को दी। किन्तु उन्हें आश्चर्य उस समय हुआ, जब शर्मिष्ठा के पिता ने बताया कि शर्मिष्ठा चैन से अपने कमरे में सो रही है।

वास्तव में हुआ यह था। रात को लगभग 12 बजे, जब बिन्दुशेखर सोने जा रहे थे, उन्हें पुलिस मालखाने से फोन आया। मालखाने पर तैनात सन्तरी दर्दभरी आवाज में कराहता हुआ ब-मुश्किल कह रहा था—

"सर गजब हो गया। मालखाने पर तैनात अतिरिक्त चार सशस्त्र गार्ड्स सहित एक रुटीन गार्ड भी मारा गया। मैं बड़ी मुश्किल से जान बचा कर भागा हूँ। कृपया आप यहाँ आ जाएँ।"

"हुआ क्या है ?" बिन्दुशेखर लगभग चीख उठे। किन्तु उस ओर से कोई उत्तर नहीं मिला। बिन्दुशेखर ने गम्भीरता को समझा। उन्होंने झटपट कपड़े पहने और तेजी से मालखाने की ओर दौड़े। उनके बंगले से मालखाना मुश्किल से 100 मीटर था।

बिन्दुशेखर स्तब्ध हो उठे। उनके सामने उनके जीवन का सबसे अधिक लोमहर्षक दृश्य था। मालखाने का दरवाजा खुला था और द्वार पर एक भयानक तमःवदना पिशाचनी पुलिस जवान के ताजा रक्त को पी रही थी। उसके बड़े-बड़े



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीक्ष्ण दांत जवान के गले में गड़े हुए थे। पुलिस जवान पीड़ा से डकराता छटपटा रहा था।

बिन्दुशेखर ने रिवाल्वर निकाला, और....धाँय......धाँय.....धाँय....... एक साथ छः ही गोलियाँ उस राक्षसी जो कोई अन्य नहीं सिल्वा ही थी, उतार दीं, किन्तु एक भी गोली सिल्वा के शरीर में नहीं घुस सकी। सारी गोलियाँ उससे टकरा-टकरा कर उसके पैरों के पास आ गिरीं। सिल्वा खून पीते से बन्द नहीं हुई। वह उस जवान को किसी खिलौने की तरह उठाए, मालखाने के समीप खड़ी पुलिसवॉन की ओर बढ़ी।

पुलिसवॉन का ड्रायवर साइड का फाटक स्वतः ही खुला और सिल्वा खून पीते हुए ड्रायविंग सीट पर जा बैठी। पुलिस जवान के चेहरे पर उभर रहे माँस को अपने दांतों से 'कच' से काट कर चबाते हुए सिल्वा ने वॉन स्टार्ट की। बिन्दुशेखर दौड़ कर वॉन तक पहुँचे। उन्होंने सुना—

"गुड, गुड मादाम सिल्वा.......यहाँ से सीधे पीयूष के घर। उसी घर में वह महाशक्तिशाली भैरवी है। वह रहस्यमय युवक भी पीयूष ही है। ब्लास्ट मटेरियल एस. 0/27 D से पूरे मकान को उड़ाद्रो।"

"महान सूपा पता बताओ।" माँस को चबाते हुए सिल्वा का भारी स्वर गूंजा उधर से पीयूष का पता बताया, जिसे बिन्दुशेखर ने अच्छी तरह याद कर लिया।

सिल्वा ने वॉन स्टार्ट की और वॉन तेजी से लक्ष्य की ओर दौड़ पड़ी। बिन्दुशेखर स्तब्ध से खड़े रह गए थे। अचानक जैसे उन्हें होश आया उन्होंने भाग कर तत्क्षण गश्ती पुलिस को उस वॉन को (वायरलेस से) पकड़ने का आदेश दिया फिर आनन-फानन में उपस्थित फोर्स, को एकत्र कर तुरन्त पते की ओर रवाना हुए।

गश्ती पुलिस चौकन्नी थी, जैसे ही उन्हें अपने विभाग की वॉन आते दिखाई दी, उन्होंने गाड़ी रोड पर खड़ी कर दी किन्तु सिल्वा नहीं रुकी। तेज स्पीड से आते हुए सिल्वा की वॉन ने गश्ती पुलिस की वॉन को तेज टक्कर दी। गश्तीवॉन में बैठे हुए पुलिसकर्मी चीख उठे। भिड़न्त बहुत तगड़ी थी। दोनों पुलिस गाड़ियाँ कागज के डिब्बे की तरह फटती चली गईं। किसी जवान का हाथ कटा, किसी का पैर तो किसी का सिर कट गया।

गजब की शक्ति का प्रदर्शन करती सिल्वा ने अपने ऊपर से भारी वॉन को उठाया और हुंकारती हुई उसके नीचे से निकली। उसने सड़क पर इधर-उधर देखा। तेज आवाज से कुछ लोग उठ चुके थे। पीछे से आगे से आने वाले वाहन भी रुकने लगे। सड़क पर ट्राफिक जाम हो गया। वाहन स्वामी वाहनों से



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उतर-उतर कर एक्सीडेन्टिक पुलिस गाड़ियों की ओर दौड़े। इसी मध्य सिल्वा धीरे से वहाँ से खिसक ली।

कुछ देर में ही वहाँ बिन्दुशेखर मय फोर्स के आ गए। उन्होंने दोनों पुलिस वाहनों की हालत देखी और दुःखी हो गए। घायलों का यथाविधि उपचार का आदेश देकर उन्होंने ट्रेफिक साफ कराया और तेजी से पीयूष के घर की ओर चले।

जब तक बिन्दुशेखर वहाँ पहुँचते, सिल्वा ने उनसे पहले ही वहाँ पहुँच कर जो उसे करना था, कर डाला। (पाठक इससे पूर्व पीयूष के घर में ब्लास्ट प्रकरण को पढ़ चुके हैं) बिन्दुशेखर ने वहाँ सिल्वा की लाश को भी खोजा किन्तु वह न मिली। सिल्वा अपना काम कर दोबारा मालखाने में रखे ताबूत में मूर्ति की शक्ल में जाकर सो चुकी थी।

शेष रात शवों की शिनाख्त, पुलिस कार्यवाही में ही व्यतीत हो गई। पूरी तरह यह पता नहीं लगाया जा सका कि पीयूष के घर में कितने व्यक्ति थे ? मात्र सिरों के मिलने से अनुमान लगाया गया। उन सिरों में प्रमदा, प्रतिष्ठा के सिर ही पहचान में आए थे, शेष सिरों की ऐसी स्थिति थी कि उनका शिनाख्त ही संभव नहीं थी।

बिन्दुशेखर अस्पताल भी गए। वहाँ घायलों को देखा, उनके बयान कलमबद्ध कराए। जिस संतरी ने उन्हें मालखाने से जिस राक्षसी की सूचना दी थी वह भी अस्पताल में था। बिन्दुशेखर ने उसका बयान भी सुना।

उसके बयानों के अनुसार वे छः गार्ड चौकस और मुस्तैद खड़े थे। अचानक मालखाने के अन्दर से ऐसी आवाजें सुनाई दीं, जैसे कोई अन्दर रखे सामान को उलट-पलट रहा हो। चाबी से ताला खोलकर तुरन्त ही अन्दर देखा गया। कमरे में सारा सामान सुव्यवस्थित था किन्तु कब्रिस्तान से लाया गया ताबूत अपने स्थान से खिसक कर काफी दूर पहुँच गया था। इस पर किसी ने विशेष ध्यान दिया भी नहीं। मालखाने के कमरे को दोबारा ताला लगा कर छैहों गार्ड पुनः पहरा देने लगे।

अचानक ठण्डी हवा का एक तेज झोंका गार्ड्स के बीच से निकला। उन्हें लगा कोई आदमी उनके बीच से, उन्हें स्पर्श करता निकल गया हो। सभी ने एक दूसरे की ओर देखा। अकस्मात् मालखाने के दरवाजे पर लगा मजबूत ताला 'खनन्न्' की आवाज करता धरती पर गिर पड़ा। इसके पूर्व कि गार्ड्स परिस्थिति को पूरी तरह समझ पाते मालखाने का दरवाजा खुला और शून्य में तैरता कब्रिस्तान से लाया गया ताबूत द्वार के बाहर निकल कर आहिस्ता से धरती पर आ रखा हुआ। उनमें से एक गार्ड भूत-भूत कह भागा, तभी ताबूत का ढक्कन खुला और कब्रिस्तान से लाई गई मूर्ति उसमें से अंगड़ाई लेते हुए उठी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेष पाँचों गार्ड चकित-स्तंभित से खड़े रह गए। तब तक मूर्ति नारी आकार में परिवर्तित होकर सामान्य स्त्री से कई गुना बड़े कद-काठी में दिखाई दी। उसने अपनी लम्बी काली जिह्वा को लपलपाकर एक गार्ड को पकड़ लिया। उसे अपनी बाजू में दबा कर दूसरे को पकड़ा और उसकी गर्दन तोड़ दी। फिर उसने तीन और गार्ड्स को भी बर्बर तरीके से मार डाला। फिर उसने आराम से उनका खून पिया, माँस खाया, तब तक एक गार्ड छटपटाता उसकी बगल में दबा रहा। भागे हुए गार्ड ने बिन्दुशेखर शुक्ल को एक स्थान से फोन किया और वह अचेत हो गया।

(बिन्दुशेखर के आने के बाद का वाक्या पाठकों ने पूर्व में पढ़ा ही है)

अस्पताल से बिन्दुशेखर लौटे तो सूर्य निकल आया था। वापसी में वे मालखाने पर रुके। ताबूत अभी भी बाहर पड़ा था और दरवाजा टूटा हुआ एक ओर गिरा पड़ा था। मालखाने पर अभी भी शव पड़े हुए थे, वहाँ लगभग बीस पुलिस जवान तैनात थे। बिन्दुशेखर ताबूत का ढक्कन बन्द देख कर चौंके।

"इसे किसने बन्द किया।" वहाँ उपस्थित सब इन्सपेक्टर से उन्होंने पूछा।

"पता नहीं सर। हमारे आने के पहले से ही यह इसी तरह बन्द था।"

"खोलो इसे।"

बिन्दुशेखर के आदेश से ताबूत को खोला गया। ताबूत में पत्थर की वही मूर्ति जिसे वह कब्रिस्तान से लाए थे, यथावत रखी थी। किन्तु मूर्ति का मुँह खून से सना था, ताजे-ताजे खून से। उसके हाथों में भी माँस के टुकड़े दबे हुए थे।

इतना बड़ा हंगामा और रक्तपात, हत्याएँ इसी मूर्ति ने ही की हैं। लेकिन कानूनी रूप से इसे सिद्ध नहीं किया जा सकता, फिर भी उन्होंने मूर्ति के हाथों में फँसे माँस के टुकड़े आदि निकाल कर सील करा दिए, ताकि उनका वैज्ञानिक परीक्षण कराया जा सके।

बिन्दुशेखर जैसे ही घर पहुँचे, संसृति उनकी प्रतीक्षा करती लॉन में ही मिल गई। उसे शर्मिष्ठा ने कुछ समय पूर्व ही फोन पर कहा था कि रात में हुए ब्लास्ट में उसी की हमशक्ल लड़की का सिर-शव पृथक-पृथक मिले हैं। शर्मिष्ठा ने यह भी सन्देह व्यक्त किया था कि वह लड़की कोई और नहीं, उसी के गर्भ से उत्पन्न लड़की होगी। अगर कोई व्यक्ति उस मृतका की शिनाख्त अपने पारिवारिक सदस्य के रूप में करता है तो वह शर्मिष्ठा पुत्री नहीं होगी, शिनाख्त न होने की स्थिति में शर्मिष्ठा पुत्री ही होगी।

संसृति के पूछने पर बिन्दुशेखर ने कहा कि उसकी सहेली की प्रतिमूर्ति लड़की की शिनाख्त अभी तक किसी ने नहीं की। दोनों पिता-पुत्री बातें करते हुए लॉन से बंगले में जा ही रहे थे कि एक जवान ने उन्हें सेल्यूट दिया। उसके हाथ



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में एक वीडियो कैसेट था और साथ में पत्र। सम्मान के साथ जवान ने कैसिट और पत्र बिन्दुशेखर को सौंपते हुए कहा।

"सर कल सन्ध्या 8 बजे कोई या कैसिट और पत्र यह कह कर दे गया था कि इन्हें मैं आप तक पहुँचा दूं। चूंकि मैं उस समय यहाँ ड्यूटी पर था। इसलिए उसी समय यह दोनों वस्तुएँ आपकी सेवा में नहीं पहुँचा सका। रात को दो बजे ड्यूटी से ऑफ हुआ तो मालखाने पर हुई घटना के कारण घर नहीं जा सका। अब मुझे यह मिल सकी तो तुरन्त ले आया।"

"ठीक है तुम जाओ।"

संसृति ने जिज्ञासा की कि इस कैसेट में क्या है ? उसका उत्तर न देकर शुक्ला ने पत्र खोल कर पढ़ा और पढ़ते ही कैसेट को देखने उतावले हो गए। पत्र में लिखा था, कैसेट को एकान्त में ही देखें और तुरन्त देखें, ताकि राष्ट्र को गंभीर खतरे से बचाया जा सके। हस्ताक्षर के स्थान पर विलि लिखा था।

बिन्दुशेखर ने तुरन्त वी. सी. आर. को एकान्त कमरे में मंगाया और वीडियो फिल्म देखी। देखकर वह सन्नाटे में आ गए। वीडियो फिल्म में ऑपरेशन थिएटर के सारे दृश्य थे। इसमें शर्मिष्ठा का प्रसव और जवान होती उसकी लड़की का भी फिल्मांकन था। फिल्म में उनकी पुत्री संसृति भी मौजूद थी और सुमन-सूर्या भी। फिल्म को देखकर उन्हें लगा कि सूर्या ने उसे जो गृहमंत्री विषयक सूचना दी थी, सत्य होगी। उन्हें जीवन में प्रथम बार संसृति पर क्रोध आया, किन्तु उस समय वे चुप रह गए क्योंकि यह समय क्रोध का नहीं काम का था। वे जल्दी से जल्दी राजधानी से सम्पर्क करना चाहते थे।

बिन्दुशेखर अत्याधिक परेशान हो गए। समझ में नहीं आ रहा था, क्या करें। ऐसे समय में अकस्मात ही निवृत्ति देवी (श्री माँ) का आगमन हुआ। बिन्दुशेखर को जैसे एक सहारा मिला। दोनों भाई-बहन कमरे में पहुँचे। द्वार बन्द कर बिन्दुशेखर ने सारी बात श्री माँ को बताते हुए कहा—

"मैं परेशान हो गया हूँ दीदी। एक तो राष्ट्र की चिन्ता, अपने कर्त्तव्य निर्वहन की अत्यावश्यक व्यस्तता, दूसरे संसृति। इस लड़की ने मेरा चैन हराम कर दिया। अब देखो न इस कैसिट को। क्यों गई यह शर्मिष्ठा के साथ ?"

"वह सब मैं ठीक कर दूंगी लालू, पर जैसे भी हो उस मूर्ति को कहीं अधिक गहराई में दफन करा दें, अन्यथा आज की रात............वह फिर वही करेगी जो कर चुकी है।

बिन्दुशेखर आवश्यक कार्य में लग गए। श्री माँ, संसृति बातों में खो गईं। संसृति को पता नहीं चला कि वीडियो फिल्म में शर्मिष्ठा प्रसव का फिल्मांकन है।

□□



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्या ने रात्रिकालिक बस की सेवा ली और प्रातः होते-होते राजधानी पहुँच गया। यहाँ उसे आवास की कोई समस्या नहीं थी। अनेक स्तरीय होटल वाले उससे सुपरिचित थे। उसने सुविधा सम्पन्न होटल डिकॉस्टा का चयन किया। पहले यह होटल एक अंग्रेज के स्वामित्व में था, किन्तु बाद में इसे दक्षिणी भारतीय सोमसुन्दरम् ने खरीद लिया था।

सोमसुन्दरम से उसकी मित्रता थी। डिकॉस्टा से उसे गाड़ी भी मिल जाएगी और अन्य आर्थिक सुविधा भी, क्योंकि सूर्या के पास उस समय अर्थाभाव भी था। बस अड्डे से ही सूर्या ने सोमसुन्दरम्, को रिंग किया। फोन पर सोमसुन्दरम् ही मिला। सूर्या का आगमन सुनकर वह खिल उठा। उसने 15 मि. में बस स्टैण्ड पहुँचने को कहा और फोन रख दिया।

सूर्या राजधानी की अवाम से परिचित था। किसी को किसी के लिए कोई समय नहीं। इतनी व्यस्तता की बात करना तक दूभर। राजधानी की चहल-पहल प्रारंभ हो गई। सूर्या स्टैण्ड के बाहर सड़क के किनारे खड़ा हो गया। कन्धे पर उसका मात्र एक सफरी बैग लटकाए सूर्या प्रतीक्षा करते हुए पच्चीस मिनट व्यतीत हो गए, तब कहीं जाकर सोमसुन्दरम् की विदेशी गाड़ी उसे आते दिखाई दी। उसने हाथ हिला कर स्वयं की उपस्थिति को दर्शाया। सोमसुन्दरम् ने गाड़ी उसके पास ही आ रोकी।

"शुभ प्रभातम्।" सोमसुन्दरम् फाटक खोल कर गाड़ी से कूदा और सूर्या को बाँहों में भर लिया।

"कैसा है सोम ?"

"अच्छा हूँ। जिसके पास काम करता था, छोड दिया। अब पूरी तरह फुटपाथ पर आ गया हूँ। गाड़ी, रुपया सब कुछ खत्म।" सूर्या हँस कर बोला। सोमसुन्दरम् को आश्चर्य हुआ। वह पहली बार जान रहा था कि सूर्या किसी का नौकर था। उसे तो पता था कि सूर्या किसी वैज्ञानिक का पुत्र है।

"आज से ये गाड़ी तेरी। अब बता सुमन कैसी है। ?" सोम ने अपनी मुँह बोली बहन सुमन के विषय में पूछा। दरअसल सुमन के पिता और सोम के पिता एक ही गाँव के थे। राजधानी में वर्षों तक साथ-साथ रहे थे। सोम के कोई बहन नहीं थी और सुमन के भाई। अतः दोनों भाई-बहन के पवित्रसूत्र में बंध गए।

"सब कुछ बताऊंगा। थोड़ा चैन तो लेने दे यार।" सूर्या ने कहा।

सूर्या ने उस दिन अधिकांश समय गृहमंत्री की आवासस्थली के इर्दगिर्द व्यतीत किया। वह गृहमंत्री को भी देखता रहा, जानकारी लेता रहा। उसे ज्ञात हुआ कि कल प्रातः की फ्लाइट से गृहमंत्री विदेश प्रवास पर जा रहे हैं तो वह चिंतित हुआ, किन्तु यह सोच कर उसे तसल्ली हुई कि गोपनीय दस्तावेज शायद



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभी नहीं सौंपे गए होंगे। यह सौदा विदेश में ही कहीं होगा। उसने अपना सारा कार्यक्रम रात्रि में करने का निश्चय किया। वह होटल लौटा और 'रात्रि' की आवश्यक योजना में जुट गया।

लगभग 11 बजे वह पूरी तरह तैयार होकर निकला। पता किया तो सोम कहीं चला गया था। गाड़ी भी अपने स्थान पर नहीं थी। उसे बड़ी कोप्त हुई। उसने किसी अन्य साधन से गृहमंत्री के शासकीय आवास में जाने का निश्चय किया। वह हॉल के मध्य से निकला। अकस्मात् उसकी दृष्टि होटल के एक कोने में बैठे एक जोड़े पर जम गई।

सूर्या चौंक उठा। उसने अच्छी तरह पहचाना, वह विलि था। हालांकि उस कोने में बहुत कम प्रकाश था। सूर्या आराम से चलता हुआ, विलि और उसके साथ बैठी युवती की ओर बढ़ा।

"हैलो, मि. विलि।" सूर्या नजदीक जा कर बोला।

विलि चौंका। इस समय विलि के मुँह में सिगरेट दबी थी। सूर्या की आवाज सुनकर विलि कम और उसकी सहयोगिनी अधिक चौंकी।

"तुम ? मि. सूर्या !" वह उठ कर खड़ी हो गई। क्रोध से उसका सुन्दर चेहरा लाल हो गया। सूर्या युवती को देखते ही चौंका। वह लिलि थी। वही लिलि जिसकी लाश सूर्या स्वयं अपने हाथों से दफना कर आया था। (पाठक अनुच्छेद तीन को देखें)

"आप.......? आप लिलि हैं न ?" सूर्या ने चकित होते हुए कहा।

"यस........यस मि. सूर्या। यह लिलि है। मीट यू, लिलि इज माय प्रेमिका।" झूमते हुए विलि ने अपने खास स्टाइल में कहा।

"लेकिन, यह तो मर चुकी थी मि. विलि।" सूर्या ने आश्चर्य से कहा।

"हम भी मर चुका था सूर्या। जैसा हम वैसा हमारा लवली डार्लिंग।" विलि ने अपनी तरंग में कहा फिर लिलि का हाथ पकड़ कर उसे बैठाते हुआ बोला।

"सिटडाउन हनी गर्ल। सूर्या हमारा बेस्ट फ्रेण्ड है।"

"सूर्या के कारण मेरी मृत्यु हुई, मुझे दुनिया छोड़ना पड़ी।" विलि ने कुछ क्रोध युक्त स्वर में कहा।

"उस समय तुम्हारा डैथ नहीं होता तो हम प्रजेन्ट टेन्स में कैसे मीट होता लिलि डार्लिंग। नो एंग्री........नो गुस्सा।" विलि फिर बोला। लिलि बैठ गई।

"मि. विलि, मैं तुम्हीं को बड़ी बेताबी से खोज रहा था। यह अच्छा हुआ कि तुम मिल गए।" बैठते हुए सूर्या ने धीमे स्वर में कहा।

"हम जानता है मि. सूर्या। हमारे खोजने का रीजन हमको पता है। केन्द्रीय



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रक्षा मंत्री आज हमारी कॅन्ट्री के मिलटरी सीक्रेट्स को दुश्मन कॅन्ट्री के हाथ बेचेगा।"

"रक्षा मंत्री नहीं, गृहमंत्री।" सूर्या ने अपनी जानकारी दी।

"आपका इन्फारमेंशन मिसिंग है मि. सूर्या। आपको एक न्यू न्यूज एड्रेस करता हूँ। आपका फेयर लेडी साइंटिस्ट मैडम सुमन सहित, पीयूष, संभूति, प्रमदा एण्ड शर्मिष्ठा का डॉटर सभी कुछ ब्लास्ट में ऐंड हो गया।"

"क्या ?......असंभव।" सूर्या को लगा जैसे उसके पैरों के नीचे पृथ्वी हिल रही हो। विलि ने पूरी बात उसे बताई फिर उठ खड़ा हो गया।

"चलो मि. सूर्या, हम लोग कुछ इस देश की सेफ्टी के खातिर ट्राई करते हैं। मुझे बिलीव नहीं कि हम सक्सेस हो जाएँगे। अब हमारे साथ मैडम भैरवी नहीं रहा। रियल तो यह है कि संभूति के साथ ही मैडम भैरवी भी डेड हो चुका है। मि. असितांग भी टू डेज से हमको सीन नहीं हुआ। ऐसी पोजीशन में हम सूपा एण्ड मादाम सिल्वा का मुकाबला नहीं कर सकेगा। हम लोग डेडमेन हैं। एक बार डेथ के बाद सेकण्ड चांस डेथ का कोई क्वेश्चन ही नहीं ? हमको ओनली तुम्हारा चिंता है। अब तुम हमको पोर्च में मिलो। हमारा गाड़ी पर हमारा 'मोना' बना हुआ है।" कहते हुए विलि ने लिलि का हाथ पकड़ा। उसी समय हॉल की सारी लाइट चली गई। लगभग 10 सेकण्ड में ही दोबारा लाइट आई तो विलि-लिलि अपने स्थान पर अदृश्य थे।

सूर्या समझ गया कि दोनों बाहर पोर्च में पहुँच चुके होंगे। उसे यह सुन कर बहुत दुःख हुआ कि संभूति आदि ब्लास्ट में मारे गए। यद्यपि सुमन की बेवफाई के कारण सूर्या का लगाव उससे समाप्त हो गया था किन्तु फिर भी उसके हृदय में सुमन के प्रति स्नेहभाव था। विलि के कथन से सिद्ध होता है कि संभूति ही भैरवी थी, अगर ऐसा था तो सचमुच एक दिव्य साधिका का सूर्यास्त हो गया था।

पोर्च में खड़ी एक विदेशी कार पर रेडियम से बने एक नरमुण्ड के निशान (चित्र) को देखकर सूर्या को लगा कि यही विलि की गाड़ी है। सूर्या के गाड़ी के पास आते ही गाड़ी का ऊपरी भाग सरसराकर हटा, इसके साथ ही कार के चारों ओर का हिस्सा भी हट गया। अब कार में केवल चार सीट और उसका फर्श दिखाई दे रहा था। सूर्या चकित हुआ। यह कैसी गाड़ी ?

"कम मि. सूर्या।" विलि की आवाज आई।

"सूर्या गाड़ी में बैठा। उसके बैठते ही गाड़ी की छत, दीवारें सभी यथास्थान पर आ गए। इसी के साथ ही उसे विलि और लिलि बैठे दिखाई दिए। कार में न तो कोई ड्रायविंग सीट थी और नाही कोई स्टेरिंग व्हील। कार में गियर, क्लिच और ब्रेक पैडल भी नहीं थे। सूर्या ने गाड़ी के बाहर भी देखा, पूरी कार पारदर्शी थी, जैसे वह शीशे की बनी हो। सूर्या ने चकित हुए बोला—



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"बड़ी विचित्र कार है आपकी, मि. विलि ! न इसमें स्टेरिंग न कोई कन्ट्रोल उपकरण।"

"यस, आप बोलता मि. सूर्या। गाड़ी पूरी तरह से साइन्टिफिक है। यह डीजल-पेट्रोल से नहीं, मानवीय ऊर्जा से चलती है। एक सप्ताह में एक बार मात्र एक घन्टे के लिए कोई स्वस्थ व्यक्ति गाड़ी में बैठ जाए तो एक सप्ताह का ईंधन कार को प्राप्त हो जाता है। कार का सम्बन्ध हाय कम्प्यूटर से है, जिसमें भारत तक सभी प्रमुख शहरों की गलियाँ, चौराहे और सड़कें फीट हैं। यह निःशब्द कार जल, थल और नभ मार्ग में निर्विघ्न चलती है। थल मार्ग में इसे 1000 कि.मी. प्रतिघन्टा की गति से चलाया जा सकता है तो जल में में 500 कि. मी. और नभ पथ में यह राकेट की गति से संतरित होती है। कार का ड्रायवर मात्र एक स्विच दबा कर आराम से बैठ जाता है। उसे कार से बाहर देखने की आवश्यकता भी नहीं है। शहर के जिस भाग से, जिस सड़क से यह गुजरती है, कार में लगा माइक उस स्थान का नाम बता देता है।" इसके अतिरिक्त भी विलि ने कार की विशेषताएँ बताईं। जैसे कार में बैठा कोई व्यक्ति दिखाई नहीं देता आदि।

"आपको यह विलक्षण गाड़ी कहाँ से मिली मि. विलि।" सूर्या ने प्रश्न किया।

इस गाड़ी को बहुत वर्ष पहले मृत वैज्ञानिक विलियम सुरत ने विकसित किया है मि. सूर्या।" विलि ने भारी आवाज में कहा।

सूर्या फिर चौंका, श्रीमाँ के जीवन में भी वैज्ञानिक विलियम आया था। क्या विलि उसी विलियम की बात कर रहा है। सूर्या ने प्रश्न किया—

"मैंने एक वैज्ञानिक विलियम के विषय में सुना है, जो......जो श्रीमाँ के पति थे।

"तुमने ठीक सुना है। यह गाड़ी उसी विलियम की देन है। विलि ने गंभीर स्वर में कहते हुए स्विचआन किया। सरसराकर गाड़ी आगे बढ़ी। कुछ ही देर में गाड़ी रक्षामंत्री के आवास पर खड़ी थी। सूर्या अनुभव कर रहा था कि उससे बातें करते समय विलि के बोलने का स्टायल बदल गया था।

"मि. सूर्या, तुम गाड़ी में ही बैठो। अब यह गाड़ी किसी को दिखाई नहीं देगी। सूपा की अदृश्य आँखें भी इसे नहीं देख पाएँगी। बस मात्र पाँच मिनट में मैं नकली रक्षामंत्री को बिना किसी खून खराबे के पकड़ लाऊंगा। तुम इस स्क्रीन में देखना।"

"लेकिन मि. विलि गृहमंत्री ?" किन्तु विलि ने उसकी बात सुनी ही नहीं। विलि अपने स्थान से उछला और आकाश की ऊँचाई में उठता रक्षामंत्री की छत पर जा उतरा। सूर्या कार में लगे स्क्रीन पर देखने लगा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलि रक्षामंत्री की सुरक्षा व्यवस्था को फेल करता उनके कक्ष तक पहुँच गया। जैसे विलि ने कक्ष से प्रवेश करना चाहा एक प्रकाश की दीवार द्वार पर आ गिरी। विली ने अपने ओवर कोट में हाथ डाला, उसी समय रक्षा मंत्री के विशेष सलाहकार ने द्वार की ओर हाथ बढ़ाया। 'भक्क' की एक हल्की सी आवाज हुई और सलाहकार चीख भी नहीं सका, वह तत्क्षण राख का ढेर बन गया। सूर्या समझ गया कि नकली रक्षामंत्री की यह सुरक्षा-व्यवस्था सूपा के सिवाय और कोई नहीं कर सकता।

विलि ने अपने ओवरकोट की जेब से एक चमकीली पर छोटी, जिसका आकार क्रिकेट की गेंद से भी कम था, गेंद निकाली। इस गेंद के स्थान-स्थान पर रत्न जड़े हुए थे। उसने रत्न जड़ित गेंद हथेली पर रखी, वायु का संयोग पाते ही गेंद के रत्नों से भिन्न-भिन्न रंगों की रश्मियाँ निकलने लगीं। वे रश्मियाँ प्रकाश की दीवार पर गिरीं और कुछ क्षणों में ही प्रकाश की घातक दीवार समाप्त हो गई। विलि ने फिर भी दरवाजे से हाथ नहीं लगाया। उसने अपना दायाँ हाथ ऊपर उठा कर गोल-गोल घुमाया। विलि के हाथ से सहस्रों रश्मियाँ निकलने लगीं जो एक कवच के रूप में उस पर आच्छादित हो गईं।

सूर्या को विलि की वैज्ञानिक क्षमता पर आश्चर्य होने लगा। अचानक विलि ने अपना हैट उतार लिया। उसकी खोपड़ी के चारों ओर से भी अवर्णनीय प्रकाश की रश्मियाँ फूट पड़ीं।

"सूपा.........देख, तू और तेरी समस्त शक्ति, तेरे संसाधन। मैं सभी को निष्प्रभ कर तेरे द्वारा उत्पन्न रक्षामंत्री को ले जा रहा हूँ। तू रोक सकता है तो रोक-ले।" कहते हुए विलि ने अपनी प्रकाशपूरित अंगुली, जो मात्र हड्डी ही थी कि, तत्क्षण द्वार खुल गया और विलि हवा में झूलता कमरे में प्रवेश कर गया।

कमरा खाली था। विलि कमरे के मध्य खड़ा हो गया। उसने अपना हाथ ऊँचा किया फिर उसका हाथ पीछे की ओर मुड़ा। गर्दन के पीछे ओवरकोट के पीछे से एक गन उसने निकाली, उसी समय धड़ाधड़ कमरे में रखी चार अलमारियाँ खुलीं और उसमें से चार खतरनाक लड़ाके अपने हाथों में गन्स लिए हुए निकले।

सूर्या ने पहचाना वे चारों सूपा द्वारा बनाए कृत्रिम मानव थे। उनके हाथों में जो गन थीं, उनमें गोलियाँ नहीं खतरनाक जैविक कीटाणु भरे थे। अगर उनमें से एक गन भी चल जाए तो इस इमारत और इसके आसपास के क्षेत्र के मानव, पशु-पक्षी और अन्य जीवधारी यहाँ तक कि पेड़-पौधे भी समाप्त हो जाएँगे। सूर्या कांप उठा। अब विनाश निकट है, सूर्या ने सोचा।

"विलि रुक जा........। मैं जानता हूँ, ये विषाक्त जीवाणु तेरा कुछ नहीं बिगाड़ेंगे



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेकिन ये जीवाणु सारी राजधानी को श्मशान में बदल देंगे।" अचानक विलि के सामने रखे टी. वी. पर सूपा की तस्वीर उभरी और टी. वी. से आवाज आई।

"विलि मानवतावादी है मूर्ख सूपन। वह इतना अवसर देगा ही क्यों जिसमें तेरे रॉवेट गन चला सकें।" कहते हुए विलि ने पलक झपकते ही गन सीधी की और मात्र एक सेकण्ड में ही गन से निकला तरल पदार्थ फुहार की तरह रॉबेट्स पर गिरा। चारों कृत्रिम मानवों के हाथों से गन छूट कर फर्श पर आ गिरीं। लोह जैसी किसी धातु से बने रॉवट मोम की तरह पिघलने लगे।

विलि ने चारों गन उठा लीं। उन चारों की नालों में विलि ने अपने ओवरकोट से निकाली एक छोटी सी शीशी का तरल पदार्थ डाल दिया फिर बोला—"मूर्ख सूपा, मैंने तेरे इन विषाक्त जीवाणुओं को समाप्त कर दिया।"

"तुम .....तुम.......कभी विलि नहीं हो सकते। कौन हो तुम ?" सूपा का क्रोधित स्वर निकला। विलि के ढांचे से हंसने की आवाज आई।

"तू महामूर्ख है सूपा।" विलि ने मात्र इतना कहा और कमरे में लगे एक और द्वार को खोल कर उससे जुड़े कमरे में प्रवेश कर गया।

इस कमरे में सूपा द्वारा विकसित रक्षामंत्री निर्भय भाव से सो रहा था। उसके पलंग के चारों ओर भी एक अदृश्य घेरा था, जिसे विलि ने आसानी से नष्ट कर दिया। पलंग के पास खड़े होकर विलि का हड्डियों वाला हाथ पुनः ओवरकोट की जेब में गया। इस बार उसके हाथ में एक टार्च जैसी कोई वस्तु थी। विलि ने स्विच ऑन कर सोते हुए नकली रक्षामंत्री के चारों ओर टार्च से निकले नीली प्रकाश रेखा का घेरा खींच दिया फिर टार्च पर लगे 6-7 स्विचों को एक साथ ऑन कर उसके पलंग पर ऊपर टांग दिया। आंतरिक्ष में टार्च बिना किसी आधार के लटकती हुई चारों ओर तेजी से घूमने लगी। टार्च से निकलती भिन्न-भिन्न रंगों की रश्मियाँ नकली रक्षामंत्री पर पड़ने लगीं।

सूर्या आश्चर्य से देख रहा था नकली रक्षामंत्री का आकार निरन्तर छोटा होता जा रहा था। और एक क्षण ऐसा भी आया जब पूरा विकसित मानव एक सप्ताह के शिशु के रूप में हो गया। विलि ने उस सोते हुए बालक को आहिस्ता से उठा लिया। विलि ने चलने से पूर्व कहा—

"गुड वाय सूपा। तेरे विकसित मानव को मैंने पुनः शिशु बना दिया। अब इसका विकास शनैः-शनैः एक शिशु के विकास की तरह ही। और हाँ एक बात और सुन ले, अगर एक घन्टे के अन्दर सम्मानीय रक्षामंत्री को तूने नहीं छोड़ा तो दूसरे घन्टे में तेरी सारी लैब को जला कर राख कर दूंगा। इसे मेरी धमकी मत समझना।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलि के पैर ऊपर उठे। वह लम्बवत् हुआ और उड़ता हुआ कमरे के बाहर आ गया। उसके ओवरकोट में अभी भी बालक सुरक्षित सोया हुआ था। विलि आराम से कार में आ बैठा।

"मि. सूर्या, हमार वर्क पसंद आया ?" आपका होलीफादर पागल लॉयन के बराबर अपना हैड धुन रहा होगा। विलि पुनः बोलने के अपने खास ढंग पर आ गया।

"अद्भुत.....अद्भुत मि. विलि। मैं सचमुच चकित हूँ।" क्या आपने वैज्ञानिक विलियम की आत्मा से सम्पर्क कर लिया है ? सूर्या ने अपने मन में आई बात कही।

"मि. सूर्या, आप देखते रहो। अभी तो सूपा झांसे में आ गया। वह डेन्जरर मेन हार नहीं मानने वाला।"

"क्या हम गृहमंत्री के घर चल रहे हैं ?"

"नो.....तुमको जो इन्फारमेशन रिसीव हुआ, वह गलत था। होममिनिस्टर हण्डरेड परसेन्ट ऑरिजनल है।"

"मि. विलि वे गोपनीय दस्तावेज जो सैन्य रहस्यों से सम्बन्ध रखते हैं, सूपा अभी भी आसानी से किसी शत्रुराष्ट्र को दे सकता है।" सूर्या ने कहा।

"नो मि. सूर्या, सूपा सीधे-सीधे कोई क्राइम नहीं करना चाहता। इस समय वे दस्तावेज सीक्रेट सर्विस ऑफिस और होम मिनिस्ट्री में सही सलामत हैं। वास्तव में किसी दस्तावेज को चुरा कर बेचना सूपा का लक्ष्य नहीं है। वह तो अपने नए डिफेन्स मिनिस्टर को मीडिया बनाकर एक्सपेरीमेन्ट करना चाहता है।" विलि ने उसे समझाया।

"और इस बच्चे का क्या होगा ?" सूर्या ने प्रश्न किया।

"ओह ! दिस चाइल्ड इज नोट प्रॉब्लम। आपका फ्रेण्ड सोमसुन्दरम् है न, उसका वाइफ इस न्यूबोर्न चाइल्ड को रख लेगा।" विलि ने कहा।

विलि की विचित्र कार फिर सोमसुन्दरम के होटल डिफॉस्टा के पोर्च में आ खड़ी हुई। विलि ने बच्चा सूर्या को देते हुए कहा—

"मि. सूर्या, तुम अपने फ्रेण्ड को यह चाइल्ड दो। हम लोग जल्दी से जल्दी वापस लौटना चाहते हैं। उधर कब्रिस्तान में लिलि डार्लिंग का एक सहेली का मैरिज है। उसका इन्वीटेशन हमको मिला हुआ है।" विलि ने कहा।

"क्या भूतों में भी विवाह इत्यादि उत्सव होते हैं ?" सूर्या हंस पड़ा।

"जरूर होते हैं। घोस्ट वर्ल्ड, आदमियों के दुनियाँ से बेटर है।" विलि ने कहा। इस पूरे कार्यक्रम में लिलि बिल्कुल नहीं बोली। सूर्या ने भी उससे बातचीत का प्रयास नहीं किया।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्या कार से उतरा। होटल में उसने सोमसुन्दरम को तलाश किया तो पता चला कि सोमसुन्दरम् घर पर ही है। उसे तेज ज्वर है। सूर्या के लिए अब तक तीन बार फोन पर सन्देश आ चुका था सोम का। उसे तुरन्त सोमसुन्दरम के घर चले जाना चाहिए।

विलि बच्चे को लिए-लिए बाहर निकला। आश्चर्य की बात तो यह भी थी कि अभी तक बच्चा सोया हुआ था, रोया नहीं था। बाहर आकर उसने विलि को बताया और सोम के घर चलने को कहा।

सोम को बतौर अमानत बच्चा सौंप कर वे तीनों वापस हुए। राजधानी से वापसी में उन्हें अपने गृह नगर तक आने में लगभग 40 मिनट व्यय हुए। लिलि के साथ विलि भी कब्रिस्तान में उतर कर कार का ड्रायविंग यंत्र सूर्या को सौंपते हुए वह बोला—

"मि. सूर्या, आपकी कार मेरे कारण ही समाप्त हो गई थी। इस समय आपके पास कार है भी नहीं। आज यह कार आपकी हुई। हमारा क्या ? हम तो घोस्टमेन हैं। अच्छा चलता हूँ।" इसके पूर्व कि सूर्या उससे कुछ कहे विलि, लिलि के साथ गायब हो चुका था।

सूर्या कार ड्रायविंग के सारे सिस्टम समझ चुका था। इसलिए उसे ड्रायविंग में कोई विशेष परेशानी नहीं थी। सूर्या वहाँ से सीधे पीयूष के घर पहुँचा, किन्तु अब वहाँ मात्र मलबे का ढेर था। विनाश लीला देख कर सूर्या की आंखें भर आईं। संभूति, सुमन, पीयूष इत्यादि के शव तो मिले होंगे ही। उसने एक स्थान पर कार रोक कर बिन्दुशेखर से फोन पर सम्पर्क किया।

बिन्दुशेखर उसकी आवाज सुनते ही बोले—"तुम कहाँ हो सूर्या, मैं अविलम्ब तुमसे मिलना चाहता हूँ।" तुरन्त आओ।"

यद्यपि सूर्या थका हुआ था, फिर भी वह बिन्दुशेखर के आवास की ओर चल पड़ा। बिन्दुशेखर के आवास पर पुलिस के सशस्त्र जवानों का समूह देख कर सूर्या चौंका। संभवतः यहाँ भी सूपा ने कुछ अघटित कर दिया था।

जैसे ही सूर्या की गाड़ी रुकी और सूर्या बाहर निकला, पुलिस जवानों ने उसे घेर लिया। उसी समय बिन्दुशेखर जैसे प्रकट हुए।

"क्या बात है ऑफिसर ? मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा ?" सूर्या उलझन भरे स्वर में बोला।

"सब कछ समझ में आ जाएगा सूर्या।" गम्भीर स्वर में कहते हुए बिन्दशेखर ने अपने सहायक को, जिसके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, की ओर संकेत किया। इसके पूर्व कि सूर्या परिस्थिति को समझे, उसके हाथों में हथकड़ी पहना दी गई।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"यह उपहार मुझे क्यों दिया जा रहा है मि. शुक्ला।" सूर्या की आँखों में रक्त उतर आया। बिन्दुशेखर बहुत गम्भीर थे, बोले–

"एक ही दिन में तुमने दो जघन्य जुर्म किए। मध्यान्ह बारह बजे केन्द्रीय बैंक को लूटा और पाँच लोगों को गोलियों से छलनी कर दिया। पचास लाख रुपये तुमने और तुम्हारे साथियों ने कहाँ किए, तुम बताओगे। दूसरा जुर्म तुमने एक होटल में हो रही वी. आई. पी. पार्टी में किया, जहाँ शताधिक लोगों के सामने तुमने नगर के उन चार उद्योगपतियों को गोलियों से उड़ा दिया, जो चमत्कारिक रूप से मरे थे और फिर जिन्दा हो कर तीन दिन बाद अपने घरों को लौटे थे। हत्याएँ करने के बाद तुम और तुम्हारे साथियों ने चार मृतक धनपतियों के शवों को कहाँ ठिकाने लगाया ? तुम यह भी बताओगे। तुम्हारी जानकारी के लिए यह भी बतादूं कि पुलिस को वह मिनी बस मिल गई है, जिसमें तुम उन चार लाशों को ले गए थे। अब तुम कहोगे कि तुम्हारे अपराध के क्या-क्या प्रमाण हैं ? तो सुनो, बैंक की लूट और हत्याओं को करते हुए तुम्हें अनेक आँखों ने देखा तो है ही, बैंक में लगे वीडियो कैमरे की आँख ने भी तुम्हारे नृशंस और क्रूरता की फिल्म तैयार की है। इसी प्रकार पार्टी में बन रही वीडियो फिल्म में भी तुम्हारा काला कारनामा कैद है। तुम बहुत समय से पुलिस लिस्ट में थे, अब तक कानून से बचते रहे कितु अब... ..अब तुम्हारी फाँसी का फन्दा तैयार हो गया। इस बार नहीं बचोगे।" बिन्दुशेखर ने अपनी लम्बी बात पूरी की।

सूर्या क्षण भर में ही सारी बात समझ गया। बिन्दुशेखर से कुछ भी कहना व्यर्थ था। हालांकि वह इतने पुलिस बल में से भी निकल सकता था, किन्तु यह सचमुच अपराध होता। सूर्या ने मात्र इतना कहा–

"मेरी गाड़ी, आप अपने संरक्षण में ही रखें। मैं आरोपों से मुक्त होकर जल्दी ही अपनी गाड़ी आपसे ले लूँगा।"

"यह तुम्हारा स्वप्न है, फिर भी मैं गाड़ी को अपनी सुरक्षा में ले लेता हूँ।" बिन्दुशेखर ने कहा फिर एक पुलिस ड्रायवर की ओर उन्मुख होकर बोले–

"सूर्या की गाड़ी को मेरी गाड़ी के पास खड़ी कर दो।"

ड्रायवर ने सूर्या से चाबी माँगी। उत्तर में सूर्या ने गाड़ी को बिना चाबी की गाड़ी कहा। ड्रायवर कार के चारों ओर घूम गया किन्तु उसे गेट दिखाई नहीं दिया। अचानक गाड़ी अपने स्थान से हिली। उसके एंजिन से हल्की सी घर्घराहट की आवाज आई और देखते ही देखते कार का अस्तित्व वायु में लोप हो गया। उपस्थित सभी पुलिस कर्मी और बिन्दुशेखर देखते रह गए।

□□



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नित्य-नियमानुसार निवृत्ति देवी ब्रह्ममूहूर्त की पुण्यबेला से पूर्व ही उठ गईं। उन्हें आभास तो दो दिन पूर्व से ही हो रहा था कि सूर्या किसी न किसी कारण से व्यथित अवश्य है। उनका कल का पूरा दिन मानसिक रूप से कुछ पीड़ादायी रहा था। संभूति के घर विस्फोट उसके बाद प्रातः दिवस काल में बैंक डकैती और मर्डरकाण्डों में सूर्या का नाम। इन सब परिस्थितियों से उनका मन आहत हुआ था। उन्होंने सूर्या को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से तलाश भी किया, किन्तु सूर्या नहीं मिल सका।

निवृत्ति देवी नित्यकर्मादि से निवृत होकर नियमित साधना के लिए आसन पर बैठीं तो प्रातः पूर्व साढ़े तीन बजे थे। नेत्र बन्द कर गुरुदेव का स्मरण फिर प्राणायाम से मन और चित्त को स्थिर करने का प्रयास किया निवृत्ति देवी ने।

सदैव की तरह उस समय भी उन्होंने स्वर्णतन्तु शॉल ओढ़े थे। प्रातः साधना समय में वे अण्डरगारमेन्ट्स कभी नहीं पहनती थीं। क्योंकि ध्यानचर्या से उठने के बाद ब्रा और पेन्टी जैसे वस्त्र बेकार हो जाया करते थे। शारीरिक ऊष्मा के कारण उनके वस्त्र यहाँ तक कि साड़ी आदि भी पहनने योग्य नहीं रहती थी। इसलिए उन्होंने रजत तन्तुओं, अथवा सोने के तारों से निर्मित साड़ीनुमा शॉल को अच्छी तरह अपने योगमण्डित तन पर ओढ़ लिया करती थीं।

जब निवृत्ति देवी ध्यान की गहन-अवस्था में होती थीं तो ऐसा प्रतीत होता था, मानो कोई मानवाकार अग्निपिण्ड एक स्थान पर स्थिर अविचल रूप से उपस्थित हो। ऐसे समय में उनकी योगगुहा में पूर्णतः एकान्त होता था। कोई चाहकर भी उन्हें नहीं देख पाता था।

प्राणायाम के मध्य से ही उनके शरीर में योगाग्नि की ऊष्मा बढ़ने लगी। लगभग 1/2 घन्टे में उनका शरीर दीपशिखा के समान चमक उठा। अर्ध स्फुटित नेत्रों से जैसे दिव्य-आलोक झरने लगा, सुन्दर मुख्य वलय दैदीप्यमान आभा से भास्वर हो उठा, सकल काय निर्ग से प्रकाश की रश्मियाँ निर्गत होने लगीं। स्वर्ण ताने-बाने से निर्मित शॉल के अन्दर उनका शारीरिक आकार ऐसा लगता था, मानो तंप्त स्वर्ण की मानवमूर्ति को शॉल से आच्छादित कर दिया हो। निरन्तर संयम, अखण्ड ब्रह्मचर्य से निवृत्ति देवी की प्रौढ़-अवस्था के अंगों में भी कुसुमाकर की यौवनिक तेजस्विता थी। उनकी कनक कांति देह, सुपुष्ट समुन्नत स्तन वलय सम्पूर्ण युवावस्था प्राप्त नारी के कमनीय स्वरूप को सहज ही प्रकट करते थे। उस पर विशेषता यह कि जब वे साधना की इस अवस्था में होती थीं तो उनके अंगों का वैभव शतगुणा बढ़ जाता था। उस समय निवृत्ति देवी शॉल के अन्दर पूरी तरह वसनहीन होती थीं, इसलिए इस साधनावस्था में उन्होंने अपना दर्शन निषिद्ध कर रखा था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अकस्मात् निवृत्ति देवी का प्राण निर्बल हुआ, चितिशक्ति ऊर्ध्वलोक से नीचे उतरने लगी, मन की एकाग्रता छिन्न हुई, और आश्चर्य हुआ। वर्षों पूर्व का दमित भाव चित्ताकाश में उदय होने लगा। निवृत्ति देवी के अंग-प्रत्यंग में कामदेव का उत्ताल नर्तन होने लगा। शरीर की कोशिकाओं से मधु का प्रस्राव होने लगा।

कुछ विकलता से निवृत्ति देवी के पुण्डरीक नेत्र खुल गए। बाह्य जगत में कहीं कोई इस प्रकार का विघ्न उन्हें आभासित नहीं हुआ, जिससे वर्षों पूर्व सुप्त काम भावनाएँ जाग्रत हो जाएँ। उन्होंने अपने अधोरन्ध्र का हाथ से परीक्षण किया। उन्हें अहसास हो रहा था कि लगभग 5 वर्ष स्वतः समाप्त पुष्पक्षरण प्रक्रिया (माहवारी) पुनः प्रारम्भ हो गई हो।

निवृत्ति देवी ने परीक्षण में पाया कि वह स्थान कुछ आर्द्र गीला अवश्य था, किन्तु रज से हीन था। उनके तपस्वी शरीर में सूर्या के जन्म के पश्चात् कोई कामभाव या विकार नहीं आया था, आज यह कामुकता कैसे अनुभव हो रही थी, इसका कारण उनकी समझ में नहीं आ सका।

निवृत्ति देवी ने कायावरित शॉल को व्यवस्थित कर उसे अच्छी तरह ओढ़ा और पुनः नेत्र बन्द कर एकाग्रचित्त होने का प्रयास करने लगीं, किन्तु मन जैसे पूर्णरूपेण उनके नियंत्रण से मुक्त हो चुका था। काम sex का भाव विह्वलता में बदलने लगा। उन्हें तीव्र-अनुभूति हुई जैसे किसी ने उनके ललाट पर चुम्बन लिया हो, फिर आरक्त कपोलों पर, हनु पर और इसके पश्चात्, समुन्नती प्राप्त उत्तुंग स्तनाग्रों पर किसी के मादक चुम्बन के कामीय स्पर्शता की तीव्र प्रतीति हुई।

निवृत्ति देवी ने इस बार आँखें नहीं खोलीं। उनके अन्दर की नारीत्व रसता की मुग्ध सरिता उमड़ उठी। ऐसे संवेग उन्होंने उस समय अनुभव किए थे जब कान्तारी पठार की गुफा में उनका अक्षत यौवन उन्होंने स्वेच्छा से विलियम को सौंपा था। (पाठक परिच्छेद आठ को देखें)

किन्तु इस बार........इस बार विलियम नहीं। क्या यह उनके पतन के लिए सूपा का कोई प्रयोग है ? अथवा प्राकृतिक रूप से प्रकृति ने ही यह कामसंवेग उत्पन्न किए हैं ?

सूपा की गति, उसकी क्षमताएँ कदापि ऐसी नहीं कि उनकी साधना की अवस्था में उन्हें किसी भी प्रकार से प्रभावित कर सके। संभवतः यह प्रकृतिजन्य संवेग ही है, निवृत्ति देवी के अन्तःकरण से निर्णय आया। अचानक वे चौंकी, उनके कण्ठ से आनन्ददायी सिसकी अनायास ही निकल गई। किसी ने उनके गोपनीय अंग का स्पर्श किया। स्पर्श में कठोरता तो थी ही, साथ ही काम संवेग की मृदुतरंगों का तेज संप्रेषण भी था। उनके सारे शरीर में आनन्द की लहर दौड़ती चली गई, रोमावली प्रहर्षित हो उठी, कामदेव की सहचरि लोमरंध्रों में नाचने लगी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवृत्ति देवी भूल गई कि वे योगिनी हैं, योगसाधिका हैं। उन्हें अनुभव हो रहा था, वे मात्र प्रकृति हैं, उसकी प्रतीकशक्ति नारी का ललाममय लावण्यमण्डित रूप हैं, कामेश्वरी का अनघ रूप हैं, सृष्टि प्रसूता का स्थूल रूप हैं। अचानक उनके कानों में एक चिरपरिचित स्वर, गुंजित हुआ।

"देवी, पश्यन्ती.....ई.....ई.....।" जैसे स्वर की अनुगूंज किसी गहरी घाटी से नाद बन कर नदन कर रही हो।

निवृत्ति देवी के बन्द कमल नयन स्वतः ही खुल गए। वे हर्ष से चीख उठीं। उनके सामने विलियम खड़ा था। विलियम महान वैज्ञानिक विलियम !! उनका मूर्त मनोज, उनका पति विलियम !!!

कोई धोखा नहीं, कोई सूक्ष्म भावलोकी सत्ता नहीं। विलियम के पुष्ट शरीर से दिव्य प्रकाश की रश्मियाँ निकल रही थीं। निवृत्तिदेवी त्वराकर आसन से उठीं। स्मित के आलोक को बिखेरते विलियम की बाँहें आमंत्रणी मुद्रा में उठीं। निवृत्ति देवी उसकी बाँहों में जा समाईं। उनका शॉल पता नहीं कब उनके शरीर से हट कर गिर गया। अत्यन्त स्नेह से विलियम निवृत्ति देवी की सुचिक्कन घनेरी केश राशि पर हाथ फेरते हुए कह रहा था।

"कैसी हो पश्यन्ती ? मैंने हमारे पुत्र सूर्य को देखा है। सच कहूँ, उसे देख कर मुझे बहुत शान्ति मिली है।

निवृत्ति देवी निर्वाक थी। उनके पद्मायत नेत्रों से अश्रुसरिता फूट पड़ी थी। विलियम कुछ क्षण खामोश रहा फिर उनकी अश्रुवारि के प्रवाह को हाथ से पोंछता बोला—

"देवी, साधना की इस अत्युन्नत-अवस्था को प्राप्त होकर भी, सांसारिक स्त्री जैसा अधैर्य ? ऐसा अश्रुप्रवहन ?

निवृत्ति देवी फिर भी शान्त न हो सकी। अचानक उन्हें तीव्र-अनुभूति हुई कि उन दोनों के अतिरिक्त गुफा में कोई तीसरा भी है। क्षणभर में ही समाज, मर्यादा अपनी योगिनी की इमेज प्रतिष्ठा निवृत्तिदेवी पर भाषमान हो उठी। वे तत्क्षण विलियम के बाहुबन्धन से मुक्त होकर, आसन पर पड़े शाल की ओर झपटीं।

"कौन....?" विलियम का कठोर स्वर गूंजा। संभवतः विलियम भी जान चुका था कि तीसरा कोई यहाँ उपस्थित है।

गुफा अट्ठास से गूंज उठी। आरम्भ में एक घना कोहरा फिर कोहरे से सिल्वा की पैशाचिक सत्ता प्रकट हुई। उसके हाथ में किसी युवती का कटा हुआ गोरा हाथ था, जिससे ताजा खून का रिसाव हो-हो कर नीचे टपक रहा था। सिल्वा के होंठ, ठोढ़ी पर भी खून लगा था।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"हँरामी विलियम, तो यह है उस भैरवी का असली स्वरूप। अब तक यही मुझे भैरवी के रूप में छलती रही। यही बार-बार रूप बदल कर मुझे छकाती रही । मैं चकित थी कि महान सूपा के ब्लास्टिंग में क्यों नहीं मरी ? यह मरती कैसे ? इसका स्थूल शरीर जब तक नष्ट नहीं हो, यह कैसे मर सकती है। और तू....ऽ.....? तू हरामी.... । मेरी कैद से कैसे छूट गया रे ? तेरे शरीर को तो महान सूपा हिमालय के बर्फ में दबा आया था। लगभग 50 फुट गहरे गर्त से किसने निकाल लिया तुझे ?

"इसे मैंने निकाला है, पिशाचिनी सिल्वा।" अचानक गुफा में एक और तेजोमयी सत्ता का प्रकाट्य हुआ। यह था पीयूष।

"तू.....?.......तू......उस विस्फोट में कैसे बच गया।" अचानक गुफा में सूपा का शरीर आश्चर्य प्रकट करते हुए प्रकट हुआ।

"नेनं छिन्दंति शस्त्राणि, नेनं दहति पावकः।" आत्मा को शस्त्र नहीं छेद (काट) सकते, अग्नि नहीं जला सकता। मूर्ख सूपा मैं आत्मा हूँ। जरा-मरण से मुक्त न कभी मेरा जन्म हुआ है न कभी मेरी मृत्यु। मैं अजन्मा हूँ, अजर-अमर निर्विकल्प और नित्यमुक्त हूँ। मैं माध्यम मात्र से कर्म करता हूँ इसलिए कर्ता हूँ और माध्यम कर्म कर रहा हूँ उसे अनासक्त भाव से साक्षी भूत दृष्टि से देख रहा हूँ, इसलिए अकर्मण्य हूँ।" पीयूष ने सस्मित कहा।

सूपा ठहाका लगा कर हंस उठा। हँसते-हँसते ही बोला—

"मि. आत्मा, आज तुम्हारे सारे मुगालते दूर हो जाएँगे। सिल्वा तुम्हारे माँस के टुकड़ों को आनन्द से चबा-चबा कर खाएगी और श्रीमाँ जो पश्यन्ती है, वह पश्यन्ती जो विलियम को देखते ही वासना से सनसना जाती है, उत्तेजना से इस कामुकी औरत की नसें फटने लगती हैं। उसी श्रीमाँ का गर्म-गर्म खून पीकर सिल्वा इसकी शराब बनाएगी जिसे मैं अर्थात् सूपा, महानसूपा पिएगा। सूर्य की पहली किरन के साथ ही यह आश्रम तालाब बन जाएगा।...हॅ....ऽ...हॅ......ऽ...हॅ...... । सूपा पागलों की तरह हँसने लगा।

अचानक निवृत्ति देवी के शरीर का उत्ताप बढ़ा। उनकी भाव भंगिमाएँ बदल गईं। सुन्दर गौर वर्णी मुख तमतमाकर स्याह होने लगा। यही नहीं सारे शरीर में कालिमा उभर आई। उनकी आँखों से रौद्र का अमर्ष अंगार की तरह आरक्त और कल्पान्तकारी हो उठा। उनके कण्ठ से हुँकार निकली, उसी समय पीयूष के शरीर से निकलती रश्मियाँ एकत्र हुईं और एक रेखा के रूप में संघटित हो गईं।

निवृत्ति देवी के शरीर से एक झटके से एक और शरीर निकला। उस शरीर पर पीयूष की रश्मियों से विनिर्मित शुभ्र रेखा प्रवेश कर गई। सूपा ने खोजपूर्ण दृष्टि से देखा फिर चीखा।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"डूचा, यही.........यही भैरवी का बल है डूचा। रोको इसे, यह जाने न पाए।" डूचा अर्थात् सिल्वा। सिल्वा ने हुँकार कर अपना शरीर बढ़ाना शुरू किया और निवृत्तिदेवी के शरीर से निकल कर उठ रहे चमकीले-श्यामल शरीर के सामने आ गया। निवृत्ति देवी का देहजनित शरीर लम्बी काली चमकीली रेखा के रूप में बदला, तीक्ष्ण हुआ और कज्जल देही सिल्वा के उदरक्षेत्र को फाड़ता दूसरा ओर निकल गया। सिल्वा के कण्ठ से एक भयानक चीत्कार निकला। उसके पेट से रक्त का फब्बारा फूट पड़ा। वह तड़फती धरती पर गिर गई। सूपा अवाक, चकित स्तंभित खड़ा देखता रह गया। निवृत्ति देवी का मारक शरीर गुफा की ठोस छत को भेदता निकल गया।

कुछ क्षणों तक सिल्वा तड़पती रही फिर उसके पेट का बड़ा सा छेद अपने आप भरने लगा। कुछ ही देर में सिल्वा का पेट पहले के समान बिल्कुल ठीक हो गया। वह उठ कर खड़ी हो गई। अब न उसके पेट पर कोई घाव था और ना ही कोई छिद्र। उसने अपने पेट पर फैले खून को अपने हाथ से एकत्र किया और अपने ही खून को चाटने लगी।

इस मध्य निवृत्ति देवी के शरीर में मूलभूत परिवर्तन हुआ। देखते ही देखते उनका स्वरूप परिवर्तित हुआ और लावण्यमयी नारी की कमनीय देहयष्टि के स्थान पर एक दिव्य पुरुष शरीर प्रकट हुआ। सूपा देख कर पुनः चौंका। हटात उसके मुख से चकित स्वर में निकला।

"स्वामी जी आप ?"

"हाँ सूपन। हमारा विज्ञान तुमसे बहुत बड़ा है। तुम एक व्यक्ति के शरीर में दूसरे व्यक्ति के शरीर को प्रकट नहीं कर सकते । मैंने विलिय़म को सचेत किया था कि तुम अराजकवादी हो। तुम्हारी विध्वंशक शक्ति सृजनात्मक शक्ति का सामना नहीं कर सकती। देखो तुम्हारी डूचा को प्रकृति कैसे विवश करती है।" कहते हुए स्वामी जी ने आत्मविश्वास से कहा।

इसी मध्य सूपा ध्यान नहीं दे पाया और विलियम अपने स्थान से गायब हो गया। उसकी आँखों में क्रोध उभर आया। वह गुर्रा कर बोला–

"हरामजादी डूचा, तेरी लापरवाही से विलियम फिर निकल गया।"

"सॉरी महान सूपा, सचमुच..........मेरा ध्यान इस सन्यासी ने भंग कर दिया।" सिल्वा भयानक मुद्रा में स्वामीजी की ओर बढ़ी। उसी समय........।

घनघोर गर्जना से गुफा कांप उठी। जैसे बादलों की हृदय थर्राने वाली गर्जना हुई हो। सिल्वा के कदम रुक गए। सभी की दृष्टि गुफा के नीचे आ रही सीड़ियों पर पड़ी। सीड़ियों पर हुंकारती हुई संभूति द्रुतवेग से सीड़ियाँ फलांगती



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुई उतरती आ रही थी। उसके हाथ में त्रिशूल और वही जलता हुआ खप्पर था। सूपा फिर चौंका।

"यह औरत तो विस्फोट में मारी गई थी।" चकित स्वर में वह बोला।

"मूर्खमना वैज्ञानिक, जिस शरीर को भैरवी ने अपना माध्यम बनाया, वह शरीर भैरवी के रहते कैसे नष्ट हो सकता था ? यही नहीं देख भैरवी के पीछे......।" स्वामीजी ने मुस्कराकर कहा।

संभूति के पीछे सुमन आयंकर सीढ़ियाँ उतरती आ रही थी। सूपा उसे देखकर भी चौंका। पीयूष कह रहा था—

"पहचान ले सूपा, यही वह सुमन है, जिसने तेरे सुरक्षित वैज्ञानिक गढ़ में पहली और अंतिम सेंध लगाई। तू और तेरे यंत्र इसे नहीं पकड़ सके। इसी ने सूर्या के शरीर में तेरे द्वारा विकसित सूचना संप्रेषक यंत्रों को पूरी तरह नष्ट किया। सूर्या पर किया गया हमला सुमन ने ही किया था। उस हमले में ही सुमन ने सूर्या के विभिन्न अंगों में विकसित यंत्र वेकाम किए थे। (पाठक अनुच्छेद 13 अवलोकर करें) तू जानता है सूपा, यह सुमन कौन है ? सुमन तेरी शत्रु है, वह प्रसिद्ध मानवतावादी वैज्ञानिक विलियम की भांजी है। अपने मामा के साथ हुए अन्याय का प्रतिशोध लेने ही वह तेरी संस्था में भर्ती हुई और तुझे विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया।"

संभूति और सुमन नीचे आ चुकी थीं। उस समय संभूति का उज्ज्वल और वर्ण तमस हो गया था। संभूति खतरनाक ढंग से सूपा की ओर बढ़ी। सूपा ने जल्दी-जल्दी अपने शरीर के दो-तीन अंग, ललाट, हृदय और सिर के पीछे गर्दन के ऊपर दबाए। तुरन्त एक चमकीला पारदर्शी कवच उसके चारों ओर फैल गया।

"डूचा, सुमन को खत्म कर दे।" सूपा चीखा। डूचा ने हाथ ऊँचा कर अपनी पैशाचिक शक्ति का स्मरण किया, तत्क्षण उसके हाथ में एक हड्डी का बना शस्त्र प्रकट हुआ। वह मारक ढंग से सुमन की ओर बढ़ी। उसका उठा हुआ हाथ शस्त्र सहित नीचे गिरा, इसके पहले कि वह शस्त्र सुमन को लगे, बीच में ही वह किसी से टकराता और उसके टकराते ही सूर्या का शरीर प्रकट हुआ। शस्त्र के लगते ही सूर्या का शरीर धूधू करके जल उठा। सूपा फिर चकित हुआ। सूर्या तो पुलिस लॉकअप में था, कैसे छूटा ?

जलता हुआ सूर्या खतरनाक ढंग से हुंकारा, उसका सामान्य कद बढ़ता गया। एक क्षण में ही वह यति के विशालकाय शरीर में परिवर्तित हो गया। उसने झपट कर सिल्वा को दबोच लिया। सिल्वा भी जलने लगी, लेकिन उसे कोई पीड़ा नहीं थी। अचानक सुमन के मस्तिष्क में एक स्मृति का विस्फोट हुआ। वह जोर से चीखी।" सूर्या, सिल्वा इस प्रकार कभी नहीं मर सकती। इसका शरीर वज्र है वह



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सैकड़ों वर्षों से जिन्दा है। तू अपने अभिशाप का उपयोग कर। आखिर सिल्वा स्त्री है, योनि धरित्री स्त्री। शीघ्र कर, सब लोक लाज छोड़ कर अपना अंग इसके अंग में प्रविष्ट करा दे।"

सूर्या का अभिशाप वरदान बन गया। सिल्वा के चेहरे पर मृत्यु ने ताण्डव किया। वह उसके बन्धन से निकलने के लिए संघर्ष करने लगी। उसकी असीमित शक्ति के आगे सूर्या कमजोर पड़ता जा रहा था। अन्ततः सूर्या ने अंग उसके 'अंग' से टकराया और एक दो बार अथक प्रयास में सूर्या का पौरुषांग सिल्वा के नारी अंगी छिद्र में महावेग से जा धंसा। सिल्वा के कण्ठ से भयानक चीत्कार निकला।

"सूर्या इस टेबलेट को खा।" सुमन ने शीघ्रता से एक गोली सूर्या के मुख में डाल दी। दस सेकन्ड से भी कम समय में सूर्या के रक्त में टेबलेट घुल गई और सूर्या का रेतस सिल्वा के योनिकुण्ड में जा गिरा। एक भयानक चीख सिल्वा के कण्ठ से फिर निकली। उसकी आँखें उबलने लगीं और छटपटाकर नीचे जा गिरीं।

उसके गिरते ही सुमन ने बड़ी फुर्ती से एक शीशी निकली। यह स्प्रेनुमा शीशी थी। सुमन ने जल्दी-जल्दी वह स्प्रे सिल्वा पर कर दिया। सिल्वा का माँस गलने लगा। उसकी हड्डियाँ निकलने लगीं।

सूपा अपराजेय सिल्वा का अंत देख कर कांप उठा। उसने अपने लबादे में हाथ डाला। उसी समय संभूति का खप्पर ऊंचा हुआ, उसके दूसरे हाथ का त्रिशूल हवा में तना। संभूति ने खप्पर बीच में ही छोड़ा। वह हवा में टंग गया। संभूति का हाथ अपनी रुद्राक्षमाला पर गया। उसने गले से रुद्राक्ष माला निकाली और सूपा के कवच के ऊपर फेंक दी।

'चट्...चट्...चट्....' की अनेक आवाजें हुईं। सूपा का कवच चटक-चटक कर टूटने लगा। सूपा चकित विस्मित जरूर था, पर भयभीत नहीं। अचानक सीढ़ियों पर खटर-पटर की आवाजें आईं और इस बार अपने चिरपरिचित स्टाइल में विलि सिगरेट का धुँआ उड़ाता सीढ़ियाँ उतरता दिखाई दिया।

"हैलो मि. सूपा, ओह नो...महानसूपा अपनी डेथ के डोर पर ! वण्डर, वैरी वण्डर मि. सूपा।" कहते हुए विलि ने अपना दायाँ हाथ मिलाने के लिए सूपा की ओर बढ़ाया, किन्तु सूपा उसे आग्नेय दृष्टि से घूरता रहा, कुछ बोला नहीं।

"मि. सूपा मैं हारी हुई बाजी को फिर से पलट सकता हूँ। मुझे पहचानो सूपा।" सूपा के कान के पास आवाज आई।

"कौन हो तुम ?" सूपा मंन ही मन बोला।

संभूति फिर स्थिर खड़ी होग्रई, बिल्कुल प्रतिमा के समान। उसका त्रिशूल अभी भी ज्यों-का त्यों हवा में तना था। पता नहीं क्यों वह रुक गई थी।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"मैं तुम्हारा मित्र हूँ सूपा। मैं भी वैज्ञानिक हूँ। हम दोनों की शक्ति दुनिया को हिला सकती है। अगर तुम साथ देने को तैयार हो तो मैं तुम्हें बचा सकता हूँ।"

"धोखा तो नहीं दोगे।"

"तुम्हारी मर्जी। मेरी इन लोगों से कोई दुश्मनी नहीं है।"

"ओ. के. मैं तुम्हारी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाता हूँ।" कहते हुए सूपा ने अपना हाथ आगे बढ़ाया। विलि ने तत्क्षण उसका हाथ थामा, और बड़ी फुर्ती से उसका एक हाथ ओवरकोट के पीछे गर्दन के पास गया। वापसी में हाथ आया तो उसके हाथ में चमकता हुआ खड्ग था। विलि का हाथ ऊपर उठा और सीधा वार सूपा की गर्दन पर हुआ। खच्च की आवाज आई और सिर उछला, जिसे बड़ी फुर्ती से संभूति ने अपने त्रिशूल में जमीन पर गिरने से पहले ही छेद लिया।

सूपा का सिर त्रिशूल पर भिदते ही भक से जल उठा और वहाँ उपस्थित लोग उस समय आश्यर्च से भर उठे, जब सूपा के कबन्ध पर एक नया सिर दिखाई दिया। सूपा के चेहरे पर पूर्ववत निडरता थी।

"साले विलि, धोखेबाज। सूपा से गद्दारी ? मैं जानता था तू यही करेगा। और अब......अब मैं तुझे अच्छी तरह पहचान गया हूँ विलि। मैं अब भी तुझे हजारों वर्षों तक नर्क की आग में जलाने के लिए सक्षम हूँ।" सूपा जहरीले शब्दों में दांतों को पीसता बोला।

विलि का कंकाल "हो....ऽ...हो.......हो......ऽ" करके हँस उठा फिर व्यंग पूर्वक बोला—"सूपा तेरी मृत्यु का रहस्य भी मेरे पास है।"

"तो........तो.......मार मुझे....।" सूपा अट्ठास कर उठा।

इस बार विलि के हाथ का खड्ग फिर ऊपर उठा। फुर्ती से उसने सूपा का सिर, हाथ और पैर काट दिए।

"सुमन तेरा वी. फोर फार्मूला इस पर डाल।" विलि की आवाज गूँजी।

सुमन ने तत्क्षण हाथ में दबा स्प्रे सूपा के कटे अंगों पर डाल दिया। सूपा के अंग गलने लगे। फिर दोबारा सूपा ने सफ़ल चमत्कार दिखाया। इस बार उसके सिर के साथ हाथ-पैर भी उसके शरीर पर मौजूद थे।

"यह फार्मूला मेरे मामा विलियम का ही है। मुझे इसका पूरा सूत्र नहीं मिला। अगर मिल जाता तो सूपा अवश्य मारा जाता।

स्वामी जी किसी बच्चे की तरह अपनी आँखें चमकाते देख रहे थे। उन्हें यह सब बड़ा कौतूहल पूर्ण लग रहा था। अन्ततः उनसे रहा नहीं गया। बच्चों के समान ताली पीटते हुए वह बोले—

"अरे वाह ! क्या-क्या चमत्कार है। तुम तो पूरे सिद्ध हो गए सूपन। बिल्कुल ऐसे ही जैसे रावण के सिर भगवान राम काट दिया करते थे और उसके कबन्ध पर



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुनः सिर उग आते थे। क्या तुम्हें भी यह वरदान औघड़दानी शिवशंकर से मिला है।"

संभूति ने सुना और उसकी आँखों में चमक आ गई। उसने तत्क्षण अपना त्रिशूल आंतररिक्ष टंगे भकभक कर जल रहे खप्पर की अग्नि में किया। कुल क्षणों में ही उसका त्रिशूल तप्त होकर लाल सुर्ख हो गया।

"इस समय तो मैं जा रहा हूँ। अब सूर्योदय होने में लगभग आधा घन्टा शेष है। मेरे यहाँ से जाते ही, यह पूरा आश्रम उड़ जाएगा। सुबह होते ही जब यहाँ लोग देंखेंगे तो उन्हें आश्रम के स्थान पर तालाब मिलेगा, बिना पानी का तालाब।" सूपा ने अपनी बात समाप्त की ही थी कि संभूति अपने स्थान से उछली। उसका गर्म तप्त त्रिशूल सूपा के नाभि क्षेत्र में धंस कर उदर क्षेत्र को फाड़ता दूसरी ओर निकल गया।

सूपा के कण्ठ से ह्रदय-विदारक चीख निकली। उसके पेट से रक्त के फब्बारे निकलने लगे।

"सचमुच तुम साधिका के साथ बुद्धिमान भी हो बेटी। रावण के नाभि कुण्ड में अमृत था, ऐसा ही अमृततत्व सूपा की नाभि में जरूर होगा।" स्वामी जी बोले। सचमुच प्रथम बार सूपा के चेहरे पर मृत्यु का भय दिखाई दिया। कुछ देर में ही सूपा की तड़प शान्त हो गई।

इसके पश्चात् विलि ने सूपा के शरीर को कई टुकड़ों में बाँट दिया। अब सूपा के जीवित रहने की सारी संभावनाएँ समाप्त हो गईं। विलि ने सारे टुकड़ों को एकत्र किया और कुछ ऐसी चीज खोजने लगा, जिसमें उन टुकड़ों को भरा जा सके। संयोगवश गुफा में एक ट्रंक रखा था, विलि ने उसे खींचा और खोला। उसमें निवृत्ति देवी के रखे कपड़ों को उसने अलग रखा और सूपा के शरीर के कटे हुए टुकड़ों को उसमें भर दिया।

विलि अपना काम कर मुड़ा। उसने श्रद्धा से स्वामी जी के संमुख साष्टांग दण्डवत की, किन्तु यह क्या। वहाँ स्वामीजी के स्थान पर निवृत्ति देवी बैठी-बैठी मुस्करा रही थी। विलि बौखला गया।

"वण्डर ......! स्वामी जी गॉन।"

विलि ने सिल्वा का मृतदेह, जिसमें माँस-मज्जा नाममात्र को ही था, उठा कर कन्धे पर डाला फिर सूर्या की ओर मुड़ा, बोला—

"हेल्प मी मि. सूर्या।" विलि ने उस ट्रंक की ओर संकेत किया, जिसमें सूपा की लाश के टुकड़े भरे हुए थे। सूर्या ने ट्रंक उठा कर विलि के हाथ में थमा दिया।

"गुड बाय, ऐवरीबडी। मैं सूपा और सिल्वा का अंतिम संस्कार करने जा रहा हूँ। मेरी स्वामिनी मादाम भैरवी का आर्डर होगा तो फिर मिलूँगा।"



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलि मुड़ा और एक-दो कदम चलने के बाद ही मुड़ गया। वह बोला— "प्लीज मि. सूर्या, मेरी जेब में सिगरेट केस और लायटर है। कृपया सिगरेट जला कर मेरे माउथ में रख दो।" सूर्या ने सिगरेट जला कर हड्डियाँ युक्त विलि के मुख में फंसा दी। विलि ने गहरा कश खींचा और सिगरेट का धुँआ उड़ाता सीड़ियाँ चढ़ता चला गया।

भैरवी का खप्पर अभी जल रहा था। संभूति ने आंतरिक्ष में टंगे खप्पर की ओर हाथ बढ़ाया, आज्ञाकारी के समान खप्पर उसके हाथ में आ गया। निवृत्ति देवी ने एक दृष्टि खप्पर और त्रिशूल पर डाली फिर नेत्र बन्द कर लिए। जैसे ही निवृत्ति देवी ने नेत्र बन्द किए, पीयूष के शरीर का वायु में घुलना प्रारम्भ हुआ। सूर्या जल्दी से बोला—

"नो.........नो....मिस्टर पीयूष......रुको......रुको। मुझे तुमसे कई प्रश्नों के उत्तर लेने हैं।"

"मैं पीयूष नहीं हूँ। जो कुछ भी उत्तर चाहिए भैरवी देगी।" पीयूष ने निवृत्ति देवी की ओर संकेत किया और उसका दृश्य शरीर गायब हो गया। उधर संभूति के शरीर से तद्ररूपा छाया निकली और निवृत्ति देवी में समाहित हो गई।

संभूति को जैसे होश आया। गुफा में श्रीमाँ, सुमन और सूर्या थे। संभूति ने चकित चक्षुओं से इधर-उधर देखा और कहा—

"श्रीमाँ, मैं यहाँ तक कैसे आई ? ओह, कितनी गहन-अनुभूति हुई थी। इस बार मैंने देखा भैरवी ने इसी गुफा में बहुत खून खराबा किया है।

"तुम कुछ समय ध्यान करो संभूति। इससे तुम्हारी कोशिकाओं को बल मिलेगा और श्रमक्लान्तता नष्ट होगी।" संभूति ध्यान में बैठ गई। पूर्व में सूर्योदय हो रहा था। सूर्या और सुमन श्रीमाँ और संभूति को गुफा में छोड़ कर बाहर आ गए।

❑❑

बिन्दुशेखर उस दिन प्रातः जल्दी ही उठ आए। घूमते हुए वे बाहर निकले। अनायास उनकी दृष्टि कम्पाउण्ड में खड़ी अपनी कार पर पड़ी, उनकी कार के पास सूर्या की चमत्कारी कार खड़ी थी। कार का दरवाजा खुला और उसमें से सूर्या और सुमन दोनों निकले।

सूर्या तो लॉकअप में है। इतनी सघन सुरक्षा से सूर्या कैसे निकल आया ? उन्होंने अपने गाउन की जेब में हाथ डाला और सर्विस रिवाल्वर जिसे वे हमेशा अपने साथ ही रखते थे, निकाल कर सूर्या की ओर तान दिया।

"इसे वापस रख लें मि. शुक्ल। मैं अपराधी नहीं हूँ यह अभी सिद्ध करूँगा। मैं चाहता हूँ हम शान्ति से बैठ कर चर्चा करें।" सूर्या ने जानबूझ कर अपने हाथ



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उठा लिए। बिन्दुशेखर रिवाल्वर ताने-ताने सावधानी और सतर्कतापूर्वक उसके पास आए, सूर्या की तलाशी ली। सूर्या के पास हथियार के नाम पर कुछ नहीं था। सन्तुष्ट होकर उन्होंने सूर्या को हाथ गिराने को कहा।

"क्या चाहते हो ? पर पहले यह बताओ तुम लॉकअप से कैसे बाहर आए।" बिन्दुशेखर कठोर स्वर में बोले।

"मैं सब बताऊंगा, लेकिन यहाँ नहीं, कृपया ड्रांइग रूम में चलें।" सूर्या ने सहज स्वर में कहा। आरम्भ में बिन्दुशेखर झिझके फिर निर्णय कर बोले।

"कोई चालाकी मत करना सूर्या, वरना मैं गोली मारने में बिल्कुल नहीं हिचकूंगा।"

"आप विश्वास भी करेंगे या नहीं ?" सूर्या का स्वर सख्त हुआ।

"ठीक है चलो।" बिन्दुशेखर ने कहा।

कुछ देर बाद वे तीनों ड्रांइग रूम में बैठे थे। सूर्या ने सर्वप्रथम बताया।

"रात को करीब तीन बजे मैं आपके लॉकअप से निकल गया। मुझे पीयूष और विलि ने लॉकअप से निकाला। हम तीनों अदृश्य रूप से बाहर निकले, इसलिए हमें कोई नहीं देख सका।

"असंभव, तुम झूंठ बोल रहे हो।" शुक्ल बोले।

"देखो....." कहते हुए सूर्या ने अपने यंत्र का स्विच दबाया। पलक झपकते ही सूर्या अदृश्य हो गया।

"आश्चर्य।" बिन्दुशेखर चमत्कृत हो उठे।

अचानक फोन की घन्टी बजी। बिन्दुशेखर ने स्वयं ही फोन उठाया। फोन शहर के मुख्य थाने से था। बिन्दुशेखर सुनते रहे और आश्चर्य से सूर्या की ओर देखते रहे। फोन पर बात समाप्त करने के बाद वे बोले।

"अभी फोन पर सूचना मिली है कि लॉकअप में बन्द सूर्या अचानक ही चल बसा।

तुम दोनों में से असली सूर्या कौन है ?

"जाहिर है कि मैं स्वयं।" कहते हुए सूर्या ने सूपा द्वारा डमी निर्माण के विषय में बताते हुए कहा कि सारे अपराध उसी सूर्या ने किए हैं। जहाँ-जहाँ उसने जुर्म किए हैं, उसकी अंगुलियों के निशान मृतक सूर्या की अंगुलियों से मिल जाएँगे।

सूर्या ने बिन्दुशेखर को अब विशेष बात बताई। उसने सूपा की गुप्त प्रयोगशाला के विषय में बताते हुए वहाँ रक्षामंत्री के कैद होने की बात बताई। बिन्दुशेखर चौंक उठे। सूर्या ने राजधानी में घटित उस रात का प्रसंग भी बताया जिसमें विलि ने नकली रक्षामंत्री को छोटे से बालक के रूप में बदला था। जिस



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समय में नकली सूर्या ने अपराध किए थे, उस समय सूर्या राजधानी में था। बिन्दुशेखर को विश्वास होने लगा कि सूर्या सत्य कह रहा है।

उसी दिन योजनाबद्ध तरीके से सूपा की गुप्त प्रयोगशाला में बिन्दुशेखर ने छापा डाला। सूर्या पुलिस दल के साथ था। प्रयोगशाला के कई कक्षों में गैर कानूनी सामग्री मिली। भारी मात्रा में एक नवीन प्रकार का विस्फोटक पदार्थ और भिन्न-भिन्न तरीके के गैसीय तथा जैविक शस्त्र मिले।

सूपा के केबिन में रक्षामंत्री को भी सुरक्षित बरामद कर लिया गया। प्रयोगशाला में देश-विदेश के राष्ट्राध्यक्षों के एवं विशिष्ट महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के वीर्य का स्टॉक भी बरामद हुआ। अनेक चिकित्सक भी पकड़े गए।

सारी कार्यवाही में सन्ध्या के 6 बज गए। हालांकि काम बहुत शेष था फिर भी बिन्दुशेखर ने कार्यवाही अपने अधीनस्थ अधिकारियों को सौंप कर सूर्या के साथ वे श्रीमाँ के आश्रम में पहुँचे। आश्रम में पहुँच कर बिन्दुशेखर एक सुखद आश्चर्य में पड़ गए। श्रीमाँ के साथ उनके पिता पं. चन्द्रशेखर और उनकी पुत्री संसृति बैठे हुए थे। वहीं पर संभूति थी। एक और व्यक्तित्व भी वहाँ उपस्थित था—वे थे सहजयोग के परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी जगदीश्वरानन्द गिरिजी महाराज।

सभी श्रीमाँ के विशेष अथिति कक्ष में बैठे हुए थे। सूर्या के सामने अनेक प्रश्न अनुत्तर थे, जैसे सूपा द्वारा किए गए विस्फोट में संभूति, सुमन और पीयूष कैसे बच गए ? उसने यही प्रश्न श्रीमाँ से किया। उन्होंने उत्तर दिया।

"विस्फोट आकस्मिक था, किन्तु भैरवी वैरोचनी ठीक समय पर पहुँच गई। उसने हिमालय के अतिसिद्ध महात्मन के सहयोग से संभूति आदि को बचा लिया किन्तु प्रतिष्ठा और प्रमदा विस्फोट की शिकार बन गईं।"

"असितांग ! वे हिमालय की यति परम्परा के वंशज महात्मा असितांग हैं। असितांग ने सूपा और उसके साथियों द्वारा हजारों वर्ष पूर्व मृत्यु को प्राप्त अपने पूर्वज की कोशिकाओं से वीर्यसार निकालते देखा था। वर्षों बाद उन्होंने उस वैज्ञानिक जो सूपा था का अनायास ही स्मरण किया और उत्सुकता वश अपने पूर्वज के वीर्य अंश को देखा। वह कोई अन्य नहीं, तुम थे सूर्या। जिसे सूपा ने मेरे वैज्ञानिक पति विलियम की सहायता से बीज रूप में मेरे गर्भ में स्थापित किया। परिणामस्वरूप मेरी कुक्षि से तुमने जन्म लिया।" श्रीमाँ की बात सुन कर संसृति, बिन्दुशेखर और पं. चन्द्रशेखर भी चौंके तो संभूति भी चकित हुई। श्रीमाँ ने यति असितांग के उस पूर्वज की शापग्रस्तता की चर्चा भी की जो वंशानुक्रम रूप में सूर्या में देखने को मिला। (पाठक प्रथम परिच्छेद देखें) सूर्या के द्वारा एक जीती जागती युवती को मृत्यु पाश में देख अवधूत असितांग ने अपने वंशज यानि कि तुम्हें शाप से मुक्त करने का संकल्प तो लिया ही, साथ ही सूपा से मानवता को बचाने का


Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रण भी किया। असितांग से उस नागकन्या शेषा को खोजा जिसके कारण असितांग का पूर्वज विष यति पुरुष बन गया था। असितांग के संधान से पता चला कि शेषा तंत्र की दीक्षा लेकर नए नाम वैरोचनी के रूप में भैरवी बन गई। वैरोचनी लगभग पाँचसौ वर्ष तिब्बत के सिद्ध महात्मा, तांत्रिकों के मध्य रही फिर अपना शरीर छोड़ कर कुछ समय किसी अज्ञात लोक में रही फिर उसने धरती पर एक संस्कारित वेदपाठी ब्राह्मण के घर जन्म लिया। वैरोचनी भैरवी नया जन्म लेकर अपना विगत जन्म भूल गई, लेकिन स्वामीजी ने उसे सहजयोग की प्रवज्या देकर गत जन्म की स्मृतियों को पुनः हरा-भरा कर दिया। उधर असितांग का पूर्वज विषपुरुष यति मृत्यु के बाद नए जन्म में विलियम के रूप में आया। वैरोचनी अर्थात् मैं। हाँ मेरी आत्मा ही वैरोचनीं की आत्मा है। मैंने विलियम को देखते ही पहचान लिया। उसके मिलते ही मेरे पंचमकारी संस्कार प्रबल हो उठे।

(माँस, मदिरा, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन, तंत्र में ये पाँच मकार वर्णित हैं) मैं मिथुन तंत्र में प्रवीण थी और एक दिन विलियम के साहचर्य में मैंने यह योग पूरा किया। स्वामीजी मेरी गत जन्म की साधना को जान चुके थे, अतः उन्होंने बार-बार मुझे रोकने का प्रयास भी किया, किन्तु मैं न रुक सकी। इसी बीच सूपा हम दोनों के मध्य आया और उसने सूर्या के जन्म के बाद वैज्ञानिक पद्धति से विलियम की हत्या कर दी। किन्तु उसने विलियम के शव को रसायनों से सुरक्षित कर रख लिया। मेरी प्रतिशोध का शिकार होकर सूपा भाग गया और वर्षों तक यहाँ-वहाँ भटकता रहा। इसी बीच उसे सिल्वा मिली जो उससे प्रभावित होकर उसकी दास बन गई। इसी दौरान सूपा ने विलियम के शव को हिमालय में सुरक्षित रख दिया।

अवधूत असितांग जब मुझे खोज करते आए और हम एक से समान उद्देश्यधारी दो हो गए तो हमने योजनाबद्ध रूप से सूपा के विरुद्ध कार्यवाही आरम्भ की। मेरे अन्तःकरण में बसी भैरवी वैरोचनी को मैंने प्रकट किया और संभूति का स्थूल शरीर उसे दिया। महात्मा असितांग ने भी परकाय प्रवेश किया। यह परकाय प्रवेश संभूति के मृत पति पीयूष के देह में हुआ।" कहते हुए श्रीमाँ ने संभूति की ओर देखा।

संभूति का हृदय धड़क उठा। शोक की महातरंग उसके शरीर में फैलती चली गई। उसका पति ! उसका पीयूष !! वह तो कभी का चल बसा और जिसे वह अपना पति मानती रही, वह तो और कोई निकला। संभूति की आँखें बरस उठीं। पर अब क्या हो सकता था ?

"न संभूति.....आँसू नहीं। तू तो महा भाग्यवती है, जिसे असितांग जैसे महासिद्ध का साहचर्य मिला। वे पूरे सौ वर्ष के लिए तेरे पति की देह में रहेंगे।" श्रीमाँ ने संभूति को समझाया फिर आगे बात जारी रखी।


Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैंने भैरवी के रूप में जब सूर्या को देखा, पहचाना तो मैं अपने ममत्व को रोक नहीं सकी और मैंने उसके ललाट पर चुम्बन भी लिया (पाठक परिच्छेद 11 देखें) और सूपा का साथ छोड़ देने की नसीहत भी दी।

संभूति जिसे भावलोक की यात्रा समझती थी, वह वास्तविक थी। मैं तंत्र योग विज्ञान के द्वारा उसकी देह के माध्यम से ही सुगमतापूर्वक कार्य कर सकती थी। मेरा स्वयं का सामने आना इस देह से एवं अन्य कारणों से संभव नहीं था, दूसरे असितांग भी संभूति के ही निकट थे, इसलिए मैंने संभूति के शरीर को ही माध्यम बनाया और इस प्रकार सूपा के कुत्सित कर्मों को रोकने में सफल हुई।

"और विलि का क्या चक्कर है माँ ?" सूर्या ने प्रश्न किया

"मेरा कोई चक्कर नहीं है मि. सूर्या।" अचानक विलि हॉल में प्रकट हुआ।

"और सुमन ? सुमन ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया ? उसने मेरे सारतत्व को सूपा को क्यों सौंपा ?" सूर्या का प्रश्न।

"सुमन पूर्णरूप से तुम्हें अभिशाप से मुक्ति का वैज्ञानिक उपाय खोज रही थी। वास्तव में सुमन ने ही तुम्हें सूपा के विरुद्ध किया। उसने तुम्हारे देहसार के एक भाग को सूपा को इसलिए दिया कि वह उसकी विश्वासपात्र बनी रहे। एक भाग को उसने अपने पास रख कर तुम्हारे शरीर में फैले विष को समाप्त करने की औषधि तुम्हारे वीर्यसार पर अनेक प्रयोगों के बाद अन्ततः उसने खोज की।" सूर्या हर्षित हो उठा।

"हाँ एक बात और.....। स्वामी जी ने अपनी सिद्धियों के बल पर विलियम के शव को यहीं मंगा लिया।" सूर्या को याद आया कि उसने सूपा से हुए संघर्ष के मध्य अदृश्य रह कर विलियम के शरीर को देखा था।

"सूपा का क्या हुआ दीदी ? वह छापे के दौरान क़हीं नहीं मिला ?" बिन्दुशेखर ने प्रश्न किया।

"सूपा और सिल्वा को अपने किए का दण्ड मिल गया लालू। तू देखना अब उस ताबूत में सिल्वा की मूर्ति नहीं होगी। सूपा और सिल्वा को विलि ने मार दिया। अब वे इस दुनिया में नहीं।

"विलि ! विलि कौन ?"

"विलि एक प्रेतात्मा है, जिसे सिल्वा ने एक कंकाल में कैद कर रखा था।" श्रीमाँ ने उत्तर दिया और संभूति की ओर देखा, उससे बोली—

"संभूति, तुम्हारे लिए एक नया भवन खरीद दिया गया है। आश्रम की गाड़ी से तुम्हें हम सब छोड़ते हुए बिन्दुशेखर के घर चले जाऐंगे।"

"जी श्रीमाँ !" संभूति ने कहा।

सूर्या ने पं. चन्द्रशेखर के चरण स्पर्श किए। उन्होंने अपने पुत्री के पुत्र और



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी पौत्रवधु सुमन को आशीष दी। बिन्दुशेखर ने भी उसे और सुमन को आशीष दिया। वे सब तैयार होकर चल दिए।

नया भवन देखकर संभूति प्रसन्न हो गई। सभी से उसने कुछ समय रुकने को कहा, किन्तु श्रीमाँ ने नम्रता से अस्वीकार दिया। वे सब चले गए। संभूति ने द्वार को धक्का दिया, दरवाजा खुला था। उसने ड्राइंगरूम देखा किचिन देखा, और शेष दो कमरे भी देख डाले। अन्त में वह शयन कक्ष में पहुँची उसका द्वार भी खुला था। पलंग पर बिस्तर व्यवस्थित था, किन्तु पीयूष यहाँ भी नहीं था। कहाँ गया पीयूष ? संभूति को झुँझलाहट आने लगी।

वह थक चुकी थी, भूख भी लगी थी, पता नहीं किचिन में कुछ सामान है भी या नहीं ? वह आलस्य से लेट गई। अचानक उसे लगा जैसे उसकी पीठ पर किसी की गरम-गरम सांसें टकराई हों। वह चौंक पर पलटी तो पीयूष को सोते पाया। जबकि अब से कुछ क्षण पहले पीयूष नहीं था किन्तु अब ! अब वह गहरी नींद में सो रहा था।

संभूति भूल गई कि पीयूष में असितांग की सिद्धात्मा है। उसने पीयूष के कान पकड़े और बोली--

"अब तुम्हारी कोई ऐक्टिंग नहीं चलने वाली। चलो उठो, मेरी मदद करो, मुझे भी भूख लगी है और तुम भी भूखे होगे।"

पीयूष ने मुस्कराते हुए आँखें खोल दीं और सस्मित बोला।

"हाँ बहुत भूख लगी है और प्यास भी।" कहते हुए पीयूष ने संभूति की सुगन्धित काया को बाँहों मे बाँध कर उसके अधरदलों को चूम लिया।

"सच कहो......। तुम कौन हो ? मेरा पति......मेरा पीयूष........?" उसकी बाँहों में बंधी-बंधी संभूति रो पड़ी।

पीयूष ने स्नेह से उसके आँसू पोंछे और अत्यन्त प्रेम से अपने हृदय से लगा कर गम्भीर स्वर में बोला—

"तुम्हारे दुःख को समाप्त करने के लिए मैं विरागी से राग बन गया संभूति। मैंने पूरे सौ वर्ष के लिए इस देह को स्वीकार किया है, किन्तु तुम जब भी कहोगी मैं इस देह का परित्याग कर पुनः अपने शरीर में चला जाऊँगा। मैंने तुम्हारे शरीर को मन्दिर और आत्मा को मेरी शक्ति ईश्वरी मान कर तुम्हारी पूजा की है, जिसे तुम संभोग मान बैठीं। अगर तुम्हें मेरी वह उपासना अपकर्म लगी हो तो मैं अभी इसी क्षण अपने देह में लौट जाऊँगा।"

"नहीं......नहीं........।" संभूति पीयूष से आश्लेषित होती हुई चीखी। "मैं......मैं..... परम सौभाग्यवती हूँ, जिसे आप जैसे परमपुरुष का सहचर्य मिला। मैं धन्य हो गई।



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरी गल्तियों को क्षमा करते रहना!" संभूति की आँखों से झर-झर आँसू झरने लगे जिन्हें पीयूष ने पोंछ दिया और उसे अपने भुजपाश में बाँध लिया।

❑❑

प्रिय पाठकों ! अन्त में एक रहस्य और ! जैसा कि आपने पढ़ा कि विलियम केशव को स्वामीजी अपनी सिद्धियों के द्वारा हिमालय से ले आए थे। स्वामी जी ने ही विलियम की आत्मा को योगशक्ति द्वारा उसके शरीर में प्रवेश करा दिया। विलियम स्वयं भी योगसाधक बन गया। निवृत्ति देवी और उसमें सहज स्नेह सदैव रहा।

दूसरी बात विलि वास्तव में विलि के कंकालरूप में विलियम ही था। वह चमत्कारी विलक्षण कार भी विलयम की थी।

—लेखक

कृपया इस उपन्यास के सम्बन्ध में अपनी अमूल्य राय से अवश्य अवगत करायें।

कुँवर नरेन्द्र सिंह
रुठियाई—473110
गुना (म० प्र०)



Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# मानस मंथन सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित बहुप्रचलित एवं प्रसिद्ध पुस्तकें


अलौकिक मन्त्रों के महत्त्व को दर्शाती अनूठी पुस्तक

## शाबर मन्त्र सिद्धि रहस्य

कुँवर नरेन्द्र सिंह

◆ शाबर मन्त्रों पर प्रथम बार विस्तृत विवेचन। ◆ गुरु परम्परा से प्राप्त चमत्कारी मन्त्रों का पहली बार प्रकाशन। ◆ बेताल, जिन्द, भैरव, परी, कचिया मशान का कलवा आदि की चमत्कारिक सिद्धियाँ। ◆ विभिन्न रोगों से शाबर मन्त्र। ◆ गृह शान्ति और लक्ष्मी साधना, स्वप्न सिद्धि के शाबर सिद्धि मन्त्र। ◆ प्रथम बार मूँठ चलाने का प्रयोग और उसका सांगोपांग विधान। ◆ शून्य से वस्तुएँ मँगाना, नवीन प्रकार के हाजरात के प्रयोग।

**मूल्य : रु. 60·00**

तन्त्र के महत्त्व को दर्शाती एक अमूल्य पुस्तक

## तन्त्र सिन्धु

कुँवर नरेन्द्र सिंह

◆ साधारण झाड़-फूँक और टोना-टोटका तन्त्र नहीं हैं और अभिचार कर्म करने वाले तान्त्रिक नहीं हैं। प्रस्तुत पुस्तक तन्त्र की व्यवहारिकता को प्रकट कर तन्त्र के वास्तविक अर्थ को खोजती है। ◆ प्रस्तुत पुस्तक में लेखक सिद्ध-तान्त्रिक होने का दावा नहीं करता, अपितु कथित तान्त्रिकों की वास्तविकता को खोजता है। ◆ नारी-रज के अद्भुत चौंका देने वाले प्रयोग, प्रथम बार ! ◆ भैरवी साधना। ◆ उच्छिष्ट चाण्डालिनी के विविध प्रयोग। ◆ आसुरी दुर्गा के चमत्कारी प्रयोग। ◆ बेरोजगारी दूर करने की साधना। ◆ बन्दीमोचन प्रयोग। ◆ सास-श्वसुर वशीकरण। ◆ जुआ, शराब जैसे कुव्यसनों से मुक्ति का प्रयोग। ◆ पुत्र-प्राप्ति का प्रामाणिक प्रयोग। इनके अतिरिक्त अन्य कई चमत्कारिक प्रयोग एक साथ।

**मूल्य : रु. 60·00**

हनुमान तंत्र–मंत्र ज्योतिष से परिपूर्ण दुर्लभ कृति

## हनुमानतंत्रम

डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल

प्रत्येक प्राणी को संसार में कष्टों की कमी कमी नहीं है लेकिन साधना करने से कष्टों से मुक्ति मिलती है।

हनुमत् साधना सभी प्रकार की साधनाओं से ऊपर है 'हनुमानतंत्रम्' पुस्तक एक पथ प्रदर्शिका के रूप में आपके साधना पथ को आलोकित करेगी।

प्रस्तुत पुस्तक में हनुमान जी के बारे में कम से कम जितना भी आवश्यक था उतनी जानकारी रखी गयी है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल है लेकिन मूल संस्कृत की कहीं भी छेड़–छाड़ नहीं की गयी है। पुस्तक का प्रकाशन विश्व के समस्त पाठकों की रुचि को ध्यान में रखकर किया गया है।

**मूल्य : रु. 81·00**


Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

A253

## इसी उपन्यास से....

रात के दो बज चुके थे। सारा नगर निद्रा के सुखमय संसार में लिप्त था, लेकिन संभूति की आंखों में नींद कहाँ ? वह तो अपने पति के सिर को गोद में रखे, उसके रुक्ष और तेजविहीन चेहरे को देख रही थी।

लगभग तीन माह हो चुके थे उसके पति को इसी अवस्था में। छोटे से नीम हकीम से लेकर बड़े-से-बड़े डॉक्टर्स को वह दिखा चुकी थी किन्तु परिणाम शून्य ही रहा। अंतिम बार उसने अपने पति को भारी फीस देकर एक विदेशी डॉक्टर को भी दिखाया। सारी रिपोर्ट्स का अवलोकन करने के बाद डॉ. स्मिथ ने कहा था—

"सारी मैडम, अब कुछ सम्भव नहीं। रोग इतना आगे बढ़ चुका है कि इलाज सम्भव नहीं। अब तो आप जितनी इनकी देखभाल कर सकें, करें। साथ ही इनके लिए भगवान से प्रार्थना भी, कि इन्हें शीघ्र ही इस महापीड़ा से मुक्ति दें।"

उस दिन से संभूति ने जान लिया कि अब उसके पति पीयूष का जीवन बचना सम्भव नहीं रहा। आज पीयूष को तीसरा दिन था। वह निःचेष्ट, जड़ बना हुआ था। न तो उसकी चेतना साथ दे रही थी और ना ही उसके कण्ठ से आवाज आ रही थी। वह दो-तीन घंटों में एक बार आँखें खोलता, संभूति को देखता और उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती। लगता था जैसे अब अंतिम समय आ गया था और इस 'समय' को पीयूष ने पहचान लिया था। शायद वह यह सोच कर दुःखी था कि उसके बाद उसकी पत्नी का क्या होगा ?

अपने पति के सिर को गोद में लिए संभूति को नींद का झोंका सा आया। तीन दिन से वह निरन्तर जाग रही थी, ऐसा होना अस्वाभाविक भी नहीं था। स्वप्न या सत्य ? संभूति निर्णय नहीं कर पाई।

उसने देखा, पीयूष के कमरे के उत्तरी कोने की ओर से एक अलौकिक प्रकाश पिण्ड का आविर्भाव हो रहा था। वह आँखें खोलना चाहती है पर जैसे आँखों को किसी ने बलात चिपका दिया था। वह बोलना चाहती है लेकिन आवाज नहीं निकल पा रही। वह उठना चाहती है लेकिन देह जैसे धरती से चिपक गया था।

प्रकाश पुंज की दिव्य-शुभ छटा से उसने एक भव्य व्यक्तित्व को साकार होते देखा। कौन है यह प्रकाश पुरुष ? कोई देव या ऐसी ही कोई अलौकिक शक्ति ? प्रकाश पुरुष शान्ति से चलता उसके समीप आ गया.........और समीप और.......ठीक उसके पति के समीप..............

**भगवती पॉकेट बुक्स**

11/7, डॉ. रांगेय राघव मार्ग, आगरा—2. फोन : 2855179, 2855187

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal